अपनी शिष्या अर्पण की दीक्षा के वाद प्रत्याख्यान ले लिया था कि जो चार खद में से एक खद का नियम जीवन भर के लिए ग्रहण करेगा उसी से वस्त्र लेना।) गुरु जी ने गर्भपात करने वाली डाक्टरनी सोनी वहन को कभी यह हिसक कार्य न करने का नियम दिलवाया। विना प्रभावना वॉटे पूर्वपेक्षा ज्यादा तप कराके समाज के लोगों की गलत भ्रमणाओं को दूर किया। कईओं को भ्रान्ति थी कि तप लालच में होता है। कुरुक्षेत्र में अनिल भाई की आयुर्वेदिक दवाई का सेवन किया।

किताबों में मिटे कुरुक्षेत्र के नाम को पुन उजागर करके गुरु जी वडोदा पधारे। स्वजाति की साध्वी की ऐसी शेर सी गूँज सुनकर वडोदा वासियों की प्रसन्नता का पार नहीं रहा। महाराष्ट्र प्रवर्तक श्री कुदन ऋषि जी म० सा० का पानीपत वेरागी मुकेश जेन के 10 दिसम्वर के दीक्षा महोत्सव पर पधारने का निमन्त्रण पाकर गुरु जी पानीपत पधारे। वहाँ म० सा० गुरु जी से प्रभावित हुए तथा वोले-सयम प्रभा जी, आप विशाल हृदयी हें। सम्प्रदायवाद से परे हें इसलिए हमारा आग्रह हे कि आप महाराष्ट्र पधारें। पानीपत में ही उत्तर भारत के श्रावकों की आत्मा भगवन श्री राम प्रसाद जी म० सा० तथा श्री उपेन्द्र मुनि जी म० सा० के दर्शन किए। भगवन श्री जी ने गुरु जी के प्रवचन की प्रशसा की। गुरु जी ने म० सा० के दर्शन करके स्वय को धन्य किया तथा ऐसे महापुरुष के पुन पुन दर्शन करने के भाव रखे। क्योंकि भगवन श्री इस युग की महान हस्ती हैं।

येषा मन इह विगत विकार, ये विदधति भुवि जगदुपकार।
तेषा वयमुचिता चरिताना, नाम जपाओ वार-वार।।

एक दिन गुरु जी ने मेरे सामने अपने मन के भाव रखे कि मेरा काफी वर्षों से दक्षिण की तरफ विचरने का भाव हे। अव एक मजवूत सहयोगी पाकर में अपनी इच्छा पूरी करना चाहती हूँ। मेंने कहा - जेसी आपकी इच्छा हो लेकिन पहले स्वास्थ्य का ध्यान रखना जरूरी हे।

चले थे महफिल छोडकर, कि हम रगीन होकर आएगे,
न मिला पेगाम कोई, किसी आर महफिल के हो जाएगे।

हरियाणा को शायद हमेशा के लिए अलविदा कहकर तथा अन्तिम वार सव जगह की भूमि की स्पर्शना करते हुए डगर पकडी हे दक्षिण की। क्या पता था कुछ दूर की यात्रा लम्वी यात्रा वन जाएगी। महरोली दादा वाडी में कलकत्ता से आए विनय कुमार जी वाफना ने धर्म चचा से प्रभावित होकर कलकत्ता पधारने की पुरजोर विनती की।

फरीदावाद में श्री लालचन्द जी म० सा० के शिष्य श्री अरुण मुनि जी म० सा० के दर्शन किए तव उन्होंने कहा-सयम प्रभा जी, ' व्याख्यान इतना सुन्दर है कि हर कोई आपका हो जाएगा। इसलिए महाराष्ट्र में तभी प्रवेश करना यदि साधना की ताकत पास

में हो। गुरु जी ने कहा - ''म० सा० गुरु कृपा ही मेरी साधना है।'' मथुरा, आगरा होते हुए जब भरतपुर पहुँचे तो वहाँ श्रावक वोले - आप की संयम क्रियाएँ इतनी कठोर हैं तथा अल्प परिग्रही हो, लेकिन यहाँ तो कई साध्वियाँ ओघा भी साईकिल पर रखती हैं।

फरवरी में जयपुर पहुँचे। मैंने श्रावकों से प्रवचन के समय पूछा तो वोले-अन्नदाता, शेष काल में लोग व्याख्यान में आते नहीं। मैंने कहा - फिर तो हम विहार के भाव रखते हैं। श्रावकों ने अगले दिन प्रवचन करवाया तो मात्र 30-35 की उपस्थिति रही लेकिन उस प्रथम प्रवचन ने कमाल कर दिया। तीसरे दिन लाल भवन का विशाल प्रांगण खचाखच भरा था। नाहर जी, पारस वाई जी कर्नावट आदि की खुशी का ठिकाना नहीं था। वड़े-वड़े श्रावकों ने हाथ जोड़कर ठहरने की विनती की तथा 8 प्रवचनों ने ही गुलावी शहर में गुलाब की सौरभ फैला दी।

जीवन दान मिला - गुरु जी कहने लगे - अर्पण, हम कई वार व्यावर आ चुके हैं। हमने सभी रास्तों से आकर देखा है। लेकिन कहीं-कहीं से श्री सुगन कँवर जी म० सा० को हमारे आने का समाचार मिल ही जाता है। कभी अचानक पहुँचना चाहते हैं। मेरा शेर (अर्पण) यह काम करके दिखाये तो जानूँ। मैंने कहा-'ठीक है अचानक पहुँचकर वंदना करेंगे। मांगलियावास तक चुपचाप पहुँच गए थे कि अचानक व्यावर आफिस का मैनेजर तिलोक भाई आकर बोला-अन्नदाता ने पुछवाया है सुख साता तो रही ? गुरु जी वोले, अर्पण - मैंने तो पहले ही कहा था असंभव है। मैंने कहा-कोशिश करूँगी। मांगलियावास से विहार किया कि सड़क पर ट्रक से टकराकर गैस की बड़ी टंकी पलट गई और ट्रक हमारे ऊपर गिरने लगा। दो साध्वियाँ श्री मल्ली प्रभा जी, श्री सुबोध प्रभा जी थोड़ी पीछे थीं। मैंने भी यह कहकर कि गुरु जी इधर आ जाओ ट्रक ऊपर गिर जाएगा, झाड़ी में छलाँग लगाई। मगर गुरु जी के एकदम पास ट्रक आ गया, फिर गुरु जी दौड़े। इतनी देर में ही जमा हुई भीड़ ने कहा कि महाराज एक सैकिन्ड की देर कर देते तो ट्रक कुचल देता। आयुष्य उस समय प्रवल था। गुरु जी बाल-बाल बच गये, मगर मेरी आंखों में पानी आ गया। पूरा शरीर काँपने लगा। गुरु जी बोले-अर्पण, आज ये स्थिति है मुझे कुछ हो गया तो तेरा क्या हाल होगा ? 27 कि. मी. का विहार करके व्यावर से वाहर 3 कि.मी. पहले ठहरे तथा वहाँ से सुबह-सुवह अचानक पधार कर सभी को आश्चर्यचकित कर दिया। वहाँ तैयारियाँ चल रहीं थी कि संयम की अगवानी में जाना है। व्यावर में तरुणाचार्य श्री विजय राज जी म० सा० के दर्शन किए, उन्होंने गुरु जी के प्रवचन की प्रशंसा करके पंजाबी भजन सुना या रब्ब सब दे दिला दें विच वसदा...।

1999 के वर्ष में गुरु जी मेरे अध्ययन को लक्ष्य में रखकर वहीं व्यावर में ही रहना चाहती थीं। लेकिन 20 दिन बाद ही जोधपुर में होने जा रही आचार्य श्री जी के सान्निध्य में

कनिका राका की दीक्षा के लिए विहार करना पडा। पडदाद गुरुणी जी के ये अन्तिम दर्शन थे। पीपाड में प्रवचन में मानों सेलाव सा उमड पडा था। जोधपुर में दीक्षा प्रसग पर खडे होकर प्रवचन दिया। आचार्य श्री जी आदि सभी सतों को, साध्वियों को अपनी "सयम" पर वडा गव था।

अप्रमत साधना के आराधक, निर्मल सयम की परिपालना करने वाले साधक श्रद्धेय श्री सुमति मुनि जी म० सा० दिन में महामन्दिर में आगम का अध्ययन करवा रहे थे कि सोहन लाल कटारिया ने आकर कहा (26 अप्रेल के दिन) कि कल 25 तारीख को हरियाणा के वरिष्ठ सत देवलोक हो गये हैं। गुरु जी सुनते ही बोले अपने सिर का वरद्हस्त उठ गया, सहारा छुट गया। गुरु जी को एकदम झटका लगा, बोले अर्पण – हम समय न पाये गुरुदेव के इशारे को, क्योंकि कुरुक्षेत्र चातुर्मास में गुरुदेव श्री सुदर्शन लाल जी म० सा० के दो-तीन समाचार आये कि ' सयम प्रभा जी आगे वढने से पहले मिलने का भाव रखना, भविष्य का कुछ पता नहीं। '

धन्नारी के श्रावक श्री गोतम जी वेद, सेठिया सभी आचार्य श्री जी के चरणों में पहुँचे ओर गुरु जी के 1999 के चातुर्मास की स्वीकृति ले ली। गुरु जी का उस क्षेत्र में जाने का मन तो नहीं था पर गुरु आज्ञा को शिरोधार्य करके प्रस्थान किया। इधर से 1993 के चातुर्मास में सुने प्रवचनों से प्रभावित अन्य आसपास के श्रावकों का चातुर्मास की विनती को लेकर तॉता लग गया लेकिन फरसना धन्नारी की प्रवल रही।

मई में जोधपुर में प्राकृतिक पद्धति से 20-22 दिन इलाज करवाया। इलाज में कोई दोप न लगे इसलिए आश्रम में ही रहते तथा अपनी साध्वियों से ही सारे काम करवाते थे। सेवाभावी किशोर जी वोहरा ने सराहनीय सेवा की। वडौत से कुसम जी०, अनुराधा जी दर्शनार्थ पहुँची तथा इलाज करवाते समय भी निर्दोपता का ध्यान देखकर अति प्रसन्न हुई।

गुरु जी 2-4 दिन विश्राम करने के लिए हाऊसिग वोर्ड कालोनी में पधारे। जहॉ साधु-साध्वी वर्षों में दो-चार दिन ठहरते थे। लेकिन गुरु जी को प्रवचन विना चेन नहीं रहती थी, मानो जीभ में खुजली होने लगती थी। वहॉ गुरु जी के प्रवचनों का इतना प्रभाव रहा कि उपाध्याय श्रीमान् मुनि जी म० सा० के सासारिक भाई धनपत जी सेठिया, मेहता जी आदि इतने प्रभावित हो गये कि एक महीने से पहले विहार नहीं करने दिया। श्री सुवोध जी म० आदि साध्वियों ने 3 3 कि०मी० गोचरी के लिए जाकर पुरुपार्थ किया, श्रावकों का कहना था कि प्रथम वार इतनी भीड देखने को मिली। वरिष्ठ श्रावकों ने आगामी चातुर्मासिक विनती की।

<u>धन्नारी मे धर्म क्रान्ति</u> – 1999 के धन्नारी चातुर्मास की रौनकों से सवकी जुवॉ पर यही वाक्य थे - कौन पजाव की साध्वी हे जिसने पूरे मारवाड को हिला डाला है, ऐसा

जबरदस्त प्रभाव इतना सुन्दर प्रवचन। सभी जैन-अजैन लोगों में धर्म की लहर सी आ गई। प्रथम वार दर्जी, सुनार, सोनी सभी जाति के लोग पौषध में देखे गए। 8 दिन पर्युषण पर्व में पूरा जैन बाजार बंद रहा। चातुर्मासिक ठाठ सुनकर पास में ही नगौर में विराजित आचार्य श्री हीरा मुनि जी म० सा० के पास दर्शनार्थी आते तो यही कहते कि यहॉ क्या आते हो, धन्नारी जाकर देखो कितनी रौनक है तथा मिलने का भाव दर्शाया। 200 साल से बसे इस क्षेत्र में प्रथम बार श्री चम्पा लाल जी वैद की धर्मपत्नो श्रीमती सुवाबाई का मास-खमण आसपास के क्षेत्रों के लिए आकर्षण का कारण बना। तपस्या के आडम्बर के लिए श्रावकों द्वारा काफी जोर डाला गया लेकिन गुरु जी ने स्पष्ट इनकारी कर दी।

अव्यवस्था तथा भूख के कारण मरती गायों को देखकर गुरु जी ने जीव दया पर प्रवचन दिया। श्रावक बोले-हम म० सा० के नाम से गौशाला खोलेंगे लेकिन गुरु जी नामैषणा से हमेशा दूर रहे इसलिए गऊशाला का संयम नाम रखने से स्पष्ट इंकार कर दिया। वर्षो से दान को लेकर चल रही समाज में कहा सुनी को गुरु जी ने एक दिन में ही निपटा कर संघ में प्रेम स्थापित किया। धन्नारी में गुरु जी ने एक दिन गुरुदेव रोशन लाल जी म० सा० की तरह गुप्त तपस्या करने की इच्छा जाहिर की। गुरु जी की शारीरिक सामर्थ्य देखकर मैंने 11 की गुप्त तपस्या करके गुरु जी की इच्छा पूरी की। श्रावकों के अत्यधिक पूछने पर गुरु जी ने पारणे के चौथे दिन प्रवचन में वताया।

धन्नारी में धर्म ध्यान के इतने ठाठ सुनकर आचार्य श्री जी की प्रसन्नता का पार नहीं था। जोधपुर में गुरुदेव श्री जी ने बहुत-बहुत शाबाशी दी। गुरु जी ने दक्षिण दिशा में बढ़ने की भावना रखकर गुरुदेव से आज्ञा मांगी। आचार्य श्री जी प्रसन्नता से वोले-मुझे उम्मीद है आप ही दक्षिण में जयगच्छ का नाम रोशन करेंगी।

चिरयुग करती रहो धरा पर, जिनवाणी का विमल उद्योत,
अब बहा दो इस धरती पर, आध्यात्मिक का नव स्त्रोत।

जोधपुर में ज्ञान गच्छाधिपति श्री चम्पा लाल जी म० सा० के रायपुर की हवेली में दर्शन किए। वहाँ भी प्रकाश मुनि जी आदि संतों ने यही कहा-आपके प्रवचन के विषय में काफी प्रशन्सा सुनी है।

पाली (मेवाड़) में स्थानक का भाई कहने लगा-शेषकाल में 5-10 भाई-वहन ही आते हैं लेकिन जब सूचना की गई तो चौथे प्रवचन के दिन पाली का हाल खचाखच भरा था। तव भाई वोला-अन्नदाता, मुझे यहाँ वर्षों हो गए रहते हुए यहॉ बडे-वड़े आचार्य तक आ गये, पर शेष काल में प्रवचन में कभी इतनी उपस्थिति आज तक नहीं हुई थी। संघ ने चातुर्मास की विनती पर मुझे आगे जाना है-यह कहकर गुरु जी ने पीछा छुड़वाया। संघ में चर्चा थी कि संयम प्रभा जी का एक चातुर्मास तो अवश्य ही करवाना है। श्री प्रेम जी गान्धी आदि श्रावक विशेष समर्पित हुए। वहॉ पर विराजित ज्ञान गच्छ की साध्वियॉ श्री भँवर कुँवर जी म० सा०

के दर्शन किए।

<u>मीरा की नगरी चित्ताडगढ</u> – वहाँ महान साध्वी श्री जश कँवर जी म० सा० के दशन करके स्वय को धन्य वनाया। श्री जश कँवर जी म० सा० ने जोगनिया माता पर होने वाली वकरों की वलि को स्वय खडे होकर जान की वाजी लगाकर वद करवाई थी।

<u>भारत के हृदय मध्य भारत मे</u> – नीमच में जय गच्छ के महान सत आगम विवेचक गुरुदेव श्री पारस मुनि जी म० सा० के दर्शन हुए। वहॉ कई मामलों पर गुरु जी ने चचा की। गुरुदेव ने कहा – जिस रास्ते से आगे वढने की सोची है इस रास्ते से मग्ण योग है। इसलिए रास्ता वदल लें। गुरु जी ने कहा – 'में महाराष्ट्र न जाकर, भिलाई की विनती वहुत है उस तरफ विहार की भावना रखती हूॅ।' गुरुदेव ने आगाह किया, पहले स्वास्थ्य फिर विचरना ओर इस रास्ते महाराष्ट्र मत जाना। वदनावर में सम्प्रदायवाद के कटघरे में खडे श्रावकों ने गुरु जी के चातुर्मास की विनती की।

इन्दौर जानकी नगर में आचार्य श्री नानेश की साध्वियॉ श्री कमल प्रभा जी के दशन लाभ हुए। वहॉ के श्रावक ऐसा प्रवचन सुनकर दग रह गये तया 15 20 कि मी तक रोजाना प्रवचन सुनने आते रहे। श्रावकों की भरी आखों को छोडकर चातुर्मासिक विनती अस्वीकृत करके आगे वढे। मुमुक्षु-आत्मा कुमारी समता जैन दीक्षा के पूर्व वदनावर में दर्शनार्थ पधारी। उज्जेन में प्रकाश जी ने पानीपत निवासी श्री सुलेख चन्द जी से वहुत आग्रह किया कि आप के देश की साध्वियों का किसी तरह भी चोमासा करवा दो।

<u>विन मौसम वरसात</u> – भोपाल में धूमधाम से महावीर जयन्ती मनाई गई। सभी की जुवॉं पर ये ही शव्द थे मानो पर्युषण आ गये हैं। मारवाडी रोड का विशाल स्थानक के हाल में श्रोताओं की भीड हो जाती थी। ओली तप में गुरु जी ने भी 4 आयम्विल किए पर कमजोरी आने पर प्रवचन देने में असमर्थता होने से पारना कर लिया। शेप काल में भी वहॉ 9 दिन का 24 घण्टे का अखण्ड जाप वहुत अच्छी तरह से हुआ। वहॉं के अध्यक्ष श्री घेवर चन्द जी नाहर, फतह चन्द जी वाफना आदि श्रावकों ने जिद्द धार ली कि आपका चातुर्मास करवाना हे। गुरु जी ने समझाया – आप तीन दिन पहले ही विनती करके आए हो। कुछ श्रावक वोले तो आप उपाय वताओ कि वो विनती केंसिल हो जाए। गुरु जी ने समझाया-सभी साधु-साध्वी एक समान हें ऐसा सोचना शोभा नहीं देता।

नाहर जी ने सोचा पास में ही चोमासा हो जाए तो अगले वर्प हमें इनका चोमासा करवाना आसान रहेगा। तभी उन्होंने 200 कि मी पर वैतुल समाचार दिया। धनराज जी पगारिया आदि 6-7 श्रावक आये। गुरु जी ने क्षेत्र की जॉंच पडताल की तो पता चला 19 साल से चोमासा नहीं हुआ। क्षेत्र मात्र सराय हे। भूमि वजर हो चुकी है। भाईयों की लग्न शून्य हे। वेतुल की मनाही सुनकर नाहर जी ने लगभग 500 कि मी पर हिगन घाट समाचार भेजा कि पजाव की साध्विया आई हैं। सयम तथा प्रवचन वेमिसाल हैं। समाचार मिलते ही

सुभाष जी ओसवाल, नथमल जी सिंघवी आदि 5-6 श्रावक आये लेकिन गुरुदेव श्री पारस मुनि जी म० सा० के शब्दों को ध्यान में रखते हुए गुरु जी ने असमर्थता प्रकट कर दी तथा भिलाई का भाव है ऐसा जवाव दिया। लेकिन फरसना प्रवल थी, श्रावक कहने लगे - स्वीकृति लिए विना जाएंगे नहीं और न चाहते हुए भी स्वीकृति पत्र लिखवा कर ले गये। मैंने कहा- गुरु जी, बिना क्षेत्र देखे तथा जानकारी किए विना चौमासा कैसे खोल दिया ? गुरु जी ने कहा - **अपने पुरुषार्थ से कैसा भी क्षेत्र हो जगाया जा सकता है।**

वाणी का आकर्षण -- भोपाल में एक रात के लिए बीच में कोहे फिजा कालोनी में ओम प्रकाश जी मुंदडा के घर ठहरे। मात्र एक रात्रि की धर्म चर्चा में वाणी ने मुंदडा परिवार को वांध दिया। मुंदडा जी ने 8 दिन तक अपनी कोठी में ही प्रवचन करवाये। वे कहने लगे- म० सा०, मैं अकेला 50 लाख की स्थानक अभी बनवाता हूँ पर आप कहीं मत जाओ, यहीं रहो। "हमारा ऐसा कल्प नहीं" यह कहकर गुरु जी ने उन्हें समझाया। ज्ञान स्वरूप जी तथा नीलू जी ने कई नियम प्रत्याख्यान ग्रहण किये तथा ओम प्रकाश जी ने जावजीव के लिए ब्रह्मचर्य का नियम लेकर गुरु जी को वस्त्र बहराया। भोपाल से बिहार चातुर्मास की तरह ऐतिहासिक रहा। आष्टा में चन्दनमल जी बनवट परिवार खींचे आते रहे।

प्रवचन का करिश्मा - हिंगन घाट चातुर्मास के लिए प्रस्थान करते हुए बीच में बैतुल में दो दिन का पड़ाव डाला। मैंने धनराज जी पगारिया से प्रवचन के लिए कहा तो वे हँस कर वोले-म० सा०, यहाँ तो बड़े-बड़े संत आकर चले गए पर प्रवचन का मामला बस ऐसा ही रहता है। दिन में वहनों को सीखा देना। मैंने कहा - श्रावक जी, प्रवचन बिना मेरे गुरु जी ठहरने का भाव नहीं रखते। अगले दिन स्थानक.के कमरे में 4 भाई 12-13 वहनों की उपस्थिति में प्रवचन हुआ। पर पहले ही प्रवचन ने मानो जादू कर दिया। व्याख्यान की भीड़ वढ़ने लगी। स्थानक का हाल, दिगम्बर चैत्यालय, सनातन मन्दिर सभी जगह प्रवचन हुए, जगह छोटी पड़ने लगी।

अक्षय तृतीया 3 मई को हिंगन घाट श्री संघ चातुर्मास की घोषणा करवाने गुरु जी की सेवा में पहुँचा। क्षेत्र में इतनी जागृति देखकर बैतुल संघ ने खड़े होकर हिंगन घाट संघ के समक्ष झोली फैलाई कि आज के दिन श्रेयांस ने भगवान को आहार दान दिया था, उसी तरह तुम भी हमें आज के दिन चौमासे का दान दे दो। पर यह असम्भव था। तब सभी अजैन राजेश आहुजा, मांगी लाल जी सोनी, जैन नवयुवक आदि खडे हो गए और चौमासा घोषित नहीं करने दिया। तभी संघ अध्यक्ष श्री महावीर जी गोटी ने भरी सभा में खड़े होकर प्रतिज्ञा ली कि **"जब तक संयम प्रभा जी का यहाँ चौमासा नहीं होगा मैं अन्न जल ग्रहण नहीं करूँगा।"** सभा अचम्भित हो गई। गुरु जी ने कहा, अर्पण - आज तक 16 साल की दीक्षा में, गुरुणी जी के पास भी ऐसा कोई प्रसंग नहीं आया, अब तू संभाल इस धर्म संकट को। गुरु जी की आज्ञा से मैंने अध्यक्ष जी को समझाया तथा बाद में बैठ कर विचार विमर्श

करने की कहकर सभा विसजित कर दी। वाद में नोजवान वोले, म० सा० - चोमासा कैसे मिल सकता है ? गुरु जी ने कहा यदि आचाय श्री जी ने स्वीकृति पत्र नहीं भेजा होगा तो वे वदल सकते हें। तभी विमल सुराना आदि 4-5 नोजवान वैतुल से जोधपुर पहुँचे। लेकिन गुरुदेव के मुह से यह सुनकर मायूस हो गए कि कल ही आज्ञा पत्र भिजवा दिया हे। वापिस आकर डाकखाने से आज्ञा पत्र पकडने की कोशिश करने लगे तो गुरु जी ने समझाया - जो फरसना हे उसी को स्वीकारो। आप के क्षेत्र की अन्तराय थी। सघ ने आगामी चातुर्मास की विनती का वचन देने का आग्रह किया। गुरु जी वोले - कई वर्ष से मद्रास की विनती है इसलिए पीछे लोटना मुश्किल होगा, पर साधु भाषा में कहा-यहॉ चोमासा करने का भाव रखती हूँ।

वेतुल में करिश्मा दिखा कर नागपुर की तरफ वढे। अव इलाज करवाने के दिन भी आ गये थे। इसलिए चातुर्मास से पहले केवल इलाज का ही लक्ष्य था। हरियाणा निवासी पारस जी, चतुर्भुज जी आदि श्रावक पता लगते ही फोरन नागपुर से दर्शनार्थ आये। लम्वे समय वाद अपनी भाषा सुनकर अति प्रसन्नता हुई। फिर आगे श्रावक श्री सुमति प्रकाश जी म० सा० का सन्देशा लाए कि हम दो दिन रुकेंगे, मिलकर ही दुर्ग की तरफ विहार करेंगे।

नागपुर की तरफ विहार करते समय वेतुल सघ ने जहाँ 12 कि मी पर व्यवस्था की थी वहाँ तक पहुँचने पर गुरु जी वोले-अर्पण, अभी तो कुछ चले ही नहीं, कुछ आगे चलो। गुरु जी को ढूँढते हुए श्रावक जव वाद में 19 20 कि मी पर पहुँचे तो वे कहने लगे, अन्नदाता - यह हरियाणा नहीं है जहाँ मर्जी ठहर जाएँ। यहाँ शाकाहारी घर नहीं मिलते। इसलिए जहाँ व्यवस्था करें, वहीं ठहरना। गुरु जी वोले कि साधु की व्यवस्था उसके कधे पर ही हे। लेकिन उमारिया गॉव में दो ही शाकाहारी मिलने पर अपने हरियाणा की याद आ गई, वोले - जल्दी ही 2-4 साल में ही हरियाणा लोटना पडेगा।

27 मई को नागपुर पहुँचे। वर्धमान नगर में जाते हुए सामने से उपाध्याय श्री विशाल मुनि जी को लेने के लिए आते देखा तो गुरु जी शर्मिन्दा हो गए। 14 साल वाद दीक्षा गुरु के दर्शन करके मन को वडा आह्लाद हुआ। श्री सुमति प्रकाश जी म० सा० गुरु जी का प्रवचन सुनकर कहने लगे कि - "आज तक तो लोगो से सुना था पर आज प्रत्यक्ष मे प्रवचन सुना तो लगा वास्तव मे लगता ही नहीं कि कोई साध्वी योल रही हे।"

<u>सतरो की नगरी मे धूम</u> – नागपुर या आसपास में प्राकृतिक चिकित्सालय न होने के कारण इलाज रह गया। वहॉ के एक अनुभवी वैद्य धर्माधिकारी की जयन्ती भाई ने दवाई दिलवाई। वेद्य ने देखते ही वता दिया कि पूर्व में विना मर्ज के लम्वे समय तक अग्रेजी दवाईया खाई हं, इसलिए गुर्दे पर असर हुआ है। श्री तारा चन्द जी तथा श्री धर्म चन्द जी मुणोत सेवा में हर समय हाजिर रहे। गुरु जी ने जव प्रवचन किए तो सभी श्रावक कहने लगे – हमने

मौका हाथ से गंवा दिया। वैतुल से चातुर्मास के लिए समाचार तो आया था, लेकिन हमने नजर अन्दाज कर दिया। वरिष्ठ श्रावक नवलचंद जी पुगलिया, शीतल प्रसाद जी, मुणोत बेताला परिवार आदि श्रावक जिधर भी गुरु जी जाते, उसी कालोनी में प्रवचन का लाभ लेते।

कांग्रेस कालोनी के तपस्वी श्रावक श्री घेवर चन्द जी झामड ने विनती की, म० सा० - आप यहाँ चौमासा कर दो। मैं अकेला ही करवाऊँगा। जितने कहोगे मासखमण हो जाएंगे। अन्य तपस्या भी हो जाएगी। लेकिन स्वीकृति हिंगन घाट को दी हुई थी। 40 साल बाद अपनी गच्छ की साध्वियों का ऐसा जबरदस्त प्रभाव देखकर दिनेश जी बेताला आदि श्रावकों की खुशी का ठिकाना नहीं था। नागपुर में स्थायी छाप छोड़कर गुरु जी ने पवनार की राह ली। जहाँ संत विनोवा भावे ने जैन संथारा किया था। वहाँ से महात्मा गान्धी के आश्रम वर्धा आये। गुरु जी ने गुर्दे की जांच करवाई तो गुर्दे का आकार लगभग बराबर था। Blood Urea 48 तथा Creatnine 1 था। रास्ते में मधुर भाषी श्री मंगल प्रभा जी म० सा० के दर्शन हुए।

महाराष्ट्र विदर्भ में दीप्ता चातुर्मास – लगभग 1900 कि.मी. का विहार करके एकदम स्वस्थ शरीर से गुरु जी ने 2000 के चातुर्मास के लिए हिंगन घाट में प्रवेश किया। जब गुरु जी के मुंह में जिनवाणी झरने लगी तो 4-5 दिन में ही प्रवचन हाल छोटा पड़ने लगा। श्रावक बोले, म० सा० - श्री विशाल मुनि जी, श्री विलक्षण मुनि जी म० सा० ने हमें पहले ही कहा था कि जिस साध्वी का चौमासा करवाया है। उसके लिए प्रवचन स्थल की व्यवस्था कर लें तथा नागपुर से भी समाचार आये थे कि प्रवचन के लिए स्थानक हाल पर्याप्त नहीं है। लेकिन हमने सोचा था कि बड़े-बड़े आचार्यो के चौमासे इसी स्थानक में हुए हैं इसलिए गौर नहीं किया। चौमासे के बाकी दिन मौसम को छोड़कर सभी प्रवचन प्रथम बार कटारिया भवन में हुए। धर्म ध्यान की लहर आ गई।

एक वहन विमला मुणोत आकर वोली, म० सा० - मेरी देवरानी नवकारसी नहीं कर पाती, उसे आशीर्वाद दो। गुरु जी ने बुलाया, मांगलिक सुनायी तथा कल नवकारसी करना ऐसा कह दिया। अगले दिन वहन ने ऐसी नवकारसी की कि फिर तो मासखमण व्रतों को करके ही पारना किया जो सवके लिए एक आश्चर्य था। मिट्ठु जी लालवाणी हमेशा यही कहते थे कि म० सा०, आप के पास कुछ न कुछ तो शक्ति है जो संवत्सरी को भी स्थानक में न आने वाला रोजाना सामायिक में बैठता है तथा नवकारसी भी न करने वाली 31 उपवास साता से कर गई।

चातुर्मास काल में भाग चन्द्र जी ओस्तवाल, श्री धर्म चन्द जी गोलच्छा परिवार, निर्मला जी खिंवसरा की सेवा अविस्मरणीय रही। मुणोत परिवार ने तपस्या के ठाठ लगा दिए। राजा सुराना, नितिन लुणावत आदि नौजवान कहते थे कि हमारी पुण्यवानी है जो हमें एक अच्छी मार्गदर्शिका मिली। एक मिनट की भी फुर्सत न होने पर भी 4 महीने सेवा में लगे। दिलीप गोलच्छा से सभी हैरान थे। दो वार स्थानक के पास के घरों में डाका डलने से वचा क्योंकि

वहाँ गुरु जी की कृपा से जाप चल रहा था।

रिखव गान्धी, चन्द्र जी, महेन्द्र मुणोत आदि तथा नागपुर के सभी श्रावकों ने आग्रह किया कि म० सा०, माइक लगा लो, 15-20 हजार लोग प्रवचन में आ जाएगे। गुरु जी ने कहा - भीड के लिए सयम नहीं लिया हे पहले जितने व्यक्ति बिना माइक सुनते हैं वे तो सुधर जाएँ। स्वास्थ्य एकदम बढिया चल रहा था पर एक गलती हो गई। नागपुर की दवाई मेरे अत्यधिक आग्रह के वाद भी छोड दी। एक दिन कुछ कमजोरी महसूस हुई तो श्री धर्म चन्द जी गोलच्छा ने शामराव वधारे जी वैद्य की दवाई दिलवाई। उस औषध की निर्दोष सेवा निर्मला खिवसरा ने की। चातुर्मास के अन्त में एक वार फिर खून की जाच करवाई तो गुर्दे एकदम ठीक थे लेकिन कहावत है व्यक्ति जव चलता हे तो कर्म परछाई की तरह उससे चार कदम आगे चलते ह। चातुर्मास, धर्म ध्यान, तप जप के ठाठ में व्यतीत हो रहा था। विदाई की चर्चाए हो रही थीं कि अचानक एक वार फिर कर्मों का सामना करना पडा। तवियत विगड गयी। डा० वोले-थोडा सा वोझ ओर रख लिया जाता तो कुछ भी हो सकता था। वस उस समय से अन्तिम दम तक उनका शरीर पूर्ण स्वस्थ कभी नहीं हुआ। कौशल्या मुणोत जी ने गुरु जी को समाला। हुकुमचद जी राका (अध्यक्ष), वसी जी आदि श्रावकों ने गुरु जी को स्वय को समालने के लिए आग्रह किया। स्थानक, मन्दिरवासी सभी श्रावकों की भीड जमा हो गई, एक वार तो सव घवरा गये।

गुरु जी के प्रति श्रावकों की कितनी गहरी श्रद्धा थी वह एक शव्द में वताना चाहती हू कि श्री राजेन्द्र जी डागा (पूर्व विधायक) ने गुरु जी के सम्वन्ध में कहा था कि इनमें आचार्य पद की योग्यता है।

यशस्वी चातुर्मास सम्पन्न कर विहार मद्रास (चेन्नई) की तरफ करने का भाव था लेकिन वेतुल सघ के श्रावकों ने पीछा नहीं छोडा। गुरु जी ने सोचा कि सोये क्षेत्र में जागृति आ जाएगी। वेसे भी अव गुरु जी को वजर भूमि में फूल खिलाने की इच्छा पैदा हो गई थी। गुर्दे की दवाईया विल्कुल वद हो गई थी लेकिन शायद इस तनाव का फिर असर हुआ। एक दिन वहन जय श्री राका की आखें भर गई कि म० सा० दवाईया लेते रहें। पर गुरु जी ने कहा कि रिपोर्ट वरावर ठीक हे। वस अर्पण की चिता रहती हे। वहा 6 साल की गुड्डु गोलच्छा को पूरा प्रतिक्रमण कण्ठस्थ है। पूनम चद जी सिघवी आदि श्रावक यही कहते थे, पहली साध्वी देखी हे जो अमीर-गरीव का भेदभाव नहीं करती। नादूरकर जी ने प्रभावित होकर गुरु जी को मराठी सिखाई। सेवाभावी भाग चन्द्र जी ओस्तवाल, दिलीप जी, शीला जी, रिखव जी गान्धी विहार में आ-आकर गुरु जी को सम्भालते रहे। भोपाल, वेतुल, नागपुर के विचरण तथा हिगनघाट के चातुर्मास ने विना कार्ड पत्रिका के चारों तरफ सयम नाम गूजा दिया।

<u>चाँदा मे चाँद निकला</u> – चन्द्रपुर (चादा) में सुभाष जी दुग्गड परिवार जो सयम की कठोर क्रियाओं के पक्षधर थे। 20-25 वर्षों से साधु विशेषकर साध्वियों के सम्पर्क से टूटे

हुए थे लेकिन पूरा परिवार गुरु जी को समर्पित हो गया। क्योंकि वैतुल से उनकी वहन द्वारा फोन आने पर प्रकाश जी दुग्गड तथा दिलीप जी नागपुर, हिंगनघाट दर्शन करने आये थे। गुरु जी के मर्यादित, अनुशासित जीवन को देखकर दुग्गड़ परिवार दीपक पारख आदि वहुत प्रभावित हुए। चन्द्रपुर में ही हरियाणा निवासी श्री सतपाल जी तो गुरु जी के चरणों में नतमस्तक हो गये तथा गुरु जी की वीमारी सम्वन्धी पूरी सेवा करने का आग्रह किया। गुरु जी ने वहाँ के सफल चिकित्सक डॉ० तेलांग की दवाई ली। चन्द्रपुर (महाराष्ट्र) से छत्तीसगढ़ की तरफ वढ़ना था। लेकिन इधर से गुरु जी की अस्वस्थता सुनकर हमारे ही श्री चेतना जी म० सा० गुरु जी को संभालने इतनी दूर राजस्थान से पधार रहे थे इसलिए गुरु जी को वापिस मुड़ना पड़ा। चन्द्रपुर में विशेष संयम की छाप पड़ी, वहीं दाद गुरुणी जी का वापिस आने का समाचार आया।

चन्द्रपुर से वरोरा आये तो वहाँ युवकों पर ऐसा प्रभाव पड़ा कि सतीश कुमार, संचेती आदि 10-15 नौजवान जो शायद प्रथम वार स्थानक में भीतर वैठकर प्रवचन सुन रहे थे क्योंकि उनकी ही जुवानी थी कि वैसे तो हम आते नहीं, अगर किसी के ज्यादा जोर देने से आना पड़ा तो वाहर चवूतरे पर वैठते थे, कभी अन्दर नहीं आते थे। लड़कों ने चातुर्मासिक तैयारी कर ली तथा चन्द्रपुर के दिलीप जी दुग्गड़ तथा 10-15 लड़के रोज विहार में साथ रहने लगे। एक वर्ष तक वह युवा पीढ़ी चौमासे की भावना रखती रही लेकिन फरसना न होने के कारण उन्हें निराश होना पड़ा।

जैन मन्दिर मार्गी तीर्थ भद्रावती में मूर्ति पूजक सन्तों से मिलना हुआ। नाम से अवगत होने पर संत कहने लगे - हम तो आप से स्वयं ही मिलना चाहते थे, आपके प्रवचन के विषय में बहुत सुना है। वापिस हिंगनघाट आकर पुरानी हुई वार्ता का समाधान किया। वहीं दक्षिण से उत्तर भारत जा रहे संत श्री सुमन मुनि जी म० सा० के दर्शन किए। लेकिन हृदय विशालता का गुण सभी में नहीं पाया जाता।

श्री चेतना जी म० सा० का समाचार मिला कि (छत्तीसगढ़) दुर्ग पहुँचो, मैं वहीं मिलूँगी। नागपुर में मूर्तिपूजक विदुषी साध्वी श्री मनोरमा जी से प्रेम भरा मिलन हुआ। वे कहने लगी "**संयम प्रभा जी आश्चर्य है इतने अल्प समय में इतने बड़े मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र में नाम गूँज गया।**" पुनः श्री घेवर चन्द जी झामड़ आये, बोले अन्नदाता - मैं तेले-तेले पारना तथा जो चाहो सो करने को तैयार हूँ पर यहाँ चौमासा करवाना चाहता हूँ। पर गुरु जी अब बड़े-बड़े शहरों को छोड़कर सोये क्षेत्रों में पुरुषार्थ का सीर (हल) चलाना चाहते थे। वैतुल की विनती के कारण भी झामड़ जी को इन्कार करना पड़ा। जय गच्छ के श्रावक बोले-अन्नदाता, अन्य सम्प्रदाय का श्रावक इतनी विनती कर रहा है, कमाल हो गया।

अब तो श्रमण वर्ग भी गुरु जी से मिलने का इच्छुक रहने लगा। ज्ञान गच्छ की

साध्वियाँ श्री प्रवीण कँवर जी म० सा०, सुरेश जी ओस्तवाल की कोठी पर मिलने पधारीं। नागपुर में जय गच्छ के श्रावक बोले, अन्नदाता - छत्तीसगढ जा रहे हो। गुरु जी बोले चिंता मत करो। मेंने कहा श्रावक जी, इस शेर के सामने सब घुटने टेकते हैं। भडारा में नवरत्न मल जी बम्ब, श्री धर्मचन्द जी सुराना ने कहा-म० सा०, अभी 10 15 वर्ष इधर ही विचरना।

<u>छत्तीसगढ मे छा गये</u> – 17 फरवरी को मध्य प्रदेश से नये बने राज्य छत्तीसगढ में प्रवेश किया। 22 तारीख को श्री चेतना जी म० सा० से प्रतीक्षा के बाद स्नेह भरा मिलन हुआ। श्री चेतना जी म० सा० का धमतरी की तरफ विहार हो गया, गुरु जी राजनॉद गॉव पधारे। राजस्थान बावडी से चादमल जी भण्डारी आदि श्रावक जिनके पारिवारिक सदस्य दुर्ग में भी रहते हैं। वे दुर्ग की होली चोमासी की विनती लेकर आये। वहाँ वर्धमान नगर में प्रवचन में गुरु जी ने कहा - हमारा होली चोमासी दुर्ग करने का भाव हे। एक श्रावक ने बीच में खडे होकर प्रश्न किया, आगमों में कहीं 'होली' शब्द का वर्णन नहीं है फाल्गुण चोमासी बोलनी चाहिए। तब गुरु जी ने आगम के व्यवहार भाषा का उदाहरण देकर अध्यक्ष रानीदान जी का समाधान किया। शायद पजाब की साध्वियों की परीक्षा ले रहे थे। पर गुरु जी पर गुरु कृपा रही थी कि वे कभी परास्त नहीं हुए। इसी तरह पहले भी जयपुर में प्रवचन के बीच में श्रावक ने पूछ लिया था श्रेणिक के प्रवचन में, श्रेणिक राजा क्षायिक समकिती थे फिर आत्महत्या केसे की। तब वहाँ भी गुरु जी ने गति का बध, लेश्या तथा अन्य उदाहरण देकर भरी सभा में श्रावक को जवाब दिया था।

वर्धमान नगर में होस्टल में प्रवचन दिया वहॉ से मुख्य स्थानक में पधारे। जहॉ ज्ञान गच्छ की साध्वियॉ श्री कमलेश जी म० सा० विराजती थी, जो गुरु जी का एक प्रवचन सुनने की उत्सुकता रखती थीं। गुरु जी का प्रभाव बढने लगा, साध्वियाँ विहार कर गइ। प्रवचन में कट्टर सम्प्रदायों के श्रावकों की भीड उमडने लगी। श्रावकों का कहना था, 35-40 वर्ष बाद सभी सम्प्रदाय के लोग एक शतरजी (दरी) पर बैठ कर प्रवचन सुन रहे हैं। वरना तो जो गुरु आते हैं प्रवचन में उन्हीं के भक्त आते हैं। वहॉ के वरिष्ठ श्रावक प्रकाश जी साखला को बोले, जय गच्छ का ये रत्न तुमने कहॉ छुपा रखा था। हमें तो पता ही नहीं था कि जय गच्छ में भी ऐसी विदुषी साध्वियॉ हैं। जय सम्प्रदाय के श्रावक सज्जन बाई, पन्ना लाल जी पींचा के आखों में खुशी के मारे झर-झर ऑसू गिरते थे। 8 दिन में ही गुरु जी पूरी तरह छा गये। अन्य साधु साध्वी को वदना करने से जिनकी समकित खंडित होती थी, वे सभी श्रावक गुरु जी के समक्ष हाथ जोडे खडे रहते थे। झामड जी नागपुर से आकर चातुर्मास की इच्छा से दो दिन रहे पर गुरु जी ने पुन असमर्थता जता दी कि बेतुल जाने के भाव हैं।

राजनाद गॉंव के श्रावक नेता जी (श्री इन्द्र चन्द्र जी बैद) जो बडे व्यक्तित्व के कारण प्राय प्रवचन में नहीं आते थे, पर जब वे भी प्रवचन में आये तो उन्होंने सभा में ही प्रभावित होकर कहा, अन्नदाता, आप यहॉ विराजो तथा चोमासा करो मे रोजाना प्रवचन

में आऊँगा।'' यह सुनकर श्रावकों की खुशी तथा आश्चर्य का ठिकाना नहीं था। कई वार भरी प्रवचन सभा में गुरु जी से प्रश्न पूछे गए, पर गुरु जी ने कभी मात नहीं खाई। इधर से श्री चेतना जी म० सा० धमतरी से वापिस लौटे और अपनी साध्वी का इतना प्रभाव देखकर प्रसन्न हुए। 8वॉ दिन चातुर्मासिक विदाई समारोह की तरह रहा। गुरु जी ने दुर्ग की तरफ विहार किया।

स्वयं को ही श्रावक तथा अपने गुरुओं को ही साधु कहलाने वाले श्रावकों को गुरु जी के आगे नतमस्तक देखकर दुर्ग के भण्डारी परिवार की खुशी का पार नहीं था। तभी जयगच्छ के श्रावकों ने अपनी साध्वी का चौमासा करवाने के लिए संघ को अर्जी पेश की। जप-तप से होली चौमासी मनाई। वहीं से वापिस लौटने का भाव था लेकिन गुरु भक्त वबली वाई सोनी जो कि गुरु जी के दक्षिण पधारने की खवर सुनते ही नागपुर तथा हिंगन घाट विनती करने पहुँची थी। उनकी आग्रह भरी विनती को ध्यान में रखकर गुरु जी दुर्ग में मजबूत यश रूपी दुर्ग बनाकर भिलाई की तरफ प्रस्थान किया। वहॉ पर हरियाणा जींद जिले के निवासी ढेरों श्रावक मिले तो उनकी खुशी का ठिकाना न रहा कि अपने प्रान्त की साध्वियाँ पधारी हैं उन्हें काफी समय तक भजन कथा आदि सुनाई।

<u>करुणा की प्रति मूर्ति</u> – भिलाई जाते समय सड़क पर किसी नवयुवक का स्कूटर से दुर्घटना का दृश्य देखकर गुरु जी पर बेहोशी छाने लगी, मैंने गुरु जी को हाथों में लिया तो गुरु जी कहने लगे, अर्पण- उस भाई को देखो। श्रावक भी जब घायल भाई को नजरअंदाज करके चलने का आग्रह करने लगे तो गुरु जी ने फटकारा, ''वाह रे दया धर्म को मानने वालो, जाओ पहले भाई को संभालो।'' भिलाई में एक ही प्रवचन से जादू करके बबली बाई की भरी आंखों को छोडकर, श्रावकों की चातुर्मास की आग्रहपूर्ण विनती को छोड़कर वापिस दुर्ग की तरफ मुड़ गये। रायपुर में पधारने का इन्तजार देख रहे श्रावक सम्पत जी नाहर वापिस विहार का पता लगते ही रास्ते में आये और रायपुर पधारने की बहुत विनती की। समयाभाव के कारण गुरु जी आगे नहीं बढे।

श्री चेतना जी म० सा० ने कहा-'संयम' बस अब राजस्थान चलना है तुम्हारा स्वास्थ्य ठीक नहीं है। गुरु जी ने स्वास्थ्य को देखते हुए सहर्ष आज्ञा को स्वीकार किया। इधर राजस्थान जाने की खबर मिलते ही वैतुल के श्रावक दुर्ग पहुंचे और चातुर्मास का अत्यधिक आग्रह किया। गुरु जी ने सोचा कि एक सोया क्षेत्र जाग जाएगा। तव श्री चेतना जी म० सा० की आज्ञा लेकर संघ को आश्वासन दिया कि यदि स्वास्थ्य अनुकूल रहा तो आने का भाव रखती हूँ। छत्तीसगढ़ के श्रावकों का भी अत्यन्त आग्रह था कि अन्नदाता 2-4 साल यहीं विचरो ताकि लोगों को पता चले कि कोई और भी संयमी साध्वी इस धरा पर है। दुर्ग में किशन भण्डारी, भिलाई की बवली वाई सोनी आदि सभी श्रावकों का यही कहना था, 'अन्नदाता हम तो घबरा रहे थे लेकिन आपका नाम तो हर व्यक्ति के मानस पटल पर अंकित

हो गया है।

दूसरे मुल्क से आई साध्वी ने 16 दिन में ही छत्तीसगढ जैसा इलाका हिला दिया ऐसा देखकर अन्य समुदायों के आचार्यों को अपनी दुकानदारी उखडती दिखी। उन्होंने तभी छत्तीसगढ के लिए साधु-साध्वियों का विहार करवा दिया कि सयम प्रभा जी का एक भी चोमासा हो गया तो सव श्रावक उसी के हो जाएगे। परन्तु गुरु जी ने कभी किसी को अपना निजी श्रावक नहीं बनाया, वे तो महावीर का वनाते थे। इसलिए अक्सर प्रवचनों में फरमाते थे कि आज श्रमण वर्ग श्रावकों को अपने से जोडता हे ओर महावीर को पीछे छोड दिया है। गुरु जी कहते थे कि शासन भगवान महावीर का चलना है, किसी सम्प्रदाय का नहीं। उधर ज्ञान होने पर भी इतनी सम्प्रदायवाद की वीमारी को देखकर गुरु जी ने अपने प्रवचनों में फरमाकर लागों की आखों से सम्प्रदायवाद के चश्मे उतारे। तेरे-मेरे के जाल में फसे श्रावकों को गुरु जी ने 36 अक को छोडकर 63 की तरह रहने की शिक्षा दी। छत्तीसगढ में अपने सयम, सरलता, विशालता तथा प्रवचन द्वारा अमिट इतिहास लिखकर गुरु जी ने श्री चेतना जी म० सा० के साथ मध्य प्रदेश की तरफ विहार किया।

महाराष्ट्र, छत्तीसगढ के यशस्वी दौरे के लिए श्री चेतना जी म० सा० ने ढेरों वधाईयाँ दी। गुरु जी के लिए इतना चलने के वाद अव चातुर्मास से पहले 2000 कि मी चलना मुश्किल दिख रहा था, तव उन्होंने श्री चेतना जी म० सा० को विनती की, आप पधारो में धीरे-धीरे करके अगले साल राजस्थान पहुचने का भाव रखूगी। क्योंकि इधर बैतुल वालों में इतनी जागृति आई हुई थी कि जैसे ही वहा के श्रावकों को पता चला था कि म० सा० तो राजस्थान जा रहे हैं। राजेश गोठी आदि नवयुवक कहने लगे कि नये वन रहे स्थानक भवन में अव एक ईंट भी नहीं लगेगी, काम वद करवा दो यदि म० सा० चौमासा नहीं करेंगे। इसलिए श्री चेतना जी म० सा० श्री रविप्रभा जी को लेकर, तथा सग में आई दिव्य श्री जी को छोड गए तथा राजस्थान की तरफ विहार कर दिया। गुरु जी ने कहा-म० सा०, आपका यह उपकार सदा स्मृति में रहेगा। मेरे लिए इतना कष्ट सहकर इतनी दूर पधारे। श्री चेतना जी म० सा० ने स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहने की सलाह दी।

वैतुल की नौजवान पीढी की इतनी लगन देखकर रावणवाडी में गुरु जी ने चोमासा घोषित किया। मध्य प्रदेश के क्षेत्रीय कठिनाईयों को मस्ती से सहते हुए गोंदिया पधारे। मन्दिर मार्गी आशाजी दिलीप चोपडा परम निष्ठावान वने। कटगी में रामचन्द्र जी पींचा कहते थे- अन्नदाता, इस भव का तो यह ज्ञान नहीं लगता।

पता नहीं गुरु जी का कर्म पीछा क्यों नहीं छोडते थे। यश मिला तो परेशानियों ने पीछा नहीं छोडा। पर गुरु जी कहते थे-अर्पण, भ० फरमाते हैं - कडाण कम्माण न मोक्ख अत्थि। छत्तीसगढ से निकलते ही किसी अनजान व्यक्ति द्वारा परेशानी देना शुरू हो गया, श्रावक तो कहने लगे, म० सा० - आपकी इतनी कीर्ति किसी से वर्दाश्त नहीं हो रही है।

वालाघाट में महावीर जयन्ती तथा ओली तप मनाये। ताराचंद जी लोढा, दीपचन्द जी नाहटा, भैरुदान जी पगारिया आदि श्रावक कहते थे-म० सा०, संयम के प्रति इतनी जागरूकता तथा ऐसा प्रवचन पहली बार देखा तथा सुना है। संजय, पंकज सभी नौजवान कहते सुने गए कि ऐसे निर्लेप साधु-साध्वी होंगे तभी नवयुवक धर्म के सन्मुख होंगे। मूर्तिपूजक श्रावक प्रकाश जी लोढा तथा ज्योति जी ने छोटी वय में ही गुरु जी से अनेक नियम ग्रहण किए तथा उन के चरणों में अटूट श्रद्धा जम गई। विहार न करने देने की स्थिति में चुपचाप विहार करने पर श्रावक प्रवचन के समय स्थानक खाली देखकर विहार में दौड़े तथा आंखों में पानी भर लाए।

कायदी में एक ही जैन घर होने के कारण जब अन्य घरों में गवेषणा के लिए गए तो वह श्रावक बहुत बड़बड़ाने लगा, वोला - सभी साधु-साध्वियां मेरे ही घर से आहार लेते हैं। कौन से शास्त्र में लिखा है कि दूसरी जाति के घरों से गोचरी लाना ? गुरु जी को जब आकर मैंने कहा, तो गुरु जी ने उसे फटकारा तथा कहा भ० महावीर ने फरमाया है। उच्च-णीय-मज्झिमाइं कुलाइं। वह चुपचाप घर जाकर बैठ गया।

<u>बारासिवनी में बरसी जिनवाणी</u> – बारासिवनी के रास्ते में अचानक बरसात आ जाने के कारण एक कबूतरों की कोठरी में 2-3 घण्टे रुकना पड़ा। सुभाष जी लोढा आदि आये श्रावकों के परेशान होने पर गुरु जी ने कहा-यह कबूतर भी तो सारा दिन कैद रहते हैं और इस आत्मा ने कितनी बार बंधन भोगे हैं। वारासिवनी में एक ही घर स्थानकवासी होने के कारण दो दिन ही ठहरने का भाव था, लेकिन वहां के दो श्रावक चम्पालाल जी संचेती, मांगी लाल जी बैदमुथा ने बालाघाट में गुरु जी के प्रवचन सुने थे। मुथा जी को जब यह पता चला कि म० सा० पधार गये हैं तो वर्षी तप के पारने हेतु जाने के लिए की जा रही पालीताणा की तैयारी को मद्रास में बेटे को समाचार देकर कैंसिल करवाई। सभी बसें, धर्मशालाएं कैंसिल करवा दी। तप त्याग से अक्षयतृतीया मनाई। सभी मन्दिर मार्गी श्रावकों ने बैतुल समाचार कर दिया कि हम चौमासा यहीं करवाएंगे। प्रवचन हाल खचाखच भर जाता था। संचेती परिवार गुरु जी के प्रति श्रद्धावान बन गये। विशाल जन समूह ने सानन्द विहार करवाया। विनोद जी संचेती विहारों में भी आते तो यही कहते कि म० सा० किसी भी लड़की को वैराग्य से भर कर ले जाओ। रास्ते में गुरु जी ने 40 दिन का मौन ग्रहण कर लिया।

<u>जंगलो में निडरता, पहाडों में दृढता</u> – मध्य प्रदेश में बड़े-बड़े जंगल हैं, लेकिन गुरु जी जरा भी घबराते नहीं थे। श्रावक कहते - म० सा० इतने विशाल घने जंगलों में भी अकेले विहार कर रहे हो, इतनी निडरता प्रथम बार देखी है। जंगली तथा आदिवासी इलाका होने के कारण आहार पानी की विशेष जोगवाई नहीं थी, तो श्रावक कहते-यहाँ तो वडे-वड़े साधु-साध्वी भी ऑख मीच लेते हैं। पर आप तो लाया या बनवाया हुआ कुछ लेते नहीं। तब गुरु जी कहते थे-परिषह की अग्नि में तप कर ही साधुत्व की परख होती है। विहार यात्रा कठिनाईयॉ में भी निर्दोषता का ख्याल रखती हुई निर्बाध गति से चलती रही।

यात्रा ने छिदवाडा में पडाव डाला।

पहाडो मे गूँज उठी – छिडवाडा पहाडी इलाका, धर्म की लगन शून्य होने के कारण कभी साधु-साध्वियों का आगमन विशेष नहीं हुआ था। क्योंकि छिदवाडा जाने के लिए पहाडी तथा क्षेत्रीय कठिनाईयों का जवरदस्त मुकावला करना पडता है। पूव छिदवाडा में दो दिन ही ठहरने का भाव था। लेकिन उन पहाडों में भी सिहनी की आवाज गुजायमान हो गई। मन्दिर मार्गी अध्यक्ष सिद्दमल जी वेदमूथा का कहना था-म० सा०, हमारे नोजवान पहली वार जल्दी उठकर प्रवचन में आ रहे हें वरना तो हमारे भी आचार्य आकर चले गए लेकिन युवक न मन्दिर जाते हे न कभी प्रवचन में आते। छिदवाडा के लिए यही जानकारी थी कि वहॉ सभी मन्दिर मार्गी घर है लेकिन कोठारी वाघरेचा नाहर सभी परिवारों को वापिस अपने मूल स्थानक वासी धर्म में स्थित किया। सभी को मुह पत्तिया वधवाई। डा० नाहर जी को रोज प्रवचन में प्रथम वार उपस्थित देख सभी के आश्चर्य से आखें खुली रह गयी। सदीप वाघरेचा की अटूट श्रद्धा एक यादगार वन गई। किसी को तो ईर्ष्या पैदा हो गई कि हमारे आचार्य आते हें तो कोई नहीं आता। पर गुरु जी ने इन वातों की तरफ कभी ध्यान नहीं दिया।

गुरु जी को वर्ष भर से चल रही असज्झाए के कारण सभी जगह डाक्टरों ने यही कहा था कि युटरेस निकालना होगा। गुरु जी के कहने से नागपुर तथा पाढर आदि जगह डाक्टरों से वातचीत हो गई थी। वेतुल में ही आप्रेशन करवाना है। लेकिन गुरु जी पर अगाध श्रद्धा रखने वाले डा० नाहर ने एक वार डी एन सी करवाने की सलाह दी। नागपुर से डी एन सी रिपोर्ट आई कि युटरेस में कोई खरावी नहीं है। लेकिन डी एन सी करवाने के वाद गुरु जी को रक्त स्राव एक दम वद हो गया। वहॉ भी डाक्टर को कच्चे पानी के उपयोग की मनाही की गई तथा पानी भी नाली में नहीं फेंकने दिया गया। यह सव देखकर सध्या जी हैरान हो गई कि इलाज में भी सयम की मर्यादा का कितना ख्याल है।

जाँच पडताल के वाद पता चलने पर गुरु जी ने डाक्टरनी पाडे जी को प्रतिज्ञा करवाई कि आज के वाद आप गर्भपात जेसा पाप कार्य न करेगीं। पाण्डे जी ने दवाखाने के वाहर वडा वोर्ड टगवा दिया-यहॉ गर्भपात नहीं होगा। गुरु जी का यही विचार रहता था, जिसकी सेवा ली हे हम भी उसे कुछ दें। डा० वोले डी एन सी के वाद पैदल चलना असभव है। इसलिए कार में जाना होगा, पर गुरु जी ने मनाही कर दी। मेरे द्वारा पहिये वाली कुर्सी पर चलने के आग्रह को स्वीकृति नहीं मिली। मेरा सहारा लेकर गुरु जी कुछ कदम चले लेकिन चलने की असमर्थता लगी तो मेरी तरफ देखा और मैं गुरु जी को उसी समय गोदी में उठाकर स्थानक ले गई। छिदवाडा वालों ने वेतुल से अगला चातुर्मास करने की पुरजोर विनती की। (यहाँ 40 दिन के लिए चल रहे मोन को पूर्व में रखे आगार के अनुसार वोलकर नौजवानों के समाधान किए।) 14 दिन वहाँ रहकर प्रत्येक दिल में याद वसाकर विहार किया। छिदवाडा का विहार भी एक यादगार वना।

छिंदवाडा के पश्चात् पुनः पहाड़ी आदिवासी क्षेत्र, गुर्दे की तकलीफ होने के बावजूद भी आहार पानी में दोष नहीं लगाया। एक दिन सेवक रणवीर सिंह की आंखों में पानी आ गया। वह कहने लगा कि सब साधु-साध्वियाँ ले लेते हैं विहारों में तो, आप तो पानी तक भी नहीं लेते। गुरु जी ने कहा- रणवीर, सब नहीं लेते हैं। मेरी आत्मा इस तरह लेना स्वीकारती नहीं है। रास्ते में बैतुल से जयन्ती गोठी, रविन्द्र गोठी विहारों में साथ रहने आये, उनका भी यही कहना था कि हमारे आने को कोई अर्थ नहीं है, जब आप हमारी कुछ सेवा लेते नहीं।

ऊसर धरती बनी उपजाऊ – घने जंगलों, ऊँची-नीची पहाड़ियों को पार करते हुए तथा धर्म का उद्योत करते हुए गुरु जी का 24 तारीख को बैतुल गंज में केवल चन्द जी तातेड़ के बंगले पर विशाल जन समूह की उपस्थिति में प्रवेश हुआ। चातुर्मास के काफी दिन पूर्व पधारने का कारण था गुरु जी कुछ शारीरिक थकान मिटाना चाहते थे। 2 जुलाई को 2001 के चातुर्मास के लिए कुछ गिने-चुने लोगों ने चातुर्मास के लिए स्थानक में प्रवेश करवाया। गुरु जी को मैं बोली-ओ मेरे गुरु जी, फँस गए लगता है। गुरु जी हॅस कर बोले-अर्पण, कभी प्रवेश नहीं देखना, विहार देखना चाहिए। स्थानक भवन में गए तो कहने को भवन था मगर मात्र ईटों की दीवारें ही खड़ी थी तथा फर्श भी कच्चा था। गुरु जी ने आदेश दे दिया था कि मेरे प्रवेश के बाद निर्माण कार्य एकदम बंद रहेगा। चातुर्मास प्रवेश के स्वागत में सभी ने प्रत्याख्यान लिए। श्रावकों ने चौमासे के कार्ड-पत्रिका छपवाने का आग्रह किया। गुरु जी ने समझाया कि जब क्षेत्र में धर्म ध्यान जोरों से होता है तो तप-जप की सौरभ अपने आप सभी को सन्देशा दे देती है।

50 साल पूर्व कभी हुए एक मासखमण के बाद जब व्रतों के मासखमणों की झड़ी लगी फिर श्रावकों ने कुछ आडम्बर करने की आज्ञा चाही तो गुरु जी ने एक सुन्दर उदाहरण दिया कि **'फूलों के खिलने पर कभी भँवरों को निमन्त्रण नहीं देना पडता। उसकी खुश्बू से वे स्वयं खींचे चले जाते हैं।'** कुछ जिद्दी प्रकृति के लोगों द्वारा मासखमणों में समाज के भोजन (स्वामी वत्सल) आदि की तैयारी की योजना का जब गुरु जी को पता चला तो फौरन प्रवचन में चेतावनी दे दी गई कि यदि कुछ भी तप में आडम्बर, खाना-बाँटना, लेना-देना हुआ तो प्रत्याख्यान मेरे द्वारा नहीं दिए जाएंगे जो पूरे चातुर्मास काल के लिए एक शिक्षा बन गयी। वरिष्ठ श्रावक श्री विरदी चन्द जी गोठी, श्री मोहन लाल जी तातेड़, श्री कुशल चन्द जी बोथरा आदि श्रावक तो अकसर यही चर्चा करते कि ऐसी पुरुषार्थी, ज्ञानवान, सरल स्वभावी साध्वी मिलना दुर्लभ है। श्री जवाहर लाल जी पगारिया जी तो एक ही विनती करते रहे कि म० सा० प्रवचनों की कैसेट बनाने दो, परन्तु गुरु जी कहते - कैसेटों से जीवन नहीं बदलते और बनाने नहीं दी। विधायक श्री विनोद जी डागा अत्यधिक व्यस्त रहते हुए भी प्रथम बार प्राय. प्रवचन में आते थे और कहते - ऐसी साध्वी मैंने आज तक नहीं देखी। श्रावकों का कहना था कि म० सा०, छत्तीसगढ़ से आपकी इनकारी आने के बाद अन्य

साधु-साध्वियों के चोमासा करने के संदेशे आने लगे, पर हमने यह कहला दिया कि "यहाँ चामासा होगा तो सयम प्रभा जी का वरना नहीं।"

प्रारम्भ में एक उपवास भी शाम को 4 बजे चाय पीकर खोलने वाली आशा गोठी तथा सास की तकलीफ में रहने वाली श्राविका इन्द्रकला तातेड आदि वहन-भाइयों के व्रतों के 9 तथा तप करने में अशक्त 3 वहनों के आयम्बिल के मासखमणों ने मात्र 50 50 घर होते हुए सबको चोका दिया। समस्त वेतुल में ये ही स्वरों की गूँज थी-जिसे लम्बी तपस्या करनी है वे इस चातुर्मास में कर लें, आगे असम्भव है। सत्सग प्रेमी प्रथम वार जेन सतों से प्रभावित हुए, उनमें डा० पोपली, चदु लाल जी थारवानी आदि श्रावक तो गुरु जी के प्रति इतने श्रद्धावान वन गये थे कि वे कहते थे -

आप वादल नहीं स्वय आसमान है, आप पुष्प नहीं स्वय उद्यान है,
क्या कहने आपकी सरलता, प्रवचन शैली के, आप पुजारी नहीं स्वय भगवान है।

पानीपत से दर्शनार्थ आये सघ ने जव सवत्सरी के काफी दिन वाद भी प्रवचन में इतनी भीड तथा चल रहे मासखमणों तथा अठाईयों के ठाट देखे तो अध्यक्ष श्री रोशन लाल जी की खुशी के मारे आखें भर आई तथा कहने लगे-म० सा०, इतनी दूर अनजान जगह में आपका इतना प्रभाव देखकर हमें आप पर गर्व होता है। गुरु जी ने दिगम्वर, मूर्तिपूजक, स्थानक वासी सभी की भावनाओं को वरावर सम्मान दिया। इसलिए गुरु जी के असम्प्रदायिक दृष्टिकोण से लोग विशेष प्रभावित थे।

चातुर्मास के दौरान जैन-अजेन सभी की गुरु जी के जी प्रति अटूट श्रद्धा जमी। घटना – एक अजेन भाई जिसकी गाय को साँप ने डस लिया वह आकर वताने लगा-म० सा०, मेंने डक लगी जगह पर आपका नाम वोल-वोल कर हाथ फेरा। थोडी ही देर में गाय ठीक हो गई। गुरु जी जो सम्मान से दूर रहते थे, वे वोले-भाई तेरी श्रद्धा ने चमत्कार किया, मेरे पास तो कुछ नहीं है।

प्रवचन में उमडता सेलाव एक आश्चय वन गया। वहाँ के लोगों की जुवानी थी कि म० सा० - यहाँ तो वडे-वडे साधु-साध्वी भी आते थे तव मीना वोथरा के चार चालक या सामने सोनी जी को वेठाकर एक भाई की साक्षी से प्रवचन शुरू होता था ओर अव नजारा कुछ ओर है कि आप के आने से पहले इतने जैन-अजेन आकर इन्तजार करते हैं कि कव वो अद्भुत शक्ति पाटे पर आकर जिनवाणी का रस पान कराएगी। हिसार से सावित्री शर्मा ने आकर पुन हरियाणा लोटने की विनती की।

गुरु जी की कमर में दर्द हो गया था। उसका कारण मोसम की अनुकूलता माना गया। तव रविन्द्र गोठी ने अच्छे अनुभवी वेद्य की दवाई दिलाई तथा दीपक मेहता, नवीन तातेड, राजू गोठी ने गुरु जी के अच्छे स्वास्थ्य के लिए काफी मेहनत की। दिगम्वर वहन कृष्णा जी जो

गुरु जी से अत्यन्त प्रभावित थी। रोजाना एक्युप्रेशर करने आती रही।

बैतुल क्षेत्र के पूर्वज बहुत बड़े-बड़े जागीरदार रहे हुए होने के कारण जमीन जायदाद दौलत के मालिक थे। वहाँ की नौजवान पीढी में व्यसनों की भरमार थी। राजू तातेड़ जैसे नौजवान एक-एक दिन में 30-35 पुड़िया गुटके की खाते थे। गुरु जी ने घर-घर जाकर नवयुवकों को व्यसन मुक्त किया तथा बड़ों के जीवन को मर्यादित किया। स्थिति ये थी कि पनवाड़ी भी यह पूछते थे-महाराज, आप कब जाओगे ? दिवाली पर तेले करके कमरे से बाहर निकलने पर गुरु जी को मैंने 112 व्रतों के तेलों की भेंट दिया।

चातुर्मास में संघ की आज्ञा से कुशल मंच संचालक अतुल पगारिया ने गुरु जी को **व्याख्यान वाचस्पति** की पदवी दी। लेकिन गुरु जी ने पदवियों से हमेशा स्वयं को दूर रखा।

बंजर बनी पथरीली भूमि में गुरु जी ने पुरुषार्थ रूपी सीर (हल) से पत्थर में धर्म के रंग-बिरंगे पुष्प खिला दिए। उजाड़ सरीखी भूमि को गुलिस्ताँ बना दिया। साधु-साध्वियों के लिए उपेक्षित रहा क्षेत्र अब अपेक्षित हो गया। एक चिरस्थायी यादगार भरा चातुर्मास सम्पन्न करके गुरु जी बैतुलवासियों के लिए भगवान कहे जाने लगे।

दो वर्ष से प्राकृतिक चिकित्सालय की उपलब्धि न होने के कारण इलाज न हो पाया इसलिए चातुर्मास उपरान्त लक्ष्य केवल इलाज का था। उसके आसपास में चिकित्सा केन्द्र के न होने के कारण श्रीमान् कुशल चन्द्र जी बोथरा ने बडोदरा में साताकारी केन्द्र बताया। इसलिए गुजरात की तरफ कदम बढ़ाये।

बैतुल चातुर्मास की गूँज ने चारों दिशाओं में संयम नाम को गूँजा दिया था। परतवाड़ा में दो प्रवचन करके विहार के भाव से सड़क पर पहुँचने के बावजूद भी प्रभावित हुए श्रावक वापिस ले गए। वहाँ साधु-साध्वियों का आवागमन नहीं होता था लेकिन वहाँ के श्रावक इतने प्रभावित हो गए कि आगामी चातुर्मास की तैयारी कर ली गई। संजय बरड़िया, ज्योति जी की श्रद्धा अटूट बनी।

काफी दिनों तक बैतुल के श्रावक विहारों में साथ रहे ताकि गुरु जी के स्वास्थ्य में गड़बड़ी न आ जाए। अलका तातेड़ आदि श्राविकाओं ने विहारों में आकर गुरु जी के स्वास्थ्य को ध्यान में रखा। बाल श्रावक विशी तथा निशु एक दिन रोने लगे कि आप वापिस बैतुल चलो। मन्दिर मार्गी श्रावक श्री राज कुमार जी बोथरा जी ने आग्रह किया-म० सा०, हमारे फार्म हाऊस में विराजो। लेकिन गुरु जी का ध्यान केवल इलाज की तरफ था।

अमरावती में चौरड़िया जी, सामरा जी आदि श्रावक बोले - अन्नदाता मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, छत्तीसगढ़ में साधु साध्वियों में प्रवचन की गूँज केवल स्थानकवासी श्री प्रीति सुधा जी म० सा० तथा मंदिरमार्गी श्री मणि प्रभा जी म० सा० की है। सभी की धारणा है कि इनका

प्रवचन के क्षेत्र में कोई सानी नहीं हे लेकिन आपके प्रवचन ने सभी धारणाऐं निर्मूल कर दी तथा आपने तो उन्हें भी पीछे छोड दिया। पुन माईक लगाने का आग्रह हुआ कि 20 हजार लोग प्रवचन में होंगे लेकिन गुरु जी को भीड में विश्वास, रुचि नहीं थी। 26 जनवरी को वडनेरा पधारे। वहॉ पर अगले दिन सूर्योदय समय नाहर जी ने आकर दुखद समाचार दिया जिसे सुनकर हमारी खुशियों का सूर्य अस्त हो गया। हमारे पडदाद गुरुणी जयगच्छ साध्वा प्रमुखा श्री सुगन कॅवर जी म० सा० 26 दिसम्वर को प्रयाण कर गये हें। घोर वज्रपात हुआ सुनकर कि हमें प्रकाश दिखाने वाली दिव्य मणि खो गई।

आकोला होकर गुरु जी के चरण जव खामगॉव पडे तो उन्होंने कट्टर श्रावकों को भी हिला दिया। वहॉ ममता जी झामड की आखों में ये कहते-कहते खुशी के मारे पानी आ गया कि यहॉ के श्रावक किसी को हाथ तक नहीं जोडते परन्तु आप के चातुर्मास की विनती कर रहे हें। गुरु जी के वढते तूफानी प्रभाव को देखकर चारों तरफ साधु-साध्वियों को अपने श्रावक टूटने तथा अपनी दुकानदारी उखडने की चिता होने लगी। लेकिन गुरु जी का लक्ष्य मात्र सुन्दर जीवन का निर्माण करना था, वे फरमाते थे प्रवचनों में इधर के वर्तन उधर रखने से कोई फायदा नहीं, नये जेन वनाओ। श्रावकों को स्वय से जोडने वाले साधु-साध्वियों को गुरु जी का सकेत था। साधु को अपरिग्रही वनना हे तथा भगवन श्री राम प्रसाद जी म० सा० द्वारा रचित एक भजन सुनाते थे।

दुनिया के झूठे झगडो मे, ये सत फकीरी भूल गए।
आरो की गुलामी मे आकर, अपनी जहागिरी भूल गए।
घर छोडा पर चाह लगी, कितने ओर घर वनाने की।
त्यागी वन कर आह लगी, धन के ढेर लगाने की।
रस्ते की माज वहारो मे, मन्जिल आखिरी भूल गए ।

गुरु जी से श्रावक पूछते थे, वेतुल में आपके कितने श्रावक थे, तो गुरु जी कहते-भाई, सत का घर तो हर धमात्मा के दिल में हे। जव अपना ही घर छोड दिया तो अव क्या गिनती घर वनाने की ? पूर्व में भी नागपुर के श्रावकों ने कहा था-म० सा०, आपका परिचय नहीं हे फिर भी अनजान जगह वेधडक चातुर्मास कर लेते हो। गुरु जी ने समाधान किया था - साधु का शुद्ध सयम, मयादित जीवन ही उसका परिचय हे ओर सत हमेशा वेखौफ चलते हें।

गुरु जी से मिलने की जिनासा रखने वाले ज्ञान गच्छ के साधक श्री धन्ना मुनि जी म० सा० 2½ कि० मी० मलकापुर में अदर पधारे। मिलते ही उनका सवसे पहला प्रश्न था कि सयम प्रभा जी कान हे ? गुरु जी का परिचय पाकर एक वार तो वे आश्चर्य में पड गए, क्योंकि शायद उनकी कल्पना की सयम प्रभा जी कोइ पॅजाव की ऊॅची लम्वी चोडी साध्वी होगी, लेकिन शारीरिक दृष्टि से, दुवली सी साध्वी देखकर मेरी तरफ इशारा करके वोले कि हमने तो इन्हें समया था। सतों ने कहा कि वडी प्रसन्नता हुई आप से मिलकर, आपने

तो कुछ दिनों में छत्तीसगढ़ जैसे इलाके की नीवें हिला दी।

ऐदलाबाद में सम्प्रदायवाद की बीमारी फैलने के डर से परेशान श्रावकों ने विशाल हृदयी गुरु जी को रोकना चाहा। भूसावल तक शरीर में कुछ थकान महसूस होने लगी थी। वैतुल अध्यक्ष महावीर जी तथा आशा गोठी 10 दिन विहारों में साथ थे। तवियत के सुनकर वैतुल से निर्मला जी तातेड, संगीता गोठी आदि बहनें आई तथा आगे न बढ़ने का आग्रह किया। पानीपत से आये श्रावक श्री महावीर प्रसाद जी (गोल्ली वाले) कहने लगे-म० सा०, परदेश में आपका इतना यश, प्रभाव देखकर हमें गर्व हो रहा है।

जलगाँव पधारने पर पता चला कि कारणवश पूरे शहर में प्रवचन एक ही होता है। उस समय वहाँ नानेश गच्छ के श्री मोहन मुनि जी म० सा० का प्रवचन चल रहा था। पता चला कि संत दो दिन बाद विहार करेंगे। हम दो दिन सागर भवन में रहे। लेकिन दो दिन बाद फिर दो दिन और ठहरने की घोषणा हो गई। चार दिन बाद श्रावक समाचार लाये कि म० सा० दो दिन वाद विहार करेगें तथा आप को वहीं साथ प्रवचन करने का सन्देश भेजा है। दरअसल संत गुरु जी का प्रवचन सुनना चाहते थे, पर अस्वस्थता देखते हुए गुरु जी ने जाने में असमर्थता जता दी तथा इलाज में विलम्ब न करने की भावना से विहार की तैयारी कर ली, कमर बाँध कर सड़क पर सुभाष चौक पर आ गये लेकिन दानवीर तथा धर्मनिष्ठ श्रावक श्री रत्न लाल जी बाफना को जैसे ही विहार का पता चला तो फौरन हमें तलाशते हुए आये तथा हाथ जोड़ कर विनती की-अन्नदाता, आपके प्रवचन की बहुत तारीफ सुनी है। आप जलगाँव जैसे क्षेत्र में प्रवचन किए बगैर चले जाओ, ऐसा मैं नहीं होने दूँगा। श्रावक की विनती को मान देकर वापिस स्वाध्याय भवन की तरफ बढ़ रहे थे कि इधर मारवाड़ धन्नारी के तथा आसपास के नौजवान जो व्यापारिक कार्य से जलगॉव रहने लगे थे, उन्हें भी जैसे ही गुरु जी के पधारने का तथा विहार का पता चला तो किशोर भण्डारी, प्रकाश मूथा आदि 8-10 नौजवानों ने जलगॉव से बाहर जाने वाले सभी रास्तों पर गाडियॉ दौड़ा दी तथा गुरु जी को ढूँढा। स्वाध्याय भवन में लगभग 725 नौजवानों के बीच गुरु जी ने सामायिक पर प्रवचन दिया तो प्रभाव ऐसा पड़ा कि 4 प्रवचन् और करने पडे। बाफना जी बोले-म० सा०, आज तक नाम सुना था, पर वास्तव में ''आपकी आवाज में जादू है।'' वहॉ वाफना जी ने बड़े डा० को गुरु जी को दिखाया पर यहॉ पर गुर्दे की रिपोर्ट गडबड़ आई। लेकिन सभी डाक्टर विस्मित हो गये कि इतना यूरिया होने पर भी शरीर में कोई पीडा नहीं, पेशाव में तकलीफ नहीं, कहीं सूजन नहीं, गुर्दे खराव होने के वाहर कोई लक्षण नहीं थे।

सब बोले-म० सा०, आप तो एक आविष्कार की चीज हो गए हो क्योंकि इतना यूरिया बढ़ने पर भी निरन्तर विना वाधा के विहार कर रही हो। यह सव आपकी साधना का ही करिश्मा है। ऐसी स्थिति में तो मरीज पलंग से हिल भी नहीं सकता।

खबर मिलते ही वैतुल से सुगन चंद जी तातेड़, चंदू जी थारवानी आदि जैन-अजैन

15-16 व्यक्ति आये तथा विनती की कि म० सा० - आगे मत बढना। इधर हिगन घाट से दिलीप गोलच्छा जी के समाचार पे समाचार आ रहे थे कि आगे न बढें, शरीर के लिए ठीक नहीं होगा। डा० ने Dialysis करवाने की सलाह दी लेकिन गुरु जी ने सभी को आश्वासन दिया कि प्राकृतिक चिकित्सा से में बिल्कुल ठीक हो जाऊँगी।

गुरु जी के प्रवचन-प्रभाव को सुनकर 40 गाँव से श्री सुगन चद जी कांकरिया आये तथा चोमासे का विचार बनाने का आग्रह करने पर गुरु जी ने जवाब दिया-श्रावक जी, आप चोमासे की बात करते हो मेरा तो 40 गॉव अभी फरसने का भी भाव नहीं हे। धरण गॉव में विराजित श्री मोहन मुनि जी तथा ज्ञान गच्छ के स्वतन्त्र विचरने वाले सत श्री गजेन्द्र मुनि जी म० सा० तथा साध्वियों के दर्शन करने मुझे तथा दिव्य श्री जी को भेजा। सतों ने जाते ही नाम पूछा तो एकदम उत्सुकता वश बोले - क्या सयम प्रभा जी नहीं आये ? उन्होंने कहा उनसे मिलना चाहते थे, क्योंकि आजकल सब जगह उनके प्रवचन की ही चर्चा है। वेटावद, शिदखेडा होकर डोंडाईया पधारे। एक ही सम्प्रदाय से बधे कट्टर श्रावक, सयम के पक्षधर श्रावक गुरु जी के दृढ सयम तथा विशाल दृष्टिकोण से प्रभावित होकर चातुर्मास की विनती करने लगे।

नादुरबार के श्रावकों को जब यह जानकारी मिली कि सयम प्रभा जी पधार रहे हैं तो एक बार देखने, दर्शन करने की उत्सुकता को लिए विहारों में पधारे ओर विनती की-अन्नदाता शीघ्रातिशीघ्र पधारें, सभी आपका प्रवचन सुनने के लिए उत्सुक हैं। वहाँ प्रवचन से हर दिल पर सुन्दर छाप पडी। वहीं किशोर जी, रविन्द्र कोठारी ने सेवा में गुरु जी के चरणों मे स्थान बनाया तथा उन्होंने काशीनाथ भाई पटेल की दवाई दिलवाई। चोरडिया जी बराबर दवाई की सेवा में तैयार रहे।

सभी क्षेत्रों में गुरु जी का यशस्वी प्रभाव रहा, हर व्यक्ति उन चरणों में नतमस्तक था, लेकिन गुरु जी अकसर कहा करते थे-अर्पण, पूर्व भव में न जाने केसे कर्म उपार्जित किए हैं कि यश तो बहुत मिलता हे लेकिन वेदना भी पीछा नहीं छोडती। वह किसी न किसी माध्यम से परछाइ की तरह साथ लगी रहती हे। नादूरबार से विहार की तैयारी चल रही थी कि इधर से 27 फरवरी को गुजरात में गोधरा काड हो गया। श्रावकों ने आग्रह किया कि अन्नदाता, गुजरात में प्रवेश न करें, कदम-कदम पर खतरा हे, हर जगह कर्फ्यू है। गुरु जी ने समझाया - में जब तक बडोदरा पहुँचूँगी शायद माहोल ठीक हो जायेगा, मुझे इलाज करवाना अत्यन्त जरूरी हे। सघ अध्यक्ष आदि श्रावकों के आग्रह से गुरु जी विकट स्थिति में फॅस गये। इधर गिरती तबियत, उधर गुजरात के दगे। बेतुल, हिगन घाट, पानीपत से लगातार समाचार आने लगे कि गुजरात की तरफ न बढे।

श्रावकों को समझाकर कि इलाज करवाना मेरे लिए बहुत जरूरी हे, बुलद होंसले रख कर निश्चिन्तता से चलने वाले मेरे गुरु जी ने धर्म का शरणा लेकर गुजरात की तरफ कदम

बढ़ा दिए। रास्ते में खापर में जब गुरु जी ने शहर के अन्दर प्रवेश नहीं किया तो मन्दिरमार्गी सभी श्रावक आये और विनती की-अन्नदाता, वैतुल चौमासे के ठाठ तथा आपकी प्रवचन शैली का जादू भी काफी दिनों से सुन रहे हैं। हम तो कब से उस वाणी को सुनने को बेताब हैं जिसने हर व्यक्ति को आकर्षित कर लिया है। लेकिन गुरु जी अब इलाज में देरी नहीं करना चाहते थे इसलिए असमर्थता बताकर समझा दिया। मोती कुमार जी की सेवा सराहनीय रही, जाते समय उसकी आंखों में पानी आ गया और बोला-म० सा०, इतना लम्बा इन्तजार किया आपके पधारने का और मिली मायूसी। अगले दिन एक आदिवासी गाँव में ठहरे, गुरु जी ने वहाँ के प्रधान का माँसाहार छुड़वाया तथा इस पेट को कब्रिस्तान न बनाने की शिक्षा दी। (गुरु जी ने पूर्व में भी काफी जगह लोगों का मॉस, शराब, गुटकों का त्याग करवाया।)

<u>कदम धरे गुजरात में</u> – नांदुरबार से ली लाठी के सहारे धीरे-धीरे चलते हुए डेडियापाडा गुजरात में प्रवेश किया। श्रावकों ने आगे खतरा बता कर रोकने की कोशिश की परन्तु गुरु जी आगे बढ़े। डभोई, राजपीपला सब क्षेत्रों में पूरी तरह कर्फ्यू था। पुलिस वाले भी कहते-अरे, महात्मा जी, आगे मत बढो, आगे बहुत डर है। इतना सुनते ही मैं बोली कि हम पंजाब के शेर हैं। गुरु जी कहने लगे-भाई, 'संत वही है जिसे भय नहीं होता।'

गुरु जी ने सोचा था कि बडोदरा पहुँचने तक डेढ महीने में तो शांति हो जाएगी लेकिन शायद इलाज की गहरी अन्तराय थी कि उस समय तक भी बडोदरा पूर्ण रूप से बंद था। स्थानक भी कर्फ्यू के अधिकार में था। पुलिस वालों ने निवेदन किया कि आप शहर में न जायें, तब किसी से पूछताछ करके माजलपुर कालोनी में बगड़िया जी के घर पहुँचे, जो परिवार संयमी संतों को ही वंदना करता था। संयोगवश घर में मुम्बई से आई बड़ी बहू ही थी, उसने उस समय तो अनमने मन से ठहराया। शाम को ससुर घर आये। पता चलने पर सीधे ऊपर आकर पूछा, "स्वामी, तमे क्यां थी पधारया।" गुरु जी ने जैसे ही पंजाब का नाम लिया तो श्रावक जी के चेहरे के हाव-भाव बदल गये, उसने सोचा पंजाब के साधु-साध्वियाँ तो शिथिलाचारी होते हैं। (क्योंकि कई बार उधर विचरण में नोट किया कि दक्षिण भारत के लोगों के लिए शिथिलता ही पंजाब की परिभाषा है। गुरु जी ने उन्हें अच्छी तरह समझाया कि आज भी पंजाब में हमेशा की तरह संयमी साधु साध्वियाँ विचरते हैं।) बगड़िया जी स्पष्ट तो क्या कहते ? इसलिए बोले-स्वामी, यहाँ परठने की सुविधा नहीं है। उस समय वे हमारा विहार करवाना चाहते थे लेकिन अगले दिन हमारी संयम क्रियाएँ देखी तो हाथ जोड़कर बोले-स्वामी, क्षमा करें, मुझे पता नहीं था कि आप अपने संयम में इतने मजबूत हो, अब मैंने आप की शरण पा ली है, इस शरण को छोडूँगा नहीं। फिर तो तीन दिन तक उन्होंने जाने नहीं दिया तथा आजीवन के लिए जमींकंद तथा ब्रह्मचर्य का नियम लेकर कपडा वहराया। वहाँ से अपने बेटे को निजामपुरा तक विहार में भेजा। वहाँ पर श्री विजय श्री जी म० सा० से मधुर मिलन हुआ।

गुरु जी की अस्वस्थता को देखते हुए मैंने पूर्व की तरह एक वार फिर निवेदन किया-गुरु जी, अव हरियाणा वापिस लोट चलो। मे अकेली सी पड जाती हूँ। छोटे साध्वी जी तो पहले ही घवरा जाते हें। गुरु जी ने कहा- अर्पण, एक वार तुझे विचरना सीखा दूँ, तुझे अपने पावो पर खडा कर दूँ ताकि कल मुझे कुछ हो जाये तो तुझे दिक्कत न आये। मेने कहा - मुझे नहीं सीखना विचरना, वस आप हरियाणा चलो। मेरी जिद्द को देखकर वापिस स्वदेश लोटने का निर्णय कर लिया ओर अहमदावाद की तरफ वढ गये। नडियाद जो शायद Kidney के लिए भारत का नम्वर 1 का चिकित्सा केन्द्र है गए पर कर्म की अन्तराय वहॉ भी कर्फ्यू लगा था। वडोदरा के श्रावक वगडिया जी इतने प्रभावित हो गये कि अहमदावाद अपने वेटे जयकान्त जी को समाचार दिया कि वहुत क्रियाशील स्वामी आ रहे हें पूरा ध्यान रखना। जयकान्त जी ने विहारों में माहोल खराव होते हुए भी आकर सभाला। अहमदावाद में मणि नगर में ठहरे, वहाँ से शाही वाग पधारे। वहॉ राजस्थान हस्पताल में गुर्दे के Test हुए। गुर्दे ठीक से काम नहीं कर रहे थे। अहमदावाद में राजस्थान आसोप के प्रदीप जी की अविस्मरणीय सेवा रही। वह कर्फ्यू में भी प्रतिदिन तवियत पूछने आता रहा। पानीपत से अलका ने श्री राकेश मुनि जी म० सा० के समाचार दिए-स्वास्थ्य के प्रति लापरवाही न वरतें, विचरने का ख्याल छोडकर पहले स्वय को सभालें।

फरसना जीती हम हारे – अहमदावाद में दगों का वातावरण होने तथा उचित स्थान के अभाव के कारण उसी साल वापिस दिल्ली की तरफ वढने का विचार वनाया। गुरु जी ने भी हाँ भरी कि वस अव हरियाणा में ही विचरना हे। सेवा में रह रहे सेवक रणवीर को पानीपत जाते समय यही कह दिया कि वहॉ कह देना म० सा० वापिस आ रहे हैं। राजस्थान भी समाचार करवा दिये कि हम वापिस लौट रहे हैं। लेकिन फरसना तो कुछ ओर कह रही थी। हरियाणा लोटने की पूरी योजना वनाकर सोये थे कि सुवह उठकर वोले, अर्पण - राजस्थान के लिए 350 कि०मी० चलना पडेगा, में थक चुकी हूँ इतना नहीं चल सकती ओर सूरत की विनती भी हे इसलिए 170 कि० मी० सूरत चलते हैं। वहॉ पर इलाज भी करवा लूँगी। जमीन की फरसना ने वुद्धि पलट दी। मेंने वहुत मना किया, मेरी आखें भर आई कि उधर नहीं चलना, राजस्थान की ओर वढना हे। मेंने कहा, गुरुजी - तवियत दिनों दिन गिर रही हे इसलिए वापिस लोट चलो ओर कुछ तत्वों को यह भी भ्रमणा थी कि अर्पण घूमने के लालच में गुरु की तवियत को नजर अन्दाज कर रही हे, इसलिए सयम प्रभा जी को वापिस नहीं लाती। परन्तु गुरु जी की विगडती हालत को देखकर मेरी मनोस्थिति कैसी थी यह तो केवली भगवान भली प्रकार से जानते हें। मेरी प्रार्थना फरसना ने ठुकरा दी।

गुरु जी पर हमेशा गुरुओं की कृपा दृष्टि रही, जिन्होंने उन्हें हर सकट से उवारा। शाही वाग से 'दिल्ली गेट' पार करके वस मणि नगर उपाश्रय में पधारे ही थे कि कुछ श्रावक दोडे हुए आये आर पूछा, स्वामी - आप ठीक तो हे। गुरु जी ने इतना घवराने का कारण

पूछा तो जवाव में श्रावक वोले-अभी दिल्ली गेट पर बुरी तरह मारकाट मच गई है, जो दिखता है उसी को पकडा कर गर्दन काट रहे हैं। गुरु जी पर गुरुदेवों का वरदूहस्त हमेशा छत्र वनकर छाया रहा तथा उनका आशीर्वाद सुरक्षा कवच वनकर हर प्रहार से सुरक्षा करता रहा। उसी क्षण गुरु जी को मन ही मन याद आया कि वे मारवाड़ी स्थानक के श्रावक कह रहे थे-अन्नदाता, 5-10 मिनट वाद ही विहार करना पर शुक्र रहा समय से चल पड़े।

अहमदावाद में विना प्रवचन के भी संयमी जीवन की सुन्दर छाप पड़ी। मणिनगर उपाश्रय के रमेश भाई का कहना था कि ऐसी संयमी साध्वियाँ तो प्रथम वार देखी हैं। बगड़िया जी ने अनुरोध किया - स्वामी, कोई गुजराती भाई साथ में देंगे ताकि विहारों में भाषा सम्वन्धी दिक्कत न आये तथा माहौल भी अनुकूल नहीं है। गुरु जी बोले - हमें गुजराती आती है इसलिए परेशानी की तो वात नहीं है लेकिन खराव माहौल को देखकर वे विना भाई के जाने नहीं देना चाहते थे। **वैसे भयावह जंगलों में शेर को किसके साथ की आवश्यकता होती है।** उसी तरह गुरु जी भी मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र के पहाडों, जंगलों में निडरतापूर्वक बढ़ते रहे थे। लेकिन जयकान्त जी के बार-वार आग्रह से गुरु जी ने उनकी वात को मान दिया। साथ में जाने वाला भाई अन्य साध्वियों को वडोदरा तक पहुँचाने गया हुआ था, जिस कारण दो दिन तक वह नहीं आया तो गुरु जी ने यह कह कर विहार कर दिया। 5 कि० मी० नारोल जा रही हूँ, वहाँ भेज देना। इतना कहकर थके हुए कदमों ने सूरत की राह पकड़ी।

गुरु जी जैसे ही नारोल पहुँचे तभी वडोदरा की तरफ से गुजराती साध्वियों का भी पधारना हो गया। गुरु जी ने चर्चा के दौरान पूछा, कि आप कहाँ से पधारे हैं ? तो साध्वियों ने कहा - असलाली से। गुरु जी के पुनः प्रश्न का जवाव देते हुए वे कहने लगी 3½ कि० मी० है। वे साध्वियाँ हमारी गोचरी की गवेषणा को देखकर दंग रह गई। गुरु जी ने कहा, अर्पण - आज सिर्फ 5 कि०मी० आये हैं, पूरा दिवस यहाँ रहकर क्या करना, शाम को असलाली चलेंगे। मैंने मना किया, विना भाई चलना ठीक नहीं।

<u>नवकार मंत्र तथा गुरु कृपा का चमत्कार</u> – गुरु जी मुझे मनाकर चल पड़े 3½ कि० मी० के लिए सवा घण्टा लेकर। जैसे ही 3½ कि० मी० का मील पत्थर गया कि विहार विहार न रहकर द्रोपदी का चीर हो गया। 6 कि० मी० तक गाँव का कुछ नामो निशान दिखाई नहीं देता था। रात्रि घिर आई, सुनसान जगह, इस आतंकवाद के माहौल में पक्षी जानवर भी दिखाई नहीं दिया, साईकिल, स्कूटर वाले व्यक्ति के मिलने की वात तो कोसों दूर थी। अंधेरा छा गया। एक वार तो गुरु जी भी घबरा गये कि छोटी-छोटी साध्वियाँ साथ हैं। लेकिन स्वयं को मजवूत वना कर हमारा हौंसला बढ़ाया और कहा-हमें नवकार मंत्र पढ़ो तथा गुरुदेव के नाम का जाप करो, यही इस समय हमारा शरणा है। 2-5 मिनट ही जाप जपा होगा कि तभी आंतकित रात में भी एक स्कूटर आ कर रुका और जैसे ही उसने "मत्थएण वंदामि" शब्द उच्चारा, हमारी जान में जान आई। उस श्रावक ने पूछा, ऐसा माहौल और

अधेग हो गया, आप अकेले विना भाइयों के कहाँ जा रहे हो ? गुरु जी ने उसे सारा वृतात कह सुनाया। आगतुक ने ठहरने का स्थान Mahavir Estate फेक्टरी खोजी जो कि 8 कि० मी० पर मिली। गुरु जी ने उस भाई से पूछा कि इतने भयकारी माहोल में आप खुले वाहन पर कैसे आये ? वह वोला–अन्नदाता, ये तो मुझे भी नहीं पता, में तो घर वद करके टी वी देख रहा था कि अचानक स्कूटर उठाकर इधर आ गया। गुरु जी ने मन ही मन सोचा कि भाइ को किसी शक्ति ने ही यहाँ आने के लिए प्रेरित किया है। दूसरा प्रसग – एक गॉव से शाम को रोजाना पढाने आने वाले अध्यापक से तथा गॉववासियों से अच्छी तरह खरा कर पूछा तो गाँव की दूरी 5 कि०मी० वताई गई। अहमदावाद से भाई आ चुका था उसे साथ लेकर शाम को पोने दो घण्टे का समय लेकर रवाना हो गये लेकिन 8 9 कि०मी० तक गाँव नहीं आया। खेतों में कच्ची पगडडी का मार्ग, कोई व्यक्ति दिखाई नहीं दे रहा था, पता नहीं कौन शक्ति रास्ता दिखा रही थी ओर भूल भूलेया के रास्ते में भी कदम वढते रहे, अधेरे में हम घवराये हुए थे कि अचानक न जाने कहॉ से नोजवान आये ओर गॉव में पहुॅचा कर गये। वह गॉव भी 5 कि० मी० की जगह 11 कि० मी० निकला। फिर उस दिन के वाद गुरु जी ने शाम को विहार नहीं किया। वोरसद में गुजराती साध्वियों के साथ मिलकर महावीर जयन्ती मनाई, प्रथम वार गुजराती भाषा में प्रवचन सुना।

ऐसे आतकपूर्ण तथा भयोत्पादक वातावरण में भी शेरेदिल गुरु जी अविरत वेखोफ होकर चलते रहे। जगह-जगह के श्रावक तथा साथ में रहने वाला अनिल भाई यह देखकर अचम्भित थे कि ऐसे माहोल में गुजरात की साध्वियॉ-साधु तो विहार नहीं कर रहे हैं। यहॉ तक साध्वियॉ सामान्य स्यिति में भी विन भाईयों के विहार नहीं करती ओर ये पजाव की सिहनी निर्भिकता से आगे वढ रही हे।

वहादुर कव किसी का आसरा, सहयोग लेता है,
उसी को कर गुजरता हे, जो दिल मे ठान लेता है।

गुरु जी की कठोर सयम चया देखकर अनिल भाई के हृदय में अटूट श्रद्धा का जन्म हुआ। क्योंकि वह एक वार गुरु जी की तवियत को देखकर अपने पैसों से फल आदि ले आया, उसके अत्यन्त आग्रह के पश्चात् भी गुरु जी ने लिया नहीं। रास्ते में दूध वेचने वाले मिलते तो कहता कि में इनसे ले लेता हूॅ कहीं भी गर्म करके दे दूँगा, लेकिन वहॉ भी उसकी विनती स्वीकृत नहीं हुइ। अनिल भाई यदि गॉव में आहार पानी के लिए कहने जाता तो गुरु जी स्पष्ट इन्कार कर देते थे। वह इतना प्रभावित हो गया कि भडुच में छोडकर अहमदावाद वापिस लोट गया था। शाम को घर पहुॅचा था लेकिन न जाने क्या मन में आइ, रात को वापिस चल दिया। सुवह हमारे पास पहुॅच गया। वह अकसर यही कहता था कि ऐसी कठोर चया की साध्वियाँ गुजरात में नहीं हे। (हमने वहॉ पर नोट किया कि जो साधु साध्वी लाइट, पखा, माइक, Flesh प्रयोग नहीं करते, उनकी नजरों में वे ही सयमी हैं। लेकिन गुरु जी

की सरलता, दृढ़ता, आहार पानी की निर्दोषता आदि गुणों ने सभी पर प्रभाव डाला।

सूरत न खूबसूरत लगा – पींचा परिवार की भाव भरी विनती को मान देकर गुरु जी सूरत पधारे। सोचकर तो यह आये थे कि सूरत में ही 2-4 महीने रहेंगे, फिर चातुर्मास स्थल पर जाएंगे। लेकिन कर्मो ने कहीं विराम नहीं करने देने की पक्की ठान रखी थी। अभी तक तो गुरु जी को मात्र कमजोरी महसूस के अलावा अन्य कोई तकलीफ नहीं थी लेकिन सूरत प्रवेश करते ही दूसरे दिन से खाँसने, छींकने, करवट बदलने में भयंकर पीड़ा होने लगी। तब भटार रोड, कैलाश नगर आदि अलग-अलग स्थान बदलकर देखे मगर पीड़ा ज्यों की त्यों बनी रही। रोहतक (हरियाणा) निवासी कई घर सूरत में बसन्त विहार में रहते थे। एक दिन वे विनती करके ले गये। वहाँ निधि बहन ने बहुत सेवा की। सींक वाले सुशील कुमार जी ने Check up करवाया तो सभी डा० यही बोले आपको सामुद्रिक हवाऍ अनुकूल नहीं बैठ रही हैं। आपको फौरन सूरत छोड़ना पड़ेगा। चातुर्मास उपरान्त 1000 कि०मी० के लगभग चल चुके पैरों में और चलने की हिम्मत नहीं थी। एक दिन गुरु जी बोले - **"अर्पण अपने को तो राजस्थान, हरियाणा जाना था फिर हम इधर किसलिए आये, रातों-रात मेरी बुद्धि में सूरत के भाव किसने भरे ? मुझे तो यह समझ नहीं आ रहा कि मैं यहॉ क्यों आई ?"**

सूरत से विहार करना पड़ेगा, यह पता लगने पर पूछताछ की तो पता चला कि लगभग 250 कि० मी० दूर जाना होगा। मेरी आँखें भर आई। मैंने कहा - गुरु जी तबियत इतनी खराब है कि एक कदम भी चलना कठिन है, अब क्या करें ऐसे में ? गुरु जी ने जवाब दिया-अर्पण, जैसे तैसे चलना तो पड़ेगा ही। बसन्त विहार में उधना जाते समय संग्रामपुरा में आचार्य विजयराज जी म० सा० के संत सरलमना, मिलनसार श्री प्रेम मुनि जी म० सा० मिले। जैसे ही उन्होंने नाम पूछा तो कहने लगे- संयम जी, भोपाल बैतुल में मची धूम की गूँज हमारे कर्ण तक भी पहुँची थी। उसी दिन से आपसे मिलने की जिज्ञासा थी। बडोदरा में भी मिलने को उत्सुक थे, मगर कर्फ्यू के कारण मिलना नहीं हो पाया था। अब आपका प्रवचन सुनने की भावना है। गुरु जी बोले-म० सा०, सब बड़ों की ही कृपा है, वरना मुझ में तो कोई कला नहीं है।

गुरु जी हमेशा साधु-साध्वियों से मधुर व्यवहार रखते थे। संयमियों के दर्शन करके मन बड़ा प्रसन्न होता था। सभी से अपनत्व रखते थे। माडल टाउन से म० सा० ने सुरेन्द्र जी द्वारा पधारने का सन्देशा भेजा। हिम्मत करके गुरु जी मॉडल टाउन पहुँचे और सभी सन्तों से मिलकर अपने विशाल दृष्टिकोण का परिचय दिया। गुरु जी कहते थे कि बनावटी मिलने से न मिलना अच्छा है।

जब भी मिले जिससे मिलें, हमेशा दिल खोलकर मिलें
इससे बढकर और कोई खूबी इंसा में नही,

बहन है। म० सा० के वचनों ने भीतर में हलचल सी पैदा कर दी और बोले-महाराज क्या दीक्षा लेकर मेरे भैय्या मिल जाएंगे। म० सा० ने समाधान किया -

भोगा मेघ वितान मध्य विलसत्व सौदामिनी चंचला,
आयुर्वायु विघट्टिताम् पटली लीनाम्वुवद भंगुरम्।
लीला यौवन लालसा तनुभृता मित्या कलप्य द्रुतम्,
योगे धैर्य समाधि सिद्धि सुलभे बुद्धिं विदध्वंबुधा।।

भोग बिजली की तरह चंचल है, आयु हवा से छितराएँ बादलों की तरह है, जवानी भी दो दिन की है अतः अपना ध्यान योग एवं संयम में लगाइए। यह संसार असार है, यहाँ सब रिश्ते स्वार्थ के हैं। मोक्ष में जाने पर कोई वियोग नहीं है। देख, यदि तू साध्वी बन जाएगी तो अच्छी प्रवचनकार बनेगी, पाटे पर बैठी हुई जंचेगी तथा तेरे माता-पिता और जोंधन का नाम रोशन हो जाएगा। एक दम मस्तिष्क के सुषुप्त तन्तु सक्रिय हो गए। म० सा० के चेहरे पर ब्रह्मचर्य के तेज तथा संयम की दृढ़ता ने गुरु जी को आकर्षित कर लिया।

आये थे सर झुकाने को, वापिस उठाना भूल गए - गुरु जी को मानो राह मिल गई थी क्योंकि कुछ दिन पहले गाँव में आई ब्रह्मकुमारी पंथ की बहनों के साथ जाने लगे थे, तब पिता ने जाने नहीं दिया था। पर आज निमित्त उपादान दोनों ही जग गये थे। मन वैराग्य से भर गया। गुरु जी ने पूछा- क्या मैं दीक्षा ले सकती हूँ? म० सा० ने फरमाया, हाँ - ले सकती है। तो फिर मैं आप के साथ चलूँगी। म० सा० ने कहा लड़कियाँ सन्तों के साथ नहीं रहती, तू साध्वियों के साथ जाना। इतना सुनकर गुरु जी आश्चर्य मिश्रित भाषा में पूछने लगे कि क्या आपके धर्म में लड़कियों ने भी दीक्षा ली हुई है? गुरु जी जैन धर्म की नियमावली तथा साधु-साध्वियों के विषय में एक दम अनजान थे। (एक प्रसंग - एक बार श्री धर्म मुनि जी म० सा० शाम को हवेली में गोचरी लेने चले गए तो गुरु जी ने दौड़कर पीढा (चौकी) बिछा दिया और बोले कि महाराज आप यहाँ चूल्हे के पास बैठो, मैं गरमा-गरम रोटी बना कर देती हूँ)। म० सा० ने समझाया - जैन संत इस तरह नहीं खाते, स्वस्थान जाकर आहार करते हैं। म० सा० ने कहा - जैन धर्म में तो लडकियाँ ज्यादा संख्या में बनती हैं, राजस्थान से श्री पन्ना जी म० सा० की सुशिष्या श्री शारदा जी म० सा० पानीपत से यहाँ पधारेंगे। तब तू उनके साथ जाना। श्री शारदा जी म० सा० घोर तपस्वी श्री रोशनलाल जी म० सा० की सगी सांसारिक भतीजी हैं। गुरुदेव ने ही उनको राजस्थान में दीक्षा दिलवाई थी, क्योंकि श्री पन्ना जी म० सा० महान विदुषी संयमी साध्वी थीं। गुरुदेव ने देवलोक से पूर्व अपने शिष्य श्री धर्म मुनि जी से कहा था कि श्री शारदा जी को विचरने के लिए कहना, दूर-दूर प्रांतों में विचरेगी तो कला निखरेगी तथा अनुभव बढ़ेंगे, जीवन विकास में अभिवृद्धि होगी।

म० सा० ने नम्बरदार से कहा-अपनी बेटी को आज्ञा दे दो, आपका नाम चमका देगी। लेकिन नम्बरदार जी तो गुस्से में बोले-मुझे नहीं चाहिए नाम, यदि बाला को ले जाने

की बात की तो बदूक की गोली आपके भीतर से निकाल दूँगा। म० सा० बोले - चोधरी, आज तक ऐसी कोइ गोली नहीं बनी जो सत की छाती में चली जाए, तेरे में ताकत हे तो गोली चला के देख। घर जाने पर नम्बरदार गुस्से से बोले - बाला ssshhh छोरी, तू सती बणेगी ? जैसे ही गुरु जी ने हॉ भरी, पिता हाथ में जो बेंत रखते थे वह जोर से दायें हाथ पर मारी ओर कहा "ला तुझे बणाऊँ सती"। पर गुरु जी भावों में डिगे नहीं। अब पिता द्वारा कष्ट दिए जाने लगे, खेतों में भरी गर्मी में जान बूझकर नगे पेर ले जाते हालॉकि सारा काम नोकर करते थे, फिर भी गुरु जी से करवाने लगे, पेर लाल हो जाते, खून आ जाता पर गुरु जी घबराये नहीं। उनका सकल्प मजबूत एव अद्भुत था जो अत तक बरकरार रहा।

जी भर के सता ओ हमको सताने वाले, कोई ख्वाहिश न रहे दिल मे बाकी
मर के भी टूटेगे न कभी हम, हॅसते रहेगे ओ हमको रुलाने वाले।

पारिवारिक जनों द्वारा इसी सिलसिले में एक बार मारणिक कष्ट देने की तेयारी की गइ लेकिन उस समय आयुष्य प्रबल था तो गुरु जी की तीसरे न० की भाभी सतोष, जिन्हें गुरु जी से बहुत स्नेह था, को षड्यन्त्र का पता चल गया ओर जीवन दात्री बनकर फोरन गुरु जी को बताकर बचा लिया।

गॉव वाले पता लगने पर म० सा० को समझाने लगे कि म० सा०, यह नम्बरदार की एक ही लडकी हे हरगिज नहीं देगा। अब गुरु जी पर सन्तों के पास जाने की पाबन्दी लग गइ, लेकिन गुरु जी पानी भरने के बहाने खिडकी में से दर्शन कर लेते। गॉव वासी बोले, म० सा० - शोकीन मिजाज लडकी हे, नगे पेर रसोई में भी नहीं जाती। इतनी कठिन राह पर चलना इसके बस का नहीं। म० सा० बोले - देखना यही एक दिन शासन को दिपाएगी। नम्बरदार के द्वारा दिए जाने वाले कष्ट तथा स्पष्ट इनकारी देखकर म० सा० एक दिन बोले- बाला, आज्ञा मिलना कठिन दिखता हे, इसलिए घर में रहकर ही धर्म-ध्यान करना। ये शब्द सुनते ही सकल्प की धनी गुरु जी ने कहा - अरे महाराज, आप साधु (पुरुष) होकर डरते हो म लडकी होकर भी नहीं डरता, न ही हारी। पिता जी मुझे मारे तो मारे, पर टूट जाऊँगी झुकूगी नहीं। ऐसा जोश, दृढ आत्मविश्वास देखकर म० सा० बोले - ऐसे शूरवीर ही इस राह पर चलने में सफल हो पाते हें।

मजीठीया रग चढा देखकर म० सा० ने दाद गुरुणी जी को पानीपत से बुलवा लिया। दादी गुरुणी जी ने आते ही पूछा-बाला, चल सकेगी साथ ? जवाब मिला, अवश्य ही क्यों नहीं ? मॉ की तडफती ममता कहती, बेटी छोड के मत जाना, बडी मुश्किल से भगवान ने तुझे दिया हे।

जब छोटी थी तब अपनी मॉ की शय्या गीली रखती थी
अब बडी हुई तो, मॉ की ऑखे गीली रखती हे

मेरी बेटी, क्या माँ के गीलेपन में ही तू खुश है?''

बेटी द्वारा समझाने पर भी माँ का मन भेजने को तैयार नहीं हुआ। गॉव की औरतें कहती, री बाला तेरी मॉ ने तेरे लिए इतना सामान तू छोटी थी जव से जोड़ना चालू किया था। तू जाएगी तो हमारी नम्बरदारनी तो मानो मर ही जाएगी। गुरु जी ने नहीं सुनी तो औरतें म० सा० के पास जाकर वोली-वाला सती वण गई तो वापिस आ जाएगी, अभी सावन आएगा तो गीत गाये विना रह नहीं सकती, कहीं शादी के गीत होंगे तो पैर नाचने लगेंगे। इस तरह की जन-चर्चाएँ चलती रही। कुछ दिन वाद चौधरन पीहर (कलाना) विवाह प्रसंग पर गई हुई थी, पिता भी कार्य वश वाहर गये थे। सुअवसर देखकर गुरु जी सतियों से वोले, महाराज साहब, जल्दी चलो माँ आ गई तो जाने नहीं देगी। दाद गुरुणी जी ने समझाया-माता-पिता की आज्ञा विना हम साध्वी नहीं बनाते, यह हमारे धर्म का विधान है। लेकिन भावना का प्रबल वेग देखकर यह सोचकर विहार कर दिया कि 2 कि.मी. इसराना जाकर माता-पिता को वुलवा लेंगे। घर में भाभियों को कहकर कुछ कर दिखाने के इरादे से चल दिए। **हम तो चले शिवपुर की डगर अलविदा मेरे वतन।**

विरक्ति के पथ पर -

बचपन और किशोर अवस्था को लॉघ कर वाला ने यौवन की दहलीज पर कदम रखे। यौवन का आवेग, जोश प्रवाहित हो रहा था लेकिन विचारों की पवित्र धारा निष्काम साधना तथा आत्म विकास की ओर प्रवाहित हो रही थी। पवित्र चिंतन तथा दृढ़ संकल्प के साथ चल पड़े। एक घर को छोडकर हर दिल अपना आशियॉ बनाने के लिए अर्थात् संयम के राजपथ पर कदम बढ़ाने के लिए, निर्धारित किए गए वास्तविक लक्ष्य को पाने तथा आत्मा की शुद्धिकरण के लिए।

तभी सामने से आते हुए व्यक्ति को देखकर मस्ती में झूमते हुए उठते कदम ठिठक गये। सामने से आ रहे पिता ने जब वेटी को जाते देखा तो गुस्से में लाल आँखे करके बोले, तुझे इतना समझाया तेरी बुद्धि में नहीं आई? गुरु जी निडरतापूर्वक बोले - बाऊ जी, घर रहने की समझ में नहीं आई तभी तो जा रही हूँ। बेटी का पक्का इरादा देखकर बोले देख, बाला - **''किसी रास्ते पर कदम धरना नहीं, धर दिया तो पीछे हटना नहीं। एक बात सुन ले अभी तो तू गॉव की सीमा में है, अब भी वापिस घर चल, कुछ बिगडा नहीं है परन्तु बाला एक बार सतियों के साथ गॉव की सीमा पार कर गई तो जोंधन और हमे भूल जाना।''** सोच समझकर सीमा के बाहर पैर धरना। गुरु जी ने स्वीकृति में हाँ भरी और साध्वी बनने का संकल्प दोहराया। पिता बोले-देख ''इन वणियों की रोटी खाने के लिए नहीं भेजूँगा। सती बनकर कुछ धर्म, गुरु, तथा हमारा नाम करे तथा अपना कल्याण करे तो ही जाना वरना मेरे यहां अनाज की कमी नहीं है।'' और

कहा -

ससार सागर घोर तर कन्ने लहु लहु '
फूल वनके महकना, हो इतिहास चमन का
चॉद वन के चमकना, दुनिया मे तू गगन का।

गुरु जी ने पिता को सुन्दर भाषा में आश्वासन दिया। पिता ने पुन परीक्षा की घडी से गुजारा, देख वाला, कभी भाई-भतीजों के आने की वाट (राह) मत देखना, फिर परिवार से कुछ लेना-देना नहीं हे। गुरु जी ने हॉ में गर्दन हिलाई ओर पिता के देखते-देखते वेटी ने गॉव से वाहर पेर धर दिया। थोडी दूर जाने पर रास्ते में भाई राज मिल गया। सतियों के साथ वहना को देखा तो पूछा, ऐ वाला - कित चाल्ली, तने अभी-अभी वाऊ जी नहीं मिले? जवाव दिया - मिले थे, उनते पूछ के ही चाल्ली हूँ। भाई ने कहा, वाला - फेर सोच ले पवन, सजय, अनु, पूनम इन चारों का प्रेम तू भूल नहीं सकेगी ओर यो वाणियों का इतना त्यागमय धम तेरे वस का नहीं हे। गुरु जी ने उत्तर दिया - भाई, खूव सोच के ही चाल्ली हूँ, तू चिता ना कर। भाई ने स्मृति दिलाइ मॉ की कि वाला मॉ का के हाल होवेगा? "भाई तुम समया लेना" कहकर इसराना पधार गये। मॉ पीहर की मिठाईयॉ खाकर आई ओर अडोसन-पडोसनों से पता चला तो दुख मिश्रित क्रोध में हुक्का पी रहे नम्वरदार को सीधे जाकर वोली, "तने मेरी छोरी सतियॉ गेल क्युकर घाल दी', चोधरी साहव ने कहा- मानी नहीं तो में के करदा, तभी तपाक से मॉ वोली - ' मेरे तो ऐके थी वाए भेज दी, तेरे छ थे उनम त तो एक भी न घाल्या।' इतना कहकर मॉ की आखें शायद अरमानों से पाली वेटी को खोने के दद भरे गम में वरसने लगी। पूरे गॉव को जव समाचार मिला तो चर्चा होने लगी, कोई कहता देखो गई तो हे पूरा करेगी या नहीं? कोई स्वभाव से परीचित कहते कि हे तो धुन की पक्की, पीछे तो नहीं हटेगी।

<u>तू सवकी पर म अकेला</u> - ससुराल वालों को पता चला कि हमारी वहू तो जैन धम में चली गइ हे क्योंकि गुरु जी की वडी भाभी विमला द्वारा भ्रमित किए जाने पर ससुराल वाले उस समय तो लेने नहीं आये थे लेकिन सच्चाई कव तक छिपती? असलियत पता चलने पर वे गुरु जी को मागने आये। गुरु जी भले ससुराल थोडे ही दिन रहे थे लेकिन अपने गुणों की इतनी सुन्दर छाप छोडी थी कि आसपास की ओरतें गुरु जी की सासू को कहती थी, कि चोधरन वेटे की वहू तो वहुत कमेरी तथा अच्छी हे। गुरु जी के जीवन साथी देवेन्द्र जी भी इतनी सुशील पत्नी का साथ छुटने से स्वय को अकेला महसूस करने लगे थे, यही सोचते कि किस तरह पत्नी को वापिस लाऊँ? पर अव तो इतनी देर हो चुकी थी कि राज वाला अव एक देवेन्द्र की पत्नी नहीं वल्कि स्वग के सेंकडों देवेन्द्रों तथा मनुष्यों की वन्दनीय वनने जा रही थी।

ट्रेनिग चालू हो गई। कर्मों से युद्ध करते समय आने वाले हर उपसर्ग-परिषह,

अनुकूल-प्रतिकूल परिस्थितियों रूपी आक्रमणों का किस आध्यात्मिक शस्त्र द्वारा कैसे सामना करना तथा कर्म रिपुओं को परास्त कर विजेता वनना। वैराग्य काल में ही नंगे पैर चलना, जमीकंद, रात्रि भोजन आदि का त्याग कर दिया था। जव सावन आया, झूले देखकर मन में लहर सी उठी परन्तु उसी समय स्वयं को भावों में वहने नहीं दिया।

ज्ञान साधना का जो क्रम शुरू हुआ तो अपनी तीव्र मेधा, प्रखर बुद्धि तथा अध्ययन द्वारा शीघ्र ही हर विषय में पारंगत होने लगे। दाद गुरु जी ने जो कहा, उसे कभी नकारा नहीं। प्रसंग - जोंधन के कुंए का पानी वहुत मीठा है, कई दिनों से गुरु जी को खारा पानी पीना पड़ रहा था लेकिन शरमा शरमी वोले भी नहीं। मोरखी पहुँचने पर एक लड़की से वोले, जव आये, एक डोलू (डव्वा) मीठा पानी कहीं से लेती आना। कई दिनों से प्यासे रहे हुए थे गुरु जी। वह लड़की वात का आशय नहीं समझी और चीनी घोलकर पानी ले आई। गुरु जी पीने लगे तो वोले, वहन - तू तो चीनी का पानी ले आई। वह लड़की वोली, तुमने मीठा ही तो पानी मंगाया था। गुरु जी ने कहा - मेरा मतलव था कहीं कुए या नलके का मीठा पानी हो तो लाना। हंसी की आवाज सुनकर दाद गुरुणी जी आये, कारण पूछने पर जव वात का पता चला कि दैरागन ने मीठा पानी मंगाया है तो गुरु जी से कहा - राजबाला, जिस मार्ग पर कदम धरने चली है वह मार्ग रसना पर विजय पाने का है, इसलिए यह वेश देने से पहले शिक्षण दिया जाता है। दाद गुरुणी ने समझाया - साधु को लुखा चिकना जैसा मिले हर स्थिति में समभाव रखना होता है और तुमने गुरुणी जी की आज्ञा भी नहीं ली। गुरु जी ने भविष्य में पुनः ऐसा गलत न करने का वचन दिया।

<u>वैराग्यावस्था का वर्षावास</u> — दाद गुरुणी जी का हरियाणा आगमन पर 1985 का प्रथम वर्षावास हरियाणा के मुआणा गॉव में स्वीकृत हुआ। जहॉ गलत धारणाओं से ग्रसित लोग चर्चा करने लगे। गाँव में ये जैन संत आ गये हैं। इस वार पानी की एक वूँद भी नहीं वरसेगी। 5 महीने के लिए शुरू हुए नवकार मंत्र के अखण्ड जाप, तप आदि के प्रभाव से इन्द्रदेव ने वरसना शुरू किया। जिससे गलियों का कीचड़ तो धुला ही साथ ही लोगों के मनों की गलत भ्रमणाएँ भी निर्मूल हो गई। सारा गाँव स्थानक की ओर दौड़ने लगा तो आर्यसमाजी लोगों के पेट में दर्द होने लगा, यह क्या ? सारा ही गॉव जैन बन रहा है। वे पहले जो माईक में जोर-जोर से गालियॉ देते थे, धर्म से अनभिज्ञ विषयों को उठाकर उल्टा-सीधा कहते थे, वे ही लोग वाद में दाद गुरुणी जी के पास आये और माफी मांगी।

एक बात गुरु जी के दिमाग में प्रश्न बनकर घूमने लगी क्योंकि आर्य समाज यह भी कहते थे कि गॉव वालों, जैनी कहते हैं महावीर के पैरों में सर्प (चण्ड कोशिश) ने डंक मारा तो दूध की धार निकली, पर सच्चाई हम वताते हैं वह दूध नहीं, पीव थी। महावीर के पैर में फोड़ा हो गया था। सांप ने डंक मारा तो मवाद वाहर निकल गई थी। गुरु जी चिंतन करते आखिरकार वह क्या था ? और दीक्षा उपरान्त अध्ययन के वाद इस विषय का वैज्ञानिक तथा

धामिक दोनों ढगों से पुष्टिकरण करते थे (धामिक ढग - दया, करुणा, एक स्त्री तथा मादा पशु के स्तनों में दूध। वेज्ञानिक ढग - रक्त कणों की गिनती आदि अनेक उदाहरणों से पुष्टि करते थे, अव मेरी स्मृति मे ठीक से नहीं ह।)

गुरु जी ने चातुर्मास में प्रथम वार अट्ठाइ का तप किया। तपस्या तो पूण साता से हुई लेकिन नियमों से अनजान होने के कारण पारने में गडवडी हो गई। किसी वहन ने आम (केरी), आलू वुखारा खिला दिया जो शरीर के लिए हानिकारक सिद्ध हुआ क्योंकि तभी से पेट में सोजिश रहने लगी थी। चातुर्मास सम्पन्न कर दाद गुरुणी जी केथल पधारे। गुरु जी वेराग्यावस्था से ही प्रवचन में थोडी देर वोलने लगे थे, तव वहॉ गायक कलाकार सुनील कुमार ने कहा था - हमारी यह वेरागन 'हरियाणा सिहणी' वनकर उभरेगी। कई वार कठिन दोर से गुजरना पडा लेकिन गुरु जी घवराये नहीं।

पीडा ओर व्यथा का जिसने, शकर वनकर पीया हलाहल,
घोर सकटो मे भी हसकर, जिसने खोजा सदा सहज हल।

हुई शिक्षा करो दीक्षा – जव विरक्तात्मा की सयमीय जीवन के लिए साधना परिपक्व हो गई तो सयम देने के लिए अवसर भी अति शीघ्र स्वय चलकर आया तथा दीक्षा का ताज पहनने का अनुग्रह किया। तपस्वी श्री सुमति प्रकाश जी म० सा० तथा श्री कोशल्या जी म० सा० के सान्निध्य में 5 दीक्षाए पानीपत में होने जा रही थी तव पानीपत श्री सघ ने केथल जाकर विनती की कि म० सा० - अपनी वैरागन की भी दीक्षा करवा लो। दाद गुरुणी ने हॉ भर दी। दीक्षा का वहुत कम समय था, कुल 15-16 दिन ही वचे थे। वहॉ दीक्षा तो वेरागन सन्तोष जेन की होनी थी पर उसी दिन वैरागन के भाई की शादी होने के कारण माता-पिता की आज्ञा नहीं मिली ओर गुरु जी को पानीपत की इस रण भूमि में कर्मो से युद्ध करने हेतु केसरिया वर्दी 12 मार्च, 1986 को मिल गइ। पानीपत दीक्षा पर जो गुरु जी ने भाषण दिया, उसे सुनकर तत्रस्थ सभी साधु-साध्वियों तथा श्रावकों का यही अभिमत था कि यह साध्वी भविष्य में में एक कुशल प्रवचनकार वनेगी। दीक्षा प्रसग पर तेर-मेर का माहोल रहा।

कुरुक्षेत्र मे शपथ – गुरु जी श्वेत वाणा पहनकर एक नये जीवन में प्रवेश करके करनाल पधारे ओर वहॉ से किसी कारण सीधे कुरुक्षेत्र 43 कि मी एक ही दिन में जाना पडा। (यह गुरु जी के दीक्षा पर्याय का उत्कृष्ट विहार रहा।) दो दिन ही दीक्षा हुए कदमों में इतनी तेजी देखकर शायद कुदरत भी कहती होगी, वहुत जल्द यह साध्वी विकास की ऊँचाईयों को छू जाएगी।

कुरुक्षेत्र – जिस मिट्टी के पुद्गलों में इतनी कठोरता थी कि जहॉ आकर श्रवण कुमार ने भी मॉ-वाप से सेवा की कीमत मॉग ली थी। इसी धरा पर सव परिचित युद्ध महाभारत लडी गई थी। जिस भूमि पर अर्जुन द्वारा सामने प्रियजन तथा गुरुजन होने के कारण गाण्डीव

रख दिया गया था। युद्ध की इनकारी कर दी थी। उस समय त्रिखण्डाधिपति कृष्ण वासुदेव द्वारा कर्म सिद्धान्त तथा सत्य, कर्त्तव्य की रक्षा हेतु फर्ज को समझाकर अर्जुन को धनुष उठाने को तैयार किया गया था। उसी कुरुक्षेत्र में श्री सुमति प्रकाश जी म० सा०, सरलमना श्री प्रेम मुनि जी म० सा० आदि साधु-साध्वियों की उपस्थिति में गुरु जी को **"धर्म तथा आत्मा की रक्षा हेतु सदैव पुरुषार्थ रत रहने, अप्रमतत्ता तथा सचेतता रखने की शपथ (बड़ी दीक्षा) 19 मार्च को दिलाई गई"।**

शायद गुरु की पारखी दृष्टि भी यह परख गई थी कि यह राज बाला संयम का वेश पहनकर अपनी ज्ञान की प्रभा से सर्व जगत को आलोकित करेगी इसलिए बड़ी दीक्षा पर नाम दिया **'श्री संयम प्रभा'**।

इस प्रकार अपने से पूर्व आई वैरागन से पहले दीक्षित होकर दाद गुरुणी जी की पट्टधर वन गई तथा जय गच्छ साध्वी प्रमुखा श्री सुगन कँवर जी म० सा० को दादी पद पर शोभित किया। फिर 18 दिन बाद ही वैरागन सन्तोष जैन की अम्वाला में भण्डारी श्री पद्म चन्द्र जी म० सा० की नेश्राय में हो रही सामूहिक दीक्षाओं में दीक्षा हो गई।

दाद गुरुणी जी अपनी दोनों नवदीक्षित शिष्याओं को लेकर साथ आई साध्वियों को छोड़ने राजस्थान गए तथा वापिस लौट कर मुनक पधारे। जहाँ दृढ़ संयमी चारित्रवान श्री रणसिंह जी म० सा० विराजते थे। जिन्होंने शरीर के शिथिल होने पर भी संयम में शिथिलता नहीं आने दी। उस संयमी आत्मा के दर्शन करके गुरु जी का रोम-रोम पुलकित हो उठा, बाद में भी कई बार गुरु जी ने उस महान विभूति के दर्शन किए तथा आशीष पाये। एक बार गुरु चरणों में बैठे थे कि प्रवचन का समय होने पर गुरु जी जाते-जाते कहने लगे - गुरुणी जी जल्दी आना, मैं ज्यादा देर नहीं बोल पाऊँगी। यह बात सुनकर श्री रणसिंह जी म० सा० ने गुरुजी को बुलाकर पूछा, संयम जी- क्या वात है? गुरु जी ने विनयपूर्वक कहा-गुरुदेव, मुझे आधा घण्टा वोलने का ही अभ्यास है। तव म० सा० ने अपनी कृपा का हाथ ऊपर किया और कहा- **जाओ संयम प्रभा जी प्रवचन करो। आज के बाद जितनी देर चाहो लगातार बोलती रहना कभी प्रवचन की धारा नहीं टूटेगी। साध्वी जी तुम्हारा प्रवचन एक मिशाल होगा। तुम्हारा तो दूर-दूर तक यश फैलेगा।** वस इस वरदान को पाकर फिर कभी गुरु जी ने गुरुणी जी की राह नहीं देखी।

<u>प्रथम वर्षावास</u> – गुरु जी का दीक्षा उपरान्त प्रथम चातुर्मास अपनी गुरुणी जी के संग में टोहाना (हरियाणा) में हुआ। वहाँ अध्ययन में व्यस्तता तथा अन्य कारणों से प्रवचन गुरु जी ने कभी-कभी किया, लेकिन इन गिने चुने प्रवचनों ने ही गुरु जी ने अपनी कला का परिचय दे दिया।

<u>मारवाड की ओर विहार</u> – चातुर्मास सम्पन्न कर दाद गुरुणी जी कुछ समयावधि के लिए हरियाणा को अलविदा कह कर मारवाड़ (राजस्थान) की तरफ वढ़े। राजस्थान प्रवेश

के पहले ही गॉव में गोचरी लेने गए तो वहॉ की किसी वहन ने जिसने पहली वार जेन सत देखे थे, मुँह वधे देखकर डर सी गई ओर उल्टी-सीधी कहने लगी। गुरु जी मारवाडी भापा से अनजान थे, इसलिए शव्द तो समझ नहीं पाये पर उस वहन के हाव-भाव से अनुमान लगा लिया कि यह वहन गालियॉ दे रही हे। वापिस आकर वोले-गुरुणी जी, में जेन धर्म के सारे नियम पाल लूँगी। नगे पेर चलना, लोच करवाना सव सहर्ष मजूर है, लेकिन ये मॉग कर गोचरी लाना वडा कठिन है। मे आज के वाद गोचरी नहीं जाऊँगी। यह क्या कोई दे तो कुछ नहीं ओर गालियॉ सुना दे। दाद गुरुणी जी ने सारी वात सुनने पर गुरु जी के शात होने पर समझाया - सयम जी मात्र सयम नाम धरा लेने से कोई सयम नहीं पलता, जीवन मे सयम आना नितात आवश्यक हे। समता ही साधु का गहना है। ' अरे कितना अच्छा मोका था कर्मों को निर्जरित करने का, पर तू चूक गई। उस वहन ने तो अज्ञानता में कहा, पर तू तो समझदार थी। सहसा हाथ से आया अवसर खो जाने का पश्चाताप करते हुए गुरु जी ने कहा - आगे कभी किसी पर रोप नहीं करना ओर इस तरह प्राप्त हुआ जीवन निर्माण का महत्त्वपूर्ण गुण – क्षमा'।

10 मई के लगभग सूर्य नगरी, जोधपुर में पडदाद गुरुणी जय गच्छ साध्वी प्रमुखा, कुशल व्यवहारी, स्नेह की प्रतिमूर्ति श्री सुगन कँवर जी म० सा० की शीतल छाया में पहुँचे। 1987 का चोमासा 14 ठाणा व्यावर पिपलिया वाजार हुआ। वहॉ गुरु जी रविवार को ही व्याख्यान देते थे। जव श्रावकों ने अल्पवय में अल्पकाल की दीक्षित हरियाणा की सिहनी साध्वी की गूँज को प्रवचन रूप में श्रवण किया तो दग रह गये। सभी श्रावकों की जुवा यही चर्चा करने लगी श्री शारदा जी म० सा० हरियाणा से हीरा लाये ह।" तव सभी श्रावक, श्राविकाओं को गुरु जी पर नाज होने लगा था।

जय गच्छीय आचार्य श्री लाल चन्द जी म० सा० के सामने किसी साध्वी की वोलने की हिम्मत नहीं होती थी। गुरु जी वहॉ भी वेधडक, निडरता से प्रवचन करते थे। प्रवचन से प्रभावित आचाय श्री जी वीच-वीच में ही जोर-जोर से हुकारे देते थे (उस समय जय गच्छ में साधु ओर साध्वियों में दो ही सिह जेसी गर्जना का सामथ्य रखते थे। एक आचार्य लाल चन्द जी म० सा० दूसरे गुरु जी)। मारवाड में गुजर कर दाद गुरुणी के सग कदम मेवाड की तरफ वढे तथा माऊण्ट आवू होते हुए गुजरात को फरसा, लेकिन अभी अहमदावाद के पास हिम्मतनगर तक ही पहुँचे थे कि गुरु जी को अपनी मातृभूमि की स्मृति हो गई तथा कई कारणों से अपनी गुरुणी जी को वापिस लोटा लाए।

वीरो की धरा मेवाड मे चोमासा – दाद गुरुणी जी उसी वर्ष हरियाणा पहुँचना चाहते थे पर वीरों की भूमि मेवाड के कपासन के श्रावकों ने अत्यधिक आग्रह करके रोक लिया। सन् 1988 का चोमासा कपासन हुआ। सवॅत्सरी के वाद गुरु जी ने प्रवचन कभी-कभी दिए पर सभी श्रावक जिनमें श्री नात्थु लाल जी चण्डालिया प्रमुख थे, वे आग्रह

करते रहते कि म० सा०, आप रोजाना प्रवचन दिया करो। वहाँ मुसलमान भी जैन धर्म से जुड़े। मेवाड़ में धूम मचाकर वापिस मारवाड़ आकर ब्यावर पड़दादी गुरुणी की सेवा में रहे। (तव तक पड़दादी गुरुणी जी थानापति हो चुके थे।) पड़दादी गुरुणी जी को गुरु जी का विशेष ख्याल था, गोचरी में भी बर्फी आती तो अपने हाथ से डालते और कहते "म्हारी संयम नै **दूध री कतली घणी भावै है**" कुछ दिन बड़ों की सेवा में रहकर, सभी का स्नेह पाकर मारवाड़ तीन गये थे और चार होकर वापिस हरियाली भूमि में लौटे। (दाद-गुरुणी जी सांसारिक मामा की सुता श्री रवि प्रभा जी म० सा० को साथ लाए।)

समाना, पटियाला, चण्डीगढ़ फरसते हुए 1989 के चातुर्मास के लिए कैथल पधारे। चातुर्मास काल में सारा क्षेत्र धर्म मय हो गया। सभी की जुबाँ पर यही था इतनी कि छोटी उम्र में इतनी जानकारी विरल ही दिखती है। संघ मंत्री प्रेम जी, ताराचंद जी, कालड़ा जी कहते थे कि हमें कितना ही जरूरी काम हो पर प्रवचन में तो आना ही पड़ता है। सभी कहते -

प्रवचन में जादू भरा, रखती बडा कमाल।
सुनकर के व्याख्यान को गूँज उठता हाल।

श्री पवन कुमार जी गुरु जी के प्रवचन की तारीफ करते हुए मुझे अभी कुछ दिन पूर्व प्रेरणा दे रहे थे कि तुम भी गुरुणी जैसा प्रवचन सीखना। वे तो बस समा बाँध देती थी। गुरु जी की जिंदगी में कई बार उतार-चढ़ाव, अनुकूल-प्रतिकूल परिस्थितियों के तूफान चले इस शैल को डिगाने के लिए, लेकिन वे तो चट्टान थीं कि हर तूफान उनको छू कर निकल गया।

चट्टानें हिल नहीं सकती, आँधी के खतरों से,
कि शोले बुझ नहीं सकते, कभी शबनम के कतरों से।

गुरु जी गृहस्थ काल में हमेशा स्वस्थ रहे थे परन्तु दीक्षा के कुछ समय पश्चात् ही कुछ पिछले भवों के असाता वेदनीय कर्म उदय में आ गये। गुरु जी ने कभी यह नहीं सोचा कि जैन दीक्षा लेते ही रोगों ने हमला बोल दिया वरन् यही सम्यक चिंतन चलता था कि कितना उत्तम रहा। ये क्षमा, समता के हथियार हस्तगत होने के बाद ही रोगों ने आक्रमण किया, वरना तो संसार में होती तो पूर्व संचित कर्मो की निर्जरा भी नहीं हो पाती तथा रोग के निदान में शायद नवीन कर्मो का बंध हो जाता। यही शुभ विचार रखते थे कि मेरी कितनी पुण्यवानी रही कि कर्मो को काटने तथा नवीन कर्मों के आगमन को रोकने का सुन्दर मार्ग मिला है, क्योंकि गुरु जी ने समझ लिया था जो दीक्षा ले लेता है वह सर्व प्रकारेण शांति पाता है।

इह दीक्षा विहीनस्य न सिद्धि न च सद्गतिः।
तस्मात् सर्व प्रयत्नेन, गुरुणा दीक्षितो भवेत्॥

थोड़े-थोड़े समय के अन्तराल पर पेट में भयंकर दर्द शुरू हो जाता था पर समभावों में विचरण करते रहे।

चातुर्मास उपरान्त अनेक स्थानों पर साधु-साध्वियों से मधुर मिलन हुआ। सभी ने यही प्रशसा की सयम के प्रवचन की गूँज तो गगन तक को छू रही है।

अम्वाला आदि क्षेत्रों में विचरण करते हुए अपनी दीक्षा स्थलि पानीपत पधारना हुआ। वहाँ पर उत्तर भारतीय प्रवर्त्तक भण्डारी जी म० सा०, श्री कैलाशवती जी म० सा०, श्री स्वर्णकान्ता जी म० सा० के सान्निध्य में फरवरी में दीक्षा होने जा रही थी।

पानीपत क्षेत्र के नवनिर्माण में दृढ सयमी स्पष्ट वक्ता श्री धर्म मुनि जी म० सा० का विशेष योगदान रहा है। उन्होंने 1983 में वहाँ चातुर्मास किया तथा विशेष धर्मोद्योत किया। पहले पानीपत साधु-साध्वियों के लिए विशेष आकर्षण का केन्द्र नहीं था। लेकिन श्री धर्म मुनि जी म० सा० के पुरुषार्थ ने पानीपत को धार्मिक दृष्टि से भारत के नक्शे पर उभार दिया। उपजाऊ वनी वजर भूमि में ऐसे फूल खिले कि जो कई तो शासन का श्रृंगार बने।

वडे-वडे साधु-सन्तों ने इस भूमि पर चातुर्मास किए। दीक्षा प्रसग पर गुरु जी का भी प्रवचन का न० लगाया गया। सभी साधु-साध्वी दग रह गए। कुछ साम्प्रदायिक भावना से ग्रस्त एव हीनता ग्रन्थि से वद्ध व्यक्ति श्रमण सघ, गेर-श्रमण सघ की चर्चा वीच में लाकर वातावरण को विषाक्त करना चाहते थे, पर पानीपत के मान्य एव अधिकारी श्रावकों ने सोचा कि हमारी साध्वी जव इतना सुन्दर प्रवचन देती हैं ओर हम चातुर्मास हेतु वाहर फिरते हैं ओर 1990 के चातुर्मास की स्वीकृति सघ ने ले ली।

इस दीक्षा प्रसग पर किसी वुझे दिये में ज्योति जल गइ, राहों में पडे पत्थर को शिल्पी मिल गया, भटकती जीवन नोका को खिवेय्या मिल गया। इसी प्रसग पर गुरु जी के सारगर्भित प्रवचन सुनकर मेरे (अन्जु) हृदय की भूमि में वेराग्य का वीज पडा।

ऐतिहासिक जमीं पर इतिहास रचा – 1990 के पानीपत चातुर्मास के दोरान हमारे सासारिक पिता जी महावीर प्रसाद जी प्रथम वार किसी साध्वी के प्रवचन सुनने लगातार चार महीने गये। कितनी वार नाश्ता तक छोड देते कि कहीं प्रवचन न छूट जाये। पूरे पानीपत में लहर सी आ गइ। सभी कहते कि प्रवचन हो तो ऐसा। ऐतिहासिक नगरी में चातुर्मास भी ऐतिहासिक रहा। पानीपत चातुर्मास में गुरु जी का पुरुषार्थ भी स्मरणीय रहा, 3-3 कि० मी० दूर जाकर घरों मे लोगो को जगाया। आज भी साध्वी वर्ग में श्रावक इन्तजार देखते हैं कि श्री शारदा जी म० सा० आयेंगे तभी हमें सुपात्र दान देने का सुअवसर मिल पाएगा।

माँ की ममता – इधर यदा कदा गुरु जी की जननी माँ प्यारी जव भी दर्शनार्थ आती तो गुरु जी को अलग कमरे में ले जाकर रुपये देने लगती ओर कहती, मेरी वाला - किसी से वर्फी मॅगा कर खा लेना, फिर पूछती यहाँ पर दूध मलाई मिलती है ? मै तो सवको कहती थी कि मेरी वेटी के लिए वर्फी ले जाओ पर किसी ने सुनी नहीं माँ को ऐसा करते देख तथा वातें सुनकर गुरु जी समझाते - हम (जेन सत) पेसो

को हाथ तक नहीं लगाते, साधु को कहीं कोई कमी नहीं है। माँ कहती - इस ममता का क्या करूँ वेटी ? मानती नहीं, वैसे माँ दुनिया का सबसे ममतामयी रिश्ता है।

ऊपर जिसका अंत नहीं उसे आसमॉ कहते हैं,
जहॉ में जिसका अंत नहीं उसे मॉ कहते हैं।

माँ वेटी के गम में पगला सी गई थी। सुनकर उदास हो गई, आंखों से नीर बहने लगा। माँ प्यारी विक्षिप्त सी हो गई थी। उसके कारण थे कि प्रथम तो जवान वेटे की मौत का गम तथा दूसरा लाडली बेटी के जाने की पीड़ा। इन दर्दों ने नम्बरदारनी को नासमझ सा बना दिया था। इसी को वीतराग देवों ने मोह का परिणाम वताया है।

पंजाब की ओर – कदमों ने पानीपत से पंजाब की राह पकड़ी। कालांवाली में श्री कौशल्या जी म० सा० की वैरागन भावना की दीक्षा पर संघ द्वारा विनती किए जाने पर दाद गुरुणी जी वहाँ पधारे। दीक्षा पर आये बठिण्डा संघ की विनती को मान देकर वठिण्डा पधारे। वहाँ गुरु जी ने 12 प्रवचन दिए। प्रवचनों से प्रभावित समाज ने 1991 का चातुर्मास बठिण्डा करवाने की ठानी। चातुर्मास से पूर्व सिरसा पधारे, जहाँ पर आगम रत्नाकर भगवान श्री राम प्रसाद जी म० सा० विराजते थे। वहाँ भगवान श्री के दर्शन किए, मन को अति प्रसन्नता हुई। गुरु जी को संयमी संतों के दर्शन करने पर बहुत आनन्द आता था तथा मन को दृढ़ता मिलती थी।

पंजाब की भूमि में प्रथम चातुर्मास यशस्वी रहा। प्रत्येक दिल में गुरु जी के संयम तथा प्रवचन की छाप छूट गई। गुरु जी के जीवन से प्रभावितं सेवाभावी हैप्पी जिंदल जिन धर्मानुरागी बना। पुनः श्री रणसिंह जी म० सा० के दर्शन किए तथा फरीदकोट होते हुए गिदड़वाह पधारे। वहाँ श्री चंदन मुनि जी म० सा० ने प्रवचन की सराहना करते हुए कहा "कमाल दी प्रवचन शैली पाई ए।" धर्म का उद्योत हुए, अनेक क्षेत्रों में विचरण किया।

1992 के चातुर्मास में हॉसी पधारे। जैन-अजैन सभी प्रवचन में दौड़ने लगे। वहॉ एक जैनेतर परिवार विशाल सिंह ठाकुर की जैन धर्म में अपूर्व निष्ठा वनी। चातुर्मास सानंद चल रहा था कि अचानक कर्मों ने परिषह की ऐसी आँधी चलाई जो शायद गुरु जी को ले उड़ती लेकिन वह फौलादी देह वहाँ भी डिगी नहीं। उस समय स्वयं को मजबूत बनाकर उस परिस्थिति से पार हो गई, लेकिन यहाँ से शरीर शिथिल रहने लगा था। अनेक संकल्प-विकल्पों के बीच स्वयं को समाधिस्थ रखा क्योंकि -

संकटों की आंधियॉ मेरु हिला सकती नहीं,
टूट सकती है मगर शैल झुका सकती नहीं।

स्नेह और प्रेम की प्रतिमूर्ति पड़दादी गुरुणी जी के कई संदेश आने के कारण चरखी दादरी, नारनौल होते हुए जोबनेर फरसा तथा पुनः मरु भूमि राजस्थान में कदम रखे। जय

गच्छ के लाल आचार्य श्री लाल चन्द जी म० सा० के देवलोक के उपरान्त जयगच्छ के 11 वें आचार्य प्रशान्त चेता, सरलमना आचाय श्री शुभ चन्द्र जी म० सा० के सान्निध्य में कुमारी मधु सेठिया की उनके पेतृक गॉव वावडी में दीक्षा कार्यक्रम पर पधारे। उस दीक्षा महोत्सव पर महामन्दिर जोधपुर श्री सघ, अन्य सम्प्रदाय के श्रावकों ने एक साथ मिल कर चातुमास की विनती की।

सूर्य नगरी के चातुर्मास की सारभ – श्री शारदा जी म० सा० श्री चेतना जी म० आदि ठाणा 8 का 1993 का चातुमास महामन्दिर मे हुआ। गुरु जी के प्रवचनों ने जोधपुर को हिला दिया। गुरु जी के प्रवचनों की सोरभ दक्षिण तक फेल गइ तथा मद्रास से श्रावकों ने आकर दक्षिण की ओर विचरने की पुरजोर विनती की। चातुर्मास काल में पढाई चल रही थी। परीक्षा की तेयारी में सलग्न रहने के कारण कभी-कभी प्रवचन की छुट्टी कर लेते थे। श्रावक जिनके लिए प्रवचन ही खुराक वन गये थे, वे श्रावक आते ओर स्कूटर रोककर यह खिडकी मे से देख लेते थे कि सयम प्रभा जी म० सा० पाटे पर ह या नहीं ? यदि नहीं होते थे तो वापिस स्कूटर स्टार्ट करके चले जाते थे।"

गुरु जी की आवाज इतनी वुलन्द थी कि माईक की आवश्यकता नहीं थी। वढती भीड को देखकर सघ ने आग्रह किया माईक लगाने के लिए, पर गुरु जी वोले - किसी को न सुने तव कहना। लगभग 2 हजार से भी पार हो रही भीड के कारण गुरु जी जव थोडा जोर लगाकर वोलने लगते तो तभी श्रावक कहते, अन्नदाता – इतना जोर लगाने की कोई आवश्यकता नहीं क्योकि हमारी Duty स्थानक के पीछे रसोई घर मे हे, वहॉ तक भी प्रवचन की पूरी आवाज आती ह।

गुरु जी में आचार्य श्री एव सघ को गच्छ का उज्ज्वल भविष्य दिखने लगा। अध्यक्ष श्रीमान् शकर लाल जी लुणिया, राकेश जी, अशोक जी वोहरा आदि श्रावकों को अपनी साध्वी पर गर्व था। अनेक विशेषताओं से पूरित चातुर्मास सम्पन्न कर व्यावर पधारे। वहॉ पर पड दादी गुरुणी जी ने गुरु जी की कमर थपथपाई ओर वोले - "सयम जी चारो तरफ तुम्हारा ही नाम हो रहा हे।" लगभग सवा महीने तक वडों की शीतल छॉव में रहकर जयपुर होते हुए हरियाणा में पधार गये।

श्रमण सघीय तृतीय पट्टधर आचार्य श्री देवेन्द्र मुनि जी म० सा० उत्तर भारत के दोरे पर पधारे हुए थे। दाद गुरुणी जी ने पानीपत में उनके 28 मार्च को दर्शन किए। उस मौके गुरु जी को प्रवचन के लिए कहा गया। वहु सख्या में विराजित साधु-साध्वियों के प्रवचनों को सुनकर आचार्य श्री जी ने गुरु जी के प्रवचन की मुक्त कण्ठ से प्रशसा की - इतनी छोटी साध्वी का इतना सुन्दर प्रवचन कमाल हे ? तव आचार्य श्री जी गुरु जी का प्रवचन में रोज नम्बर लगाने लगे जिसमें कई साधु-साध्वियों को आपत्ति हो गई ओर आचार्य श्री जी को कहा भी, आचार्य श्री ने सभी की अनसुनी कर दी। लेकिन किसी साधु-साध्वी द्वारा कुछ

कहने पर गुरु जी द्वारा उत्तर देने में उतावली हो गई जिसका नुकसान नांगलोई चातुर्मास में भुगतना पड़ा। दादी गुरुणी जी ने समझाया 'सयम थोडा संयम रखा कर।'

आचार्य श्री द्वारा 24 अप्रैल को अम्बाला में सम्पन्न हो रही 11 मुमुक्षु आत्माओं की दीक्षा प्रसंग पर पधारने का आग्रह किया गया। 4 मार्च को गुरु जी की सखी कुमारी सविता जैन वैरागन बन कर चली। अम्बाला में सामूहिक दीक्षा में कुमारी मिनाक्षी जैन गुरु जी को गुरु बहन के रूप में मिली। वहाँ भी गुरु जी के प्रवचनों की प्रशंसा श्रमण वर्ग द्वारा बर्दाश्त नहीं हुई।

<u>मंद हुई सिंह गर्जना</u> – भारत के दिल्ली में 1994 का चातुर्मास नांगलोई में हुआ। प्रवचन से सभी मंत्र मुग्ध हो गये लेकिन पानीपत तथा अम्बाला की उतावली का परिणाम सामने आ गया। एक दिन गुरु जी के प्रवचन की धारा वह रही थी कि अचानक उस निर्झर को किसी शक्ति ने रोक दिया। प्रवचन में होठ हिल रहे हैं, हाथ भी संकेत कर रहे थे परन्तु भाषा के पुदगल बाहर नहीं आ रहे थे, आवाज वंद हो गई। गुरु जी घबरा गये तथा साधु-साध्वियों से मिलने पर शांत रहने की कसम खाई। श्री धर्म मुनि जी म० सा० दादी गुरुणी जी द्वारा वताये गए पाठ स्वाध्याय आदि के अध्ययन से तब कहीं जाकर वोलने लगे लेकिन पूर्व जैसी आवाज अंत समय तक लौट कर नहीं आई।

नांगलोई का चौमासा हर दृष्टि से सफलता को लिए हुए बीत रहा था। गुरु जी दिल्ली से बचपन से ही घबराते थे इसलिए जल्दी चौमासा समाप्त होने की राह देख रहे थे कि जल्दी दिल्ली से बाहर जाऊँ। लेकिन कुदरत को इतनी शीघ्रता मंजूर नहीं थी।

गुरु जी को लगभग 7 साल हो गये थे, कभी भी पेट में दर्द उठ जाता था और कर्म भी देखिए दर्द सूर्यास्त होने पर ही शुरू होता था। पूरी रात उल्टी, दस्त बुरा हाल रहता था। डॉ० तथा समाज के लोग आग्रह करते कि म० सा० इस रत्न को संभालना अत्यन्त आवश्यक है, दवाई दे दो लेकिन गुरु जी ने दृढ़ता रखी। आश्चर्य था कि जैसे रवि के उगने से रात्रि का तमस भाग जाता है, उसी प्रकार सूर्य निकलते ही दर्द एकदम काफूर हो जाता था।

दर्द सहते-सहते समय अपनी गति से बीतता रहा। गुरु जी कहते, म० सा० - जल्दी चौमासा समाप्त हो और दिल्ली से चलें। तव दादी गुरुणी जी समझाते कि साधु को इतनी क्षेत्रीय बेचैनी नहीं होनी चाहिए परन्तु दिल्ली में दिल न लगना गुरु जी के हाथ की बात नहीं थी।

<u>दिल्ली से समेटी जिन्दगी</u> – जिस दिल्ली से जल्दी पीछा छुड़ाना चाहते थे, सकारण वहीं ठहरना पड़ा। जिस डर से वे दिल्ली छोडना चाहते थे वही "दिल्ली की जमीं मानो कह रही थी मुझे छोडकर कहाँ जाती हो, आखिर अंत मे मेरे भीतर ही समाना है। मुझे भूलने का विचार त्याग दो।" हुआ यूँ चातुर्मासिक विदाई की तैयारियाँ

चल रही थी। श्रावक-श्राविकाओं की आखों में ऑसू की धारा थी पर गुरु जी तो मानो खुशी में झूम रहे थे कि परसों विहार हो जायेगा। श्रावक कहते - म० सा०, आप तो विहार के लिए खुश हो रहे हो पर हमारा तो बुरा हाल हे। गुरु जी कहते - भाई क्या करूँ ? दिल्ली में मेरा दम घुटता हे (पर क्या पता था कि दम भी इसी दिल्ली मे निकलना हे) कार्तिक की चोदस आई। दिन भर गुरु जी एक दम ठीक रहे पर जेसे-जैसे सूर्य देवता ओझल हुए कि पूर्व की तरह पेट में दर्द शुरू हो गया। आज तो छटपटाने लगे, इधर-उधर चक्कर लगाने लगे। दादी गुरुणी ने पाठ सुनाये पर आज तो पीडा कम न हो पाई तभी जोरदार उल्टी होने से बेचेनी कुछ कम हुई। परन्तु थोडी देर वाद फिर दर्द शुरू हो गया। सुवह विदाई समारोह मनाने समाज स्थानक में आने लगी। वहॉ गुरु जी की पीडा देखकर घवरा गयी। गुरु जी के वहुत मना करने पर भी दादी गुरुणी जी की आज्ञा से उन्हें सुन्दर लाल हस्पताल में ले जाया गया। डा० नागेश जेन ने केस समाला। रिपोर्ट आई कि अपेन्डिक्स की नस किसी समय भी फट सकती हे। गुरु जी ने कहा - गुरुणी जी, मेरा यहॉ आप्रेशन मत करवाना। दादी गुरुणी जी ने समझाया-सयम, वच्चों जैसी वात नहीं करते। आप्रेशन के वाद दर्द से राहत तो मिली पर यह पता नहीं था कि जिदगी सिमट गई है।

उस समय डा० ने कहा - शायद आपको टी वी हो सकती हे। देखिए अशुभ कार्यों तथा निमित्त ने यह सोचने नहीं दिया कि एक वार ओर फिर से अन्य जगह जॉच करवा लें। सम्भावना के आधार पर ही टी वी की दवाईयों का कोर्स शुरू हो गया। इधर एक वार सोचा कि सभी मेरी सेवा में लगे रहते हें (गुरु जी की वीमारी के दौरान कभी किसी को परेशानी न देने की आदत रहती थी) ओर स्वय परठने आदि का काम कर लिया जिससे टाके टूट गए।

श्री प्रेम मुनि जी म० सा०, श्री धर्म मुनि जी म० सा० रोहतक का चातुर्मास समाप्त कर दिल्ली गुरु जी को दर्शन देने पधारे। सभी के मना करने पर भी गुरु जी ने दिल्ली से विहार करवा लिया। रास्ते में ही दर्द हो गया, चार कदम चलते फिर वेटते इस तरह वडी मुश्किल से दिल्ली से बाहर निकल कर सुख की सॉस ली।

पानीपत में 7 मई, 1995 में वेरागन सविता जेन सुपुत्री श्री रघुनाथ जी जैन (जो वर्तमान में साधु हैं) की दीक्षा हुई। अव तक की सखी गुरु वहन वन गई। पूर्व में किए गए सफल चातुमास से प्रभावित समाज वठिण्डा की पुन चातुमास की स्वीकृति ले गई। टी वी की दवाईयॉ 9 माह तक खाई। वठिण्डा जाकर जॉच करवायी तो पता चला कि गुरु जी को टी वी विल्कुल नहीं थी। परन्तु अव क्या करे जो इतने महीने दवाईयॉ खा ली हें। जिस प्रकार धनुप से निकला तीर कहीं तो लगता ही हे, उसी प्रकार टी वी की इतनी गर्म दवाईयॉ जब गुर्दे (Kidney) से होकर निकली तो गुर्दे खराव हो गये। इस चातुर्मास में स्वास्थ्य ने ज्यादा साथ नहीं दिया। इस वार स्कूलों में प्रवचन किए। वठिण्डा से रायकोट होते हुए

धर्मनगरी लुधियाना पधारे। 23 जनवरी को मोहन दास हस्पताल में दादी गुरुणी जी की छोटी-सी गॉठ का आप्रेशन हुआ। गुरु जी ने गुरुणी जी की अपने हाथों से हस्प[ताल में] रहकर सेवा की। स्वयं दवाई देना, पट्टी करना आदि।

1990 में गुरु जी के प्रवचन से जिस मनोभूमि में विरक्ति का वीज पड़ा था, वह अन्जु (अर्पण प्रज्ञा) 26 जनवरी को गुरु जी को गुरु वहन के रूप में मिली (क्योंकि उस समय तक मेरा वड़ों की ही शिष्या बनने का विचार था) जव 25 तारीख को पारिवारिक जनों ने पहले मुझे गुरुदेव श्री सुदर्शन लाल जी म० सा० तथा भगवन् श्री जी आदि सन्तों के रायको: में दर्शन करवाये तो श्री नरेश मुनि जी म० सा० ने मुझसे कहा था - अन्जु **'संयम प्रभा जी की तरह जोरदार व्याख्यान करना सीखना'** गुरु जी कभी-कभी मोती नगर आकर प्रवचन करते पर पुनः हस्पताल में सेवा में चले जाते। उस समय वाकी साध्वियाँ मोती नगर विराजती थीं।

गुरु जी के प्रवचन की प्रशंसा सुनकर रूपा मिस्त्री गली के पदाधिकारी 31 तारीख को मना रहे किसी जयन्ती के लिए गुरु जी को विनती करने आये। तत्र विराजित श्री रत्न मुनि जी म० सा० ने कहा - प्रवचन तो बड़े-वड़े साधुओं की तरह देती हो।

<u>राहगीरों को बॉध लेता था प्रवचन</u> - एक दिन मोती नगर में जब प्रवचन चल रहा था तो स्कूटर पर जाते किसी किशोर के कानों ने उस जोश भरी वाणी को सुना और वह लड़का वापिस स्कूटर मोडकर आया, वहीं बैठ गया और ऐसा बैठा कि गुरु चरणों में अपूर्व श्रद्धा जम गई। फिर वह रोज प्रवचन सुनने आता तथा वह किशोर गौरव जैन फिर अपने निवास स्थान जमालपुरा में ले गया तथा प्रवचन करवाया। वहाँ जैन-अजैन सभी गुरु जी के व्याख्यान की प्रशसा करने लगे तथा शुभ कुमार जी गुरु जी के परम भक्त बन गये। हस्पताल से छुट्टी मिलने पर दादी गुरुणी जी सिविल लाइन पधारे। जहाँ एक दिन मनोहर व्याख्यानी श्री नरेश मुनि जी म० सा० दादी गुरुणी जी को दर्शन देने तथा साता पूछने पधारे। आते ही उन्होंने यही पूछा **"संयम प्रभा जी कौन हैं ?"** और बोले - **बड़ी धूम मचाई है प्रवचन की।**

<u>पंजाब की यात्रा</u> – दादी गुरुणी जी को पूर्ण साता होने पर उनकी आज्ञा से गुरु जी ने श्री रवि प्रभा जी म० सा०, श्री सुवोध प्रभा जी म० सा० को लेकर जम्मू की राह पकड़ी। दादी गुरुणी जी ने मुझे भी साथ भेजा। गुरु जी ने फगवाड़ा, जालन्धर में अच्छी धर्म प्रभावना करते हुए सुल्तानपुर में प्रवेश किया। जहॉ श्री शिखा जी म० सा० विराजते थे। वहॉ की मात्र 2 प्रवचनों से प्रभावित समाज महावीर जयन्ती मनाने का आग्रह करने लगी। लेकिन गुरु जी की आदत रही कि किसी भी अन्य साधु-साध्वी के निर्धारित कार्यक्रम में अनाधिकृत प्रवेश नहीं करना, इसलिए स्वभावानुसार संघ को समझाया कि यहॉ साध्वियों की महावीर जयन्ती घोषित हो चुकी है। हम खाली क्षेत्र को लाभ देने का भाव रखते हैं। मगर परेशानी

चल खडी हो गयी कि श्रावकों ने सभी बातें अनसुनी कर दी। तत्रस्थ साध्वियों को पता चला तो उन्होंने विहार का भाव बना लिया तथा अन्य सघ को बुलवा लिया।

गुरु जी के ऊपर हमेशा गुरुओं की कृपा रही हे इसलिए साध्वियों के विहार करने के भाव का पता चल गया। अत गुरु जी ने स्वय ही पट्टी की तरफ विहार कर दिया। पट्टी दादी गुरुणी जी का ननिहाल हे, वहाँ महावीर जयन्ती पर जब उन्होंने गुरु जी के प्रवचन सुने तो सभी बोले ' **सानु तो पता नहीं सी साडे शारदा जी दी चेली ऐनी सोणी कथा करदी ए''** वहाँ से अप्रेल महीने में जंडियाला पधारे। जहाँ पर श्री प्रकाश मुनि जी म० सा०, श्री राकेश मुनि जी म० सा० विराजमान थे। सत तथा श्रावक सभी ने गुरु जी का व्याख्यान सुनकर प्रशसा के पुल बाध दिए लेकिन श्री राकेश मुनि जी म० सा० प्रवचन से बहुत आकर्षित हुए तथा कहने लगे कि **ऐसी जोरदार आवाज मे साध्वियो मे प्रवचन आपका प्रथम बार ही सुना ह।** यहीं गुरुदेव द्वारा किए गए सुन्दर व्यवहार से गुरु जी समर्पित हुए थे। जडियाला में गुरु जी के पहुँचने से पूर्व ठहरने के स्थान में हुए कच्चे पानी के आरभ-समारभ को देखकर गुरु जी ने फेसला लिया कि आज के बाद बिना सूचना दिए पहुँचना या पानी से धोये स्थान पर ठहरना नहीं।

जडियाला में बहुत कुछ गुरुओं तथा सघ से पाकर गुरु जी अमृतसर पधारे। वहाँ से बागा बोडर गए। जहाँ सीमा तक केवल आफीसर ही जा सकते थे लेकिन गुरु जी को स्वय जवान पाकिस्तान की सीमा पार करवा कर आगे तक ले गये। बटाला पहुँचे तो चातुर्मासिक आग्रह देखकर चुपचाप विहार करना पडा।

जम्मू मे जय विजय – जम्मू का पहला पडाव लखनपुर है। जहाँ केवल एक ही घर श्री डी सी गुप्ता जी का हे साधु-साध्वियों के ठहरने के लिए। लेकिन आज मानो परीक्षा की घडी थी। पूछने पर पता चला कि साहब तो आज जम्मू थोडी देर पहले ही गए हैं। गुरु जी ने पूछा - अन्य कोई शाकाहारी घर हे क्या ? जवाब नहीं में मिला कि यहाँ के तो पण्डित भी मासाहारी (Non Veg) हैं। अब इतनी हिम्मत नहीं थी कि ओर आगे 11 कि मी चला जाए। यही भाव बनाये कि उपवास करके यहीं ठहरो। पुरानी कहावत चरितार्थ हो गई कि **तुम धर्म की रक्षा करोगे तो धर्म भी तुम्हारी रक्षा करेगा।** तभी एक आश्चर्य-सा हो गया। जेसे ही गुरु जी आफिस में किसी अन्य जगह के बारे में पूछने गये तो सामने खडे व्यक्ति ने हाथ जोडे ओर शब्द कहे 'मत्थएण वदामि' म० सा० पधारिये। गुरु जी ने कहा आप डी सी गुप्ता ? जवाब मिला जी हाँ। गुरु जी के पूछने पर गुप्ता जी ने कहा- म० सा०, गया तो जम्मू था लेकिन कोई काम याद आने के कारण न जाने क्यों रास्ते से ही वापिस लोट आया। गुरु कृपा से वहाँ कोई असुविधा नहीं हुई।

वहाँ से जम्मू में गान्धीनगर, जैन कालोनी फरसने के बाद मुख्य स्थानक जेन बाजार में पधारे। जम्मू गए थे 10 दिन के लिए लेकिन ललित जी आदि समस्त सघ इतना प्रभावित

हुआ कि चातुर्मास की विनती करने लगा लेकिन दो दिन पूर्व ही गुरु जी प्रवचनों से, लुधियाना सुन्दर नगर के श्रावक 4 माह तक प्रवचन सुनने को लालायित थे इसलिए आकर श्रावक चातुर्मास की सहमति लेने पहुँचे थे और गुरु जी ने दादी गुरुणी जी की स्वीकृति में अपनी सहमती दे दी थी। तब जम्मू के श्रावकों ने भविष्य में चातुर्मास करने की पुरजोर विनती की। तब गुरु जी ने कहा - भविष्य के गर्भ में क्या है, यह कुछ पता नहीं। 24 दिन बाद भी मुश्किल से संघ ने गुरु जी को विहार करने दिया।

गुरु जी ने शरीर को कभी शरीर नहीं समझा, धर्म की प्रभावना की खातिर जम्मू में 103 डिग्री बुखार हो गया तो भी प्रवचन करते रहे। मैंने कहा आप बुखार में प्रवचन मत दिया करो। मुझसे बोले, अन्जु - **इस शरीर से जितना हो सके शासन की प्रभावना कर लें, शरीर तो खत्म होने ही वाला है।** जम्मू के श्रावक गुरु जी की कठोर संयम क्रियाओं से अत्यन्त प्रभावित हुए। भारत के मस्तक जम्मू में अपने संयम तथा प्रवचन की अमिट छाप रूपी तिलक लगाकर वापिस कदम पंजाव की तरफ बढ़ गये।

लुधियाना से ही गुरु जी के गोडों में कभी-कभी थोड़ा-थोड़ा दर्द होने लगा था। पठानकोट पहुँचने से पहले ही थकान महसूस होने लगी, गोडों ने चलने से इन्कार कर दिया। 9 कि.मी. पहले सुजानपुर गॉव में एक ब्राह्मण के घर ठहरे। दिमाग में तो यही था कि पंडित तो शुद्ध होते हैं और परिवार की भावना अतिं उत्तम थी। लेकिन जब पूछताछ की तो पता चला कि वहाँ तो प्रसाद भी माँस का आता है। गुरु जी ने उसी समय जब ठहरने तथा आहार पानी लेने को मना कर दिया तो उन्होंने जाने नहीं दिया और बोले कि हमारे यहाँ तो पहली बार भगवान आये हैं। अब वे भी हमारे घर रहकर भूखे रहें तो हमारा दिल दुखेगा। वे आग्रह करने लगे कि हम बाजार से नये बर्तन लाकर अलग आटा, सब्जी आदि लाकर आपको भोजन तैयार करके देंगे, पर गुरु जी ने तब भी लेने से मना कर दिया और गॉव में जो राधास्वामी को मानने वाले शुद्ध घर थे वहॉ से गोचरी लाये। घर के सदस्यों को संतों को कुछ न दे पाने के कारण परेशानी में देखा तो गुरु जी ने लोहा गर्म देखकर अवसर को जानकर शाम को अहिंसा, दया पर प्रवचन करके जोरदार चोट की। बस गुरु जी का प्रण तथा जिन वाणी का प्रभाव सारे परिवार ने जावजीव के लिए माँस न खाने की प्रतिज्ञा कर ली।

पठानकोट में श्रावकों ने आग्रह किया कि म० सा०, यहाँ घर बहुत दूर हैं। अकसर सभी साधु-साध्वियों को यहीं जैन सभा में लाकर टिफिन से बहराते हैं। लेकिन गुरु जी ने स्पष्ट इन्कार कर दिया और दोनों साध्वियों को थके हारे होने पर भी दूर गोचरी लेने भेजा।

बंगा के अधिकतर नौजवान अमेरिका रहते हैं। गुरु जी ने प्रवचन के माध्यम से कहा कि बेटों के अमेरिका होने पर गर्व न करें वरन् यह देखें कि वहाँ पर रहकर भी भारतीय (जैन) सभ्यता संस्कृति, धर्म को भूले तो नहीं है ? बंगा के डा० आशीष जैन गुरु जी के प्रति विशेष समर्पित हुए।

क़दम वढे नवा शहर की ओर जहॉ श्री प्रकाश मुनि जी म० सा० विराजते थे। जाते ही म० सा० वोले-सयम जी, जहॉ भी विचरी हो, सभी जगह के श्रावकों के मुख से तुम्हारे सयम, अनुशासन, प्रवचन की तारीफ सुनी तो हमारा मन गद्‌गद् हो गया। श्री अचल मुनि जी म० सा० ने मुझसे कहा, कि अन्जु - सयम जी की तरह हम तुम्हारी भी प्रशसा सुनना चाहते हे। अव चातुर्मास हेतु लुधियाना का लक्ष्य वनाया।"

सफल प्रवास का मधुर मिलन – जेसे किसी सेठ का वेटा छोटी उम्र में विदेश में प्रथम वार जाये ओर ढेर सारा धन कमा कर लाये तो परिवार की खुशी का ठिकाना नहीं रहता। उसी प्रकार दादी गुरुणी जी की प्रसन्नता का कोई छोर नहीं था कि मेरी शिष्या जम्मू तक धर्म का प्रचार करके, इतना यश कमा कर लोटी हे। उस समय दादी गुरुणी जी विजेन्द्र कालोनी में विराजते थे। तव वे वहुत सख्या में श्रावक-श्राविकाओं, वच्चों सहित जव लेने आये तव रास्ते में ही गुरु-शिष्या का मधुर मिलन हुआ तो दोनों की आखें खुशी में नम हो गई। वह दृश्य भी देखने वाला था।

चातुर्मास के दोरान जव वहॉं वाणी वरसने लगी तो सभी की जुवा पर यही प्रश्न था- म० सा० ने इतनी छोटी-सी उम्र में इतना ज्ञान, प्रत्येक विषय की जानकारी कहॉ से सीखी ? लुधियाना के प्रत्येक श्रावक तव तो आश्चर्य में पड गये जव गुरु जी ने लगातार 22 दिन तक नवकार मत्र पर वैज्ञानिक ढग से प्रवचन दिये। प्रवचन में विना प्रभावना भीड उमडने लगी।

लुधियाना में अन्य स्थानकों में भी चातुर्मास चल रहे थे। कुछ विघ्न, कुछ व्यक्तियों द्वारा भीड तोडने के अनेक प्रयास किए जाने लगे लेकिन विफल रहे। लुधियाना में गुरु जी के पेट में दर्द रहता था। आयुर्वेदिक दवाई का सेवन किया, पर राहत न मिल पाई।

एक दिन सभी म० सा० वोले - अजु, तू सयम जी की अट्ठाई करवाके वताये तो जाने। लेकिन गुरु जी का सवत्सरी का उपवास देखकर में वोली-आप तो गुरु जी वेला भी नहीं कर सकते। गुरु जी वोले-अजु, तू करवा दे तो पता नहीं। एक दिन गुरुदेव का नाम लेकर उपवास करवा दिया। 3-4 दिन वो साता से निकले फिर मनोवल के सहारे चले। छठे उपवास के दिन में नारनोल में श्री प्रेम मुनि जी म० सा०, श्री धर्म मुनि म० सा० के दर्शन करने गई तो जाते ही म० सा० पता लगने पर मजाक में वोले, अजु - तू हमारी सवसे योग्य सती को मारेगी ? उससे तपस्या नहीं होती। वेरागावस्था के वाद 10 साल वाद गुरु जी ने साताकारी अट्ठाई का तप किया।

लेकिन कर्मों का जवरदस्त वधन शायद किया हुआ था। 1985 में की गई अट्ठाई के पारने में आलू वुखारा खा लिया था, 1996 की अट्ठाई के पारने में वरसात ने 3-4 दिन समय से न रुकने की ठान ली थी।

धर्म की नगरी में धर्म का अभूतपूर्व धर्मोद्योत करके अपनी वैरागन की दीक्षा कराने हेतु

कदम खुशी-खुशी पानीपत की तरफ बढ़ने लगे, जहाँ 10 साल पूर्व स्वयं साधु बाणा था। संगरूर के वकील साहब की चातुर्मास की विनती छोड़कर सुनाम पधारे, साथ में सुबोध प्रभा जी म० सा०, श्री मल्ली प्रभा जी म० सा० थे। वहाँ के श्रावक वाह-वाह कर उठे। चीका में इतना अच्छा प्रभाव जमा कि कैथल पधारने पर चीका के मिट्ठन लाल जी रात को 8 बजे परिवार सहित कैथल आ कर बोले-म० सा०, आपके प्रवचनों ने तो हमें मोहित कर लिया इसलिए प्रवचन सुनने आये हैं। गुरु जी ने समझाया कि रात्रि को स्थानक में प्रवचन नहीं होता। जोंधन पहुँचने पर गुरु जी के पिता जी, भाईयों, बेटी ने बहन की शिष्या का भव्य स्वागत किया।

17 फरवरी को गुरु जी ने अपनी प्रथम शिष्या को खुशी-खुशी दीक्षा देकर अपना एक साथी पाया। नाम रखा अर्पण प्रज्ञा।

पानीपत से 26 तारीख को विहार करके प्रथम बार गुरु जी ने उत्तर प्रदेश की तरफ विहार किया। कांधला में तीन प्रवचनों में श्रावक हिल गये तथा चातुर्मास की स्वीकृति लिये बिना विहार नहीं करने दिया। मास्टर जी, मयंक कुमार आदि विशेष श्रद्धावान श्रावक बने। बड़ौत के श्रावक प्रथम बार किसी साध्वी से प्रभावित हुए। पडासौली में स्वयं को आगम ज्ञानी समझने वाले एक भाई द्वारा गुरु जी के साथ तर्क-वितर्क किया गया, जिस पर शायद सम्प्रदायवाद का चश्मा चढ़ा हुआ था। लेकिन गुरु जी ने अपनी विलक्षण बुद्धि से आगम के प्रमाण देकर उसे चुप करा दिया। मेरठ में श्री मंजु श्री जी महासती के दर्शन किए तथा दिल्ली पधारे।

<u>खुशियों को लगा ग्रहण</u> – दिल्ली मेरे आग्रह करने पर जांच करवाई कि पेट में दर्द क्यों रहता है? डा० नागेश जी को दिखाया कि अपंडिक्स के आप्रेशन में तो कहीं कोई कमी नहीं रह गई थी। तब मुनि माया राम हस्पताल में सारे Test हुए तथा Ultrasound की रिपोर्ट आई कि दोनों गुर्दे छोटे हो गए हैं। बस यह सुनते ही मानो मेरी खुशियों को नजर लग गई थी। मुझे एक Test पर भरोसा नहीं हुआ, दुबारा करवाये तो डा. राजेश अग्रवाल जी ने अच्छी तरह Ultrasound करके बताया कि बाई तरफ की kidney थोड़ी सी सिकुड़ गई है। खतरे की कोई बात नहीं है। गुरु जी ने दवाई लेने की इन्कारी दी और कहा-अंग्रेजी दवाईयाँ मुझे अनुकूल नहीं रहती। इन्हीं से गुर्दे खराब हुए हैं। पर डा० तथा श्रावकों के अत्यन्त आग्रह से गुरु जी ने दवाई ले ली।

चांदनी चौक में विराजित संतों के द्वारा व्याख्यान का समय न दिए जाने पर प्रमोद जी जैन आदि श्रावक रोष में आ गए, तब गुरु जी ने उन्हें शांत किया। चांदनी चौक के श्रावकों ने चातुर्मास का भाव बनाने का आग्रह किया। अब बड़ौदा दीक्षा महोत्सव में शामिल होना था।

गुरु जी अब तक तो एक दम ठीक थे लेकिन दवाईयाँ लेते ही अस्वस्थ हो गये। यहाँ

तक वहादुरगढ जाते-जाते तो हालत ऐसी हो गयी कि आहार पानी देने के लिए भी सहारा देकर उठाना-वेठाना पडता था। मेरी आखें भर गई। मेने पूछा - गुरु जी, यह क्या हो गया हे ? गुरु जी ने कहा - अर्पण, यदि मेरी जिदगी चाहती है तो ये एलोपेथी दवाईयॉ वद कर दे। और वास्तव में गुरु जी का कहा सच हो गया। दवाईयॉ छोडते ही इतनी जान आ गई कि दोडकर जींद पहुॅच गये। वरना तो वडोदा समाचार भिजवा दिया था कि 11 मई तक पहुॅचना असभव लग रहा हे। जींद में उत्तर भारत के भक्तों के प्राण सघ शास्ता गुरुदेव श्री सुदर्शन लाल जी म० सा० विराजते थे।

जींद में गुरुदेव के प्रेम पूर्ण व्यवहार को देखकर गुरु जी वडे प्रभावित हुए। गुरुदेव के दर्शन करके उन्हें अजीव सी शाति तथा सुकून मिला। जंडियाला मिलने की झलक का वृतात श्री राकेश मुनि जी म० सा० ने गुरुदेव के समक्ष वता कर पहले ही तैयारी की हुई थी लेकिन गुरु जी को उन शब्दों पर खरा उतरना था।

प्रवचन के समय में वर्तमान युग के गोतम स्वामी विनयवान श्री जय मुनि जी म० सा० ने पाटे पर पधार कर कहा 'आज म तथा सभी श्रावक सयम प्रभा जी को ही सुनना चाहते ह।' गुरु जी को इतने सम्मान से शर्मिन्दगी महसूस हुई पर गुरु आज्ञा को शिरोधार्य करके प्रवचन शुरू किया। अत में श्री जय मुनि जी म० सा० ने इतनी तारीफ की कि सभी प्रसन्न हो गये।

प्रवचन समाप्ति के वाद ऊपर गये तो श्री शाति मुनि जी म० सा० जो ध्यान से प्रवचन सुन रहे थे, वे कहने लगे - **कमाल की शली क्या वुलन्द आवाज मे धारा प्रवाह प्रवचन देती हो, सुनकर वडी खुशी हुई।** दो जगह वधाईयॉ लेकर जव तीसरी मंजिल पर गये तो गुरुदेव के चेहरे पर झलकती प्रसन्नता मानो शावाशी दे रही थी। गुरुदेव ने कहा - **'सयम जी जेसी हमारे राकेश मुनि जी ने प्रशसा की थी उससे कहीं आगे पाया है। आप इसी तरह आगे वढती रहो, यही भावना है।'** गुरु जी के दिमाग में पहले ऐसा ख्याल था कि ये इतने वडे सत ओर में छोटी सी साध्वी हूॅ। पता नहीं वोलेंगे भी या नहीं लेकिन आज सारी भ्रमणाऍ काफूर हो गई तथा जन्म लिया अटूट श्रद्धा ने जो अंतिम सॉस तक वनी रही। यही कहते थे -

गुरु पद युगल सरोज मे रहे चित्त सलग्न,
भक्ति भाव की धारणा, कभी न होवे भग।

वडोदा दीक्षा में पधारे जहॉ वेरागन भारती तथा वेशाली जेन गुरु जी के आने की राह देख रहीं थीं। 11 मई को दीक्षा महोत्सव उल्लास के क्षणों में सम्पन्न करवा के गुरु जी हिसार की तरफ चढे। जहा हाऊसिग वोड कालोनी में ठहरे। जून का महिना था छोटा सा कमरा ठहरने को मिला लेकिन धम प्रभावना के लिए गुरु जी हर परिषह सहने को तेयार थे। वहॉ

कालोनी में जैन घर तो 2-4 ही थे लेकिन गुरु जी के प्रवचन प्रभाव तथा पुरुषार्थ ने अजैनों को जैन बना दिया। वहाँ पर पंडित परमानंद जी ने पूछा-क्या हम भी प्रवचन में आ सकते हैं? गुरु जी ने कहा-हॉ, भगवान महावीर के ज्ञान को झेलने वाले सारे पंडित ही थे। तब पंडित जी गुरु जी के परमभक्त बन गये। पंडित जी ने एक दिन पूछा-म० सा०, हिन्दू धर्म पुराना या जैन धर्म पुराना? गुरु जी ने सुन्दर समाधान करते हुए कहा - हिन्दू तथा जैन दोनों ही समाज हैं धर्म नहीं। उन्हें ये भी बताया कि हिन्दू तथा जैन शब्द की उत्पत्ति कब से कहाँ से हुई? सभी के आदि पुरुष ऋषभदेव ही हैं।

कालोनी के महेन्द्र, सावित्री शर्मा तथा अशोक अग्रवाल को जैन धर्म पर विशेष अनुराग पैदा हुआ। सेवा भावी श्रावक वीर प्रसाद ने गुरु जी को डा० गुप्ता को दिखाया तथा गुरु जी द्वारा ऐलोपैथी दवाई लेने से इन्कारी होने पर डा० केडिया की सलाह से प्राकृतिक चिकित्सा द्वारा इलाज करवाया। जिससे गुरु जी लगभग स्वस्थ हो गये थे। सभी रिपोर्ट सही आई। हांसी, मदीना में धर्म प्रचार करते हुए रोहतक जनता कालोनी में प्रवेश किया।

गुरु जी का 1997 का चौमासा वैसे तो कांधला का स्वीकृत हो गया था लेकिन जब दिल्ली यह पता चला कि गुर्दे सिकुड़ गए हैं तो चिकित्सकों ने यही सलाह दी कि आप दिल्ली या रोहतक ही रहे जहाँ बड़े-बड़े डॉ० तथा मशीनें हैं। इसलिए कांधला दादी गुरुणी जी गए। रोहतक ओम प्रकाश जी बंसल की कोठी में गुरु जी ने चातुर्मास किया। वहाँ चातुर्मासिक सारा कार्य भार तो श्री धर्म मुनि जी म० सा० के ऊपर था। गुरु जी ने वहाँ स्वामी जी के निर्देशन में प्राकृतिक चिकित्सा का इलाज करवाया। श्री ओम प्रकाश जी के परिवार ने सराहनीय सेवा की तथा पूरा परिवार गुरु जी के चरणों में पूरी तरह समर्पित हो गया। बंसल परिवार के छोटे-बड़े सभी चार महीने सेवा में रत रहे।

रोहतक में गुरु जी ने जब संवत्सरी प्रवचन किया तो स्वामी जी (चिकित्सक) प्रवचन सुनने के उपरान्त कहने लगे-म० सा०, आप का एक प्रवचन सुनकर ही मेरे तो दीक्षा के भाव बन रहे हैं, हिला देते हो अन्तर्मन को। रोहतक से ही गुरु जी ने प्रथम बार दिवाली पर मौन सहित बंद कमरे में तेला करना शुरू किया।

<u>उत्तरांचल चलें</u> - दि० 11 मई को बड़ौदा में दो दीक्षाएँ होने के बाद सिंघाड़े में वृद्धि हो जाने के कारण दो टोली में विहार होने लगे थे। सोनीपत, मेरठ में धर्म प्रभावना करते हुए दिसम्बर माह में दाद गुरुणी जी के चरणों में पहुँचे। वहाँ पर पुनः कर्मों द्वारा किए गए हमले का वीरतापूर्वक सामना किया। वहाँ से श्री सुबोध प्रभा जी म० सा० को लेकर तीर्थभूमि हस्तिनापुर की तरफ विहार किया। वहाँ जब प्राचीन चीजों को खंडहर रूप में परिवर्तित देखा तो चिंतन चला कि अरे, जिनके लिए महाभारत जैसे बड़े-बड़े युद्ध हो गये, लाखों करोड़ों लोगों का घमासान हो गया, उन्हीं को आज देखने वाला कोई नहीं, सब मिट्टी हो गये। वहाँ पर मन्दिर-मार्गी संतों के दर्शन किए तथा ऋषिकेश पहुँचे। वहाँ नाथ सम्प्रदाय

के सत श्री चरण प्रकाश जी महाराज से मिलना हुआ।

हरिद्वार में 9-10 दिन वाद होने जा रहे कुभ के मेले की तैयारियॉ चल रही थी जिस प्रसग पर सन्यासियों का आवागमन शुरु था लेकिन वहॉ साधुओं को नशीली वस्तुओं का सेवन करते देख गुरुजी वोले- वास्तव में भगवान महावीर ने ठीक ही कहा हे- वहवे इमे असाहू, लोए वुच्चति साहुणो।

गुरु जी के मसूरी से वापिस देहरादून लौटने पर श्री रमणीक मुनि जी म० सा० ने अपने गुरु की जन्म जयती पर प्रवचन के लिए पधारने का सदेशा भेजा। सतों ने गुरु जी के प्रवचन से प्रभावित होकर कहा कि गुरु के विषय में "सयम प्रभा जी ने जितना सुन्दर विश्लेषण अपनी मधुर वाणी द्वारा किया कि मुझे भी इतना कहना नहीं आता।'

<u>हिमाचल की पहाडियो मे परिषह</u> – जनवरी में हिमाचल की तरफ पहाडियों की उतराई-चढाई को पार करते हुए 21 कि मी का विहार करके शम्भुवाला पहुँचे। ठहरने के लिए योग्य स्थान की गवेषणा की, पर नाकामयावी मिली क्योंकि सभी घर मासाहारी थे। पूछताछ पर ईश्वर वनिये का पता मिला, परन्तु जव वहॉ गये तो सयोग से पूरा परिवार शहर गया हुआ था। लडका घर में अकेला था, उसने ठहराने से मना कर दिया। गुरु जी ने समझाया-वनिये होकर भी सत के प्रति सेवा भाव से शून्य हो, थोडा फटकारा। लडका शर्मिन्दा हो गया पर फिर भी उसने यही कहा कि कमरे तो नहीं मिलेंगे। वाहर वरामदे में ठहरना होगा। समयाभाव के कारण वहीं ठहरना उचित समझा। हिमाचल की कडकती ठड, जनवरी का महीना, तथा ऊपर से घर एकदम वहुत वडी नदी के किनारे। कप-कपाती सर्दी में भी आग की सेक लेने से गुरु जी ने लडके को मना कर दिया, वोले - भाई इस आत्मा ने नरक में वहुत सर्दी भोगी हे। हम दोनों साध्वियॉ कहने लगी - म० सा०, इसके माता-पिता होते तो अवश्य ही कमरा दे देते। पारखी दृष्टि के गुरु जी वोले-अर्पण, वेटे ने तो वरामदा दे दिया, माता-पिता होते तो यह भी नसीव नहीं होता। गुरु जी के वचन सत्य प्रमाण वने। रात को मॉ-वाप वापिस लोटे और चर्चा से पता चल गया कि इनकी तो वेटे जितनी भावना भी नहीं है। 21 कि मी चलकर आये थे, पूरा दिन आहार पानी के विना वीता था ओर पूरी रात कडकती सर्दी में गुजारी ओर अगले दिन फिर सुवह 19 कि मी के लिए महावीर के सिपाही विना आहार के चल दिए।

विचरते-विचरते पचकुला होते हुए मार्च में रोपड पधारे। 3 प्रवचनों ने श्रावकों को खींच लिया। वे चातुर्मास का आग्रह करने लगे। गुरु जी ने समझाया कि आपके यहॉ साध्वियों जी का चोमासा खुल चुका हे। पर जव लोग नहीं माने तो गुरु जी के विहार की तेयारी हो गई लेकिन रोपड के प्रधान जी सडक पर लेट गये ओर वोले-म० सा०, या तो मेरे ऊपर से होकर निकल जाओ, नहीं तो हमारी विनती स्वीकार करो। रोपड सघ को वडी मुश्किल

समझा कर नालागढ़ पधारे। वहाँ उपप्रवर्त्तक श्री राम मुनि जी म० सा० के दर्शन किए। वहीं पर होली चौमासी मनाई तथा श्री सुयश प्रभा जी म० सा० से मधुर मिलन हुआ। वहाँ आंखों के आप्रेशन के शिविर में पधारे, विशाल जन समुदाय को प्रवचन सुनाया तो चातुर्मास के लिए विनती होने लगी।

हिमाचल, पंजाब की फरसना करके अब कदमों ने राह पकड़ी अम्बाला की, जहाँ जाकर मन की कली-कली खिल गई। चाल में इतनी तेजी थी मानो कदम जमीन को न छू रहे हों। गुरुदेव श्री सुदर्शन लाल जी म० सा० अपने 22-23 शिष्यों सहित विराज रहे थे। गुरुदेव ने कहा-संयम प्रभा जी, आपकी यशकीर्ति सुनकर मन बहुत प्रमुदित है। गुरुदेव को गुरु जी के गुर्दे की तकलीफ सुनकर बड़ी पीड़ा हुई तथा अपनत्व भाव दर्शाते हुए कहा, संयम जी - **''आप मेरी छोटी बहन हो, सदा तुम्हारे स्वास्थ्य की मंगल कामना करूँगा। अपने स्वास्थ्य का पूरा ध्यान रखना क्योंकि तुम्हारा स्वस्थ रहना हमारे तथा शासन के लिए नितान्त आवश्यक है।''** गुरुदेव बोले, संयम प्रभा जी - आज 2 घण्टे में 8 यानि 1 घण्टे में 4 लोच संतों ने किए हैं तभी गुरु जी ने हँसकर अर्ज की, गुरुदेव - आपकी अर्पण तो 4 घण्टे में एक लोच करती है। तब गुरुदेव ने कहा, अब एक घण्टा भी लगे तो कहना (वास्तव में गुरु कृपा से मैंने अगला लोच 45 मिनट में कर दिया था।)

गुरु जी अपनी शिष्या को ऐसा आशीर्वाद दिलवा कर तथा ढेरों स्वयं के लिए आशीष पाकर जिन्दगी में उनके अंतिम बार दर्शन करके जगाधरी गये। वहाँ मूर्तिपूजक साध्वियों के साथ महावीर जयन्ती मनाई। गुरु जी हमेशा व्यवहार कुशल तथा मिलनसार रहे हैं। गुरु जी अम्बाला में प्राकृतिक चिकित्सा करवाने के विचार से पधारे थे लेकिन वहाँ असुविधा होने के कारण मई में पट्टी-कल्याणा (समालखां) में इलाज शुरू किया। वहीं छुटमलपुर (उत्तर प्रदेश) से आये दिनेश जी बंसल गुरु जी के प्रति परम निष्ठावान बने। गुरु जी को खाली बैठना पसंद नहीं था इसलिए हम साध्वियों को आदेश दिया कि दिन में आश्रम के बहन-भाईयों को भजन कथा आदि सुनाओ। जांच के बाद रिपोर्ट एकदम सामान्य आई परन्तु चिकित्सक ने सलाह दी कि आप हर साल एक बार चिकित्सा पद्धति से इलाज करते रहें। आप की जिंदगी में कोई परेशानी नहीं रहेगी, कोई खतरा नहीं रहेगा।

<u>शुरू हुआ जीवन का सर्वोत्कृष्ट यशस्वी काल (**Golden Period**)</u> – प्रधान श्री नेम चन्द जी, शुभ जी, विनोद जी आदि की प्रबल भावना को मान देकर 1998 के चातुर्मास के लिए कुरुक्षेत्र में प्रवेश किया उस भूमि में जहाँ लगभग 12 वर्ष पूर्व छेदोपस्थानीय चारित्र ग्रहण किया था। कुरुक्षेत्र में मात्र 12-14 घरों में अखण्ड नवकार मंत्र का जाप, तपस्या की झड़ियाँ लगी। सभी को एक सपना-सा लगने लगा था पर यह हकीकत थी। पंजाबी, सोनी, सिक्ख, अग्रवाल सभी धर्म से जुड़ गये। एक सिक्ख भाई ने जीवन भर के लिए ब्रह्मचर्य का नियम लेकर गुरु जी को चातुर्मास उपरान्त चादर वहराई। (गुरु जी ने

अपनी शिष्या अर्पण की दीक्षा के बाद प्रत्याख्यान ले लिया था कि जो चार खद में से एक खद का नियम जीवन भर के लिए ग्रहण करेगा उसी से वस्त्र लेना।) गुरु जी ने गभपात करने वाली डाक्टरनी सोनी वहन को कभी यह हिसक कार्य न करने का नियम दिलवाया। विना प्रभावना वॉटे पूर्वपिक्षा ज्यादा तप कराके समाज के लोगों की गलत भ्रमणाओं को दूर किया। कईओं को भ्रान्ति थी कि तप लालच में होता हे। कुरुक्षेत्र में अनिल भाई की आयुर्वेदिक दवाइ का सेवन किया।

किताबों में मिटे कुरुक्षेत्र के नाम को पुन उजागर करके गुरु जी वडोदा पधारे। स्वजाति की साध्वी की ऐसी शेर सी गूँज सुनकर वडोदा वासियों की प्रसन्नता का पार नहीं रहा। महाराष्ट्र प्रवर्त्तक श्री कुदन ऋषि जी म० सा० का पानीपत वेरागी मुकेश जेन के 10 दिसम्बर के दीक्षा महोत्सव पर पधारने का निमन्त्रण पाकर गुरु जी पानीपत पधारे। वहाँ म० सा० गुरु जी से प्रभावित हुए तथा वोले-सयम प्रभा जी, आप विशाल हृदयी हें। सम्प्रदायवाद से परे हें इसलिए हमारा आग्रह है कि आप महाराष्ट्र पधारें। पानीपत में ही उत्तर भारत के श्रावकों की आत्मा भगवन श्री राम प्रसाद जी म० सा० तथा श्री उपेन्द्र मुनि जी म० सा० के दर्शन किए। भगवन श्री जी ने गुरु जी के प्रवचन की प्रशसा की। गुरु जी ने म० सा० के दर्शन करके स्वय को धन्य किया तथा ऐसे महापुरुष के पुन पुन दर्शन करने के भाव रखे। क्योंकि भगवन श्री इस युग की महान हस्ती हें।

येषा मन इह विगत विकार, ये विदधति भुवि जगदुपकार।
तेषा वयमुचिता चरिताना, नाम जपाओ वार-वार।।

एक दिन गुरु जी ने मेरे सामने अपने मन के भाव रखे कि मेरा काफी वर्षो से दक्षिण की तरफ विचरने का भाव हे। अव एक मजवूत सहयोगी पाकर म अपनी इच्छा पूरी करना चाहती हूँ। मेंने कहा – जेसी आपकी इच्छा हो लेकिन पहले स्वास्थ्य का ध्यान रखना जरूरी है।

चले थे महफिल छोडकर, कि हम रगीन होकर आएगे,
न मिला पेगाम कोई किसी आर महफिल के हो जाएगे।

हरियाणा को शायद हमेशा के लिए अलविदा कहकर तथा अन्तिम वार सव जगह की भूमि की स्पर्शना करते हुए डगर पकडी हे दक्षिण की। क्या पता था कुछ दूर की यात्रा लम्बी यात्रा वन जाएगी। महरोली दादा वाडी में कलकत्ता से आए विनय कुमार जी वाफना ने धर्म चर्चा से प्रभावित होकर कलकत्ता पधारने की पुरजोर विनती की।

फरीदावाद में श्री लालचन्द जी म० सा० के शिष्य श्री अरुण मुनि जी म० सा० के दर्शन किए तव उन्होंने कहा-सयम प्रभा जी, "व्याख्यान इतना सुन्दर है कि हर कोई आपका हो जाएगा। इसलिए महाराष्ट्र में तभी प्रवेश करना यदि साधना की ताकत पास

में हो। गुरु जी ने कहा - "म० सा० गुरु कृपा ही मेरी साधना है।" मथुरा, आगरा होते हुए जब भरतपुर पहुँचे तो वहाँ श्रावक बोले - आप की संयम क्रियाएँ इतनी कठोर हैं तथा अल्प परिग्रही हो, लेकिन यहाँ तो कई साध्वियाँ ओघा भी साईकिल पर रखती हैं।

फरवरी में जयपुर पहुँचे। मैंने श्रावकों से प्रवचन के समय पूछा तो बोले-अन्नदाता, शेष काल में लोग व्याख्यान में आते नहीं। मैंने कहा - फिर तो हम विहार के भाव रखते हैं। श्रावकों ने अगले दिन प्रवचन करवाया तो मात्र 30-35 की उपस्थिति रही लेकिन उस प्रथम प्रवचन ने कमाल कर दिया। तीसरे दिन लाल भवन का विशाल प्रांगण खचाखच भरा था। नाहर जी, पारस बाई जी कर्नावट आदि की खुशी का ठिकाना नहीं था। बड़े-बड़े श्रावकों ने हाथ जोड़कर ठहरने की विनती की तथा 8 प्रवचनों ने ही गुलाबी शहर में गुलाब की सौरभ फैला दी।

जीवन दान मिला - गुरु जी कहने लगे - अर्पण, हम कई वार ब्यावर आ चुके हैं। हमने सभी रास्तों से आकर देखा है। लेकिन कहीं-कहीं से श्री सुगन कँवर जी म० सा० को हमारे आने का समाचार मिल ही जाता है। कभी अचानक पहुँचना चाहते हैं। मेरा शेर (अर्पण) यह काम करके दिखाये तो जानूँ। मैंने कहा-ठीक है अचानक पहुँचकर वंदना करेंगे। मांगलियावास तक चुपचाप पहुँच गए थे कि अचानक ब्यावर आफिस का मैनेजर तिलोक भाई आकर बोला-अन्नदाता ने पुछवाया है सुख साता तो रही? गुरु जी बोले, अर्पण - मैंने तो पहले ही कहा था असंभव है। मैंने कहा-कोशिश करूँगी। मांगलियावास से विहार किया कि सड़क पर ट्रक से टकराकर गैस की बड़ी टंकी पलट गई और ट्रक हमारे ऊपर गिरने लगा। दो साध्वियाँ श्री मल्ली प्रभा जी, श्री सुबोध प्रभा जी थोड़ी पीछे थीं। मैंने भी यह कहकर कि गुरु जी इधर आ जाओ ट्रक ऊपर गिर जाएगा, झाड़ी में छलाँग लगाई। मगर गुरु जी के एकदम पास ट्रक आ गया, फिर गुरु जी दौड़े। इतनी देर में ही जमा हुई भीड़ ने कहा कि महाराज एक सैकिन्ड की देर कर देते तो ट्रक कुचल देता। आयुष्य उस समय प्रबल था। गुरु जी बाल-बाल बच गये, मगर मेरी आंखों में पानी आ गया। पूरा शरीर काँपने लगा। गुरु जी बोले-अर्पण, आज ये स्थिति है मुझे कुछ हो गया तो तेरा क्या हाल होगा? 27 कि. मी. का विहार करके ब्यावर से बाहर 3 कि.मी. पहले ठहरे तथा वहाँ से सुबह-सुबह अचानक पधार कर सभी को आश्चर्यचकित कर दिया। वहाँ तैयारियाँ चल रही थी कि संयम की अगवानी में जाना है। ब्यावर में तरुणाचार्य श्री विजय राज जी म० सा० के दर्शन किए, उन्होंने गुरु जी के प्रवचन की प्रशंसा करके पंजाबी भजन सुना या रब्ब सब दे दिला दें विच वसदा...।

1999 के वर्ष में गुरु जी मेरे अध्ययन को लक्ष्य में रखकर वहीं ब्यावर में ही रहना चाहती थीं। लेकिन 20 दिन बाद ही जोधपुर में होने जा रही आचार्य श्री जी के सान्निध्य में

कनिका राका की दीक्षा के लिए विहार करना पडा। पडदाद गुरुणी जी के ये अन्तिम दर्शन थे। पीपाड में प्रवचन में मानों सेलाव सा उमड पडा था। जोधपुर में दीक्षा प्रसग पर खडे होकर प्रवचन दिया। आचार्य श्री जी आदि सभी सतों को, साध्वियों को अपनी "सयम" पर वडा गर्व था।

अप्रमत साधना के आराधक, निमल सयम की परिपालना करने वाले साधक श्रद्धेय श्री सुमति मुनि जी म० सा० दिन में महामन्दिर में आगम का अध्ययन करवा रहे थे कि सोहन लाल कटारिया ने आकर कहा (26 अप्रेल के दिन) कि कल 25 तारीख को हरियाणा के वरिष्ठ सत देवलोक हो गये हैं। गुरु जी सुनते ही वोले अपने सिर का वरद्हस्त उठ गया, सहारा छुट गया। गुरु जी को एकदम झटका लगा, वोले अर्पण – हम समझ न पाये गुरुदेव के इशारे को, क्योंकि कुरुक्षेत्र चातुर्मास में गुरुदेव श्री सुदर्शन लाल जी म० सा० के दो-तीन समाचार आये कि ' सयम प्रभा जी आगे वढने से पहले मिलने का भाव रखना, भविष्य का कुछ पता नहीं।"

धन्नारी के श्रावक श्री गोतम जी वेद, सेठिया सभी आचार्य श्री जी के चरणों में पहुँचे ओर गुरु जी के 1999 के चातुर्मास की स्वीकृति ले ली। गुरु जी का उस क्षेत्र में जाने का मन तो नहीं था पर गुरु आज्ञा को शिरोधार्य करके प्रस्थान किया। इधर से 1993 के चातुर्मास में सुने प्रवचनों से प्रभावित अन्य आसपास के श्रावकों का चातुमास की विनती को लेकर तॉता लग गया लेकिन फरसना धन्नारी की प्रवल रही।

मई में जोधपुर में प्राकृतिक पद्धति से 20 22 दिन इलाज करवाया। इलाज में कोई दोप न लगे इसलिए आश्रम में ही रहते तथा अपनी साध्वियों से ही सारे काम करवाते थे। सेवाभावी किशोर जी वोहरा ने सराहनीय सेवा की। वडोत से कुसम जी०, अनुराधा जी दर्शनार्थ पहुँची तथा इलाज करवाते समय भी निर्दोषता का ध्यान देखकर अति प्रसन्न हुई।

गुरु जी 2 4 दिन विश्राम करने के लिए हाऊसिग वोर्ड कालोनी में पधारे। जहॉ साधु-साध्वी वर्षो में दो-चार दिन ठहरते थे। लेकिन गुरु जी को प्रवचन विना चैन नहीं रहती थी, मानो जीभ में खुजली होने लगती थी। वहॉ गुरु जी के प्रवचनों का इतना प्रभाव रहा कि उपाध्याय श्रीमान् मुनि जी म० सा० के सासारिक भाई धनपत जी सेठिया, मेहता जी आदि इतने प्रभावित हो गये कि एक महीने से पहले विहार नहीं करने दिया। श्री सुवोध जी म० आदि साध्वियों ने 3 3 कि०मी० गोचरी के लिए जाकर पुरुपार्थ किया, श्रावकों का कहना था कि प्रथम वार इतनी भीड देखने को मिली। वरिष्ठ श्रावकों ने आगामी चातुर्मासिक विनती की।

<u>धन्नारी मे धर्म क्रान्ति</u> – 1999 के धन्नारी चातुर्मास की रौनकों से सवकी जुवॉ पर यही वाक्य थे – कोन पजाव की साध्वी हे जिसने पूरे मारवाड को हिला डाला हे, ऐसा

जबरदस्त प्रभाव इतना सुन्दर प्रवचन। सभी जैन-अजैन लोगों में धर्म की लहर सी आ गई। प्रथम वार दर्जी, सुनार, सोनी सभी जाति के लोग पौषध में देखे गए। 8 दिन पर्युषण पर्व में पूरा जैन वाजार बंद रहा। चातुर्मासिक ठाठ सुनकर पास में ही नागौर में विराजित आचार्य श्री हीरा मुनि जी म० सा० के पास दर्शनार्थी आते तो [illegible] धन्नारी जाकर देखो कितनी रौनक है तथा मिलने का भाव दर्शाया। 200 साल से [illegible] क्षेत्र में प्रथम बार श्री चम्पा लाल जी वैद [illegible] आसपास के क्षेत्रों के लिए आकर्षण का कारण बना। [illegible] द्वारा काफी जोर डाला गया लेकिन गुरु जी ने [illegible]।

अव्यवस्था तथा भूख के कारण मरती गायों [illegible] प्रवचन दिया। श्रावक वोले-हम म० सा० के नाम से गौशाला [illegible] से हमेशा दूर रहे इसलिए गऊशाला का संयम नाम रखने [illegible]। [illegible] से दान को लेकर चल रही समाज में कहा सुनी को गुरु जी ने [illegible] संघ में प्रेम स्थापित किया। धन्नारी में गुरु जी ने एक दिन गुरुदेव [illegible] की तरह गुप्त तपस्या करने की इच्छा जाहिर की। गुरु जी की शारीरिक [illegible] 11 की गुप्त तपस्या करके गुरु जी की इच्छा पूरी की। श्रावकों के [illegible] जी ने पारणे के चौथे दिन प्रवचन में वताया।

धन्नारी में धर्म ध्यान के इतने ठाठ सुनकर आचार्य श्री जी की प्रसन्नता [illegible] था। जोधपुर में गुरुदेव श्री जी ने वहुत-वहुत शावाशी दी। गुरु जी ने दक्षिण दिशा [illegible] की भावना रखकर गुरुदेव से आज्ञा मांगी। आचार्य श्री जी प्रसन्नता से वोले-मुझे [illegible] आप ही दक्षिण में जयगच्छ का नाम रोशन करेंगी।

चिरयुग करती रहो धरा पर, जिनवाणी का विमल उद्योत,
अब बहा दो इस धरती पर, आध्यात्मिक का नव स्त्रोत।

जोधपुर में ज्ञान गच्छाधिपति श्री चम्पा लाल जी म० सा० के रायपुर की हवेली में दर्शन किए। वहाँ भी प्रकाश मुनि जी आदि संतों ने यही कहा-आपके प्रवचन के विषय में [illegible] प्रशन्सा सुनी है।

पाली (मेवाड) में स्थानक का भाई कहने लगा-शेपकाल में 5-[illegible] हैं लेकिन जव सूचना की गई तो चौथे प्रवचन के दिन पाली का हाल [illegible] भाई वोला-अन्नदाता, मुझे यहाँ वर्षों हो गए रहते हुए यहाँ वड़े-वड़े [illegible] शेष काल में प्रवचन में कभी इतनी उपस्थिति आज तक नहीं हुई [illegible] विनती पर मुझे आगे जाना है-यह कहकर गुरु जी ने पीछा छुड़ा[illegible] संयम प्रभा जी का एक चातुर्मास तो अवश्य ही करवाना है। श्री [illegible] विशेष समर्पित हुए। वहाँ पर विराजित ज्ञान [illegible] साध्वियाँ [illegible]

के दर्शन किए।

<u>मीरा की नगरी चित्ताडगढ</u> – वहाँ महान साध्वी श्री जश कँवर जी म० सा० के दशन करके स्वय को धन्य वनाया। श्री जश कँवर जी म० सा० ने जोगनिया माता पर होने वाली वकरों की वलि को स्वय खडे होकर जान की वाजी लगाकर वद करवाई थी।

<u>भारत के हृदय मध्य भारत मे</u> – नीमच में जय गच्छ के महान सत आगम विवेचक गुरुदेव श्री पारस मुनि जी म० सा० के दर्शन हुए। वहॉ कई मामलों पर गुरु जी ने चचा की। गुरुदेव ने कहा – जिस रास्ते से आगे वढने की सोची हे इस रास्ते से मरण योग हे। इसलिए रास्ता वदल लें। गुरु जी ने कहा – 'मं महाराष्ट्र न जाकर, भिलाई की विनती वहुत हे उस तरफ विहार की भावना रखती हूँ।' गुरुदेव ने आगाह किया, पहले स्वास्थ्य फिर विचरना ओर इस रास्ते महाराष्ट्र मत जाना। वदनावर में सम्प्रदायवाद के कटघरे में खडे श्रावकों ने गुरु जी के चातुर्मास की विनती की।

इन्दोर जानकी नगर में आचार्य श्री नानेश की साध्वियॉ श्री कमल प्रभा जी के दशन लाभ हुए। वहॉ के श्रावक ऐसा प्रवचन सुनकर दग रह गये तथा 15-20 कि मी तक रोजाना प्रवचन सुनने आते रहे। श्रावकों की भरी आखों को छोडकर चातुर्मासिक विनती अस्वीकृत करके आगे वढे। मुमुक्षु-आत्मा कुमारी समता जेन दीक्षा के पूर्व वदनावर में दर्शनार्थ पधारी। उज्जैन में प्रकाश जी ने पानीपत निवासी श्री सुलेख चन्द जी से वहुत आग्रह किया कि आप के देश की साध्वियों का किसी तरह भी चोमासा करवा दो।

<u>विन मोसम वरसात</u> – भोपाल में धूमधाम से महावीर जयन्ती मनाई गई। सभी की जुवॉ पर ये ही शव्द थे मानो पर्युषण आ गये हैं। मारवाडी रोड का विशाल स्थानक के हाल में श्रोताओं की भीड हो जाती थी। ओली तप में गुरु जी ने भी 4 आयम्विल किए पर कमजोरी आने पर प्रवचन देने में असमर्थता होने से पारना कर लिया। शेष काल में भी वहॉ 9 दिन का 24 घण्टे का अखण्ड जाप वहुत अच्छी तरह से हुआ। वहाँ के अध्यक्ष श्री घेवर चन्द जी नाहर, फतह चन्द जी वाफना आदि श्रावकों ने जिद्द धार ली कि आपका चातुर्मास करवाना है। गुरु जी ने समझाया - आप तीन दिन पहले ही विनती करके आए हो। कुछ श्रावक वोले तो आप उपाय वताओ कि वो विनती कैंसिल हो जाए। गुरु जी ने समझाया-सभी साधु-साध्वी एक समान हैं ऐसा सोचना शोभा नहीं देता।

नाहर जी ने सोचा पास में ही चोमासा हो जाए तो अगले वर्ष हमें इनका चोमासा करवाना आसान रहेगा। तभी उन्होंने 200 कि मी पर वेतुल समाचार दिया। धनराज जी पगारिया आदि 6 7 श्रावक आये। गुरु जी ने क्षेत्र की जाँच पडताल की तो पता चला 19 साल से चोमासा नहीं हुआ। क्षेत्र मात्र सराय हे। भूमि वजर हो चुकी हे। भाईयों की लग्न शून्य हे। वेतुल की मनाही सुनकर नाहर जी ने लगभग 500 कि मी पर हिगन घाट समाचार भेजा कि पजाव की साध्विया आई हैं। सयम तथा प्रवचन वेमिसाल ह। समाचार मिलते ही

सुभाष जी ओसवाल, नथमल जी सिंघवी आदि 5-6 श्रावक आये लेकिन गुरुदेव श्री पारस मुनि जी म० सा० के शब्दों को ध्यान में रखते हुए गुरु जी ने असमर्थता प्रकट कर दी तथा भिलाई का भाव है ऐसा जवाब दिया। लेकिन फरसना प्रबल थी, श्रावक कहने लगे - स्वीकृति लिए विना जाएगे नहीं और न चाहते हुए भी स्वीकृति पत्र लिखवा कर ले गये। मैंने कहा- गुरु जी, बिना क्षेत्र देखे तथा जानकारी किए बिना चौमासा कैसे खोल दिया ? गुरु जी ने कहा - **अपने पुरुषार्थ से कैसा भी क्षेत्र हो जगाया जा सकता है।**

वाणी का आकर्षण – भोपाल में एक रात के लिए बीच में कोहे फिजा कालोनी में ओम प्रकाश जी मुंदडा के घर ठहरे। मात्र एक रात्रि की धर्म चर्चा में वाणी ने मुंदडा परिवार को बांध दिया। मुंदडा जी ने 8 दिन तक अपनी कोठी में ही प्रवचन करवाये। वे कहने लगे- म० सा०, मैं अकेला 50 लाख की स्थानक अभी वनवाता हूँ पर आप कहीं मत जाओ, यहीं रहो। "हमारा ऐसा कल्प नहीं" यह कहकर गुरु जी ने उन्हें समझाया। ज्ञान स्वरूप जी तथा नीलू जी ने कई नियम प्रत्याख्यान ग्रहण किये तथा ओम प्रकाश जी ने जावजीव के लिए ब्रह्मचर्य का नियम लेकर गुरु जी को वस्त्र बहराया। भोपाल से बिहार चातुर्मास की तरह ऐतिहासिक रहा। आष्टा में चन्दनमल जी बनवट परिवार खींचे आते रहे।

प्रवचन का करिश्मा – हिंगन घाट चातुर्मास के लिए प्रस्थान करते हुए बीच में बैतुल में दो दिन का पड़ाव डाला। मैंने धनराज जी पुगारिया से प्रवचन के लिए कहा तो वे हॅस कर बोले-म० सा०, यहाँ तो बड़े-वड़े संत आकर चले गए पर प्रवचन का मामला बस ऐसा ही रहता है। दिन में बहनों को सीखा देना। मैंने कहा - श्रावक जी, प्रवचन बिना मेरे गुरु जी ठहरने का भाव नहीं रखते। अगले दिन स्थानक के कमरे में 4 भाई 12-13 बहनों की उपस्थिति में प्रवचन हुआ। पर पहले ही प्रवचन ने मानो जादू कर दिया। व्याख्यान की भीड़ वढ़ने लगी। स्थानक का हाल, दिगम्बर चैत्यालय, सनातन मन्दिर सभी जगह प्रवचन हुए, जगह छोटी पड़ने लगी।

अक्षय तृतीया 3 मई को हिंगन घाट श्री संघ चातुर्मास की घोषणा करवाने गुरु जी की सेवा में पहुॅचा। क्षेत्र में इतनी जागृति देखकर बैतुल संघ ने खड़े होकर हिंगन घाट संघ के समक्ष झोली फैलाई कि आज के दिन श्रेयांस ने भगवान को आहार दान दिया था, उसी तरह तुम भी हमें आज के दिन चौमासे का दान दे दो। पर यह असम्भव था। तब सभी अजैन राजेश आहुजा, मांगी लाल जी सोनी, जैन नवयुवक आदि खडे हो गए और चौमासा घाषित नहीं करने दिया। तभी संघ अध्यक्ष श्री महावीर जी गोठी ने भरी सभा में खड़े होकर प्रतिज्ञा ली कि **"जब तक सयम प्रभा जी का यहॉ चौमासा नहीं होगा मैं अन्न जल ग्रहण नहीं करूॅगा।"** सभा अचम्भित हो गई। गुरु जी ने कहा, अर्पण - आज तक 16 साल की दीक्षा में, गुरुणी जी के पास भी ऐसा कोई प्रसंग नहीं आया, अब तू संभाल इस धर्म संकट को। गुरु जी की आज्ञा से मैंने अध्यक्ष जी को समझाया तथा बाद में बैठ कर विचार विमर्श

करने की कहकर सभा विसर्जित कर दी। वाद में नोजवान वोले, म० सा० - चोमासा कैसे मिल सकता है ? गुरु जी ने कहा यदि आचार्य श्री जी ने स्वीकृति पत्र नहीं भेजा होगा तो वे वदल सकते हैं। तभी विमल सुराना आदि 4-5 नोजवान वैतुल से जोधपुर पहुॅचे। लेकिन गुरुदेव के मुह से यह सुनकर मायूस हो गए कि कल ही आज्ञा पत्र भिजवा दिया हे। वापिस आकर डाकखाने से आज्ञा पत्र पकडने की कोशिश करने लगे तो गुरु जी ने समझाया - जो फरसना हे उसी को स्वीकारो। आप के क्षेत्र की अन्तराय थी। सघ ने आगामी चातुर्मास की विनती का वचन देने का आग्रह किया। गुरु जी वोले - कई वर्ष से मद्रास की विनती हे इसलिए पीछे लोटना मुश्किल होगा, पर साधु भाषा में कहा-यहॉ चोमासा करने का भाव रखती हूॅ।

वेतुल में करिश्मा दिखा कर नागपुर की तरफ वढे। अव इलाज करवाने के दिन भी आ गये थे। इसलिए चातुर्मास से पहले केवल इलाज का ही लक्ष्य था। हरियाणा निवासी पारस जी, चतुर्भुज जी आदि श्रावक पता लगते ही फौरन नागपुर से दर्शनार्थ आये। लम्वे समय वाद अपनी भाषा सुनकर अति प्रसन्नता हुई। फिर आगे श्रावक श्री सुमति प्रकाश जी म० सा० का सन्देशा लाए कि हम दो दिन रुकेंगे, मिलकर ही दुर्ग की तरफ विहार करेंगे।

नागपुर की तरफ विहार करते समय वेतुल सघ ने जहॉ 12 कि मी पर व्यवस्था की थी वहॉ तक पहुॅचने पर गुरु जी वोले-अर्पण, अभी तो कुछ चले ही नहीं, कुछ आगे चलो। गुरु जी को ढूॅढते हुए श्रावक जव वाद में 19 20 कि मी पर पहुॅचे तो वे कहने लगे, अन्नदाता - यह हरियाणा नहीं हे जहॉ मर्जी ठहर जाएॅ। यहॉ शाकाहारी घर नहीं मिलते। इसलिए जहॉ व्यवस्था करें, वहीं ठहरना। गुरु जी वोले कि साधु की व्यवस्था उसके कधे पर ही हे। लेकिन उमारिया गॉव में दो ही शाकाहारी मिलने पर अपने हरियाणा की याद आ गई, वोले - जल्दी ही 2-4 साल में ही हरियाणा लोटना पडेगा।

27 मई को नागपुर पहुॅचे। वर्धमान नगर में जाते हुए सामने से उपाध्याय श्री विशाल मुनि जी को लेने के लिए आते देखा तो गुरु जी शर्मिन्दा हो गए। 14 साल वाद दीक्षा गुरु के दर्शन करके मन को वडा आह्लाद हुआ। श्री सुमति प्रकाश जी म० सा० गुरु जी का प्रवचन सुनकर कहने लगे कि - आज तक तो लोगो से सुना था पर आज प्रत्यक्ष मे प्रवचन सुना तो लगा वास्तव मे लगता ही नहीं कि कोई साध्वी वोल रही है।

<u>सतरो की नगरी मे धूम</u> – नागपुर या आसपास में प्राकृतिक चिकित्सालय न होने के कारण इलाज रह गया। वहॉ के एक अनुभवी वेद्य धर्माधिकारी की जयन्ती भाई ने दवाई दिलवाई। वेद्य ने देखते ही वता दिया कि पूर्व में विना मर्ज के लम्वे समय तक अग्रेजी दवाईया खाई हें, इसलिए गुर्दे पर असर हुआ है। श्री तारा चन्द जी तथा श्री धर्म चन्द जी मुणोत सेवा में हर समय हाजिर रहे। गुरु जी ने जव प्रवचन किए तो सभी श्रावक कहने लगे - हमने

मौका हाथ से गंवा दिया। बैतुल से चातुर्मास के लिए समाचार तो आया था, लेकिन हमने नजर अन्दाज कर दिया। वरिष्ठ श्रावक नवलचंद जी पुगलिया, शीतल प्रसाद जी, मुणोत बेताला परिवार आदि श्रावक जिधर भी गुरु जी जाते, उसी कालोनी में प्रवचन का लाभ लेते।

कांग्रेस कालोनी के तपस्वी श्रावक श्री घेवर चन्द जी झामड़ ने विनती की, म० सा० - आप यहॉ चौमासा कर दो। मैं अकेला ही करवाऊँगा। जितने कहोगे मासखमण हो जाएंगे। अन्य तपस्या भी हो जाएगी। लेकिन स्वीकृति हिंगन घाट को दी हुई थी। 40 साल बाद अपनी गच्छ की साध्वियों का ऐसा जबरदस्त प्रभाव देखकर दिनेश जी बेताला आदि श्रावकों की खुशी का ठिकाना नहीं था। नागपुर में स्थायी छाप छोड़कर गुरु जी ने पवनार की राह ली। जहाँ संत बिनोवा भावे ने जैन संथारा किया था। वहॉ से महात्मा गान्धी के आश्रम वर्धा आये। गुरु जी ने गुर्दे की जांच करवाई तो गुर्दे का आकार लगभग बराबर था। Blood Urea 48 तथा Creatnine 1 था। रास्ते में मधुर भाषी श्री मंगल प्रभा जी म० सा० के दर्शन हुए।

महाराष्ट्र विदर्भ में दीप्ता चातुर्मास – लगभग 1900 कि.मी. का विहार करके एकदम स्वस्थ शरीर से गुरु जी ने 2000 के चातुर्मास के लिए हिंगन घाट में प्रवेश किया। जब गुरु जी के मुंह में जिनवाणी झरने लगी तो 4-5 दिन में ही प्रवचन हाल छोटा पड़ने लगा। श्रावक बोले, म० सा० - श्री विशाल मुनि जी, श्री विलक्षण मुनि जी म० सा० ने हमें पहले ही कहा था कि जिस साध्वी का चौमासा करवाया है। उसके लिए प्रवचन स्थल की व्यवस्था कर लें तथा नागपुर से भी समाचार आये थे कि प्रवचन के लिए स्थानक हाल पर्याप्त नहीं है। लेकिन हमने सोचा था कि बड़े-बड़े आचार्यों के चौमासे इसी स्थानक में हुए हैं इसलिए गौर नहीं किया। चौमासे के बाकी दिन मौसम को छोडकर सभी प्रवचन प्रथम बार कटारिया भवन में हुए। धर्म ध्यान की लहर आ गई।

एक बहन बिमला मुणोत आकर बोली, म० सा० - मेरी देवरानी नवकारसी नहीं कर पाती, उसे आशीर्वाद दो। गुरु जी ने बुलाया, मांगलिक सुनायी तथा कल नवकारसी करना ऐसा कह दिया। अगले दिन वहन ने ऐसी नवकारसी की कि फिर तो मासखमण व्रतों को करके ही पारना किया जो सबके लिए एक आश्चर्य था। मिट्ठु जी लालवाणी हमेशा यही कहते थे कि म० सा०, आप के पास कुछ न कुछ तो शक्ति है जो संवत्सरी को भी स्थानक में न आने वाला रोजाना सामायिक में बैठता है तथा नवकारसी भी न करने वाली 31 उपवास साता से कर गई।

चातुर्मास काल में भाग चन्द्र जी ओस्तवाल, श्री धर्म चन्द जी गोलच्छा परिवार, निर्मला जी खिंवसरा की सेवा अविस्मरणीय रही। मुणोत परिवार ने तपस्या के ठाठ लगा दिए। राजा सुराना, नितिन लुणावत आदि नौजवान कहते थे कि हमारी पुण्यवानी है जो हमें एक अच्छी मार्गदर्शिका मिली। एक मिनट की भी फुर्सत न होने पर भी 4 महीने सेवा में लगे। दिलीप गोलच्छा से सभी हैरान थे। दो बार स्थानक के पास के घरों में डाका डलने से बचा क्योंकि

वहाँ गुरु जी की कृपा से जाप चल रहा था।

रिखव गान्धी, चन्द्र जी, महेन्द्र मुणोत आदि तथा नागपुर के सभी श्रावकों ने आग्रह किया कि म० सा०, माइक लगा लो, 15-20 हजार लोग प्रवचन में आ जाएगे। गुरु जी ने कहा – भीड के लिए सयम नहीं लिया हे पहले जितने व्यक्ति विना माइक सुनते हें वे तो सुधर जाएँ। स्वास्थ्य एकदम वढिया चल रहा था पर एक गलती हो गई। नागपुर की दवाइ मेरे अत्यधिक आग्रह के वाद भी छोड दी। एक दिन कुछ कमजोरी महसूस हुई तो श्री धर्म चन्द जी गोलच्छा ने शामराव वधारे जी वेद्य की दवाई दिलवाई। उस ओपध की निर्दोप सेवा निर्मला खिवसरा ने की। चातुर्मास के अन्त में एक वार फिर खून की जाच करवाई तो गुर्दे एकदम ठीक थे लेकिन कहावत हे व्यक्ति जव चलता ह तो कर्म परछाई की तरह उससे चार कदम आगे चलते ह। चातुर्मास, धर्म ध्यान, तप जप के ठाठ में व्यतीत हो रहा था। विदाइ की चर्चाए हो रही थीं कि अचानक एक वार फिर कर्मो का सामना करना पडा। तवियत विगड गयीं। डा० वोले-थोडा सा वोझ ओर रख लिया जाता तो कुछ भी हो सकता था। वस उस समय से अन्तिम दम तक उनका शरीर पूर्ण स्वस्थ कभी नहीं हुआ। कौशल्या मुणोत जी ने गुरु जी को सभाला। हुकुमचद जी राका (अध्यक्ष), वसी जी आदि श्रावकों ने गुरु जी को स्वय को सभालने के लिए आग्रह किया। स्थानक, मन्दिरवासी सभी श्रावकों की भीड जमा हो गई, एक वार तो सव घवरा गये।

गुरु जी के प्रति श्रावकों की कितनी गहरी श्रद्धा थी वह एक शव्द में वताना चाहती हू कि श्री राजेन्द्र जी डागा (पूर्व विधायक) ने गुरु जी के सम्वन्ध में कहा था कि इनमें आचार्य पद की योग्यता है।

यशस्वी चातुमास सम्पन्न कर विहार मद्रास (चेन्नई) की तरफ करने का भाव था लेकिन वेतुल सघ के श्रावकों ने पीछा नहीं छोडा। गुरु जी ने सोचा कि सोये क्षेत्र में जागृति आ जाएगी। वैसे भी अव गुरु जी को वजर भूमि में फूल खिलाने की इच्छा पेदा हो गई थी। गुर्दे की दवाईया विल्कुल वद हो गई थी लेकिन शायद इस तनाव का फिर असर हुआ। एक दिन वहन जय श्री राका की आखें भर गइ कि म० सा० दवाईया लेते रहें। पर गुरु जी ने कहा कि रिपोर्ट वरावर ठीक हे। वस अर्पण की चिता रहती हे। वहा 6 साल की गुड्डु गोलच्छा को पूरा प्रतिक्रमण कण्ठस्थ हे। पूनम चद जी सिघवी आदि श्रावक यही कहते थे, पहली साध्वी देखी हे जो अमीर-गरीव का भेदभाव नहीं करती। नादूरकर जी ने प्रभावित होकर गुरु जी को मराठी सिखाई। सेवाभावी भाग चन्द्र जी ओस्तवाल, दिलीप जी, शीला जी, रिखव जी गान्धी विहार में आ-आकर गुरु जी को सम्भालते रहे। भोपाल, वेतुल, नागपुर के विचरण तथा हिगनघाट के चातुर्मास ने विना कार्ड पत्रिका के चारों तरफ सयम नाम गूजा दिया।

<u>चॉदा मे चॉद निकला</u> – चन्द्रपुर (चादा) में सुभाप जी दुग्गड परिवार जो सयम की कठोर क्रियाओं के पक्षधर थे। 20-25 वर्षो से साधु विशेषकर साध्वियों के सम्पर्क से टूटे

हुए थे लेकिन पूरा परिवार गुरु जी को समर्पित हो गया। क्योंकि बैतुल से उनकी वहन द्वारा फोन आने पर प्रकाश जी दुग्गड तथा दिलीप जी नागपुर, हिंगनघाट दर्शन करने आये थे। गुरु जी के मर्यादित, अनुशासित जीवन को देखकर दुग्गड़ परिवार दीपक पारख आदि बहुत प्रभावित हुए। चन्द्रपुर में ही हरियाणा निवासी श्री सतपाल जी तो गुरु जी के चरणों में नतमस्तक हो गये तथा गुरु जी की बीमारी सम्बन्धी पूरी सेवा करने का आग्रह किया। गुरु जी ने वहाँ के सफल चिकित्सक डॉ० तेलांग की दवाई ली। चन्द्रपुर (महाराष्ट्र) से छत्तीसगढ़ की तरफ बढ़ना था। लेकिन इधर से गुरु जी की अस्वस्थता सुनकर हमारे ही श्री चेतना जी म० सा० गुरु जी को संभालने इतनी दूर राजस्थान से पधार रहे थे इसलिए गुरु जी को वापिस मुड़ना पड़ा। चन्द्रपुर में विशेष संयम की छाप पड़ी, वहीं दाद गुरुणी जी का वापिस आने का समाचार आया।

चन्द्रपुर से बरोरा आये तो वहाँ युवकों पर ऐसा प्रभाव पड़ा कि सतीश कुमार, संचेती आदि 10-15 नौजवान जो शायद प्रथम बार स्थानक में भीतर बैठकर प्रवचन सुन रहे थे क्योंकि उनकी ही जुबानी थी कि वैसे तो हम आते नहीं, अगर किसी के ज्यादा जोर देने से आना पड़ा तो बाहर चबूतरे पर बैठते थे, कभी अन्दर नहीं आते थे। लड़कों ने चातुर्मासिक तैयारी कर ली तथा चन्द्रपुर के दिलीप जी दुग्गड़ तथा 10-15 लड़के रोज विहार में साथ रहने लगे। एक वर्ष तक वह युवा पीढ़ी चौमासे की भावना रखती रही लेकिन फरसना न होने के कारण उन्हें निराश होना पड़ा।

जैन मन्दिर मार्गी तीर्थ भद्रावती में मूर्ति पूजक सन्तों से मिलना हुआ। नाम से अवगत होने पर संत कहने लगे - हम तो आप से स्वयं ही मिलना चाहते थे, आपके प्रवचन के विषय में बहुत सुना है। वापिस हिंगनघाट आकर पुरानी हुई वार्ता का समाधान किया। वहीं दक्षिण से उत्तर भारत जा रहे संत श्री सुमन मुनि जी म० सा० के दर्शन किए। लेकिन हृदय विशालता का गुण सभी में नहीं पाया जाता।

श्री चेतना जी म० सा० का समाचार मिला कि (छत्तीसगढ़) दुर्ग पहुँचो, मैं वहीं मिलूँगी। नागपुर में मूर्तिपूजक विदुषी साध्वी श्री मनोरमा जी से प्रेम भरा मिलन हुआ। वे कहने लगी **"संयम प्रभा जी आश्चर्य है इतने अल्प समय में इतने बडे मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र में नाम गूँज गया।"** पुनः श्री घेवर चन्द जी झामड़ आये, बोले अन्नदाता - मैं तेले-तेले पारना तथा जो चाहो सो करने को तैयार हूँ पर यहाँ चौमासा करवाना चाहता हूँ। पर गुरु जी अब बड़े-बड़े शहरों को छोड़कर सोये क्षेत्रों में पुरुषार्थ का सीर (हल) चलाना चाहते थे। बैतुल की विनती के कारण भी झामड़ जी को इन्कार करना पड़ा। जय गच्छ के श्रावक बोले-अन्नदाता, अन्य सम्प्रदाय का श्रावक इतनी विनती कर रहा है, कमाल हो गया।

अब तो श्रमण वर्ग भी गुरु जी से मिलने का इच्छुक रहने लगा। ज्ञान गच्छ की

साध्वियाँ श्री प्रवीण कँवर जी म० सा०, सुरेश जी ओस्तवाल की कोटी पर मिलने पधारीं। नागपुर में जय गच्छ के श्रावक बोले, अन्नदाता - छत्तीसगढ जा रहे हो। गुरु जी बोले चिंता मत करो। मैंने कहा श्रावक जी, इस शेर के सामने सब घुटने टेकते ह। भंडारा में नवरत्न मल जी बम्ब, श्री धर्मचन्द जी सुराना ने कहा-म० सा०, अभी 10-15 वर्ष इधर ही विचरना।

<u>छत्तीसगढ मे छा गये</u> – 17 फरवरी को मध्य प्रदेश से नये बने राज्य छत्तीसगढ में प्रवेश किया। 22 तारीख को श्री चेतना जी म० सा० से प्रतीक्षा के बाद स्नेह भरा मिलन हुआ। श्री चेतना जी म० सा० का धमतरी की तरफ विहार हो गया, गुरु जी राजनाँद गाँव पधारे। राजस्थान बावडी से चादमल जी भण्डारी आदि श्रावक जिनके पारिवारिक सदस्य दुर्ग में भी रहते हैं। वे दुर्ग की होली चोमासी की विनती लेकर आये। वहाँ वर्धमान नगर में प्रवचन में गुरु जी ने कहा - हमारा होली चोमासी दुर्ग करने का भाव हे। एक श्रावक ने बीच में खडे होकर प्रश्न किया, आगमों में कहीं 'होली' शब्द का वणन नहीं है फाल्गुण चोमासी बोलनी चाहिए। तब गुरु जी ने आगम के व्यवहार भाषा का उदाहरण देकर अध्यक्ष रानीदान जी का समाधान किया। शायद पजाब की साध्वियों की परीक्षा ले रहे थे। पर गुरु जी पर गुरु कृपा रही थी कि वे कभी परास्त नहीं हुए। इसी तरह पहले भी जयपुर में प्रवचन के बीच में श्रावक ने पूछ लिया था श्रेणिक के प्रवचन में, श्रेणिक राजा क्षायिक समकिती थे फिर आत्महत्या केसे की। तब वहाँ भी गुरु जी ने गति का बध, लेश्या तथा अन्य उदाहरण देकर भरी सभा में श्रावक को जवाब दिया था।

वर्धमान नगर में होस्टल में प्रवचन दिया वहाँ से मुख्य स्थानक में पधारे। जहाँ ज्ञान गच्छ की साध्वियाँ श्री कमलेश जी म० सा० विराजती थीं, जो गुरु जी का एक प्रवचन सुनने की उत्सुकता रखती थी। गुरु जी का प्रभाव बढने लगा, साध्वियाँ विहार कर गई। प्रवचन में कट्टर सम्प्रदायों के श्रावकों की भीड उमडने लगी। श्रावकों का कहना था, 35-40 वर्ष बाद सभी सम्प्रदाय के लोग एक शतरजी (दरी) पर बेठ कर प्रवचन सुन रहे हैं। वरना तो जो गुरु आते हे प्रवचन में उन्हीं के भक्त आते हैं। वहाँ के वरिष्ठ श्रावक प्रकाश जी साखला को बोले, जय गच्छ का ये रत्न तुमने कहाँ छुपा रखा था। हमें तो पता ही नहीं था कि जय गच्छ में भी ऐसी विदुषी साध्वियाँ हैं। जय सम्प्रदाय के श्रावक सज्जन बाइ, पन्ना लाल जी पींचा के आखों में खुशी के मारे झर-झर आँसू गिरते थे। 8 दिन में ही गुरु जी पूरी तरह छा गये। अन्य साधु साध्वी को वदना करने से जिनकी समकित खंडित होती थी, वे सभी श्रावक गुरु जी के समक्ष हाथ जोडे खडे रहते थे। झामड जी नागपुर से आकर चातुर्मास की इच्छा से दो दिन रहे पर गुरु जी ने पुन असमर्थता जता दी कि बेतुल जाने के भाव हैं।

राजनाद गाँव के श्रावक नेता जी (श्री इन्द्र चन्द्र जी वेद) जो बडे व्यक्तित्व के कारण प्राय प्रवचन में नहीं आते थे, पर जब वे भी प्रवचन में आये तो उन्होंने सभा में ही प्रभावित होकर कहा, अन्नदाता, आप यहाँ विराजो तथा चामासा करो मे रोजाना प्रवचन

में आऊँगा।" यह सुनकर श्रावकों की खुशी तथा आश्चर्य का ठिकाना नहीं था। कई वार भरी प्रवचन सभा में गुरु जी से प्रश्न पूछे गए, पर गुरु जी ने कभी मात नहीं खाई। इधर से श्री चेतना जी म० सा० धमतरी से वापिस लौटे और अपनी साध्वी का इतना प्रभाव देखकर प्रसन्न हुए। 8वाँ दिन चातुर्मासिक विदाई समारोह की तरह रहा। गुरु जी ने दुर्ग की तरफ विहार किया।

स्वयं को ही श्रावक तथा अपने गुरुओं को ही साधु कहलाने वाले श्रावकों को गुरु जी के आगे नतमस्तक देखकर दुर्ग के भण्डारी परिवार की खुशी का पार नहीं था। तभी जयगच्छ के श्रावकों ने अपनी साध्वी का चौमासा करवाने के लिए संघ को अर्जी पेश की। जप-तप से होली चौमासी मनाई। वहीं से वापिस लौटने का भाव था लेकिन गुरु भक्त बबली वाई सोनी जो कि गुरु जी के दक्षिण पधारने की खवर सुनते ही नागपुर तथा हिंगन घाट विनती करने पहुँची थी। उनकी आग्रह भरी विनती को ध्यान में रखकर गुरु जी दुर्ग में मजबूत यश रूपी दुर्ग बनाकर भिलाई की तरफ प्रस्थान किया। वहॉ पर हरियाणा जींद जिले के निवासी ढेरों श्रावक मिले तो उनकी खुशी का ठिकाना न रहा कि अपने प्रान्त की साध्वियाँ पधारी हैं उन्हें काफी समय तक भजन कथा आदि सुनाई।

<u>करुणा की प्रति मूर्ति</u> – भिलाई जाते समय सड़क पर किसी नवयुवक का स्कूटर से दुर्घटना का दृश्य देखकर गुरु जी पर बेहोशी छाने लगी, मैंने गुरु जी को हाथों में लिया तो गुरु जी कहने लगे, अर्पण - उस भाई को देखो। श्रावक भी जब घायल भाई को नजरअंदाज करके चलने का आग्रह करने लगे तो गुरु जी ने फटकारा, "वाह रे दया धर्म को मानने वालो, जाओ पहले भाई को संभालो।" भिलाई में एक ही प्रवचन से जादू करके बबली बाई की भरी आंखों को छोडकर, श्रावकों की चातुर्मास की आग्रहपूर्ण विनती को छोडकर वापिस दुर्ग की तरफ मुड़ गये। रायपुर में पधारने का इन्तजार देख रहे श्रावक सम्पत जी नाहर वापिस विहार का पता लगते ही रास्ते में आये और रायपुर पधारने की बहुत विनती की। समयाभाव के कारण गुरु जी आगे नहीं बढे।

श्री चेतना जी म० सा० ने कहा-'संयम' बस अव राजस्थान चलना है तुम्हारा स्वास्थ्य ठीक नहीं है। गुरु जी ने स्वास्थ्य को देखते हुए सहर्ष आज्ञा को स्वीकार किया। इधर राजस्थान जाने की खवर मिलते ही बैतुल के श्रावक दुर्ग पहुंचे और चातुर्मास का अत्यधिक आग्रह किया। गुरु जी ने सोचा कि एक सोया क्षेत्र जाग जाएगा। तव श्री चेतना जी म० सा० की आज्ञा लेकर संघ को आश्वासन दिया कि यदि स्वास्थ्य अनुकूल रहा तो आने का भाव रखती हूँ। छत्तीसगढ़ के श्रावकों का भी अत्यन्त आग्रह था कि अन्नदाता 2-4 साल यहीं विचरो ताकि लोगों को पता चले कि कोई और भी संयमी साध्वी इस धरा पर है। दुर्ग में किशन भण्डारी, भिलाई की वबली बाई सोनी आदि सभी श्रावकों का यही कहना था, 'अन्नदाता हम तो घबरा रहे थे लेकिन आपका नाम तो हर व्यक्ति के मानस पटल पर अंकित

हो गया हे।

दूसरे मुल्क से आई साध्वी ने 16 दिन में ही छत्तीसगढ जैसा इलाका हिला दिया ऐसा देखकर अन्य समुदायों के आचार्यों को अपनी दुकानदारी उखडती दिखी। उन्होंने तभी छत्तीसगढ के लिए साधु-साध्वियों का विहार करवा दिया कि सयम प्रभा जी का एक भी चोमासा हो गया तो सव श्रावक उसी के हो जाएगे। परन्तु गुरु जी ने कभी किसी को अपना निजी श्रावक नहीं वनाया, वे तो महावीर का वनाते थे। इसलिए अक्सर प्रवचनों में फरमाते थे कि आज श्रमण वग श्रावकों को अपने से जोडता है ओर महावीर को पीछे छोड दिया हे। गुरु जी कहते थे कि शासन भगवान महावीर का चलना हे, किसी सम्प्रदाय का नहीं। उधर ज्ञान होने पर भी इतनी सम्प्रदायवाद की वीमारी को देखकर गुरु जी ने अपने प्रवचनों में फरमाकर लोगों की आखों से सम्प्रदायवाद के चश्मे उतारे। तेरे-मेरे के जाल में फसे श्रावकों को गुरु जी ने 36 अक को छोडकर 63 की तरह रहने की शिक्षा दी। छत्तीसगढ में अपने सयम, सरलता, विशालता तथा प्रवचन द्वारा अमिट इतिहास लिखकर गुरु जी ने श्री चेतना जी म० सा० के साथ मध्य प्रदेश की तरफ विहार किया।

महाराष्ट्र, छत्तीसगढ के यशस्वी दोरे के लिए श्री चेतना जी म० सा० ने ढेरों वधाईयॉ दी। गुरु जी के लिए इतना चलने के वाद अव चातुर्मास से पहले 2000 कि मी चलना मुश्किल दिख रहा था, तव उन्होंने श्री चेतना जी म० सा० को विनती की, आप पधारो में धीरे-धीरे करके अगले साल राजस्थान पहुचने का भाव रखूगी। क्योंकि इधर वेतुल वालों में इतनी जागृति आई हुई थी कि जेसे ही वहा के श्रावकों को पता चला था कि म० सा० तो राजस्थान जा रहे हैं। राजेश गोठी आदि नवयुवक कहने लगे कि नये वन रहे स्थानक भवन में अव एक ईंट भी नहीं लगेगी, काम वद करवा दो यदि म० सा० चामासा नहीं करेंगे। इसलिए श्री चेतना जी म० सा० श्री रविप्रभा जी को लेकर, तथा सग में आई दिव्य श्री जी को छोड गए तथा राजस्थान की तरफ विहार कर दिया। गुरु जी ने कहा-म० सा०, आपका यह उपकार सदा स्मृति में रहेगा। मेरे लिए इतना कष्ट सहकर इतनी दूर पधारे। श्री चेतना जी म० सा० ने स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहने की सलाह दी।

वैतुल की नोजवान पीढी की इतनी लगन देखकर रावणवाडी में गुरु जी ने चोमासा घोषित किया। मध्य प्रदेश के क्षेत्रीय कठिनाईयों को मस्ती से सहते हुए गोंदिया पधारे। मन्दिर मार्गी आशाजी दिलीप चोपडा परम निष्ठावान वने। कटगी में रामचन्द्र जी पींचा कहते थे- अन्नदाता, इस भव का तो यह ज्ञान नहीं लगता।

पता नहीं गुरु जी का कर्म पीछा क्यों नहीं छोडते थे। यश मिला तो परेशानियों ने पीछा नहीं छोडा। पर गुरु जी कहते थे-अर्पण, भ० फरमाते हें - कडाण कम्माण न मोक्ख अत्थि। छत्तीसगढ से निकलते ही किसी अनजान व्यक्ति द्वारा परेशानी देना शुरू हो गया, श्रावक तो कहने लगे, म० सा० - आपकी इतनी कीर्ति किसी से वर्दाश्त नहीं हो रही हे।

वालाघाट में महावीर जयन्ती तथा ओली तप मनाये। ताराचंद जी लोढा, दीपचन्द जी नाहटा, भैरुदान जी पगारिया आदि श्रावक कहते थे-म० सा०, संयम के प्रति इतनी जागरूकता तथा ऐसा प्रवचन पहली वार देखा तथा सुना है। संजय, पंकज सभी नौजवान कहते सुने गए कि ऐसे निर्लेप साधु-साध्वी होंगे तभी नवयुवक धर्म के सन्मुख होंगे। मूर्तिपूजक श्रावक प्रकाश जी लोढा तथा ज्योति जी ने छोटी वय में ही गुरु जी से अनेक नियम ग्रहण किए तथा उन के चरणों में अटूट श्रद्धा जम गई। विहार न करने देने की स्थिति में चुपचाप विहार करने पर श्रावक प्रवचन के समय स्थानक खाली देखकर विहार में दौड़े तथा आंखों में पानी भर लाए।

कायदी में एक ही जैन घर होने के कारण जब अन्य घरों में गवेषणा के लिए गए तो वह श्रावक वहुत वड़बड़ाने लगा, वोला - सभी साधु-साध्वियां मेरे ही घर से आहार लेते हैं। कौन से शास्त्र में लिखा है कि दूसरी जाति के घरों से गोचरी लाना ? गुरु जी को जव आकर मैंने कहा, तो गुरु जी ने उसे फटकारा तथा कहा भ० महावीर ने फरमाया है। **उच्च-णीय-मज्झिमाइं कुलाइं**। वह चुपचाप घर जाकर बैठ गया।

<u>बारासिवनी में बरसी जिनवाणी</u> – बारासिवनी के रास्ते में अचानक बरसात आ जाने के कारण एक कबूतरों की कोठरी में 2-3 घण्टे रुकना पड़ा। सुभाष जी लोढा आदि आये श्रावकों के परेशान होने पर गुरु जी ने कहा-यह कबूतर भी तो सारा दिन कैद रहते हैं और इस आत्मा ने कितनी बार वंधन भोगे हैं। वारासिवनी में एक ही घर स्थानकवासी होने के कारण दो दिन ही ठहरने का भाव था, लेकिन वहां के दो श्रावक चम्पालाल जी संचेती, मांगी लाल जी बैदमुथा ने वालाघाट में गुरु जी के प्रवचन सुने थे। मुथा जी को जब यह पता चला कि म० सा० पधार गये हैं तो वर्षी तप के पारने हेतु जाने के लिए की जा रही पालीताणा की तैयारी को मद्रास में बेटे को समाचार देकर कैंसिल करवाई। सभी बसें, धर्मशालाएं कैंसिल करवा दी। तप त्याग से अक्षयतृतीया मनाई। सभी मन्दिर मार्गी श्रावकों ने बैतुल समाचार कर दिया कि हम चौमासा यहीं करवाएंगे। प्रवचन हाल खचाखच भर जाता था। संचेती परिवार गुरु जी के प्रति श्रद्धावान बन गये। विशाल जन समूह ने सानन्द विहार करवाया। विनोद जी संचेती विहारों में भी आते तो यही कहते कि म० सा० किसी भी लड़की को वैराग्य से भर कर ले जाओ। रास्ते में गुरु जी ने 40 दिन का मौन ग्रहण कर लिया।

<u>जंगलों में निडरता, पहाडों में दृढता</u> – मध्य प्रदेश में बड़े-बड़े जंगल हैं, लेकिन गुरु जी जरा भी घबराते नहीं थे। श्रावक कहते - म० सा० इतने विशाल घने जंगलों में भी अकेले विहार कर रहे हो, इतनी निडरता प्रथम वार देखी है। जंगली तथा आदिवासी इलाका होने के कारण आहार पानी की विशेष जोगवाई नहीं थी, तो श्रावक कहते-यहाँ तो बड़े-बड़े साधु-साध्वी भी ऑख मीच लेते हैं। पर आप तो लाया या बनवाया हुआ कुछ लेते नहीं। तब गुरु जी कहते थे-परिषह की अग्नि में तप कर ही साधुत्व की परख होती है। विहार यात्रा कठिनाईयॉ में भी निर्दोषता का ख्याल रखती हुई निर्बाध गति से चलती रही।

यात्रा ने छिदवाडा में पडाव डाला।

पहाडो मे गूँज उठी – छिडवाडा पहाडी इलाका, धर्म की लगन शून्य होने के कारण कभी साधु-साध्वियों का आगमन विशेष नहीं हुआ था। क्योंकि छिदवाडा जाने के लिए पहाडी तथा क्षेत्रीय कठिनाइयों का जवरदस्त मुकावला करना पडता है। पूर्व छिदवाडा में दो दिन ही ठहरने का भाव था। लेकिन उन पहाडों में भी सिहनी की आवाज गुजायमान हो गई। मन्दिर मार्गी अध्यक्ष सिद्दमल जी वेदमूथा का कहना था-म० सा०, हमारे नोजवान पहली वार जल्दी उठकर प्रवचन में आ रहे हें वरना तो हमारे भी आचार्य आकर चले गए लेकिन युवक न मन्दिर जाते है न कभी प्रवचन में आते। छिदवाडा के लिए यही जानकारी थी कि वहॉ सभी मन्दिर मार्गी घर हे लेकिन कोठारी वाघरेचा नाहर सभी परिवारों को वापिस अपने मूल स्थानक वासी धर्म में स्थित किया। सभी को मुह पत्तिया वधवाई। डा० नाहर जी को रोज प्रवचन में प्रथम वार उपस्थित देख सभी के आश्चर्य से आखें खुली रह गयी। सदीप वाघरेचा की अटूट श्रद्धा एक यादगार वन गई। किसी को तो ईर्ष्या पेदा हो गई कि हमारे आचार्य आते हें तो कोई नहीं आता। पर गुरु जी ने इन वातों की तरफ कभी ध्यान नहीं दिया।

गुरु जी को वर्ष भर से चल रही असज्झाए के कारण सभी जगह डाक्टरों ने यही कहा था कि युटरेस निकालना होगा। गुरु जी के कहने से नागपुर तथा पाढर आदि जगह डाक्टरों से वातचीत हो गई थी। वैतुल में ही आप्रेशन करवाना है। लेकिन गुरु जी पर अगाध श्रद्धा रखने वाले डा० नाहर ने एक वार डी एन सी करवाने की सलाह दी। नागपुर से डी एन सी रिपोर्ट आई कि युटरेस में कोई खरावी नहीं है। लेकिन डी एन सी करवाने के वाद गुरु जी को रक्त स्राव एक दम वद हो गया। वहॉ भी डाक्टर को कच्चे पानी के उपयोग की मनाही की गई तथा पानी भी नाली में नहीं फेंकने दिया गया। यह सब देखकर सध्या जी हैरान हो गई कि इलाज में भी सयम की मर्यादा का कितना ख्याल हे।

जॉच पडताल के वाद पता चलने पर गुरु जी ने डाक्टरनी पाडे जी को प्रतिज्ञा करवाई कि आज के वाद आप गर्भपात जेसा पाप कार्य न करेगीं। पाण्डे जी ने दवाखाने के वाहर वडा वोर्ड टगवा दिया-यहॉ गर्भपात नहीं होगा। गुरु जी का यही विचार रहता था, जिसकी सेवा ली हे हम भी उसे कुछ दें। डा० वोले डी एन सी के वाद पैदल चलना असभव है। इसलिए कार में जाना होगा, पर गुरु जी ने मनाही कर दी। मेरे द्वारा पहिये वाली कुर्सी पर चलने के आग्रह को स्वीकृति नहीं मिली। मेरा सहारा लेकर गुरु जी कुछ कदम चले लेकिन चलने की असमर्थता लगी तो मेरी तरफ देखा और में गुरु जी को उसी समय गोदी में उठाकर स्थानक ले गई। छिदवाडा वालों ने वैतुल से अगला चातुर्मास करने की पुरजोर विनती की। (यहॉ 40 दिन के लिए चल रहे मोन को पूर्व में रखे आगार के अनुसार वोलकर नोजवानों के समाधान किए।) 14 दिन वहॉ रहकर प्रत्येक दिल में याद वसाकर विहार किया। छिदवाडा का विहार भी एक यादगार वना।

छिंदवाडा के पश्चात् पुनः पहाड़ी आदिवासी क्षेत्र, गुर्दे की तकलीफ होने के वावजूद भी आहार पानी में दोष नहीं लगाया। एक दिन सेवक रणवीर सिंह की आंखों में पानी आ गया। वह कहने लगा कि सब साधु-साध्वियाँ ले लेते हैं विहारों में तो, आप तो पानी तक भी नहीं लेते। गुरु जी ने कहा- रणवीर, सव नहीं लेते हैं। मेरी आत्मा इस तरह लेना स्वीकारती नहीं है। रास्ते में बैतुल से जयन्ती गोठी, रविन्द्र गोठी विहारों में साथ रहने आये, उनका भी यही कहना था कि हमारे आने को कोई अर्थ नहीं है, जव आप हमारी कुछ सेवा लेते नहीं।

ऊसर धरती बनी उपजाऊ – घने जंगलों, ऊँची-नीची पहाड़ियों को पार करते हुए तथा धर्म का उद्योत करते हुए गुरु जी का 24 तारीख को वैतुल गंज में केवल चन्द जी तातेड़ के बंगले पर विशाल जन समूह की उपस्थिति में प्रवेश हुआ। चातुर्मास के काफी दिन पूर्व पधारने का कारण था गुरु जी कुछ शारीरिक थकान मिटाना चाहते थे। 2 जुलाई को 2001 के चातुर्मास के लिए कुछ गिने-चुने लोगों ने चातुर्मास के लिए स्थानक में प्रवेश करवाया। गुरु जी को मैं वोली-ओ मेरे गुरु जी, फँस गए लगता है। गुरु जी हँस कर बोले-अर्पण, कभी प्रवेश नहीं देखना, विहार देखना चाहिए। स्थानक भवन में गए तो कहने को भवन था मगर मात्र ईटों की दीवारें ही खड़ी थी तथा फर्श भी कच्चा था। गुरु जी ने आदेश दे दिया था कि मेरे प्रवेश के बाद निर्माण कार्य एकदम बंद रहेगा। चातुर्मास प्रवेश के स्वागत में सभी ने प्रत्याख्यान लिए। श्रावकों ने चौमासे के कार्ड-पत्रिका छपवाने का आग्रह किया। गुरु जी ने समझाया कि जव क्षेत्र में धर्म ध्यान जोरों से होता है तो तप-जप की सौरभ अपने आप सभी को सन्देशा दे देती है।

50 साल पूर्व कभी हुए एक मासखमण के बाद जब व्रतों के मासखमणों की झड़ी लगी फिर श्रावकों ने कुछ आडम्बर करने की आज्ञा चाही तो गुरु जी ने एक सुन्दर उदाहरण दिया कि 'फूलों के खिलने पर कभी भॅवरों को निमन्त्रण नहीं देना पडता। उसकी खुश्बू से वे स्वयं खींचे चले जाते हैं।' कुछ जिद्दी प्रकृति के लोगों द्वारा मासखमणों में समाज के भोजन (स्वामी वत्सल) आदि की तैयारी की योजना का जब गुरु जी को पता चला तो फौरन प्रवचन में चेतावनी दे दी गई कि यदि कुछ भी तप में आडम्बर, खाना-बाँटना, लेना-देना हुआ तो प्रत्याख्यान मेरे द्वारा नहीं दिए जाएंगे जो पूरे चातुर्मास काल के लिए एक शिक्षा बन गयी। वरिष्ठ श्रावक श्री विरदी चन्द जी गोठी, श्री मोहन लाल जी तातेड़, श्री कुशल चन्द जी बोथरा आदि श्रावक तो अकसर यही चर्चा करते कि ऐसी पुरुषार्थी, ज्ञानवान, सरल स्वभावी साध्वी मिलना दुर्लभ है। श्री जवाहर लाल जी पगारिया जी तो एक ही विनती करते रहे कि म० सा० प्रवचनों की कैसेट बनाने दो, परन्तु गुरु जी कहते – कैसेटों से जीवन नहीं वदलते और बनाने नहीं दी। विधायक श्री विनोद जी डागा अत्यधिक व्यस्त रहते हुए भी प्रथम बार प्राय. प्रवचन में आते थे और कहते – ऐसी साध्वी मैंने आज तक नहीं देखी। श्रावकों का कहना था कि म० सा०, छत्तीसगढ़ से आपकी इनकारी आने के वाद अन्य

साधु-साध्वियों के चोमासा करने के सदेशे आने लगे, पर हमने यह कहला दिया कि "यहॉ चामासा होगा तो सयम प्रभा जी का वरना नहीं।"

प्रारम्भ में एक उपवास भी शाम को 4 वजे चाय पीकर खोलने वाली आशा गोठी तथा सास की तकलीफ में रहने वाली श्राविका इन्द्रकला तातेड आदि वहन-भाईयों के व्रतों के 9 तथा तप करने में अशक्त 3 वहनों के आयम्बिल के मासखमणों ने मात्र 50-50 घर होते हुए सवको चोंका दिया। समस्त वेतुल में ये ही स्वरों की गूॅज थी-जिसे लम्वी तपस्या करनी है वे इस चातुर्मास में कर लें, आगे असम्भव हे। सत्सग प्रेमी प्रथम वार जेन सतों से प्रभावित हुए, उनमें डा० पोपली, चदु लाल जी थारवानी आदि श्रावक तो गुरु जी के प्रति इतने श्रद्धावान वन गये थे कि वे कहते थे -

आप वादल नहीं स्वय आसमान ह, आप पुष्प नहीं स्वय उद्यान हे,
क्या कहने आपकी सरलता, प्रवचन शेली के, आप पुजारी नहीं स्वय भगवान है।

पानीपत से दर्शनार्थ आये सघ ने जव सवत्सरी के काफी दिन वाद भी प्रवचन में इतनी भीड तथा चल रहे मासखमणों तथा अठाईयों के ठाठ देखे तो अध्यक्ष श्री रोशन लाल जी की खुशी के मारे आखें भर आई तथा कहने लगे-म० सा०, इतनी दूर अनजान जगह में आपका इतना प्रभाव देखकर हमें आप पर गव होता हे। गुरु जी ने दिगम्वर, मूर्तिपूजक, स्थानक वासी सभी की भावनाओं को वरावर सम्मान दिया। इसलिए गुरु जी के असम्प्रदायिक दृष्टिकोण से लोग विशेष प्रभावित थे।

चातुर्मास के दोरान जेन-अजेन सभी की गुरु जी के जी प्रति अटूट श्रद्धा जमी। घटना - एक अजैन भाई जिसकी गाय को सॉप ने डस लिया वह आकर वताने लगा-म० सा०, मेंने डक लगी जगह पर आपका नाम वोल-वोल कर हाथ फेरा। थोडी ही देर में गाय ठीक हो गई। गुरु जी जो सम्मान से दूर रहते थे, वे वोले-भाई तेरी श्रद्धा ने चमत्कार किया, मेरे पास तो कुछ नहीं हे।

प्रवचन में उमडता सेलाव एक आश्चय वन गया। वहॉ के लोगों की जुवानी थी कि म० सा० - यहॉ तो वडे-वडे साधु-साध्वी भी आते थे तव मीना वोथरा के कार चालक या सामने सोनी जी को वेठाकर एक भाई की साक्षी से प्रवचन शुरू होता था ओर अव नजारा कुछ ओर हे कि आप के आने से पहले इतने जेन-अजैन आकर इन्तजार करते हें कि कव वो अद्भुत शक्ति पाटे पर आकर जिनवाणी का रस पान कराएगी। हिसार से सावित्री शर्मा ने आकर पुन हरियाणा लोटने की विनती की।

गुरु जी की कमर में दद हो गया था। उसका कारण मोसम की अनुकूलता माना गया। तव रविन्द्र गोठी ने अच्छे अनुभवी वेद्य की दवाई दिलाइ तथा दीपक मेहता, नवीन तातेड, राजू गोठी ने गुरु जी के अच्छे स्वास्थ्य के लिए काफी मेहनत की। दिगम्वर वहन कृष्णा जी जो

गुरु जी से अत्यन्त प्रभावित थी। रोजाना एक्युप्रेशर करने आती रही।

बैतुल क्षेत्र के पूर्वज वहुत बड़े-बड़े जागीरदार रहे हुए होने के कारण जमीन जायदाद दौलत के मालिक थे। वहाँ की नौजवान पीढी में व्यसनों की भरमार थी। राजू तातेड़ जैसे नौजवान एक-एक दिन में 30-35 पुड़िया गुटके की खाते थे। गुरु जी ने घर-घर जाकर नवयुवकों को व्यसन मुक्त किया तथा बड़ों के जीवन को मर्यादित किया। स्थिति ये थी कि पनवाड़ी भी यह पूछते थे-महाराज, आप कब जाओगे ? दिवाली पर तेले करके कमरे से बाहर निकलने पर गुरु जी को मैंने 112 व्रतों के तेलों की भेंट दिया।

चातुर्मास में संघ की आज्ञा से कुशल मंच संचालक अतुल पगारिया ने गुरु जी को **व्याख्यान वाचस्पति** की पदवी दी। लेकिन गुरु जी ने पदवियों से हमेशा स्वयं को दूर रखा।

बंजर बनी पथरीली भूमि में गुरु जी ने पुरुषार्थ रूपी सीर (हल) से पत्थर में धर्म के रंग-बिरंगे पुष्प खिला दिए। उजाड़ सरीखी भूमि को गुलिस्ताँ बना दिया। साधु-साध्वियों के लिए उपेक्षित रहा क्षेत्र अब अपेक्षित हो गया। एक चिरस्थायी यादगार भरा चातुर्मास सम्पन्न करके गुरु जी वैतुलवासियों के लिए भगवान कहे जाने लगे।

दो वर्ष से प्राकृतिक चिकित्सालय की उपलब्धि न होने के कारण इलाज न हो पाया इसलिए चातुर्मास उपरान्त लक्ष्य केवल इलाज का था। उसके आसपास में चिकित्सा केन्द्र के न होने के कारण श्रीमान् कुशल चन्द्र जी बोथरा ने बडोदरा में साताकारी केन्द्र वताया। इसलिए गुजरात की तरफ कदम बढ़ाये।

वैतुल चातुर्मास की गूँज ने चारों दिशाओं में संयम नाम को गूँजा दिया था। परतवाड़ा में दो प्रवचन करके विहार के भाव से सड़क पर पहुँचने के बावजूद भी प्रभावित हुए श्रावक वापिस ले गए। वहॉ साधु-साध्वियों का आवागमन नहीं होता था लेकिन वहॉ के श्रावक इतने प्रभावित हो गए कि आगामी चातुर्मास की तैयारी कर ली गई। संजय बरड़िया, ज्योति जी की श्रद्धा अटूट बनी।

काफी दिनों तक बैतुल के श्रावक विहारों में साथ रहे ताकि गुरु जी के स्वास्थ्य में गड़बड़ी न आ जाए। अलका तातेड़ आदि श्राविकाओं ने विहारों में आकर गुरु जी के स्वास्थ्य को ध्यान में रखा। बाल श्रावक विशी तथा निशु एक दिन रोने लगे कि आप वापिस बैतुल चलो। मन्दिर मार्गी श्रावक श्री राज कुमार जी वोथरा जी ने आग्रह किया-म० सा०, हमारे फार्म हाऊस में विराजो। लेकिन गुरु जी का ध्यान केवल इलाज की तरफ था।

अमरावती में चौरड़िया जी, सामरा जी आदि श्रावक बोले - अन्नदाता मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, छत्तीसगढ़ में साधु साध्वियों में प्रवचन की गूँज केवल स्थानकवासी श्री प्रीति सुधा जी म० सा० तथा मंदिरमार्गी श्री मणि प्रभा जी म० सा० की है। सभी की धारणा है कि इनका

प्रवचन के क्षेत्र में कोई सानी नहीं हे लेकिन आपके प्रवचन ने सभी धारणाऐं निर्मूल कर दी तथा आपने तो उन्हें भी पीछे छोड दिया। पुन माईक लगाने का आग्रह हुआ कि 20 हजार लोग प्रवचन में होंगे लेकिन गुरु जी को भीड में विश्वास, रुचि नहीं थी। 26 जनवरी को वडनेरा पधारे। वहाँ पर अगले दिन सूर्योदय समय नाहर जी ने आकर दुखद समाचार दिया जिसे सुनकर हमारी खुशियों का सूय अस्त हो गया। हमारे पडदाद गुरुणी जयगच्छ साध्वी प्रमुखा श्री सुगन कँवर जी म० सा० 26 दिसम्बर को प्रयाण कर गये हे। घोर वज्रपात हुआ सुनकर कि हमें प्रकाश दिखाने वाली दिव्य मणि खो गइ।

आकोला होकर गुरु जी के चरण जब खामगॉव पडे तो उन्होंने कट्टर श्रावकों को भी हिला दिया। वहाँ ममता जी झामड की आखों में ये कहते-कहते खुशी के मारे पानी आ गया कि यहाँ के श्रावक किसी को हाथ तक नहीं जोडते परन्तु आप के चातुमास की विनती कर रहे हें। गुरु जी के वढते तूफानी प्रभाव को देखकर चारों तरफ साधु-साध्वियों को अपने श्रावक टूटने तथा अपनी दुकानदारी उखडने की चिता होने लगी। लेकिन गुरु जी का लक्ष्य मात्र सुन्दर जीवन का निमाण करना था, वे फरमाते थे प्रवचनों में इधर के वतन उधर रखने से कोई फायदा नहीं, नये जेन वनाओ। श्रावकों को स्वय से जोडने वाले साधु-साध्वियों को गुरु जी का सकेत था। साधु को अपरिग्रही वनना हे तथा भगवन श्री राम प्रसाद जी म० सा० द्वारा रचित एक भजन सुनाते थे।

दुनिया के झूठे झगडो मे, ये सत फकीरी भूल गए।
आरो की गुलामी मे आकर, अपनी जहागिरी भूल गए।
घर छोडा पर चाह लगी, कितने आर घर वनाने की।
त्यागी वन कर आह लगी, धन के ढेर लगाने की।
रस्ते की माज वहारो मे मन्जिल आखिरी भूल गए ।

गुरु जी से श्रावक पूछते थे, वेतुल में आपके कितने श्रावक थे, तो गुरु जी कहते-भाई, सत का घर तो हर धमात्मा के दिल में हे। जव अपना ही घर छोड दिया तो अव क्या गिनती घर वनाने की ? पूर्व में भी नागपुर के श्रावकों ने कहा था-म० सा०, आपका परिचय नहीं हे फिर भी अनजान जगह वेधडक चातुर्मास कर लेते हो। गुरु जी ने समाधान किया था - साधु का शुद्ध सयम, मर्यादित जीवन ही उसका परिचय हे और सत हमेशा वेखोफ चलते हें।

गुरु जी से मिलने की जिज्ञासा रखने वाले ज्ञान गच्छ के साधक श्री धन्ना मुनि जी म० सा० 2½ कि० मी० मलकापुर में अदर पधारे। मिलते ही उनका सवसे पहला प्रश्न था कि सयम प्रभा जी कान ह ? गुरु जी का परिचय पाकर एक वार तो वे आश्चर्य में पड गए, क्योंकि शायद उनका कल्पना की सयम प्रभा जी कोइ पॅजाव की ऊँची लम्वी चाडी साध्वी होगी, लेकिन शारीरिक दृष्टि से, दुवली सी साध्वी देखकर मेरी तरफ इशारा करके वोले कि हमने तो इन्हें समझा था। सतों ने कहा कि वडी प्रसन्नता हुई आप से मिलकर, आपने

तो कुछ दिनों में छत्तीसगढ़ जैसे इलाके की नीवें हिला दी।

ऐदलावाद में सम्प्रदायवाद की वीमारी फैलने के डर से परेशान श्रावकों ने विशाल हृदयी गुरु जी को रोकना चाहा। भूसावल तक शरीर में कुछ थकान महसूस होने लगी थी। वैतुल अध्यक्ष महावीर जी तथा आशा गोठी 10 दिन विहारों में साथ थे। तबियत के सुनकर वैतुल से निर्मला जी तातेड़, संगीता गोठी आदि वहनें आई तथा आगे न वढ़ने का आग्रह किया। पानीपत से आये श्रावक श्री महावीर प्रसाद जी (गोल्ली वाले) कहने लगे-म० सा०, परदेश में आपका इतना यश, प्रभाव देखकर हमें गर्व हो रहा है।

जलगाँव पधारने पर पता चला कि कारणवश पूरे शहर में प्रवचन एक ही होता है। उस समय वहाँ नानेश गच्छ के श्री मोहन मुनि जी म० सा० का प्रवचन चल रहा था। पता चला कि संत दो दिन बाद विहार करेंगे। हम दो दिन सागर भवन में रहे। लेकिन दो दिन बाद फिर दो दिन और ठहरने की घोषणा हो गई। चार दिन वाद श्रावक समाचार लाये कि म० सा० दो दिन बाद विहार करेगें तथा आप को वहीं साथ प्रवचन करने का सन्देश भेजा है। दरअसल संत गुरु जी का प्रवचन सुनना चाहते थे, पर अस्वस्थता देखते हुए गुरु जी ने जाने में असमर्थता जता दी तथा इलाज में विलम्ब न करने की भावना से विहार की तैयारी कर ली, कमर वॉध कर सड़क पर सुभाष चौक पर आ गये लेकिन दानवीर तथा धर्मनिष्ठ श्रावक श्री रत्न लाल जी बाफना को जैसे ही विहार का पता चला तो फौरन हमें तलाशते हुए आये तथा हाथ जोड़ कर विनती की-अन्नदाता, आपके प्रवचन की वहुत तारीफ सुनी है। आप जलगॉव जैसे क्षेत्र में प्रवचन किए बगैर चले जाओ, ऐसा मैं नहीं होने दूँगा। श्रावक की विनती को मान देकर वापिस स्वाध्याय भवन की तरफ बढ़ रहे थे कि इधर मारवाड धन्नारी के तथा आसपास के नौजवान जो व्यापारिक कार्य से जलगाँव रहने लगे थे, उन्हें भी जैसे ही गुरु जी के पधारने का तथा विहार का पता चला तो किशोर भण्डारी, प्रकाश मूथा आदि 8-10 नौजवानों ने जलगॉव से वाहर जाने वाले सभी रास्तों पर गाड़ियॉ दौड़ा दी तथा गुरु जी को ढूँढा। स्वाध्याय भवन में लगभग 725 नौजवानों के बीच गुरु जी ने सामायिक पर प्रवचन दिया तो प्रभाव ऐसा पड़ा कि 4 प्रवचन और करने पड़े। बाफना जी बोले-म० सा०, आज तक नाम सुना था, पर वास्तव में "आपकी आवाज में जादू है।" वहॉ वाफना जी ने बड़े डा० को गुरु जी को दिखाया पर यहॉ पर गुर्दे की रिपोर्ट गड़बड़ आई। लेकिन सभी डाक्टर विस्मित हो गये कि इतना यूरिया होने पर भी शरीर में कोई पीडा नहीं, पेशाव में तकलीफ नहीं, कहीं सूजन नहीं, गुर्दे खराब होने के वाहर कोई लक्षण नहीं थे।

सब वोले-म० सा०, आप तो एक आविष्कार की चीज हो गए हो क्योंकि इतना यूरिया बढ़ने पर भी निरन्तर विना वाधा के विहार कर रही हो। यह सव आपकी साधना का ही करिश्मा है। ऐसी स्थिति में तो मरीज पलंग से हिल भी नहीं सकता।

खबर मिलते ही वैतुल से सुगन चंद जी तातेड़, चंदू जी थारवानी आदि जैन-अजैन

15 16 व्यक्ति आये तथा विनती की कि म० सा० - आगे मत बढना। इधर हिंगन घाट से दिलीप गोलच्छा जी के समाचार पे समाचार आ रहे थे कि आगे न बढें, शरीर के लिए ठीक नहीं होगा। डा० ने Dialysis करवाने की सलाह दी लेकिन गुरु जी ने सभी को आश्वासन दिया कि प्राकृतिक चिकित्सा से म बिल्कुल ठीक हो जाऊँगी।

गुरु जी के प्रवचन-प्रभाव को सुनकर 40 गाँव से श्री सुगन चद जी कनकरिया आये तथा चोमासे का विचार बनाने का आग्रह करने पर गुरु जी ने जवाब दिया-श्रावक जी, आप चोमासे की बात करते हो मेरा तो 40 गॉव अभी फरसने का भी भाव नहीं है। धरण गॉव में विराजित श्री मोहन मुनि जी तथा ज्ञान गच्छ के स्वतन्त्र विचरने वाले सत श्री राजेन्द्र मुनि जी म० सा० तथा साध्वियों के दर्शन करने मुझे तथा दिव्य श्री जी को भेजा। सतों ने जाते ही नाम पूछा तो एकदम उत्सुकता वश बोले - क्या सयम प्रभा जी नहीं आये ? उन्होंने कहा उनसे मिलना चाहते थे, क्योंकि आजकल सब जगह उनके प्रवचन की ही चर्चा हे। बेटावद, शिदखेडा होकर डोंडाईया पधारे। एक ही सम्प्रदाय से बधे कट्टर श्रावक, सयम के पक्षधर श्रावक गुरु जी के दृढ सयम तथा विशाल दृष्टिकोण से प्रभावित होकर चातुर्मास की विनती करने लगे।

नादुरबार के श्रावकों को जब यह जानकारी मिली कि सयम प्रभा जी पधार रहे हें तो एक बार देखने, दशन करने की उत्सुकता को लिए विहारों में पधारे ओर विनती की-अन्नदाता शीघ्रातिशीघ्र पधारें, सभी आपका प्रवचन सुनने के लिए उत्सुक हें। वहॉ प्रवचन से हर दिल पर सुन्दर छाप पडी। वहीं किशोर जी, रविन्द्र कोठारी ने सेवा में गुरु जी के चरणों मे स्थान बनाया तथा उन्होंने काशीनाथ भाई पटेल की दवाई दिलवाई। चोरडिया जी बराबर दवाई की सेवा मे तैयार रहे।

सभी क्षेत्रों में गुरु जी का यशस्वी प्रभाव रहा, हर व्यक्ति उन चरणों में नतमस्तक था, लेकिन गुरु जी अकसर कहा करते थे-अपण, पूर्व भव में न जाने केसे कर्म उपार्जित किए हें कि यश तो बहुत मिलता है लेकिन वेदना भी पीछा नहीं छोडती। वह किसी न किसी माध्यम से परछाइ की तरह साथ लगी रहती हे। नादूरबार से विहार की तैयारी चल रही थी कि इधर से 27 फरवरी को गुजरात में गोधरा काड हो गया। श्रावकों ने आग्रह किया कि अन्नदाता, गुजरात में प्रवेश न करें, कदम-कदम पर खतरा हे, हर जगह कर्फ्यू हे। गुरु जी ने समझाया - में जब तक बडोदरा पहुँचूँगी शायद माहोल ठीक हो जायेगा, मुझे इलाज करवाना अत्यन्त जरूरी हे। सघ अध्यक्ष आदि श्रावकों के आग्रह से गुरु जी विकट स्थिति में फॅस गये। इधर गिरती तबियत, उधर गुजरात के दगे। बेतुल, हिंगन घाट, पानीपत से लगातार समाचार आने लगे कि गुजरात की तरफ न बढे।

श्रावकों को समझाकर कि इलाज करवाना मेरे लिए बहुत जरूरी हे, बुलद हॉसले रख कर निश्चिन्तता से चलने वाले मेरे गुरु जी ने धर्म का शरणा लेकर गुजरात की तरफ कदम

वढ़ा दिए। रास्ते में खापर में जव गुरु जी ने शहर के अन्दर प्रवेश नहीं किया तो मन्दिरमार्गी सभी श्रावक आये और विनती की-अन्नदाता, वैतुल चौमासे के ठाठ तथा आपकी प्रवचन शैली का जादू भी काफी दिनों से सुन रहे हैं। हम तो कव से उस वाणी को सुनने को वेताब हैं जिसने हर व्यक्ति को आकर्षित कर लिया है। लेकिन गुरु जी अव इलाज में देरी नहीं करना चाहते थे इसलिए असमर्थता बताकर समझा दिया। मोती कुमार जी की सेवा सराहनीय रही, जाते समय उसकी आंखों में पानी आ गया और बोला-म० सा०, इतना लम्बा इन्तजार किया आपके पधारने का और मिली मायूसी। अगले दिन एक आदिवासी गाँव में ठहरे, गुरु जी ने वहाँ के प्रधान का माँसाहार छुड़वाया तथा इस पेट को कब्रिस्तान न बनाने की शिक्षा दी। (गुरु जी ने पूर्व में भी काफी जगह लोगों का माँस, शराब, गुटकों का त्याग करवाया।)

कदम धरे गुजरात में – नांदुरबार से ली लाठी के सहारे धीरे-धीरे चलते हुए डेडियापाडा गुजरात में प्रवेश किया। श्रावकों ने आगे खतरा बता कर रोकने की कोशिश की परन्तु गुरु जी आगे वढ़े। डभोई, राजपीपला सब क्षेत्रों में पूरी तरह कर्फ्यू था। पुलिस वाले भी कहते-अरे, महात्मा जी, आगे मत वढ़ो, आगे वहुत डर है। इतना सुनते ही मैं बोली कि हम पंजाव के शेर हैं। गुरु जी कहने लगे-भाई, **'संत वही है जिसे भय नहीं होता।'**

गुरु जी ने सोचा था कि बडोदरा पहुँचने तक डेढ महीने में तो शांति हो जाएगी लेकिन शायद इलाज की गहरी अन्तराय थी कि उस समय तक भी बडोदरा पूर्ण रूप से बंद था। स्थानक भी कर्फ्यू के अधिकार में था। पुलिस वालों ने निवेदन किया कि आप शहर में न जायें, तब किसी से पूछताछ करके माजलपुर कालोनी में बगड़िया जी के घर पहुँचे, जो परिवार संयमी संतों को ही वंदना करता था। संयोगवश घर में मुम्बई से आई बड़ी बहू ही थी, उसने उस समय तो अनमने मन से ठहराया। शाम को ससुर घर आये। पता चलने पर सीधे ऊपर आकर पूछा, "स्वामी, तमे क्यां थी पधारया।" गुरु जी ने जैसे ही पंजाब का नाम लिया तो श्रावक जी के चेहरे के हाव-भाव बदल गये, उसने सोचा पंजाब के साधु-साध्वियाँ तो शिथिलाचारी होते हैं। (क्योंकि कई वार उधर विचरण में नोट किया कि दक्षिण भारत के लोगों के लिए शिथिलता ही पंजाब की परिभाषा है। गुरु जी ने उन्हें अच्छी तरह समझाया कि आज भी पंजाब में हमेशा की तरह संयमी साधु साध्वियाँ विचरते हैं।) वगड़िया जी स्पष्ट तो क्या कहते ? इसलिए वोले-स्वामी, यहाँ परठने की सुविधा नहीं है। उस समय वे हमारा विहार करवाना चाहते थे लेकिन अगले दिन हमारी संयम क्रियाएँ देखी तो हाथ जोड़कर बोले-स्वामी, क्षमा करें, मुझे पता नहीं था कि आप अपने संयम में इतने मजबूत हो, अव मैंने आप की शरण पा ली है, इस शरण को छोड़ूंगा नहीं। फिर तो तीन दिन तक उन्होंने जाने नहीं दिया तथा आजीवन के लिए जमींकंद तथा ब्रह्मचर्य का नियम लेकर कपडा वहराया। वहाँ से अपने बेटे को निजामपुरा तक विहार में भेजा। वहाँ पर श्री विजय श्री जी म० सा० से मधुर मिलन हुआ।

गुरु जी की अस्वस्थता को देखते हुए मने पूर्व की तरह एक बार फिर निवेदन किया-गुरु जी, अब हरियाणा वापिस लोट चलो। म अकेली सी पड जाती हूँ। छोटे साध्वा जी तो पहले ही घवरा जाते ह। गुरु जी ने कहा- अर्पण, एक बार तुझे विचरना सीखा दूँ, तुझे अपने पावो पर खडा कर दूँ ताकि कल मुझे कुछ हो जाये तो तुझे दिक्कत न आये। मैंने कहा - मुझे नहीं सीखना विचरना, बस आप हरियाणा चलो। मेरी जिद्द को देखकर वापिस स्वदेश लोटने का निर्णय कर लिया ओर अहमदावाद की तरफ बढ गये। नडियाद जो शायद Kidney के लिए भारत का नम्बर 1 का चिकित्सा केन्द्र है गए पर कम की अन्तराय वहाँ भी कर्फ्यू लगा था। वडोदरा के श्रावक बगडिया जी इतने प्रभावित हो गये कि अहमदावाद अपने वेटे जयकान्त जी को समाचार दिया कि वहुत क्रियाशील स्वामी आ रहे हें पूरा ध्यान रखना। जयकान्त जी ने विहारों में माहोल खराव होते हुए भी आकर समाला। अहमदावाद में मणि नगर में ठहरे, वहाँ से शाही वाग पधारे। वहाँ राजस्थान हस्पताल में गुर्दे के Test हुए। गुर्दे ठीक से काम नहीं कर रहे थे। अहमदावाद में राजस्थान आसोप के प्रदीप जी की अविस्मरणीय सेवा रही। वह कर्फ्यू में भी प्रतिदिन तवियत पूछने आता रहा। पानीपत से अलका ने श्री राकेश मुनि जी म० सा० के समाचार दिए-स्वास्थ्य के प्रति लापरवाही न वरतें, विचरने का ख्याल छोडकर पहले स्वय को समालें।

फरसना जीती हम हारे – अहमदावाद में दगों का वातावरण होने तथा उचित स्थान के अभाव के कारण उसी साल वापिस दिल्ली की तरफ वढने का विचार वनाया। गुरु जी ने भी हाँ भरी कि वस अव हरियाणा में ही विचरना हे। सेवा में रह रहे सेवक रणवीर को पानीपत जाते समय यही कह दिया कि वहाँ कह देना म० सा० वापिस आ रहे हैं। राजस्थान भी समाचार करवा दिये कि हम वापिस लोट रहे हैं। लेकिन फरसना तो कुछ ओर कह रही थी। हरियाणा लोटने की पूरी योजना वनाकर सोये थे कि सुवह उठकर वोले, अपण - राजस्थान के लिए 350 कि०मी० चलना पडेगा, में थक चुकी हूँ इतना नहीं चल सकती ओर सूरत की विनती भी हे इसलिए 170 कि० मी० सूरत चलते हैं। वहाँ पर इलाज भी करवा लूँगी। जमीन की फरसना ने वुद्धि पलट दी। मेंने वहुत मना किया, मेरी आखें भर आई कि उधर नहीं चलना, राजस्थान की ओर वढना हे। मेंने कहा, गुरुजी - तवियत दिनों दिन गिर रही हे इसलिए वापिस लोट चलो ओर कुछ तत्वों को यह भी भ्रमणा थी कि अर्पण घूमने के लालच में गुरु की तवियत को नजर अन्दाज कर रही हे, इसलिए सयम प्रभा जी को वापिस नहीं लाती। परन्तु गुरु जी की विगडती हालत को देखकर मेरी मनोस्थिति केसी थी यह तो केवली भगवान भली प्रकार से जानते हैं। मेरी प्रार्थना फरसना ने ठुकरा दी।

गुरु जी पर हमेशा गुरुओं की कृपा दृष्टि रही, जिन्होंने उन्हें हर सकट से उवारा। शाही वाग से 'दिल्ली गेट' पार करके वस मणि नगर उपाश्रय में पधारे ही थे कि कुछ श्रावक दोडे हुए आये ओर पूछा, स्वामी - आप ठीक तो हे। गुरु जी ने इतना घवराने का कारण

पूछा तो जवाव में श्रावक बोले-अभी दिल्ली गेट पर बुरी तरह मारकाट मच गई है, जो दिखता है उसी को पकडा कर गर्दन काट रहे हैं। गुरु जी पर गुरुदेवों का वरदूहस्त हमेशा छत्र वनकर छाया रहा तथा उनका आशीर्वाद सुरक्षा कवच वनकर हर प्रहार से सुरक्षा करता रहा। उसी क्षण गुरु जी को मन ही मन याद आया कि वे मारवाड़ी स्थानक के श्रावक कह रहे थे-अन्नदाता, 5-10 मिनट वाद ही विहार करना पर शुक्र रहा समय से चल पड़े।

अहमदाबाद में विना प्रवचन के भी संयमी जीवन की सुन्दर छाप पड़ी। मणिनगर उपाश्रय के रमेश भाई का कहना था कि ऐसी संयमी साध्वियाँ तो प्रथम बार देखी हैं। बगड़िया जी ने अनुरोध किया - स्वामी, कोई गुजराती भाई साथ में देंगे ताकि विहारों में भाषा सम्बन्धी दिक्कत न आये तथा माहौल भी अनुकूल नहीं है। गुरु जी बोले - हमें गुजराती आती है इसलिए परेशानी की तो बात नहीं है लेकिन खराव माहौल को देखकर वे बिना भाई के जाने नहीं देना चाहते थे। वैसे **भयावह जंगलों में शेर को किसके साथ की आवश्यकता होती है।** उसी तरह गुरु जी भी मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र के पहाड़ों, जंगलों में निडरतापूर्वक बढ़ते रहे थे। लेकिन जयकान्त जी के वार-बार आग्रह से गुरु जी ने उनकी बात को मान दिया। साथ में जाने वाला भाई अन्य साध्वियों को बडोदरा तक पहुँचाने गया हुआ था, जिस कारण दो दिन तक वह नहीं आया तो गुरु जी ने यह कह कर विहार कर दिया। 5 कि० मी० नारोल जा रही हूँ, वहाँ भेज देना। इतना कहकर थके हुए कदमों ने सूरत की राह पकड़ी।

गुरु जी जैसे ही नारोल पहुँचे तभी बडोदरा की तरफ से गुजराती साध्वियों का भी पधारना हो गया। गुरु जी ने चर्चा के दौरान पूछा, कि आप कहाँ से पधारे हैं ? तो साध्वियों ने कहा - असलाली से। गुरु जी के पुनः प्रश्न का जवाव देते हुए वे कहने लगी 3½ कि० मी० है। वे साध्वियाँ हमारी गोचरी की गवेषणा को देखकर दंग रह गई। गुरु जी ने कहा, अर्पण - आज सिर्फ 5 कि०मी० आये हैं, पूरा दिवस यहाँ रहकर क्या करना, शाम को असलाली चलेंगे। मैंने मना किया, बिना भाई चलना ठीक नहीं।

<u>नवकार मंत्र तथा गुरु कृपा का चमत्कार</u> - गुरु जी मुझे मनाकर चल पड़े 3½ कि० मी० के लिए सवा घण्टा लेकर। जैसे ही 3½ कि० मी० का मील पत्थर गया कि विहार विहार न रहकर द्रोपदी का चीर हो गया। 6 कि० मी० तक गाँव का कुछ नामो निशान दिखाई नहीं देता था। रात्रि घिर आई, सुनसान जगह, इस आतंकवाद के माहौल में पक्षी जानवर भी दिखाई नहीं दिया, साईकिल, स्कूटर वाले व्यक्ति के मिलने की बात तो कोसों दूर थी। अंधेरा छा गया। एक बार तो गुरु जी भी घबरा गये कि छोटी-छोटी साध्वियाँ साथ हैं। लेकिन स्वयं को मजबूत बना कर हमारा हौंसला बढ़ाया और कहा-हमें नवकार मंत्र पढ़ो तथा गुरुदेव के नाम का जाप करो, यही इस समय हमारा शरणा है। 2-5 मिनट ही जाप जपा होगा कि तभी आंतकित रात में भी एक स्कूटर आ कर रुका और जैसे ही उसने "मत्थएण वंदामि" शब्द उच्चारा, हमारी जान में जान आई। उस श्रावक ने पूछा, ऐसा माहौल और

मिलता नही मिल बेठने वालो को कुछ मजा,
जव तक तवियत से तवियत मिल जाती नही।

वहाँ पर गुरु जी ने एक प्रवचन दिया। जिसे सुनकर सत कहने लगे-महासती जी, वास्तव में भोपाल वेतुल में भीड का सेलाव उमडा होगा। श्री प्रेम मुनि जी म० सा० ने प्रेम भरा सम्मान किया तथा कहने लगे-सयम जी, आपकी तवियत ठीक नहीं हे। इसलिए आप यहीं हमारे घोषित चातुर्मास स्थल पर चातुर्मास हेतु पधारें तथा शारीरिक आराम करें। हम अन्यत्र चातुर्मास के भाव वना लेंगे। सतों के इन शब्दों में गुरु जी को अपनत्व की अनुभूति हुई। गुरु जी ने हाथ जोडकर कहा-म० सा०, यह आपका वडप्पन हे लेकिन मुझे गुजरात से दूर जाना होगा। सत वोले, महासती जी - हमारी तो यही शुभ भावना हे आपको असाता न हो। गुरु जी वापिस उधना पधार गये। वहाँ महाराष्ट्र से श्रमण सघीय महामत्री श्री सोभाग्य मुनि जी 'कुमुद' उधना स्थानक भवन का उद्‌घाटन कराने हेतु पधारे थे। गुरु जी ने वहाँ एक प्रवचन दिया तथा उद्‌घाटन के दिन प्रवचन में पधारने की विनती होने पर भी हाल में चल रहे पर्वों आदि के कारण पधारने में असमर्थता दिखा दी और अपने सयम की मर्यादा का ध्यान रखा। उस एक प्रवचन से प्रभावित उधना की मेवाडी समाज ने गुरु जी के चातुर्मास के भाव वनाये लेकिन आज स्थिति यह हो गयी हे कि सव स्वेच्छा से चातुमास करवाने के अधिकारी नहीं रहे। वस यहाँ भी श्रावकों को अपनी भावना के प्रवल वेग को दवाना पडा। गुरु जी ने सरलता में श्री सोभाग्य मुनि जी से महाराष्ट्र में सवसे नजदीक क्षेत्र की जानकारी मागी तो उन्होंने केवल 40 गॉव का नाम सुझाया जो कि किसी दृष्टि से भी विशेष क्षेत्र नहीं था (एकदा वहाँ पर सन्तों ने माना हुआ चातुमास नजदीक आकर जानकारी होने पर केंसिल कर दिया था।)

सूरत में जब तक रहना हुआ सुशील जी प्रतिदिन आकर तवियत की पूछताछ करते रहे तथा सराहनीय सेवा की। सेवाभावी वाल श्रावक पानीपत से आये अकुश ने जैसे ही गुरु जी की ऐसी हालत देखी तो वोला आप मेरे साथ हरियाणा चलो, में आपके साथ पेदल चलूँगा। गुरु जी के पधारने पर शोभा जी की चिरकाल की प्रतीक्षा का अत हुआ था लेकिन अल्प समय के सान्निध्य से उनका मन भी खिन्न हुआ।

महायात्रा पर जाने के सिगनल

जेसे गाडी स्टेशन पर आने से पहले सीटी वजाकर अपने आगमन की सूचना देती हे, आदित्य के भी पश्चिमाचल में जाने के लक्षण प्रकट हो जाते हें। जेसे दिशा का लाल हो जाना, पक्षियों का अपने घोंसलों में लोट जाना, प्रकाश की प्रचण्डता मद पडना, उसी प्रकार गुरु जी ने भी मोत रूपी गाडी के आने से पूर्व, जीवन का सूर्य छिपने से पहले निम्न अल्टीमेटम देने शुरू कर दिये थे जिससे अचानक आने वाले तूफान को झेला जा सके।

1 अर्पण तुझे विचरना सीखा दूँ तथा एक गुरु के कर्तव्य को पूरा करूँ ताकि वाद में तुझे

दिक्कत न आये।

2 तुझे दीक्षा देकर भूल कर दी, गुरु का सान्निध्य अल्पकाल तक रहेगा।

3. अर्पण, मेरे जाने से पहले एक बार प्रवचन करके दिखा ताकि मैं शांति से प्रस्थान कर सकूँ।

4. मेरे बिना अकेले भी अपने गुरुओं के, माता-पिता के संजोये अरमानों को पूरा करना।

5. संथारे का समय आने वाला है, उस समय हमेशा की तरह मजबूती रखना।

6 तूने मेरा कठोर संयम पलवाया, मैं गुरु होकर भी तुझे कुछ भी न दे सकी।

7. महावीरं मिशन विशेषांक 'गुरु सुदर्शन' हर समय पढ़ना तथा कहना कि अर्पण देख ले गुरु के जाने के बाद क्या बोलते-लिखते हैं, तेरे लिए भी यह समय आने वाला है।

8. काश अर्पण, मैं भी तुझे श्री जयमुनि जी म० सा०, श्री राजेन्द्र मुनि जी म० सा० की तरह अध्ययन करवा के विदुषी बनाकर जाती।

9 अपनी धरण का ख्याल रखना, मेरे जाने के बाद कौन ठीक करेगा, क्योंकि मेरे बिना यह ठिकाने आती नहीं।

10 हरियाणा जाने पर अर्पण वहाँ पर श्रावकों में ज्ञान-ध्यान की रुचि जगाना आदि काफी बातें गुरु जी ने सूरत के बाद कही ताकि मेरा मन इस दर्द को सहने के लिए तैयार हो जाए। सबसे बड़ा सिगनल था 26 अक्टूबर की उषाकाल का 'मुझे अन्दर लिटा दो लोग आने वाले हैं।'

सूरत में गुरु जी मुझसे बोले, अर्पण - गुरुदेव सुदर्शन जीवन विशेषांक महावीर मिशन मंगा दे। मैंने कहा कि वो तो आपने 2-3 बार पढ़ ली हैं और वो किताब तो कोसों दूर महाराष्ट्र हिंगन घाट में रखी हैं, इतनी दूर से कैसे मंगवाऊँ ? लेकिन रोजाना सुबह उठते यही शब्द कि अर्पण महावीर मिशन मंगा दे। आखिर गुरु जी की इच्छा देखते हुए मैंने दिलीप जी से किताब मंगवाई, लेकिन यह क्या गुरु जी तो सारा दिन बस उसी को पढ़ते रहते थे, पढ़कर मुझे कहते कि अर्पण, गुरु के जाने के बाद कैसे लिखते हैं, ये पढ़ ले। श्री जय मुनि जी म० सा०, श्री नरेश मुनि जी म० सा०, श्री अचल मुनि जी म० सा० आदि संतों ने कितना सुन्दर लिखा है। कभी कहते-काश, मैं भी तुझे इन संतों की तरह खूब प्राकृत, संस्कृत पढ़ा पाती। तूने मुझे एक नन्हें बालक की तरह संभाला परन्तु मैं तुझे कुछ न दे पाई। बस गुरु जी के पास हर समय यही चर्चा रह गयी थी, कभी-कभी मेरी ऑखे गीली हो जाती। मैं कहती-गुरु जी ऐसा मत कहा करो, मेरा हौंसला टूट जाएगा। मैं कहती थी-गुरु जी विधाता इतना क्रूर नहीं कि आप को मेरे से छीन ले।

<u>जीभ ही नहीं जीवन भी बोला</u> - सही दृष्टि में संत वही है जो जिह्वा से कम

जीवन से अधिक बोलता है। संत का आचरण एक सच्चे संत होने की परिभाषा देता है। जीवन में व्याप्त सुन्दर गुण साधुत्व के लक्षण होते हैं। इसी प्रकार सभी जगह तो गुरु जी के प्रवचनों ने श्रावकों पर प्रभाव डाला लेकिन अस्वस्थता तथा वातावरण की प्रतिकूलता के कारण गुजरात में गुरु जी ने मात्र दो ही प्रवचन दिए। मगर भले ही गुरु जी की सिंह गर्जना नहीं हुई तो भी उन के संयम-कठोरता, वाणी की सरसता, हृदय की सरलता, विचारों की विशालता, निर्भीकता, निडरता, असाम्प्रदायिकता आदि गुणों ने हर दिल पर छाप छोड़ी।

पानीपत से कुमारी अलका जैन ने लोहपुरुष गुरुदेव श्री धर्म मुनि जी म० सा० का समाचार दिया कि म० सा० फरमा रहें हैं, स्वास्थ्य की तरफ गौर करें, विहारों को स्थगित करें। सोनीपत निवासी सुरेन्द्र जी ने बहुत आग्रह किया सूरत में ही ठहरने का, लेकिन तबियत देखकर वो भी मौन हो गए। क्योंकि वातावरण के कारण वहाँ मेरे भी पैरों में दर्द रहने लगा था।

सूरत से अनिच्छा से परिस्थितिवश महाराष्ट्र की तरफ कदम बढाने पडे। मोहन जी, ईश्वर जी, सुशील जी आदि श्रावक व श्राविकाओं ने गुरु जी को विहार करवाया। सिंहनी इतनी धीमी चाल से चल रही थी कि मात्र 2 कि मी का विहार 1 घण्टे में तय हुआ। तब श्रावक बोले-महासती जी, वैसे तो हमारी भावना नहीं कि आप यहाँ से पधारें, लेकिन मौसम की प्रतिकूलता ने हमारी भावना को दबाने पर विवश कर दिया है, परन्तु हम आपको Wheel Chair के बिना जाने नहीं देंगे। गुरु जी ने कहा-श्रावक जी, आत्मा इस तरह का दोष लगाने को मानती नहीं, जब श्रावक नहीं माने तो गुरु जी ने कहा - आज तबीयत देखती हूँ कल बता दूँगी। रात्रि को गुरु जी ने गुरुदेव को याद किया, अपनी ध्यान-साधना की तो मानो सूर्योदय चमत्कार हो गया। सुबह एकदम स्वस्थ प्रतीत होने लगे। जहाँ 2 कि० मी० कठिनाई से पार किये वहीं अगले दिन तेज कदमों से बिना परेशानी के 10 कि०मी० पर जाकर ही कदम थमे। गुरुजी की इतनी अस्वस्थता को सुनकर पानीपत से आये सेठी तथा अजय ने निवेदन किया कि पदयात्रा की जिद्द ना करें, गुरु जी ने हँसकर उन्हें भी यह कहकर चुप करा दिया कि अपनी बहन महाराज अर्पण को देखो ढाई महीने से चरण गिरी हुई है, शारीरिक शक्ति क्षीण होती जा रही है फिर भी 20-25 मन्जिल तक गोचरी को जाती है।

सभी को समझा-बुझाकर दृढ मनोबल के सहारे चलथाण, बारडोली आदि पधारे श्रावकों ने चातुर्मासिक विनती की लेकिन वहाँ भी चातुर्मास करवाने के लिए श्रावक स्वतन्त्र नहीं थे। गंगाधरा में 40 गाँव के अध्यक्ष श्री शान्तिलाल जी चोरडिया (बापुसा) चातुर्मास की विनती लेकर आये। गुरुजी ने कहा कि मैं वचनों में बंधने का भाव नहीं रखती क्योंकि गर्म इलाके में प्रथम क्षेत्र में ही ठहरने का भाव है। लेकिन बापुसा ने हाथ जोडकर निवेदन किया-अन्नदाता, संघ तथा श्रावकों के जीवन उत्थान की दृष्टि से आप का पधारना आवश्यक ही नहीं, अनिवार्य है। गुरुजी ने नजदीक ही ठहरने का विचार बताकर तथा मात्र एक व्यक्ति

के आने से चातुर्मास देने से इन्कारी कर दी।

नवापुरा में श्री उमेश मुनि जी म० सा० की साध्वियों के दर्शन किए। नवापुरा में गुजरात सीमा समाप्त हो जाने के कारण गुरुजी को कमर व पैर दर्द में काफी राहत मिली, अब उठने-बैठने में पीड़ा नहीं होती थी। मैंने कहा-गुरुजी, अब तो आप ठीक हो जाओगे, गुजरात अपने को रास नहीं आया। लेकिन मुस्करा कर फिर वही पुरानी बातें शुरू कर दी- अर्पण, मजबूत हो जा। बारड़ौली के एक अनुभवी वैद्य की दवाई शुरू की, काफी राहत मिली। डोंडाइचा के प्रभावित श्रावक सुनते ही एक पहाड़ी पर विहारों में आ गए और चातुर्मास का आग्रह करने लगे लेकिन किन्हीं कारणों से गुरुजी ने मनाही कर दी। अगले दिन दहिबेल में 40 गाँव से चम्पालाल जी चोपड़ा, सागरमल जी आदि श्रावक आये और न चाहते हुए भी स्वीकृति ले गए। उन्होंने बताया कि अन्नदाता, 40 गाँव से पहले कोई क्षेत्र नहीं है।

रास्ते के ऊँचे-नीचे पहाड़ों को प्रसन्न मन से लांघते हुए साक्री पहुँचे। टाटिया जी का कहना था "**बड़ी-बड़ी साध्वियाँ, साधु देखे पर आपका मुकाबला नहीं।**" यात्रा के बीच में पड़ाव तो थे, नेर खेड़ा आदि गाँव आये लेकिन डाक्टरी सुविधा का अभाव होने के कारण विराम नहीं लिया।

<u>शेर की चाल नहीं गर्जना देखो</u> – धुलिया के श्रावक कहने लगे-अन्नदाता, नागपुर बैतुल की रौनकों की सुवास यहाँ तक भी पहुँची थी। सभी आतुर थे उस विभूति के दर्शन करने तथा वाणी को सुनने के लिए। प्रवचन समय होने पर जब गुरुजी मुझे लेकर लाठी टेकते हुए नीचे उतरने लगे तो एक श्रावक आया और कहने लगा, अन्नदाता - (गुरुजी को) आप को नीचे पधारने का कष्ट करने की आवश्यकता नहीं, मेरी तरफ इशारा करते हुए कहने लगा, प्रवचन तो इन्हीं का सुनना है। गुरुजी मुस्कराते हुए मुझे बोले, संयम जी - जाओ प्रवचन सुना दो। मैंने कहा- श्रावक जी, जिसे सुनने को व्याकुल हो, जिसके नाम की धूम मची है वे ये ही मेरे गुरुजी संयम प्रभा जी हैं। इतना सुनते ही श्रावक के मुँह से शब्द निकले, क्या ये संयम प्रभा जी हैं ? क्योंकि श्रावक तो यही समझ रहे थे, यह वृद्ध दिखने वाली साध्वी क्या बोलती होगी ? वे पुनः स्पष्टीकरण के लिए पूछने लगे-क्या बैतुल में आप ही प्रवचन करते थे ? गुरुजी की तरफ से मैंने स्पष्टीकरण किया। काफी संख्या में प्रवचन सुनने आये नौजवानों ने लाठी पकड़कर धीरे-धीरे चलने वाले गुरुजी की अविराम प्रवचन धारा को सुना तो गुरुजी से आगामी चातुर्मास की विनती करने लगे तथा स्वीकृति देने का आग्रह किया (क्योंकि उस वर्ष श्री राममुनि जी का चौमासा घोषित हो चुका था) धुलिया से मैंने विनती की कि प्रवचन मत किया करो, गुर्दों पर जोर पड़ता है तो एक गाथा सुना देते थे। "**जरा जाव ण पीडेई, वाही जाव न बड्ढई। जाविंदिया न हायंति, ताव धम्मं समायरे।**"

गुरु भक्ति से लबालब हृदय के श्रावक बैतुल वासी गुरुजी की तबियत की पल-पल खबर रखते थे अतः लोगों ने भी बैतुल को गुरुजी का पीहर घोषित कर दिया था। वहाँ के

श्रावक इतने श्रद्धावान थे कि गुरुजी की पीडा की मानो उन्हें अनुभूति हो जाती थी। अस्वस्थता की खवर मिलते ही आशा गोटी, कुमारी नम्रता गोटी विहारों में साथ रहकर मेरे साथ मिलकर 1 ओर 1 ग्यारह की शक्ति (होंसला) वनायी। ऐसी हालत देखकर नम्रता की ऑखों के ऑसुओं ने थमाव नहीं लिया।

अतिम चातुर्मासिक पडाव – 2002 फरवरी माह में सुगन चद जी को मना कर दिया कि हमारा 40 गॉव फरसने का भी भाव नहीं है। लेकिन कर्मो के वही खाते में तो कुछ ओर ही लेख लिखा था कि अन्तिम चातुर्मास के लिए इसी धरती को फरसना है, यहीं जमीं एक लम्बी यात्रा पर ले जाने की तेयारी करेगी। इस वार अस्वस्थता के कारण चातुर्मास का कोई उल्लास नहीं था। 18 जुलाई को 40 गॉव में श्री चम्पालाल जी छाजेड की कोठी में प्रवेश किया। चारों ओर से प्रवचन की प्रशसा सुने हुए कान गुरुजी को सुनने को लालायित थे, जव गुरुजी 18 तारिख को सामान्य शब्दों में वोले तो श्रावक वोले – वास्तव में इनके प्रवचन की मिसाल नहीं हे।

गुरुजी को पता नहीं क्या लगता था 18 तारिख को सघ को कह दिया, 40 गॉव वालो प्रवचन केवल सवत्सरी तक होगा, उसके वाद नहीं। श्रावक पूछने लगे-अन्नदाता, ऐसा क्यों ? तो गुरुजी वोले कि फिर में केवल साधना करूँगी। 21 जुलाई को चातुर्मास हेतु श्रावकों की भीड ने गुरुजी को स्थानक भवन में प्रवेश करवाया। स्थानक में प्रवेश करते ही गुरुजी वोले-अर्पण, पता नहीं स्थानक मे आते ही अजीव सी वेचैनी महसूस हो रही है यहॉ म ज्यादा दिन नहीं रह पाऊँगी। मेंने कहा – गुरुजी, हम अभी पहली वार आये हें, धीरे-धीरे धर्म ध्यान होगा, अपने आप मन लग जाएगा। पर गुरुजी कहने लगे, अर्पण – म यहॉ रहूँगी तो ज्यादा दिन नहीं रह सकूँगी। तभी में एक दो जगह देखकर आई, मगर अनुकूल नहीं लगी।

चातुर्मास प्रारम्भ हो गया। वहॉ का इतिहास था कि वडे-वडे आचार्यो के आने पर भी अक्सर 7-8 भाई ही सामायिक में प्रवचन समय में वेठते थे। वहॉ के अध्यक्ष तो वस चातुर्मास ला देते थे, प्रवचन में आने की रुचि व समय नहीं था। लेकिन पहले ही दिन गुरुजी ने सामायिक करने के लिए कहा तो दूसरे ही दिन 40 50 भाई सामायिक में दिखाई दिए और लागों के लिए सवसे वडा आश्चर्य था कि अध्यक्ष जी रोजाना प्रथम वार प्रवचन में समय से पूर्व आकर सामायिक करते थे। धीरे-धीरे चातुर्मास के ठाठ लगने लगे। कुछ श्रावकों का कहना था कि म० सा०, हमने तो सोचा था कि कोई ऐसी ही साध्वी होगीं जिनका किसी ने चातुर्मास नहीं लिया होगा, क्योंकि समाज में कुछ तत्व ऐसे थे जो अपने कटु वचनों तथा अकड में पाटे पर वेठे सत को रुला देते थे। पता नहीं श्री सोभाग्य मुनि जी ने क्षेत्र की जानकारी होने पर भी केसे यह नाम सुझा दिया। लेकिन नोजवान कहते थे-म० सा०, आपको कोई स्थानक के भीतर तो क्या कहेगा, वाहर भी कुछ चर्चा करने की किसी की हिम्मत नहीं हो पा

रही है। सभी नौजवान गुरुजी के संयमी तथा मर्यादित जीवन से विशेष प्रभावित हुए और कहते थे-ऐसी साध्वियाँ होंगी तभी धर्म जिंदा रहेगा।

चातुर्मास की रौनक तो बढ़ गई लेकिन गुरुजी की तबीयत गड़बड़ाने लगी। गुरुजी को रात्रि को श्वास लेने में कुछ तकलीफ होने लगी। गुरुजी ने अंदाज लगाया कि मौसम अनुकूल नहीं है इसलिए छाती में कफ जम गया है। मैंने गर्म पानी से छाती सेंकी, जिससे काफी आराम पड़ गया। वहाँ के एक वैद्य की दवाई का सेवन शुरू किया, उससे भी प्रारम्भ में काफी आराम महसूस हुआ। चिकित्सकों का कहना था सन्धिवात हो गया है। गर्म पानी की सिकाई ने कुछ ही दिन असर दिखाया। एक दिन श्रावक बोले-म० सा०, आप दिवाली पर बंद कमरे में तेला करते हो इस बार हमें भी तेले में दर्शन करने का सौभाग्य मिलेगा। तब गुरुजी बोले "आपकी मिट्टी की पुण्यवाणी होगी तो तब तक मैं यहाँ रहूँगी वरना नहीं।" फिर मैंने पूरी छाती पर रूई लपेटी तो काफी राहत मिली, पर यह फार्मूला भी जल्दी ही बेअसर हो गया। सुवर्णा आंचलिया तथा बोहरा परिवार दोनों ने गुरुजी के पथ्य परहेज की निर्दोष सेवा की।

<u>स्वप्न ने चेताया</u> – गुरुजी कुछ रात जागृत अवस्था में विताने लगे, थोड़ी सी देर सुबह-सुबह सोते थे। एक सुबह मैं उठी मगर शरीर में ताजगी नहीं थी। ऐसा प्रतीत हो रहा था कि शरीर शक्तिहीन हो गया है। क्योंकि रात्रि के अंतिम प्रहर में मुझे सपना आया–मैं बैठी स्वाध्याय कर रही थी कि एकदम पीछे से कुछ आवाज को सुनकर मै पीछे झांकी तो मैंने देखा एक सूअर (डुकर) जैसा जानवर हँस जैसे जीव को मुँह में लिए हुए है मात्र पैर बाहर हैं। यह दृश्य देखकर जैसे ही मैं चिल्लाकर बचाने दौडी कि मेरे हाथ पहुँचने से पहले ही सूअर हँस को निगल गया। इस सपने से भीतर में हलचल पैदा हो गई। क्योंकि गुरुजी ज्यादा अस्वस्थ चल रहे थे। मेरे भीतर घबराहट रहने लगी। गुरुजी को मैंने कुछ वताया नहीं। इधर से मेरे पैरों में हर तीसरे दिन मानों कोई जीव काटने लगा, मुझे बहुत पीड़ा रहती। भीतर ही भीतर मेरी पागलों जैसी स्थिति हो गई। गुरुजी को मैं रोजाना कहती–गुरुजी, अपनी अर्पण को छोड़ के मत जाना। एक दिन गुरुजी ने पास बिठाया और पूछा, अर्पण - आखिर क्या बात है ? मेरी इतनी बीमारी में भी तू घबराई नहीं, बल्कि मेरी हिम्मत बढ़ाती रही। पर अब मैं देख रही हूँ कि तू दिनों दिन कमजोर होती जा रही है। आहार पानी ठीक से नहीं करती है। गुरुजी के इतना कहते ही मेरी आँखें भर गई। मैंने कहा–गुरुजी, ऐसा सपना आया है। गुरुजी ने मुझे सीने से लगा लिया तथा मुस्करा कर कहने लगे, मेरे शेर बहादुर, भगवान ने पहले ही आने वाले महासंकट को झेलने के लिए मन को मजबूत बनाने की चेतावनी दी है। फिर हँसकर बोले, अपने गुरुदेव से पूछ ले यहाँ कुछ होगा क्या ?

गुरुजी के कहने से मैं रात को गुरुदेव को याद करके सोई, पूछा मेरे गुरुजी को कुछ

होगा तो नहीं ? उसी रात को सपना आया कि चारों तरफ आग लगी है। ऊँची-ऊँची लपटें उठ रही हैं। मैं ओर गुरुजी बीच में खडे हैं। मैं घबरा रही हूँ तभी किसी दिव्य शक्ति ने आकर एक हाथ मारा ओर आग बुझ गई। सुबह उठी तो चेहरे की प्रसन्नता को देखकर गुरुजी ने पूछा - क्या जवाब मिला ? मैंने सपना सुनाया। गुरुजी समझाने लगे, यहाँ मुझे कुछ नहीं होगा।

सपने से कुछ दिन तो निश्चित रही लेकिन गुरुजी की पुन तकलीफ बढने लगी। मेरे पाँवों की स्थिति खराब होती चली गई ओर अब गुरुजी के दाँत तथा नाखून काले पडने लगे। मैं हँस निगलने वाले स्वप्न को याद करके चिन्तित रहने लगी। मैंने उस रात पुन गुरुदेव को समाधान के लिए याद किया ओर कहा-गुरुदेव, मैं कर्मों की हर मार सह सकती हूँ लेकिन गुरुजी का वियोग सहन नहीं कर सकती। रात्रि को सपना आया कि चारो दिशाओ मे पानी ही पानी हो गया है। सब कुछ डूब गया ओर पानी बढने लगा। मैं एक नन्हे बालक की तरह गुरुजी से लिपट गई तभी किसी शक्ति ने हम दोनो को ऊपर उठा लिया। सपना देखकर कुछ राहत तो मिली लेकिन गुरुजी के दांत, नाखून काले पडना, हँस निगलने वाले सपने से मन हर समय चिंतित रहने लगा। गुरुजी की बिगडती तबीयत ने मुझे भीतर ही भीतर से खत्म कर डाला। छोटे साध्वी जी जो सालभर के दीक्षित थे, उनका पूरा सहयोग होने पर भी मैं अकेली सी पड गई। गोचरी जाती तो गुरुजी की चिंता रहती।

एक दिन गुरुजी कहने लगे-अपण, एक बार प्रवचन करके दिखा दे। क्या मेरे जाने के बाद प्रवचन करेगी ? मैंने कहा - गुरुजी जब मेरी ओर गुरु बहनें आ जाएगी फिर सारा काम उन्हें संभलवा कर प्रवचन दूँगी। गुरुजी बोले - अर्पण तेरी ओर गुरु बहने नहीं आएगी, अब तो तेरी शिष्याएँ आएगी।

गुरुजी की तबीयत बिगडती चली गई लेकिन सभी डा० हेरान थे न पेशाब में तकलीफ, न कहीं देह में सूजन। इस चातुर्मास में पूर्व के चातुर्मासों की अपेक्षा अधिक दर्शनार्थी आने लगे। मैं पूछने लगी-गुरुजी, अपने तो कोइ आता नहीं था, फिर इस बार इतने लोगों की लाइन क्यों लगी है ? गुरुजी ने कहा - फिर दर्शन हो न हो इसलिए आ रहे है।

<u>अंतिम उद्‌बोधन</u> – पिछले चोमासों में गुरुजी के जन्माष्टमी के 4 दिन के प्रवचन, 15 अगस्त को राजनीति पर 2 दिन के तथा इसामसीह के विषय में किए गए प्रवचनों का प्रशन्सा सुने श्रावक इंतजार में थे इन प्रवचनों को सुनने के लिए। लेकिन 15 अगस्त पर तबियत ठीक न होने के कारण एक ही दिन बोले। अब श्रावक जन्माष्टमी की राह देख रहे थे। लेकिन दुर्भाग्य रहा 30 तारीख की जन्माष्टमी से पहले दिन 29 अगस्त को अनवरत प्रवाहमान उस वाणी के निर्झर ने थमाव ले लिया। अब सिंह गर्जना चुप हो गई थी। कर्मो की मार से घायल उस वीरांगना का शारीरिक जोश

ठण्डा पड़ गया था।

गुरुजी अब मुझे यही कहते-अर्पण, तुझे दीक्षा देकर तुझे कोई सुख न दे पाई, मेरे कार्य करने में ही समय वीत गया। मेरे विना भी कुछ वनना है। गुरुजी की प्रतिदिन यही वातें सुनकर मैं एक दिन मजाक में कहने लगी- गुरुजी, यदि जाना ही है मुझे छोड़कर तो मुझे मेरे गुरुओं के चरणों में छोड़कर जाना। गुरुजी ने मेरी बात को सहमति देते हुए कहने लगे- अर्पण, ये वादा रहा तुझे तेरे गुरुदेव के चरणों में छोड़कर जाऊँगी। गुरु जी अव गीत की दो लाइनें ही हर समय मेरे सामने आते ही गुनगुनाने लगते।

हम छोड़ चले हैं महफिल को, याद आये कभी तो मत रोना ।1।

कर चले हम फिदा जान औ' तन साथियो अब तुम्हारे हवाले वतन साथियो ।2।

<u>जीवन मध्यान्ह की समाप्ति 1 सितम्बर</u> – असाता वेदनीय कर्म के उदय से साँस पहले तो थोड़ी देर रात को ही उखड़ती थी अब धीरे-धीरे पूरी रात उखड़ने लगी। तब मैं गुरुजी को गोदी में उठाकर गैलरी के चक्कर लगाती। पर्यूषण के पूर्व 1 सितम्बर की रात तो बड़ी ही मुश्किल से विताई। मैंने सूर्योदय होते ही दिलीप बाफना को आवाज लगाई तथा सुनील छाजेड़ को वुलवाया। तव तक समाज के पदाधिकारी भी आ गये। गुरुजी को उठने, वैठने, लेटने कैसी भी स्थिति में चैन नहीं पड़ रही थी। तभी बड़े-बड़े डाक्टरों को बुलवाया गया। डॉ० ने आते ही हालत देखकर तुरन्त औरंगाबाद ले जाने का परामर्श दिया। पर हम ने इन्कार कर दिया। डाक्टर ने Injection लगाया। दवाई के भीतर जाते ही बेचैनी बढ़ गई। गुरुजी खांसने की कोशिश करने लगे, पर खांसा नहीं गया। दिव्य जी लगातार नवकार मंत्र पढ़ती रही तभी गुरुजी को जोरदार खाँसी आई और छाती में जमा काफी कफ निकला। गुरुजी को एकदम राहत मिल गई। सारी खड़ी समाज को मैंने अपने-अपने स्थान पर जाने को कहा क्योंकि अब गुरुजी स्वयं को बहुत अच्छा महसूस कर रहे थे। फिर भी 15-20 श्रावक-श्राविकाएँ वहीं सेवा में रहे। गुरुजी की साँस एकदम सामान्य हो गई।

हर इंसान के सुख-दुख की डोरी कर्मो के हाथ में रहती है इसलिए ज्यादा देर की खुशियाँ कर्मों ने मेरे आँचल में नहीं रहने दी। मैं प्रसन्न थी कि गुरुजी ठीक हो गये क्योंकि मैं वाहन के दोष से बिल्कुल बचना चाहती थी, लेकिन प्रकृति को यह मंजूर नहीं थी। मेरी भावना कुदरत को रास न आई। पुनः 2-3 घण्टे बाद लगभग 1 बजे दोपहर को फिर साँस रुकने लगी। समाज पुनः इकठ्ठी हो गई तथा औरंगाबाद ले चलने का आग्रह करने लगी, लेकिन मैंने कहा – मैं अपने गुरुजी को संथारा करवा दूंगी मगर कहीं नहीं जाएगे। गुरुजी वोले-वाह, मेरे शेरदिल तेरी बहादुरी को मान गए। उस समय गुरुजी ने कहा, अर्पण तू मेरे से ज्यादा मजवूत है (वास्तव में तेरे गुरुओं ने तुझे बहुत मजवूत वनाया है) इसलिए दो वचन दे दे- एक तो संथारे के समय मोह को आडे मत आने देना, खुशी-खुशी संथारा करवाना। (क्योंकि गुरु जी दो संथारों का चिंतन करते थे – प्रथम तो भीष्म

प्रतिज्ञाधारी आचार्य सम्राट श्री जयमल जी म० सा० का एक माह का सथारा, दूसरा उत्तर भारत की श्रेष्ठ विभूति तपोधनी श्री बद्रीप्रसाद जी म० सा० का 72 दिन का सथारा।) फिर गुरुजी बोले, अपण - यदि आत्म तत्व समय से देह को छोड जाये तो शरीर को रात्रि को मत रखने देना ।

2 बजे के लगभग देह में पीडा बढ गइ। समाज एम्बुलेंस लेकर आ गई पर हमने मना कर दिया लेकिन लगातार जोधपुर से आचार्य श्री जी के, हरियाणा से श्री धर्ममुनि जी म० सा० के समाचार जाने से तथा समाज के आग्रह से स्वीकृति देनी पडी। तबियत इतनी खराब हो गई, पसीना आने लगा, बेचैनी बहुत बढ गई तब गुरुजी ने मेरे कन्धों पर सिर रख दिया तथा कहा - 'अपना ख्याल रखना, दिव्य को सभालना', साँसे मानो रुक गई थी। इधर गुरुजी का आदेश 'आणाओ धम्मो दूसरी तरफ समाज कह रही है कि म० सा० इतनी कठोरता किस काम की जो गुरु की जिन्दगी भी प्यारी नहीं।

<u>अरमानो का हुआ कत्ल</u> – गुरु आज्ञा, समाज के आग्रह आदि कई कारणों से एक चमकते सथारे के मेरे अरमानों का गला घुट गया ओर मुझे वय तथा दीक्षा पर्याय में लघुता के कारण यह समझ नहीं आ रहा था कि ऐसे में मुझे क्या करना चाहिए। इतने में गुरुजी ने थोडी ऑखें खोली शायद मेरे भविष्य के लिए चिंतित थे। मेंने कहा - गुरुजी, मेरी चिता छोड दो, क्या सथारा करवा दूँ ? गुरुजी बात पूरी होने से पहले पुन मूर्च्छित अवस्था में चले गए। तभी सभी श्रावकों की ऑखें भर गई, हाथ जोड कर इस ज्योति को बचाये रखने के लिए ओरगाबाद चलने का आग्रह किया। बस मेंने भरी ऑखों से गुरुजी को गोदी में उठाया ओर चल पडी जिन्दगी हारने के लिए। एम्बुलेंस के पास जाते ही कदम ठिठक गये कि वापिस ऊपर ले जाऊँ। इतने में कानों में शब्द पडे कि अन्नदाता - देर ना करो, हिम्मत रखिए। वहाँ चातुर्मास हेतु विराजित मन्दिरमार्गी साध्वियॉ जी साता पूछने पधारीं।

एम्बुलेंस की गति के साथ-साथ मेरे भीतर विचारों का प्रवाह एकदम तीव्र हो गया। क्या मुझे मजबूती रखनी चाहिए थी, कहीं में अपने कर्त्तव्य से च्युत तो नहीं हो गई हूँ ? पूरे रास्ते लगातार मेरी रसना नवकार मत्र तथा गुरुदेव का नाम जपती रही। पूरे सफर में मेरी जान मुट्ठी में रही, क्योंकि गुरुजी एकदम बेहोशी की हालत में थे, हलन-चलन बिल्कुल बद थी, अपनी गोद में लिटाये गुरुजी को हर दो मिनट में कहती-गुरुजी, गुरुजी। हल्का सा जवाब मिलता "हूँ" । समाज के पदाधिकारी अन्य श्रावक, श्राविकाएँ तथा डा० सन्तोष आदि सभी अपने-अपने वाहन लेकर पीछे-पीछे दोडे।

ओरगाबाद के सबसे बडे हस्पताल Seth Nand Lal Dhoot Hospital में वहाँ के वरिष्ठ पदाधिकारी, अध्यक्ष आदि श्रावक तथा डाक्टर तेयार खडे थे। डॉ० भण्डारी जी ने इलाज चालू करवाया। हस्पताल में ही मेरे साथ सेवा में ठहरी सेवाभावी श्राविका चन्द्रकला जी फाकरिया मुझे धीरज देती रही। सुबह डाक्टरों ने पूछा गुरुजी से - आपकी तबीयत केसी

है ? जवाब मिला - अब मैं बिल्कुल ठीक हूँ, न बेचैनी, न घबराहट कुछ नहीं है। श्वास एकदम सामान्य चल रही थी। डाक्टरों ने कहा-आप Dialysis करवा लो, पर गुरुजी ने मना कर दिया।

गुरुजी को औरंगाबाद ले जाने की खबर सुनते ही वैतुल, हिंगनघाट, पानीपत, जोधपुर, पीपाड़ सभी जगहों से फोनों की लाइन लग गई। एक डाक्टर मेरे से पूछने लगा कि आप कौन हैं, कहाँ से आए हो? आपके एक रात्रि में इतने फोन तथा मिलने वाले आ रहे हैं कि इतने तो पूरे हस्पताल के मरीजों को मिलाकर भी नहीं आते। मैंने डाक्टर के सवाल का जवाव दिया, तो वह जैन संत के प्रति श्रद्धा से नतमस्तक हो गया। जैसे ही अपनी इकलौती लाडली बहन म० की तबीयत के बारे में गुरुजी के भाई तेजसिंह को पता चला फौरन हवाई जहाज से आये तथा वापिस हरियाणा ले जाने का आग्रह करने लगे। वैतुल से राजू गोठी, निर्मला तातेड़ सेवा में तत्काल आये। एक रात हस्पताल में रुककर 2 तारिख को वापिस 40 गॉव चले गये। छोटे साध्वी जी पूरी तरह घबरा गयी थीं। ऐसे में हिंगनघाट से दिलीप तथा शीला गोलच्छा ने आकर सेवा में रह कर मेरे गिरते मनोबल को ऊँचा रखने में सहयोग दिया।

पर्युषणों में गुरु कृपा से मैंने ही प्रवचन तथा अंतगड़ सूत्र की वाचना की। पर्युषणों में गुरुजी ने कहा-अर्पण, हम दोनों का लोच तो तूने कर दिया लेकिन तेरा लोच कैसे होगा, मुझसे शायद न हो पाये। गुरु आज्ञा से मैंने मन्दिर मार्गी साध्वियों को लोच के लिए निवेदन किया, लेकिन सभी चल रही अस्वस्थता के कारण परेशान थीं, फिर भी 2 दिन बाद करने का आश्वासन दिया। परन्तु 2 दिन बाद भी वे पधार न पाई तो गुरुजी ने ही आधा लोच किया और आधा मैंने स्वयं ने किया। संवत्सरी के दिन गुरुजी की इच्छा थी कि मैं भी बोलूँ। गुरुजी पाटे पर पधारे तो सही लेकिन बोल न पाये, संघ ने विनती करके वापिस आराम करने का आग्रह किया और मैं गुरु जी को कमरे में आराम हेतु छोड़ आई।

जव मैं प्रवचन देकर आई तो गुरु जी के चेहरे पर प्रसन्नता झलक रही थी, जाते ही मुझे गले से लगा लिया तथा पीठ थपथपा कर कहने लगे, **'वाह मेरे कमाऊ पूत, मैं अब निश्चिंत होकर मर सकूँगी।'** मैं प्रवचन करने जाती लेकिन दिल में घबराहट, बेचैनी रहती कि ऊपर गुरु जी की तबियत को कुछ हो न जाये। एक अनजान अपरिचित क्षेत्र में भी संघ तथा नौजवान भाई सेवा में तत्पर रहे। दिलीप बाफना, प्रकाश कांकरिया, सुनील छाजेड, मुकेश मेहता, सुरेश जी ओस्तवाल आदि नौजवानों ने तो बहुत भाग दौड़ की कि कैसे भी म० सा० स्वस्थ हो जायें। पदाधिकारी तो ज्यादा समय स्थानक में रहने लगे थे।

न मंजूर था खुदा को, मौसमे बहार आये,
गुलो शाख पर कांटे मिले, फिर भी हम तो मुस्कराये।

कर्म रिपुओं ने तो मानो कसम उठा रखी थी कि गुरु जी को चेन से जीने नहीं देना। गुरु जी की तवियत कुछ दिन ठीक रही लेकिन पुन खराव होने लगी। चन्द्रपुर (महाराष्ट्र) से सतपाल जी, प्रकाश जी दुग्गड किसी अनहोनी घटना के भय से दोडे आये। ओरगावाद से डा० भण्डारी जी ने आकर Check up किया।

जलगाँव से इन्जैक्शन मगाये गये। स्वास्थ्य में कुछ सुधार दिखाई दिया। परन्तु वेदनीय कर्म के आगे वह भी लम्वे समय कारगर सिद्ध नहीं हुई। जाँच पडताल के वाद यह अनुमान लगाया गया कि खून की कमी हो गई हे क्योंकि H B 7 के लगभग रह गया था। अनुमान के आधार पर खून चढाने के लिए विचार-विमर्श होने लगे।

एक दिन में तथा दिव्य जी गोचरी के लिए गये हुए थे कि पीछे से गुरु जी की तवियत विगड गई ओर जव मैं आई तो उन्हें वहुत वेचेनी हो रही थी। इतनी वेचेनी देखकर पानीपत से सेवा में आये श्रावक श्री महावीर प्रसाद जी तथा गुरु जी के सासारिक परिवार की आखें भर गई और मुह से शब्द निकले **धन्य हो, इतनी पीडा मे भी समता है।** उस दिन आक्सीजन लगानी पडी।

जोधपुर में आचार्य श्री शुभचन्द्र जी म० सा०, मद्रास में श्री पारस मुनि जी म० सा० गुरु जी की तवियत को लेकर काफी चिंतित थे। श्री धर्म मुनि जी म० सा० के समाचार आने लगे कि दिल्ली ले आओ। किन्तु दिल्ली के लिए गुरु जी ने साफ इनकार कर दिया। मैंने एक दिन कहा-गुरु जी, इतने समाचार आ रहे हैं तो फिर क्यों नहीं चलते दिल्ली ? गुरु जी ने कहा – अर्पण, क्या तू भूल गई, तूने दो प्रिय व्यक्ति (1993 में सासारिक चाचा श्री पाल जी को तथा 1999 में अपने गुरुदेव श्री सुदर्शन लाल जी म०सा०) दिल्ली में खोए हैं। फिर *वही दिल्ली, वहीं सर गगा राम हस्पताल, क्या मुझे भी वहीं खोना चाहती हो ?* दिलीप गोलच्छा तथा 40 गाँव के श्रावकों ने कहा–अन्नदाता, आपके गुरु इतना वुला रहे हैं, क्या करना है ? गुरु जी कहने लगे-श्रावकों, **दिल्ली गई अर्पण छुटी।**

<u>अलविदा 40 गॉव (16 सितम्वर)</u> – डाक्टरों की सलाह मशविरा से 16 सितम्वर को One Unit Blood चढाने के लिए हस्पताल में ले जाया गया। हस्पताल में लगभग 2 वजे तक तो तवियत ठीक रही फिर वही साँस रुकने लगी। वेचैनी पूर्वापेक्षा अधिक थी। डाक्टरों ने एकदम औरगावाद ले जाने की सलाह दी पर पुन दोष लगाने को मन विल्कुल तेयार नहीं था। मैंने कहा-गुरु जी दोष लगाकर क्या करना है ? सथारा करवाने के लिए तेयार हूँ। गुरु जी सहमत हो गये ओर कहा- स्थानक ले जाकर सथारा करवा दे। लेकिन वार-वार हरियाणा से गुरुदेव के समाचार कि दिल्ली लाओ अत में चुप हो गई। तव हिगन घाट से आये नितिन लुणावत, रिखव गान्धी, दिलीप गोलच्छा ने 40 गॉव के सघपति को ओरगावाद ले जाने की तेयारी करने के लिए कहा। तैयारी में होती देर देख वे गर्म हो गये। गुरु ने समझाया तो

वे बोले, हमारी गुरुणी मैय्या को कुछ नहीं होना चाहिए।

गुरु आज्ञा के बिना संथारा नहीं करवाने देंगे, ऐसा कहकर समस्त स्थानक वासी, मन्दिर वासी समाज ने अश्रुपूरित नेत्रों से हमें औरंगाबाद के लिए विदा कर दिया। गुरु जी ने कहा, श्रावकों – मैं अब वापिस 40 गाँव नहीं आऊँगी। आज जब वापिस औरंगाबाद जाना पड़ा तो मेरे धीरज का बाँध टूट गया, मैं हार गयी लेकिन दिलीप जी गोलच्छा ने धीरज बंधाया। वहॉ पहुँचते ही Dhoot Hospital में डॉ० भण्डारी ने संभाला, फिर डॉ० कराड के हस्पताल में ले गए। जाते ही Dialysis हुआ। रक्त विशुद्धि होते ही गुरु जी को राहत मिल गई। बेचैनी एकदम खत्म हो गई।

मेरे मन में विचार आया कि आखिरकार गुरु जी की वास्तविक स्थिति क्या है ? इस जानकारी के लिए मैंने गुरु जी को लेटे हुए छोड़कर डा० भण्डारी से बात की, तब वे मुझे डॉ० कराड आदि Kidney Specialist डाक्टरों के पास लेकर गये। मैंने डॉ० से पूछा, गुरु जी के भीतर की स्थिति क्या है ? डॉ० ने भण्डारी जी की तरफ देखा, डॉ० भण्डारी ने कहा – आप इन्हें सही स्थिति से अवगत करा दो, ये बहुत हौंसले वाली साध्वी हैं।

डा० कराड ने कहा–आपके गुरु का एक गुर्दा लगभग खत्म हो चुका है तथा दूसरा भी काफी खराब है। अब आपके सामने तीन ही उपाय हैं, प्रथम Kidney Transplant, दूसरा After Every Third day dialysis, तीसरा Every day self dialysis। मैंने तीनों उपायों की विस्तृत जानकारी ली। Kidney Transplant के बारे में पूछा, डॉ० बोले – माता–पिता का यदि गुर्दा लिया जाए तो मरीज की जिन्दगी लगभग 90% Successful रहती है। भाई का गुर्दा हो तो 75% तथा बाजार से लिया हो तो 40% की जिंदगी है। मैंने सोचा कि ऐसे में क्या करूँ ? तब सेवा में रह रहे सेवाभावी दिलीप गोलच्छा तथा सभी डाक्टरों ने Kidney Transplant की सलाह दी। भविष्य की जानकारी के लिए मैंने पूछा कि गुर्दा देने वाले की स्थिति कैसी रहती है। डा० कराड बोले – एकदम fine उसे कोई दिक्कत कभी नहीं आती।

डॉ० ने कहा कि पहले गुर्दा देने वालों से पूछ लो। खबर मिलते ही गुरु जी के भाई तेज सिंह जी को उनकी बेटी रेनू ने फौरन हवाई जहाज से भेजा कि फटाफट अपना गुर्दा देकर हमारी बुआ को बचाओ। डॉ० ने तेज जी को सभी भाईयों की कुछ Testing करवाने के लिए कहा। तब दिल्ली जाने में लगने वाले दोष से बचने के लिए तथा गुरु जी की दिल्ली के लिए स्पष्ट इनकारी को देखते हुए वहीं गुर्दा बदलवाने का विचार किया। गुरु जी के भाई राज तथा पप्पू (अशोक) अपनी बहन म० को जीवन की सुरक्षा के लिए गुर्दा देने पहुँचे, बारासिवनी से गुरु जी पर परम आस्था रखने वाले सेवाभावी विनोद जी संचेती गुर्दा देने आये।

मद्रास से गुरुदेव श्री पारस मुनि जी म० सा० ने श्रावक भेजे कि अक्टूबर का महीना निकाल लो, यदि नहीं तो Operation मद्रास ही करवायेंगे। बैंगलोर से समाचार आये कि हम गुर्दा बैंगलोर में बदलावायेंगे। लेकिन मैंने कहीं भी जाने का दोष लगाने से मना कर दिया।

इतने में गुरु जी की सरलता से प्रभावित वहन कुसुम तथा अनुराधा वडोत (U P) से आ गई ओर ऐसा सुझाव सुनकर प्रसन्न हुई।

वेतुल से निर्मला तातेड, सगीता गोठी, ज्योति तातेड, आशा गोठी, राजू जी आदि श्रावक-श्राविकाएँ ऑप्रेशन में सेवा की दृष्टि से वहाँ पहुँच गए। कोशिक डागा 7-8 दिन वहीं रहा तथा बम्वई, मद्रास के डाक्टरों से वातचीत की। 40 गाँव से दिलीप वाफना भी सेवा में रहे। कहने लगे-म० सा० हम सव सेवा में हर समय तैयार हैं। आप घवराओ मत। पानीपत से भी अजय, अलका सेवा में पहुंचे। पानीपत, जोधपुर, पीपाड, मद्रास, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र से फोन पर फोन आने लगे। 3 फोन पर 4-5 भाई वहन हर समय तवियत की सूचना देने में लगे रहे।

इधर से हरियाणा से लगातार आ रहे गुरुदेव के समाचार से दिल्ली जाना तय हो गया। में असमजस में पड गई क्योंकि अनुभव में वहुत छोटी थी। जव दिल्ली जाना तय हो गया तो मैंने गुरु जी से कहा-आप वाहन में दिल्ली जाएगे। यदि आपकी आज्ञा हो तो में विहार करके आना चाहती हूँ। क्योंकि वहाँ तो सभालने वाले दाद गुरुणी जी आदि साध्वियाँ हैं। गुरु जी ने हाथ पकडकर कहा- अर्पण, तेरे पहुँचने से पहले यदि खेल खत्म हो गया तो विहारो मे तेरी हालत कैसी हो जाएगी। थोडे दिन मे तो तुझे अकेले रहना ही है, इसलिए कुछ दिन तो ओर साथ रह ले।

गुरु जी ने पुन अपने मन की भावना सथारे तथा रात्रि में शव न रखने की वात दोहराई। मेंने नम आखों से पैर पकडकर कहा-गुरु जी, आज में वडी-वडी वातें कर रही हूँ, पता नहीं अवसर पर मनोवल केसा रहेगा यदि कमजोर पड गई तो ? फिर भी मैंने वचन दिया। डा० झामड जी की सेवा अविस्मरणीय रही। व्यस्तता के दौरान भी वे दिन में तीन-चार चक्कर लगाते थे। दिल्ली जाने की सूचना पाकर डा० झामड, डा० भण्डारी तथा सघ के श्रावक कहने लगे-म० सा०, क्या हमारी सेवा में कोइ कमी हे जो दिल्ली जा रहे हें ?

औरगावाद से प्रस्थान करने के वाद रास्ते में सोनीपत से वहन सरिता ने साथ चल रही अलका को समाचार दिये कि निर्लेप आत्मा श्री सेठ प्रकाश चन्द्र जी म० सा० का कहना है कि कुछ दिन की वात रह गई है, अव सथरा करवा दो, सयम मे कोई दोप न लगाएँ।

सूर्य चला अस्ताचल की ओर

हरियाणा से गुरुदेव की आज्ञा को शिरोधार्य करके दिल्ली जाना तय हो गया। रवानगी के दिन जलगाँव से अजित सेठिया जेठमल, किशोर जी आदि श्रावक दौड आये कि हम राजस्थान लेकर जाएगे। आखिर सव को समझा कर 26 सितम्वर को दिल्ली में प्रवेश कर दिया। दिल भयभीत था। गुजरखेडी में गुरुदेव श्री धर्म मुनि जी म० सा० के दर्शन किए।

उन्होंने कहा-संयम, एक मास खमण कर ले। गुरु जी ने शारीरिक हिम्मत न होने के कारण असमर्थता जता दी। गुरुदेव को कहा - मैं आयम्बिल तो कर सकती हूँ पर उपवास शायद कठिन होंगे। गुरु जी ने कहा-म० सा०, यदि कुछ दिखता हो तो संथारा करवा दो। पर कारणवश नहीं हो पाया। इतने में Dialysis का समय आ गया। दिल्ली से डॉ० रमेश जैन तथा रोशन जी आदि श्रावक गुरुदेव की सेवा में पहुँचे तथा दिल्ली जाने की चर्चा हुई।

गुजर खेडी से दिल्ली रोशन जी (खटकड़ वाले) की कोठी पर आये, परन्तु वहाँ पर परठने आदि की सुविधा न होने पर पीतमपुरा के जैन स्थानक में चले गए। डा० प्रवीन जी गंगा राम हस्पताल के अनुभवी डा० चड्डा जी को लेकर आये। शुक्रवार को ऑप्रेशन होना निश्चित हो गया। दो दिन बाद दाद गुरुणी जी, श्री सुवोध जी म० सा०, श्री वैशाली जी म० सा० भी दिल्ली सेवा तथा सहयोग के लिए पधार गये।

दिल्ली पूर्वी पीतमपुरा में चातुर्मास हेतु विराजमान गुरुदेव श्री सुदर्शन लाल जी म० सा० के शिष्य संघनायक श्री शास्त्री जी म० सा० तथा वर्तमान में नंदीसेण कहाए जाने वाले सेवाभावी श्री आदीश मुनि जी म० सा० गुरु जी को 1 अक्टूबर को दर्शन देने पधारे, क्योंकि संघनायक गुरुदेव जी भी गुरु जी की अस्वस्थता के कारण काफी चिंतित थे।

मैं शान्त मूर्ति श्री शांति चन्द्र जी म० सा० के दर्शन करने स्थानक गई तो ऑप्रेशन की चर्चा हुई। मैंने कहा - गुरुदेव गंगा राम हस्पताल के लिए मन तैयार नहीं है। गंगा राम हस्पताल में जाने वाले के अवशेष गंगा नदी में चले जाते हैं। गुरुदेव ने फरमाया-अर्पण, होगा वही जो तू चाहेगी। वैसे जगह तो निमित्त मात्र होती है फिर भी यदि भावना नहीं है तो Jaipur Golden Hospital में वड़े-बड़े डाक्टरों को संघनायक जी म० सा० बुलवा देंगे।

डॉ० रमेश जैन की देख-रेख में Saroj Hospital में Dialysis शुरु हो गए। दिल्ली पहुँचते ही वुखार तेज 102, 104 डिग्री रहने लगा। आहार अल्प रह गया। बैतुल से सुशीला जी डागा आकर कहने लगी- म० सा०, वैतुल रहते तो एकदम ठीक हो जाते।

बुधवार को श्रद्धेय श्री उपेन्द्र मुनि जी म० सा० तथा अन्य साधुओं, गृहस्थियों ने गाजियाबाद के पास मुराद नगर की औषधि लेने की सलाह दी। गुरु जी के भाई तेज जी वहीं की औषधि से ठीक हुए दो व्यक्तियों को देखकर आये थे। गुरु जी ने भाव रखे-अर्पण, ऑप्रेशन तो अंतिम हथियार है ही एक बार दवाई ले लूँ, क्यों किसी का अंग लिया जाए? गुरु जी के सांसारिक भाई पप्पू गुर्दा देने दिल्ली पहुँच चुके थे। लेकिन दवाई शुरु कर दी गई। गुरु जी को दवाई से काफी आराम महसूस होने लगा था। वैद्य ने तीन महीने में एकदम तंदुरुस्त हो जाओगे, ऐसा आश्वासन दिया।

प्रशान्त विहार दिल्ली से महासाध्वी श्री सुन्दरी देवी जी म० सा० की साध्वियाँ तथा अन्य जगह से साध्वियाँ सुख साता पूछने पधारीं। गुरु जी को कमजोरी काफी थी, वजन 38 किलो तथा H.B 6 हो गया था।

गोहाना से हमारे भगवन प्रज्ञा महर्षि श्री राम प्रसाद जी म० सा० के दो वार संदेशे आये कि अव किसी चक्कर में न पडो, सथारे का लक्ष्य वनाओ। श्रमण श्रेष्ठ श्री सुन्दर मुनि जी म० सा० ने कहलवाया कि अव सोचने का वक्त नहीं हे। सथारे का भाव अथवा दिल्ली आप्रेशन नहीं करवाना हे तो अमृतसर करवा देंगे। आप्रेशन का समाचार पाकर चन्द्रपुर से सतपाल जी का समाचार आया तथा नागपुर से चतुर्भुज जी आये कि आप्रेशन की सेवा हम ही करेंगे। मद्रास से श्री मागी लाल जी मुथा आकर कई दिन तक गुरु जी की सेवा में रहे।

वुखार 103 104 डिग्री रहने लगा। आहार की मात्रा ओर कम हो गई। डाक्टर ने सारे तरल पदार्थ दूध, पानी आदि मिला कर 3-4 गिलास तक पीने का निर्देश दिया। आयुर्वेदिक दवाई से गुरु जी को स्वय के भीतर कुछ शक्ति, स्फूर्ति महसूस होने लगी थी, उठने वेठने में पीडा खत्म हो गई थी। पर वुखार की वेचैनी रहती थी। एक दिन आधे घण्टे में ही 6-7 दस्त लग गए, उठने-वेठने की सामर्थ्य नहीं रही। गुरु जी के महाराष्ट्र से वापिस लोटने की खवरें जेसे ही सर्वत्र फेली, दर्शनार्थी उमडने लगे, लेकिन डा० ने किसी से भी वात करने की मनाही कर दी थी। तेज सिह जी तथा रेनू, पप्पू केसे भी म० सा० को वचाना चाहते थे।

तेजी से वढ रहे वुखार 104 ½ डिग्री में गुरु को वेचेनी होने लगी तो डा० रमेश ने निमोनिया, रियेक्शन वताकर हस्पताल में दाखिल करने का सुझाव दिया। लगभग 10 अक्टूवर को सरोज हस्पताल में गुरु जी को दाखिल करवाया। वहॉ 13 तारीख को में गुरु जी को कहने लगी-गुरु जी, आयुर्वेदिक दवाई के फायदे का केसे पता चलेगा ? गुरु जी ने दो दिन एलोपथिक दवाईयाँ विल्कुल छोड दी। उस दिन नोट किया गया अग्रेजी 10-11 टेवलेट तथा 8 9 Lasix के इन्जेक्शन के वाद भी जहॉ 400 ML पेशाव आता था आज मात्र आयुर्वेदिक दवाई ली तो 1200 ML पेशाव आया। अग्रेजी दवाईयों के सेवन के प्रतिवन्ध के वाद गुरु जी को काफी अच्छा महसूस हो रहा था।

साय को डा० तथा नर्सें रिपोट पूछने आई। जव मेंने कहा-आपकी दवाईयों के वगेर ही 1200 ML पेशाव आया हे तो एकदम आश्चर्य से वोले What - 1200 ML ? नर्सों ने अपनी केरल की भाषा में आपस में पता नहीं क्या वात की ? ओर दवाई देकर चली गई। डा० वोला कि दवाईयॉ इन्जेक्शन लेने जरूरी हैं। मेरी वात से कोई सहमत नहीं हुआ ओर दवाई पुन शुरू हो गई।

गुरु जी की फिर वही पुरानी स्थिति हो गई। मेंने कहा-गुरु जी, में वोलती रहती हूँ आप कोई जवाव नहीं देते। गुरु जी वोले-अर्पण, इन अग्रेजी दवाइयों से दिमाग शून्य सा हो गया हे, कुछ सूझता नहीं। हस्पताल में 19 अक्टूवर से वेहोशी की सी हालत में रहने लगे थे। में सव को कहती कि गुरु जी की तवियत ठीक नहीं है तो हर वार यही जवाव मिलता कि घवराने की वात नहीं हे। मेंने तथा सेवा में ठहरी गुरु जी की सासारिक भतीजी रेनू ने

बहुत जोर लगाया कि छुट्टी दे दो, पर मिली नहीं।

इतने दिन हस्पताल में रहकर भी तवियत में कुछ सुधार न आता देख रोजाना आने वाले रोहिणी से श्रावक सतपाल जी ने कहा कि यहाँ डा० को बीमारी समझ नहीं आ रही है, अन्य चिकित्सक को दिखाएंगे। सतपाल जी ने डा० राजेश अग्रवाल आदि अन्य वड़े-वड़े डाक्टरों से वातचीत की। सभी का यही कहना था कि किसी हस्पताल में जाकर हमें मरीज को देखने का अधिकार नहीं है। बुखार की बेचैनी वढ़ती रही। एक दिन वड़ौदा (जींद) से साध्वी वैशाली जी के सांसारिक माता-पिता वलराज जी आये। गुरु जी को आज ऐसी हालत में लेटा हुआ देखकर कहने लगे "यु शेर न्यु कुकर लेट्या है।" अस्वस्थता का समाचार पाकर मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र से नीना तातेड़, दिनेश वेताला आदि कई श्रावक साता पूछने आए।

मैंने डा० तथा प्रधान रोशन लाल जी आदि श्रावकों से कहा कि दो दिन के लिए हस्पताल में लाए थे, 8 दिन हो गये है। रोज-रोज दिन बढ़ा देते हो, क्या वात है ? भीतर से दर्दीला रोष था। मैंने कहा - इतने दिनों में मात्र बुखार भी नहीं उतार पाये। आखिर 18 अक्टूबर को गुरु जी से मैंने नम आंखों से पूछा - आप यहॉ से चलते क्यों नहीं ? जिस स्थिति में आए थे, वीमारी ज्यूँ की त्यूँ है। गुरु जी धीमे स्वर से कहने लगे-अर्पण, कल का Dialysis करवा के अवश्य चलेंगे। मैं तो स्वयं यहाँ रहना नहीं चाहती।

अनहोनी के अपशकुनों ने मानो मेरा दामन मजवूती से पकड़ लिया था। 19 अक्टूबर को गुरु जी की Dialysis चल रही थी, वीच में वहाँ के Staff की लापरवाही से आर्टिफिशल गुर्दे (जो खून साफ करती थी) की नलियाँ फट गई और 6-7 गिलास खून जमीन पर बिखर गया। 19 तारीख को भी डाक्टर ने ले जाने से इनकार कर दिया। उसी रात्रि में प्रतिक्रमण के वाद मैं गुरु जी के नजदीक गई। जाते ही गुरु जी वोले - और भई, मेरे शेर ओली तप की साता तो है ? मैंने कहा - गुरु जी साता तो अब आपके हाथ में ही है। कारण पूछने पर मैंने अपनी वही मन की भावना दोहराई कि आप हस्पताल से चलो, ताकि आपको स्थानक में स्वाध्याय आदि सुनाऊँ।

अंतिम सप्ताह की कहानी

20 अक्टूबर – अगले दिन सुबह मैंने कहा कि आज Discharge कर दो, पर वही, सभी ने मना कर दिया। मुझे तब ऊँचे शब्दों में बोलना पड़ा कि मैं आज हर हालत में अपने गुरु जी को ले जाऊँगी। फिर भी किसी ने गौर नहीं किया तो मैंने पानीपत से आये विनोद जी, वैतुल से आये दिलीप पगारिया स्थानीय भाई सतपाल जी आदि भाईयों को कहा कि फौरन छुट्टी लेने की तैयारी करो। इस तरह 20 तारीख को पीतमपुरा स्थानक में हस्पताल से वापिस लौट आये।

21 अक्टूबर – 21 तारीख को मुरादनगर से वैद्य की दवाई लेने गए तो वैद्य राज ने कहा कि ऐलोपैथी दवाईयॉ वद कर दो। गर्म दवाईयाँ वद न हो सकी। 21 तारीख को पुन Dialysis करवाया गया।

23 अक्टूबर – 23 तारीख को गुरु जी मेरे लिए कुछ सन्देश, निर्देश देने लगे। 1 **अर्पण – पूर्व की तरह समाधि रखना, कुछ वनकर दिखाना । 2 मने सोचा था कि तेरी 2-4 शिष्याएँ वनाकर जाऊॅगी, पर समय नहीं है ।**

मेंने कहा–आप ऐसा मत वोलिए, हिम्मत टूटने लगती हे। गुरु जी वोले–अर्पण, अव मन मजवूत करने का समय आ गया हे। शायद उन्हें महसूस होने लगा था कि जिन्दगी कुछ दिन की वची हे। इसलिए सभी से खमत खामणा करने लगे। स्मृति में जोर देकर याद करने लगे कि मेंने किसी को भी कडवा कहा हो तो क्षमा याचना करती हूँ। गुरु जी ने अपने सासारिक भतीजों पवन, सजय से किसी गलती के कारण कभी न वोलने की सोची थी लेकिन मेरे द्वारा वोलने का कारण पूछने पर वोले–अर्पण, जिदगी अव खत्म हो जाएगी, क्यूँ किसी के प्रति गॉठ रखूँ ?

वुधवार को गुरु जी की अजीव सी स्थिति हो गई। आपे से वाहर हो गए। वहकी-वहकी वातें करने, जेसे मुझे वोले - अर्पण ! ये अपण क्या होता हे, दाद गुरुणी जी का नाम लेने लगे। ऐसे में में एकदम घवरा गई। मेंने पूछा - गुरु जी, आप इस तरह केसे वोल रहे हो ? जवाव मिला–अर्पण, में जानती हूँ में केसे वोल रही हूँ, पर इन एलोपेथी दवाईयों ने मेरा दिमाग जकड लिया हे। दाद गुरुणी जी, सभी साध्वियों ने नवकार मत्र सुनाया। प्रतिक्रमण समाप्त होने तक एक दम सामान्य हो गए, वास्तविकता में आ गए। सघानिया वाले डा० सक्सेना की दवाई दी गई तो वुखार एकदम उतर गया पर अगले दिन पुन चढ गया।

24 अक्टूबर – दिन प्रतिदिन गुरु जी की वातें सुनकर मेरा दिल घवराने लगा। 23-24 को वेचेनी अधिक वढ गई क्योंकि गुरु जी को एक वूँद भी पेशाव नहीं आया। वीरवार, 24 अक्टूवर को गुरु जी ने लगभग 2 वजकर 15 मिनट पर दाद गुरुणी जी को सथारा करवाने की कही। दाद गुरुणी जी द्वारा गुजरखेडी में सथारा न लेने तथा अव लेने का कारण पूछने पर गुरु जी ने कहा - म० सा० उस दिन गुरुदेव मासखमण करने के लिए कह रहे थे आर अस्वस्थता से मासखमण करने की हिम्मत नहीं थी। आज मेरा मन पूर्ण रूप से सथारे के लिए तयार ह। पर सथारा न हो पाया।

उसी रात गुरु जी ने दिल्ली पहुॅचने के वाद प्रथम वार रात्रि में एकदम स्वस्थता महसूस करते हुए 2-3 घण्टे चर्चा की। मेंने कहा–गुरु जी, डाक्टरों ने ज्यादा देर वोलने की मनाही की हे। जवाव मिला–अर्पण, आज मत रोक, मुझे जी भर कर वोलने दे।

अनिष्ट की आशंका से आशंकित हूँ

25 अक्टूबर – शुक्रवार को भी एक बूँद पेशाब नहीं आने से डा० को बुलवाया। डा० ने कहा Dialysis में पानी ज्यादा निकल गया होगा। घबराने की कोई बात नहीं है। कई दिन से गुरु जी को दिन-रात में 2-4 दस्त लग जाते थे। 25 तारीख को भी 4-5 दस्त लगे।

उसी शाम को मैं गुरु जी को गोदी में उठाकर स्थानक की गैलरी के चक्कर लगाते हुए हँसाने की कोशिश कर रही थी। तभी गुरु जी हँसे- अर्पण, लगा ले चक्कर जितने लगाने हैं। **जी भर कर अपने गुरु जी को गोदी में उठाकर घुमा ले। दिल्ली आ गए हैं, अब तेरी गोदी छुटने वाली है, समाज के कंधे मिलने वाले हैं।** मैंने विनती की कि गुरु जी ऐसा मत बोलो। तो फिर कहने लगे मुझे नीचे उतार गोदी से यदि धरण गिर गई तो मुश्किल हो जाएगी। **मेरे बिना कौन उठाएगा ?** इतने में दाद गुरुणी जी ने पाटा लगाकर गुरु जी को लिटाने के लिए आवाज लगाई। मैंने जैसे ही पाटे पर लिटाया, गुरु जी समझाने लगे – अर्पण, अतीत को याद करके किसी से वैर कभी नहीं रखना। मैंने कहा – गुरु जी कोशिश करूँगी। गुरु जी पुनः कहने लगे –

मंजिलें हस्ती में दुश्मन को भी अपना दोस्त कर,
रात हो जाए तो दिखलाये तुझे वो दुश्मन चिराग।

बात करते-करते गुरु जी को नींद लगी। मुझसे कहा कि अर्पण, तू सो जा, सारा दिन थक जाती है। सब सो गए। रात को लगभग 12 बजे कुछ कराहने सी आवाज आई तो फौरन मैं उठी। मैंने देखा – गुरु जी पेट पकड़कर बैठे हैं। पूछने पर उन्होंने बताया कि पेट में भयंकर दर्द हो रहा है। मैंने गुरु जी को लिटाया तथा दर्द की जगह हाथ रखकर नवकार मंत्र, लोगस्स, गुरु नाम का जाप किया। पाठ श्रवण के बाद गुरु जी बोले- अर्पण, अब ठीक लग रहा है तू सो जा। गुरु जी के बार-बार कहने से मैं लेट गई। लेकिन थोड़ा समय ही हुआ था कि फिर आवाज से मैं जाग गई। गुरु जी पेट दर्द से लड़कर उसे हराने की कोशिश में लगे हुए थे। मैंने फिर पाठ, नवकार मंत्र सुनाया।

गुरु जी ने कहा-अर्पण, अपनी सहनशक्ति को जाने मत देना और देख मैंने तेरा वादा पूरा कर दिया है। तूने कहा था कि मेरे गुरुओं की शरण में छोड़ कर जाना। इसलिए यहाँ पर संघनायक गुरुदेव, श्री जय मुनि जी म० सा०, गुरुणी जी आदि सभी हैं। अब मुझे जाने दे। मैंने भरी आँखों से छाती पर सिर रखकर कहा-गुरु जी वह तो एक मजाक था। गुरु जी हँसे-अर्पण, पर मेरे लिए वो मजाक नहीं था। तुझे गुरु संभाल लेंगे स्वयं को भी संभालना। पुनः हंसते हुए बोले कि पता नहीं **अर्पण के बिना देवलोक में दिल लगेगा** या नहीं ? इतना सब कुछ कह कर गुरु जी सो गए पर उस रात मेरी नींद मानो कोसों दूर

चली गइ थी। गुरु जी की तरफ मुँह करके उन्हें मानो आखिरी बार जी भर कर देखती रही, अकेले में बातें करती रही।

आज तो पता नहीं मेरा मन भावी में कुछ अनिष्ट के प्रति आशंकित हो गया, मेरा चिन्तन चलने लगा कि सघनायक श्री गुरुदेव या जय मुनि जा म० सा० तथा श्री आदीश मुनि जी म० सा० 2-3 दिन के अन्तराल से दशन देने आते थे लेकिन 24 या 25 तारीख को जब दर्शन देने तथा साता पूछने पधारे तो मेंने पूछा था कि म० सा०, इतनी दूर से रोज कष्ट क्यों करते हो ? तो म० सा० ने कहा था-अर्पण, पता नहीं क्यों ऐसा 2-3 दिन से लग रहा हे कि रोज दशन देने चले जाएँ। इसलिए 4 दिन से लगातार कोई न कोइ सत दर्शन देने आ रहे हें।

पुष्प गिरने वाला है रे रोके कोई

26 अक्टूबर – रात भर के परेशान बेचेन, आशंकित हृदय ने सूर्योदय से पहले ही लगभग 6 बजकर 15 मिनट पर ऊपर गेलरी से नीचे रणवीर सेवक को घबराये स्वर से आवाज लगा कर कहा-शीघ्रता से जा कर सघनायक श्री गुरुदेव को कहना कि अर्पण ने सूर्य निकलते ही सबसे पहले दर्शन देने के लिए पधारने की विनती की हे। रणवीर तुरन्त चला गया।

लगभग 6-30 बजे गुरु जी ने कहा कि मुझे अन्दर कमरे में लिटा दो। दाद गुरुणी जी ने कहा-सयम, रोजाना की तरह यहीं पर भक्तामर, बडी साधु वदना सुन ले, फिर अदर लिटा देंगे। गुरु जी ने दाद गुरुणी जी से कहा – मुये अभी अन्दर लिटा दो अभी सब लोग आने वाले हे, यहाँ लेटे रहना अच्छा नहीं लगेगा। मेंने कहा-अरे गुरु जी, इस दिल्ली में इतनी जल्दी कोन आता है ? क्योंकि स्थानक में श्रावक वर्ग में सबसे पहले आने वाले श्रावक सतपाल जी थे जो रोहिणी सेक्टर 7 से साढे सात बजे के आसपास आते थे। फिर तो सब दोपहर को आते थे। बीच में मुझे रोककर गुरु जी बोले – नहीं मानती तो, अच्छा तू देख लेना।

गुरु जी के बार-बार कहने से तब में उठाकर अन्दर लिटाने के लिए ले गई। पाटे पर उतारते समय मेंने पूछा – गुरु जी, अब पेट में दर्द केसा हे ? तो बोले आज तो ये दर्द लेकर ही जाएगा। (मेरे कानों ने गुरु जी के मुह से ये अन्तिम शब्द सुने हैं।)

मेंने पाटे पर लिटाया, मेने देखा कि गुरु जी का बाया अग (Left Side) अकड गया हे। मने सोचा कि शायद ठण्ड लग रही हे, इसलिए बाहर हाल में गर्म चादर लेने आ गई। बस कमरे से हाल तक आने-जाने के समय में ही मेरा सर्वस्व लुट गया, दुनिया उजाड हो गइ। चादर लेकर जेसे ही कमरे की तरफ मुडी, कानो में वोसिरे-वोसिरे के शब्द पडे। तेज कदमों से जब अन्दर गई तो गुरु जी के होंठ कुछ कहने के लिए हिल रहे थे। मेंने कहा-'गुरु

जी, गुरु जी' इतना कहते कहते तो गुरु जी का शरीर बाहरी दृष्टि से शिथिल हो गया।

उस समय लगभग 6 बजकर 42 मिनट का समय हुआ था। मैं एकदम घबरा गई, पैरों के नीचे की जमीन मानो खिसक गई थी। जल्दी से मैं नीचे दौड़ी कि कोई जल्दी से गुरुदेव को बुला लाए। नीचे गई तो सीढ़ियों के पास ही श्री आदीश मुनि जी म० सा० लगभग 7-15 बजे आते दिखे। मैंने अति शीघ्रता से पूछा - गुरुदेव नहीं आये ? म० सा० बोले - क्या बात है ? मैं लड़खड़ाते शब्दों में बोली कि गुरु जी को पता नहीं क्या हो गया है ? म० सा० ने साथ में आये मोती कुमार जी को गुरुदेव को लेने भेजा। ऊपर आने पर वैशाली जी ने पूछा - आप इतने घबराए हुए क्यों हो ? मैंने कहा-वैशाली, शायद सब खत्म हो गया है। नंदीसेण श्री आदीश मुनि जी म० सा० ने गुरु जी को मंगल पाठ सुनाया, परिस्थिति की जानकारी लेकर पधार गए। रोहिणी से सतपाल जी आये। डाक्टरों को फोन किया।

हम सब गुरु जी को जोर-जोर से नवकार मंत्र सुनाने लगे। गुरु जी के एक हाथ और एक पैर में थोड़ा-थोड़ा हलन-चलन था, कुछ समय बाद वह भी बंद हो गया।

लगभग 8 बजे के आसपास गुरुदेव श्री शास्त्री जी म० सा०, निर्लेप आत्मा श्री जय मुनि जी म० सा० पधारे। उन्होंने एक बार गुरु जी को देखा फिर मेरे चेहरे पर झलकती पीड़ा को देखा, तो चिंतित हो गए।

दाद गुरुणी जी ने गुरुदेव से संथारा करवाने की विनती की। इतने में डा०, समाज के पदाधिकारी अन्य श्रावक भी पहुँच गए। डा० ने जाँच पड़ताल के बाद हस्पताल में भर्ती करवाने की सलाह दी। दाद गुरुणी जी ने मना कर दी। यह कहा कि मैंने सुबह ही 6 बजकर 40 मिनट पर संथारा करवा दिया है। सब को धीरज रखने को कहकर गुरुदेव तो स्थानक में वापिस पधार गए।

गुरु जी की तबियत के समाचार फैलने पर स्थानक में भीड़ बढ़ने लगी। सैंकड़ों जगह से फोन खड़कने लगे। गुरु जी के मुँह तथा नासिका द्वार से झाग निकलने लगे।

पुनः संघनायक गुरुदेव जी, श्री जय मुनि जी म० सा०, श्री विकास मुनि जी म० सा० पधार गए। इस बीच मूर्च्छित अवस्था में गुरु जी दो बार बहुत सुन्दर तरीके से मुस्कराये तथा एक बार अन्त में पूरी आंखें खुली तथा धीरे-धीरे बंद हो गई। मानो अपनी अर्पण पर अन्तिम बार सदा-सदा के लिए नजरें मेहर कर गए हों।

11 बजकर 40 मिनट पर डाक्टरों ने गुरु जी को निःशेष घोषित कर दिया। दाद गुरुणी जी जो कि सिरहाने की तरफ बैठकर नवकार मंत्र उच्च स्वर में बोल रहे थे, वे बोले कि अभी तो कनपटी की नसों में काफी स्पंदन है। लेकिन 12 बजकर 10 मिनट पर कनपट्टियाँ भी शांत हो गई और मेरे गुरु जी हमेशा के लिए शांत हो गए। संयम सूर्य अस्त हो गया, संयम यात्रा एक महायात्रा के लिए प्रस्थान कर गयी। संयम ज्योति

वुझ गई। जय गच्छ उद्यान का एक हसता खिलता, खुशवूदार फूल, चहुँ दिशाओ को अपनी सुवास से सुवासित करके, डाली से विलग हो गया। शेर सो गया, मेरा माझी खो गया। जीवन सफर का साथी रूठ कर दूर चला गया। मेरा सर्वस्व लुट गया।

दादी गुरुणी जी आदि सभी साध्वियों की आखों में थामते-थामते भी आँसू ढलक पडे। इतने में श्री जय मुनि जी म० सा० जो कि लगभग 4 वर्ष पूर्व गुरु वियोग की पीडा से गुजर चुके थे। उन्होंने निरीक्षण किया कि गुरुणी जी के जाने के वाद अर्पण के कदमों की शक्ति मानो क्षीण हो गई हो, वह लडखडा रही थी, दिल के वुलन्द होंसले कमजोर पड रहे हैं, जिन्दगी को कुछ हारी-हारी महसूस कर रही है। म० सा० ने मुझे वुलाया तथा पाटे के पास विठाया, जहाँ सघनायक जी गुरुदेव सघ को निर्देश दे रहे थे। म० सा० ने अपनत्व छलक रहे शब्दों में धीरज वधाया। उन्होंने कहा- अर्पण,

आपके लिए आपकी गुरुणी जी का जाना विल्कुल ऐसे है जैसे तूफानो के वीच दरिया के दरमियान खेवट पतवार छोडकर किनारे जा लगे। हम आपके हर एहसास को गहराई से समझ रहे है। स्वाध्याय, सयम, सेवा, सहनशीलता आपका पाथेय वने तथा आपकी गुरुणी जी आपमे अवतरित होकर जग को आलोकित करे यही मगल मनीषा है। जो हिम्मत (हौसला) आज तक रखा वह कायम रखना हे तथा स्वय को टूटने नहीं देना है।

गुरुदेव के इन शब्दों ने मुझे धीरज दिया, लडखडाते कदमों में जान भर दी। सघनायक गुरुदेव जी ने मेरी तरफ देखा और वोले-हमारी अर्पण, तो वहुत हिम्मत वाली है। सव सुनकर में कमरे में चली गइ ओर विचार चलने लगे - में तो कहती थी कि गुरु जी यदि आपको कुछ हो गया तो मेरी सवारी भी साथ ही निकलेगी। उसी समय प्रभु से हाथ जोडकर विनती की, हे प्रभु, मुझ में हिम्मत, मजवूती देना। गुरु वचन को पालने का वक्त सामने खडा हे कि शव रात्रि में नहीं रखना।

गुरुदेव ने वुलवाकर अंतिम क्रिया करने का आदेश दिया। मैंने वेजान हाथों से गुरु जी के वस्त्र वदले, 4 लोगस्स का काउसग्ग किया। जिस गुरु के विना एक दिन भी नहीं रही उन्हीं के विना सारी जिन्दगी विताने खातिर पीतम पुरा सघ को गुरु जी की देह सोंपने के लिए छाती वज्र की वनाई।

मेंने देह वोसिराने से पूर्व सघ के पदाधिकारियों को कहा कि शव रात्रि मे नहीं रखा जाएगा। श्रावक वोले-म० सा०, आप अभी छोटे हो, यह सामाजिक कार्य है। अभी तो सर्वत्र सस्कार की सूचनाएँ भेजनी हे। जहाँ-जहाँ चोमासे हुए हें वे लोग आने की कह रहे हैं, भीड जमा हो जाएगी। सस्कार कल होगा। मेंने कहा कि मरे गुरु जी के जीवन काल में वहुत भीड इकट्ठी हुई थी, अव मुझे कोई भीड नहीं चाहिए। फिर श्रावक कहने लगे, विमान वनने में

समय लगेगा। मैं बोली-श्रावक जी, गुरु जी की आत्मा तो कब की सुन्दर विमान मे पहुँच चुकी है। वे पुनः बोले-म० सा०, इतने कठोर न बनो। मैंने कहा - जब मैंने अपने गुरु जी को अपने हाथों से कपड़े बदल कर चिता पर सुलाने के लिए आप को सौंपने के लिए मन मजबूत कर लिया है तो अब मोह कैसा? जिसने 6 काय के जीवों की रक्षा की, उसकी देह में समुर्च्छिम जीव उत्पति हो ये मुझे अच्छा नहीं लगता।

मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र से फोन आने लगे कि संस्कार न किया जाए, हम लोग आ रहे हैं। मैंने मना कर दिया क्योंकि आज कसौटी का समय था। इतना कहने पर भी श्रावक नहीं माने तो मैंने गुरु जी के सांसारिक भाई तेज कुमार जी को कहा कि गुरु जी को ले जाओ। तब श्रावकों के कहने से गुरुदेव मुझे कुछ कहते, उससे पहले ही मैंने हाथ जोड़कर विनती की- गुरुदेव, गुरु जी को रात्रि में शव नहीं रखने देने का वचन दिया था।

उसी समय मेरी भावना को ध्यान में रखते हुए गुरुदेव ने उच्च स्वर में कहा - अगर अर्पण जी की दादी गुरुणी जी भी सहमत हों तो अर्पण की जो इच्छा है वही होगा। संत स्वस्थान पधार गए।

सभी जगहों से विशेषकर मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र से फोनों की लाइन लग गई। क्योंकि गुरु जी के जाने से हर दिल दुखी था, हर ऑख अश्रु बहा रही थी। प्रत्येक व्यक्ति को महसूस हो रहा था कि हमारा सब कुछ खो गया है। फोन सुनने वाले भी हैरान थे कि मध्य भारत में संयम जी म० सा० का इतना प्रभाव था।

श्रावक गुरु जी के शव को नीचे हाल में ले गये। नजदीक क्षेत्र में विराजित साध्वियॉ जी भी पधारीं। लोगों की भीड़ जुड़ने लगी। मेरी बात को मान देते हुए संघ तथा श्रावक अश्रुपूरित ऑखों से गुरु जी के पार्थिव शरीर को पंच तत्व में विलीन करने के लिए निगम बोध घाट की तरफ 3 बजे रवाना हो गये। उससे पूर्व श्री तेज कुमार जी ने अपनी बहन म० सा० की देह को उनकी पैतृक भूमि जोंधन ले जाने की आज्ञा मांगी तो मैंने समझा कर इनकारी कर दी।

गुरु जी के शव को भक्तों ने साश्रु नयनों से ढेरों दुशाले ओढाये। प्रत्येक व्यक्ति का ह्दय उस विभूति की देह को चिता में लिटाते समय जार-जार हो रहा था। गुरु जी के भाई तेज कुमार जो उन्हें बचाने के लिए अपना सर्वस्व लगाने को तैयार थे, उसने चिता को झर-झर वहती आँखों से मुखाग्नि दी।

उसी समय समाचारों से अवगत होते ही सर्वत्र जैन-अजैन, श्रावकों, भक्तों ने श्रद्धांजलि सभाएँ आयोजित की। गुरु जी का पीहर कहलाने वाले बैतुल में उसी समय प्रतिष्ठान बंद कर के विशाल श्रद्धांजलि सभा रखी गई।

अरमा दिल के विखरे सारे,
सपने सपने वन कर रह गए ।
खुशियॉ सदा रहती नहीं,
ये फूल चमन के कह गए ।

27 तारीख को पीतम पुरा जेन स्थानक में सघनायक जी, वाणी भूषण श्री अमर मुनि जी म० सा०, श्री रवीन्द्र मुनि जी म० सा०, तपस्वी श्री सहज मुनि जी म० सा० आदि साधु-साध्वियों की उपस्थिति में श्रद्धाजलि सभा का आयोजन हुआ। काफी क्षेत्रों से आये श्रावकों ने तथा वेतुल से आये अलका तातेड, विशी तातेड ने अपनी श्रद्धा के सुमन अर्पित किए।

गुरु जी 3 साल से प्रतिदिन ठीक 11 वजकर 40 मिनट से 12 वजकर 10 मिनट तक जाप करते थे। ऐसा लगता है कि अन्तिम दिन का जाप करके ही वे रवाना हुए हैं।

सघ ने शेष चातुर्मास वहीं व्यतीत करने का आग्रह किया लेकिन दाद गुरुणी जी ने विहार के भाव वनाये।

28 अक्टूवर को दिल्ली में अपनी सवसे प्यारी चीज, अपना सर्वस्व लुटाकर मैंने दाद गुरुणी जी के सग गन्नोर की तरफ विहार कर दिया।

जयन्ती ते महाभागा रससिद्दा मुनिश्वरा
नास्ति येपा यश काये जरा मरणज भयम् । □

समाप्त हुई पुष्प की कहानी।





भरी उडारी पंछी ने, पिंजरा खाली है पड़ा।
ये क्या हो गया, क्यों हो गया, कहता हर कोई खड़ा।



कल तो कहते थे बिस्तर से उठा जाता नहीं,
आज दुनिया से चले जाने की हिम्मत आ गई।

हम छोड़ चले हैं महफिल को, याद आए कभी तो मत रोना।



पतझड आया, मुरझा गई है केशर क्यारी।
महायात्रा पर जाने की कर ली, देखो अब तैयारी।




वंश परम्परा

वंश - परम्परा

– साध्वी वेशाली प्रभा जी म० सा०

पूज्य श्री लव जी ऋषि (आर्य श्री सुधर्मा स्वामी जी का 76वॉ पाट)

पूज्य श्री सोम जी ऋषि

पूज्य श्री हरिदास जी म०

इनकी परपरा में अमर सिह जी म०
आ० श्री आत्मा राम जी म० हुए

पूज्य श्री कान जी ऋषि
धर्मोद्धारक पूज्य श्री धर्मदास जी म० के 99 शिष्यों
मे 22 शिष्य पडित एव् प्रभावशाली हुए।

पूज्य श्री धन्ना जी म०

पूज्य श्री भूधर जी म०

पूज्य श्री मूलचन्द जी म० के 7 शिष्यों में से
6 के समुदाय विद्यमान हैं
लीमडी, गोंडल, बरवाला, बोटाद, सायला और कच्छ।

पूज्य श्री रामचन्द्र जी म०
माणक चन्द जी म०
इनकी परम्परा में चम्पालाल जी म०

पूज्य श्री रघुनाथ जी म०

भीखम जी म०
वर्तमान में तेरापथ परम्परा

पूज्य श्री टोडरमल जी म०
पूज्य श्री इन्द्रमल जी म०

श्री बुद्धमल जी म०
मरूधर केसरी मिश्रीमल जी म० सा०
इनके समुदाय में वर्तमान में उपप्रवर्त्तक श्री सुकन मुनि जी म० है।

श्री भानमल जी म०

आचार्य श्री जयमल जी म० के 51 शिष्य हुए।
आ० श्री रायचन्द जी म०
आ० श्री आसकरण जी म०
आ० श्री सबलदास जी म०
आ० श्री हीराचन्द्र जी म०
आ० श्री कस्तुर चन्द जी म०
आ० श्री भीकम जी म० सा०
आ० श्री कानमल जी म० सा०
आ० श्री जीतमल जी म० सा०
आ० श्री लाल चन्द्र जी म० सा०
वर्तमान आ० श्री शुभ चन्द्र जी म० सा०

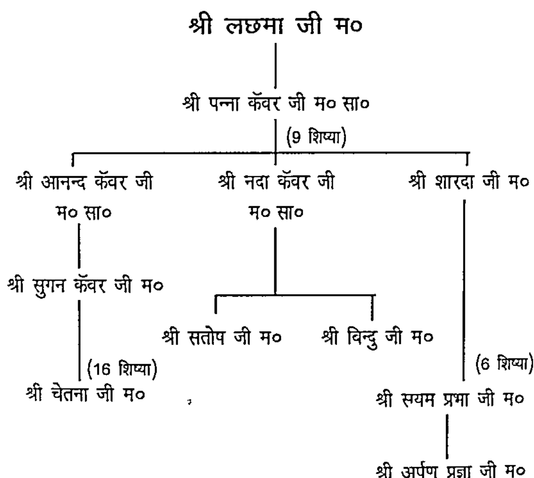
पूज्य श्री कुशलो जी म०
पूज्य श्री गुमान चन्द्र जी म०
आ० हस्तीमल जी म०
इनके समुदाय में
वर्तमान आ० हीराचन्द्र जी म०

जैतसी जी० म०
उम्मेद मल जी म०
सुलतानमल जी म०
चतुर्भुजी म०
आगे
साधु परम्परा नहीं।

पूज्य श्री कानमल जी म० के बाद कई वर्षो तक आचार्य पद रिक्त रहा। उस समय श्री जोरावरमल जी म० के शिष्य श्री हजारी मल जी म० और श्री नथमल जी म० के शिष्य श्री चौथमल जी म० तथा मगनमल जी स्वामी के शिष्य श्री रावतमल जी म० इन तीनों की व्यवस्था में संघ चलता रहा।

मध्यकाल में श्री हजारीमल जी म० के प्रिय शिष्य पं० श्री मिश्री मल जी 'मधुकर' म० को आ० पद पर पदासीन किया गया। इस परम्परा में स्थविर श्री रावत मल जी म०, श्री ब्रजलाल जी म० व श्री जीतमल जी म०, श्री मिश्री मल जी म० सा० 'मधुकर' हुए। वर्तमान में श्री विनय मुनि जी म० हैं। श्री चौथमल जी म० की परम्परा में आ० श्री जीतमल जी म०, आ० श्री लालचन्द जी म० हुए। वर्तमान में आचार्य प्रवर श्री शुभचन्द्र जी म० सा०।





श्री पन्ना कॅवर जी म० सा० अपनी शिष्या श्री शारदा जी म० सा० की दीक्षा के लगभग एक वर्ष वाद ही देवलोक हो गए थे। इसलिए गुरुणी श्री शारदा जी म० सा० का शिक्षण अध्ययन, अध्यापन कार्य दाद गुरुणी श्री सुगन कॅवर जी म० सा० के सान्निध्य में हुआ। इसलिए गुरुणी श्री शारदा जी म० सा०, गुरुवर्या श्री सुगन कॅवर जी म० सा० को अपनी गुरुणी मानते रहे और यही वात जन प्रचलित हे।

जयगच्छ के साधु-साध्वी रूप तीर्थो के नाम

1. वर्तमान आचार्य प्रशान्त चेतता श्री श्री 1008 श्री शुभ चन्द्र जी म० सा०
2. आगम विवेचक श्री पार्श्व चन्द्र जी म० सा०
3. श्री गुणवन्त मुनि जी म० सा०
4. श्री पदम मुनि जी म० सा०
5. श्री सुमति मुनि जी म० सा०
6. श्री जयेन्द्र मुनि जी म० सा०
7. श्री प्रशम मुनि जी म० सा०
8. श्री जयघोष मुनि जी म० सा०
9. श्री जयरत्न मुनि जी म० सा०
10. श्री जयशेखर मुनि जी म० सा०



साध्वी समुदाय –

साध्वी प्रमुखा देवलोकगामी श्री सुगन कुँवर जी म० सा०

1. श्री मदन कुँवर जी म० सा०
2. श्री सुमति कुँवर जी म० सा०
3. श्री उगम कुँवर जी म० सा०
4. श्री निर्मल कुँवर जी म० सा०
5. श्री शारदा जी म० सा०
6. श्री सन्तोष जी म० सा०
7. श्री उगम कुँवर जी म० सा०
8. श्री चेतना जी म० सा०
9. श्री जयप्रभा जी म० सा०
10. श्री शशि प्रभा जी म० सा०
11. श्री बिंदु प्रभा जी म० सा०
12. श्री रवि प्रभा जी म० सा०
13. श्री इन्दु प्रभा जी म० सा०
14. श्री संयम प्रभा जी म० सा०
15. श्री संवेग प्रभा जी म० सा०
16. श्री हेम प्रभा जी म० सा०
17. श्री निपुण प्रभा जी म० सा०
18. श्री सुबोध प्रभा जी म० सा०
19. श्री अर्पण प्रज्ञा जी म० सा०
20. श्री चारित्र प्रभा जी म० सा०
21. श्री वैशाली प्रभा जी म० सा०
22. श्री वृद्धि प्रभा जी म० सा०
23. श्री वैभव श्री जी म० सा०
24. श्री सिद्धि श्री जी म० सा०
25. श्री देशना श्री जी म० सा०
26. श्री परम श्री जी म० सा०
27. श्री दिव्य श्री जी म० सा०
28. श्री क्षमा श्री जी म० सा०
29. श्री चरम श्री जी म० सा०
30. श्री नियाग श्री जी म० सा०
31. श्री पताश कुँवर जी म० सा०
32. श्री दरियाव कुँवर जी म० सा०
33. श्री राजमति जी म० सा०

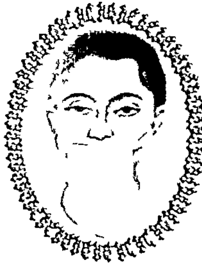
आचार्यों का परिचय

(चित्र सहित)

एक भवावतारी

आचार्य सम्राट १००८
श्री जयमलजी म.सा.

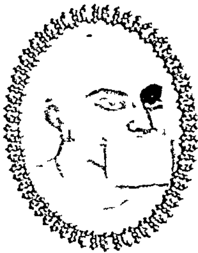
पूज्य श्री रायचन्द्रजी म सा



जन्म भूमि	जोधपुर (मारवाड)
जन्म तिथि	सवत् 1796 आसोज शुक्ला 11
माता	नदा देवी (दीक्षा ली)
पिता	श्री विजयराज जी धाड़ीवाल
गृहस्थ पर्याय	17 वर्ष 2 मास
वराग्य	वदोला (वान) खाते खाते (विवाह की पूव तैयारी)
दीक्षा भूमि	पिपाड सिटी
दीक्षा तिथि	1814 आपाढ शुक्ला 11
दीक्षा गुरु	स्वामी जी श्री गावर्धनदास जी म
शिष्य मख्या	पाँच
देह त्याग	सवत् 1868 माघ शुक्ला 14, 30 दिन सथारे सहित

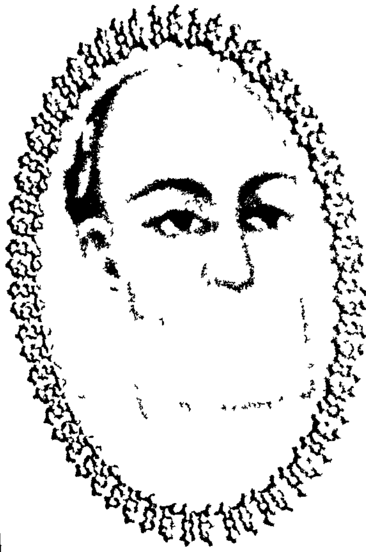


पूज्य श्री आशकरण जी म सा

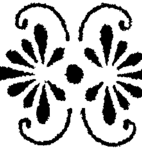


जन्म भूमि	तिवरी
जन्म तिथि	सवत् 1812 मार्गशीर्ष कृष्णा 2
माता	गीगा देवी (दीक्षा ली)
पिता	श्री रूपचद जी वाथरा
गृहस्थ पर्याय	16 वर्ष 5 मास 3 दिन
वेराग्य	सगाइ करते समय
दीक्षा भूमि	तिवरी
दीक्षा तिथि	सवत् 1830, वैशाख कृष्णा 5
दीक्षा गुरु	पूज्य जयमल जी म सा
शिष्य सख्या	दस
देह त्याग	सवत् 1882, कार्तिक कृष्णा 5, 30 दिन सथारे सहित

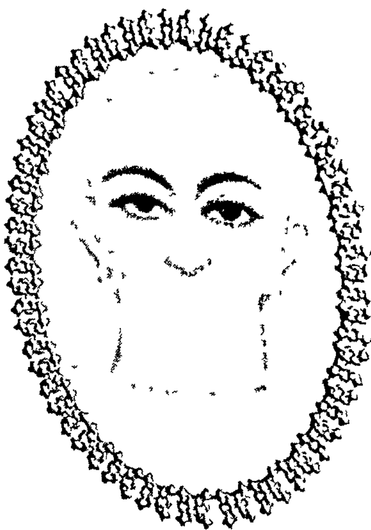
पूज्य श्री सबलदास जी म.सा.



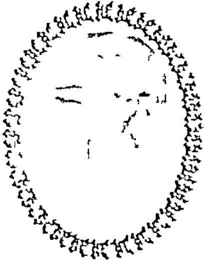
जन्म भूमि	: [illegible]
जन्म तिथि	: संवत् [illegible]
माता	: [illegible]
पिता	: श्री [illegible]
गृहस्थ पर्याय	: 12 वर्ष [illegible]
दीक्षा भूमि	: [illegible]
दीक्षा तिथि	: संवत् [illegible]
दीक्षा गुरु	: पूज्य श्री [illegible]
शिष्य संख्या	: [illegible]
देह त्याग	: संवत् [illegible] 25 दिन संथारे [illegible]



पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा.



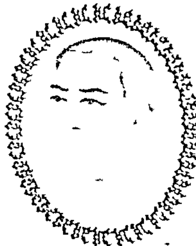
जन्म भूमि	: बिराई गांव
जन्म तिथि	: संवत 1854 भाद्रपद, शुक्ला 5
माता	: गुमान देवी (दीक्षा ली)
पिता	: श्री नरसिंह जी कांकरिया
गृहस्थ पर्याय	: 10 वर्ष 13 दिन
दीक्षा भूमि	: सोजत सिटी
दीक्षा तिथि	: संवत् 1864 आसोज कृष्णा 3
दीक्षा गुरु	: पूज्य श्री आशकरण जी म. सा.
शिष्य संख्या	: तीन
देह त्याग	: संवत् 1920 फाल्गुण कृष्णा 7, 21 दिन संथारे सहित



पूज्य श्री किस्तूरचन्द जी म सा

जन्म भूमि	विमलपुर
जन्म तिथि	मवत् 1889 फाल्गुण कृष्णा
माता	कुन्दना दवी (दीक्षा ली)
पिता	श्री नरसिह दाम जी
गृहस्थ पयाय	9 वप 9 माम 19 दिन
दीक्षा भूमि	पाली नगर
दीक्षा तिथि	मवत् 1787, मागशीप कृष्णा 2
दीक्षा गुरु	पूज्य श्री हीगचन्द्र जी म मा
शिष्य मख्या	पाँच
देह त्याग	मवत् 1960 भाद्रपद शुक्ला 5, 15 दिन मथारे महित

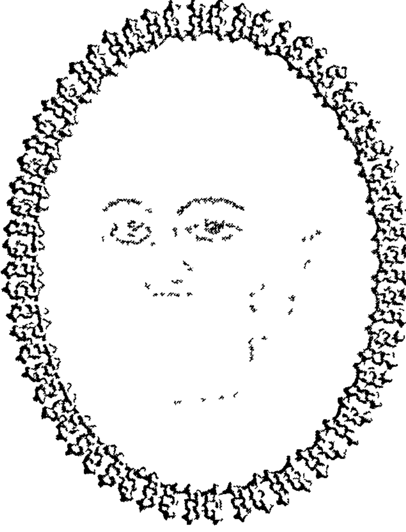




पूज्य श्री भीखमचन्द्र जी म सा

जन्म भूमि	चौपडा गाव
जन्म तिथि	मवत् 1915, श्रावण शुक्ला 14
माता	जीवा दी (दीक्षा ली)
पिता	श्री रतन चन्द्र जी वरलाटा मृथा
दीक्षा गुरु	पूज्य श्री किस्तूर चन्द जी म सा
शिष्य मख्या	दा
दह त्याग	सवत् 1965, वैशाख कृष्णा 5, 20 दिन मथारे सहित

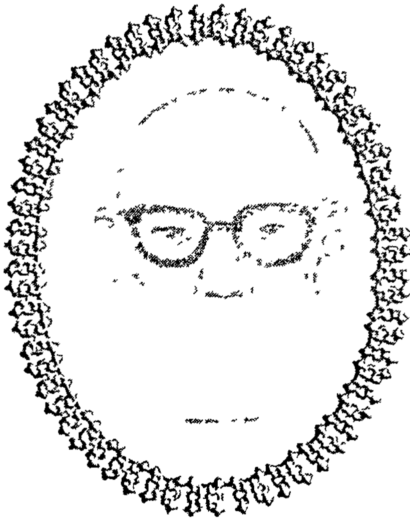
पूज्य श्री कानमल जी म.सा.



जन्म भूमि : धवा गांव
जन्म तिथि : संवत् 1948, माघ शुक्ला 15
माता : तीजा देवी (दीक्षा ली)
पिता : श्री अगराज जी पारिख
गृहस्थ पर्याय : 13 वर्ष 8 मास 23 दिन
दीक्षा भूमि : महामंदिर जोधपुर
दीक्षा तिथि : संवत् 1962, कार्तिक शुक्ला 8
दीक्षा गुरु : पूज्य श्री भीखमचन्द्र जी म. सा.
शिष्य संख्या : दो
देह त्याग : संवत् 1985, माघ कृष्णा 5, 7 दिन संथारे सहित

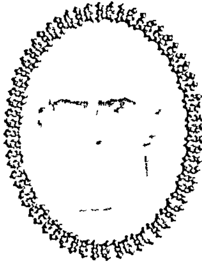


पूज्य श्री जीतमल जी म.सा.



जन्म भूमि : लूणसरा (गन्नौर)
जन्म तिथि : संवत् 1967, श्रावण कृष्णा 7
माता : भीखीबाई (साध्वी जी भीखां जी म.)
पिता : श्री वचनमल बाघमार
दीक्षा भूमि : पीपाड़ सिटी
दीक्षा तिथि : संवत् 1978, मार्गशीर्ष शुक्ला 9
गुरु : स्वामी श्री नथमल जी म.
दीक्षा गुरु : श्रुताचार्य स्वामी श्री चौथमल जी सं.
देह त्याग : संवत् 2044, फाल्गुन कृष्णा 3

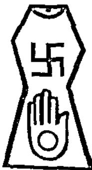
पूज्य श्री लालचन्दजी म सा



जन्म भूमि	रायपुर (हरीपुर), मारवाड़
जन्म तिथि	सवत 1970 ,आसोज शुक्ला 15
माता	मथुरादेवी
पिता	श्री दौलतसिहजी
शिक्षा गुरु	श्रुताचार्य श्री चौथमलजी महाराज
दीक्षा गुरु	सेवामूर्ति स्वामी श्री वख्तावरमल जी महाराज
दीक्षा भूमि	ताँदली, महाराष्ट्र
दीक्षा तिथि	सवत् 1987, ज्येष्ठ शुक्ला 9
उपाध्याय पद	2033 वैशाख शुक्ला 14 खागटा
आचार्य पद	2044 फाल्गुन शुक्ला 2 जोधपुर
योग्यता	न्याय दर्शन, साहित्य एव व्याकरण, कवि, लेखक, आलोचक, जैनागम के तल-स्पर्शी विद्वान, अद्भुत व्याख्यान शैली, प्रत्युत्पन्नमति
भाषा	सस्कृत, प्राकृत, उर्दू, मराठी, गुजराती, कन्नड, तमिल, तेलगु, अग्रेजी, हिन्दी मे धाराप्रवाह भाषण मे निष्णात
दह त्याग	सवत् 2045, वैशाख शुक्ला 3 अक्षयतृतीया, जाधपुर



पूज्य श्री शुभचन्द्र जी म सा



जन्म भूमि	रूपावास, पाली (राजस्थान)
जन्म तिथि	सवत् 1996, श्रावण शुक्ला 11
माता	वीरा बाई
पिता	श्री दीपचद जी
दीक्षा भूमि	हरसालाव
दीक्षा तिथि	सवत् 2013 वैशाख कृष्णा 10
दीक्षा गुरु	स्वामी श्री चाँदमल जी म सा
विशेपता	सरलता, उदारता, व्यवहार कुशलता
भाषा	सस्कृत, प्राकृत, हिन्दी, गुजराती
आचार्य पद	सवत् 2045, वेशाख शुक्ला 14, जाधपुर

परम श्रद्धेय घोर तपस्वी

श्री श्री १००८ श्री रोशन लाल जी महाराज

गुरुदेव का जन्म फेरू शहर (पाकिस्तान) में हुआ था । लाहौर के डी.ए.वी. महाविद्यालय से बी.ए. पास की । व्यापार कला सीखने हेतु बम्बई गए थे। वहां पर श्री मिश्री मल जी म.सा. की सेवा के लिए पांच श्रावकों की साक्षी में पेड़ के नीचे शिक्षा ली । 12 वर्ष बेले-बेले पारना किया । कठिन अभिग्रह धारी थे। अन्त समय में 6 वर्ष दिल्ली त्रिनगर में स्थिर वास रहे। अन्तिम वर्ष में देवलोक से देव ने आकर अन्तिम समय का आभास करवाया कि आज से तीसरे दिन 2 बजकर 57 मिनट पर आप देवलोक पधार जाओगे। 3 दिन के पादोपगमन संथारे सहित प्रस्थान किया । 



पन्ना कंवर जी म.सा.

सक्षिप्त जीवन परिचय

राजस्थान के सोजत नगर के 'सवराड' गाव में माली गोत्रीय परिहार वशी श्री जीतो जी परिहार की धर्मपत्नी श्री सोना देवी की कुक्षी से वि स 1948 में ऋजु स्वभावी, आत्म दृष्टा महासती श्री पन्ना कवर जी म का जन्म हुआ। 9 वर्ष की अल्पायु में आप ने महासती श्री लछमा जी, श्री गुलाव कवर जी म के पास भागवती दीक्षा अगीकार कर ली। दीक्षा के पश्चात् आप अविराम ज्ञान, दर्शन, चारित्र तप की आराधना करते रहे। काणुजा भेरू नाका में सालाना करीव 500 वकरों की वलि दी जाती थी। म सा के कठोर पुरुषार्थ और सदुपदेशों मे सदा के लिये वद हो गई। 

जय संग प्रमुखा
स्वर्गीय श्री सुगन कँवर जी म. सा. ।



श्रद्धांजलि

संयम की सजग प्रहरी

–जयगच्छाधिपति आचार्य प्रवर
श्री शुभ चन्द्र जी म० सा०

परिवर्तिनी संसारे मृतः को न जायते,
स जातो येन जाते न यातिवंशः समुन्नतिम्।

अतीत के झरोखे से झांक कर भारतीय संस्कृति का अवलोकन करते हैं तो यही परिज्ञात होता है कि त्याग प्रधान भारतीय संस्कृति में अनेक त्यागी तपस्वी महामानव उत्पन्न हुए हैं। जिन्होंने संसार–वैभव का त्याग करके आत्मा के लक्ष्य को पाने के लिए स्वयं को वीतराग पथ पर अग्रसर किया है। महामानव के रूप में अवतरित होने वाली जीवात्मा जब अपने विकास के चरमोत्कर्ष स्थिति में पहुँच जाती है तो उनका जीवन प्रत्यक्ष परोक्ष दोनों ही रूपों में संसार भव अटवी में फंसे लोगों के लिए एक आदर्श रूप होता है। विशिष्ट व्यक्ति प्रत्यक्ष में रहते हुए अपनी वाणी आचरण द्वारा जीवों का मार्गदर्शन करते है तथा जाने के बाद भी संसार को एक अवदान दे जाते हैं। ऐसे व्यक्तियों का जगती तल पर आना सार्थक होता है, वे ही अपने धर्म, गुरु, वंश का नाम अपने सद्आचरण से समुज्जवल करते है। ऐसी ही साध्वी संयम प्रभा जी थी जिसने जयगच्छ की कीर्ति चहुँ दिशा में प्रसारित की। वावड़ी में वैरागन मधु सेठिया की दीक्षा के अवसर पर जब प्रथम बार संयम जी का प्रवचन सुना तो सहसा स्वर निकले थे कि यह साध्वी समस्त भारत वर्ष में अपनी ओजस्वी, तेजस्वी वाणी द्वारा अपूर्व धर्मोद्योत करेगी तथा संघ की कीर्ति वर्धमान करेगी। संयम जी हमेशा विशाल दृष्टिकोण को लेकर चलती थी क्योंकि जब जोधपुर में उन्हे समाचारी से अवगत कराया जा रहा था तो वे स्पष्ट रूप से बोली - गुरुदेव, समाचारी के सभी नियम सहर्ष मान्य है लेकिन 'किसी अन्य साधु-साध्वी को वन्दना नहीं करना' यह बात गले नहीं उतरती है। इसलिए हमें इस नियम से स्वतन्त्र करें। साध्वी जी निश्छल, कपट रहित जीवन को जीने में विश्वास रखती थीं। जब-2 हरियाणा से आकर दर्शन करने पधारती, तब-तब अपनी हर छोटी-सी भी, बड़ी भी गलती की आलोचना कर लेती थी और आलोचना करते समय कभी यह भी नहीं सोचा कि पास में बैठे साध्वी जी या श्रावक क्या सोचेंगे ?

संयम प्रभा जी जब महाराष्ट्र, छत्तीसगढ़ की तरफ गई थी तो एक बार चिंतन चला था कि छत्तीसगढ़ जैसे इलाके में जा रही हैं, लेकिन जब वहाँ से उनके सुन्दर प्रभाव के समाचार मिले, मन गद्‌गद् हो गया था। श्रावक कहते थे - गुरुदेव, अब ये जयगच्छ बुलन्दियों को स्पर्श करेगा, जब बड़े-2 श्रावक भी साध्वी जी के सामने नतमस्तक हैं। अल्प काल में ही अपनी प्रखर प्रज्ञा के कारण काफी अध्ययन अतिशीघ्र संयम जी ने कर लिया था। संयम

प्रभा जी ने अत में साहस समता, श्रेष्ठ आत्मवल का परिचय देकर सव के सामने एक उदाहरण प्रस्तुत किया है। इतनी पीडा में भी स्वय को समाधिस्थ रखा। हर समय अपनी सयम मर्यादा का ध्यान रखा कि कहीं मयादा खण्डित न हो जाये। किसी भी प्रकार की चिकित्सा सम्वन्धी क्रियाएँ स्वेच्छा से नहीं की। प्रत्येक कार्य के लिए पहले आना मगवाई, फिर चिन्तन किया। हमें साध्वी सयम प्रभा जी के व्यवहार, कुशल आचरण, सुन्दर प्रवचन शैली, उदारता आदि गुणों पर फक्र था। वुद्धि तो इतनी तीव्र थी कि विना देखे घण्टों तक प्रवचन देने की कला थी। सयम प्रभा जी पर समस्त चतुर्विध सघ को वहुत सी आशातीत आशाएँ थी लेकिन कहते हें जव व्यक्ति चलता हे तो काल भी अपनी गति से पूरे वेग सहित गतिमान रहता हे ओर न जाने किसे अपना ग्रास वना ग्रसित कर ले। उसी क्रम से मौत ने शासन की अपूर्व प्रभावना करने वाली साध्वी जी सयम प्रभा जी को अपनी आगोश में समा लिया है। दिल्ली से जैसे ही समाचार देवलोक गमन के आये, सभी एकदम हतप्रभ रह गए। सूचना झूठी हे या शव्दों का हेर-फेर हो गया हे, लेकिन आखिरकार हमें कडवी सच्चाई को स्वीकार करना पडा। श्री गुणवन्त मुनि जी तथा श्री सुमति मुनि जी आदि मुनिद्वय को भी घटना का पता लगते ही गहरा आघात लगा। सयम प्रभा जी भले ही शरीर से विद्यमान नहीं है लेकिन चतुर्विध सघ हमेशा उनके गुणों को याद रखेगा।

सयम तेरी गोरव गाथा का क्या अत सुरासुर पाएगे,
मन की सीमा के अकन के व्यर्थ यत्न हो जाएगे,
याद रहेगा जीवन तेरा, प्रवचन भूला न पाएगे,
तेरे गुण की गौरव-गाथा धरती के जन-2 गाएगे।



व्यक्ति चला गया व्यक्तित्त्व अमर हो गया

— आगम वेत्ता श्री पार्श्व चन्द्र जी म० सा०

व्यक्ति चला जाता हे, क्योंकि वह शरीर हे, पुद्गल पिण्ड हे। जाना उसकी नियति है। भले ही उसका जाना अरुचिकर लगे, पर उस अटल सत्य को स्वीकार करना पडता है। लेकिन व्यक्तित्व रह जाता है, उसके गुणों को कहने के लिये। यह वात चरिताथ हो रही हे विदुषी साध्वी रत्ना श्री सयम प्रभा जी के लिये। वे कुशल प्रवचनकर्त्ती होने के साथ ही वहुत ही उत्साही एव निर्भिक साध्वी थी। अपने विहार काल में विकट एव वीहड दुर्गम मार्गों से गुजरते समय, जरा भी भय को निकट नहीं आने देती थी। उनके जीवन में अनेक विशेषताएँ थी।

वक्तृत्व की कला वहुत ही सुन्दर थी। साध्वी निपुण प्रभा जी की दीक्षा के अवसर पर उनको सुना तो लगा कि जयगच्छ के साध्वी समुदाय में सुयोग्य साध्वी तेयार हो गयी है। हुआ

भी यही उन्होंने जहां भी चातुर्मास किये वहां धर्म जागरणा अच्छी मात्रा में की थी।

साध्वी जी ने शासन प्रभावना में अपूर्ण सहयोग दिया, जिसको कभी भुलाया नहीं जायेगा। विगत वर्षो से उनके स्वास्थ्य की गिरती स्थिति को देखकर उन्हें कई बार सचेत किया किन्तु लम्बे-लम्बे, उग्र विहारों की उनकी रुचि ने स्वास्थ्य को और भी अधिक कमजोर बना दिया और एक दिन वह भी आ पहुँचा कि जयगच्छ की महान साध्वी धरा को छोड़कर अनंत आकाश की यात्रा की ओर अग्रसर हो गई। दिवंगत आत्मा शाश्वत शान्ति प्राप्त करे, यही मंगल कामना है! ❑



गुलशन में छाई खामोशी

– अप्रमत्त साधक श्री सुमति मुनि जी म० सा०

आह गुले चीने अजल, तुझसे ये कैसी नादानी हुई,
फूल भी वो तोड़ा कि गुलशन भर में वीरानी हुई।

सिंह समान दीक्षा पथ पर आरूढ़ होकर जीवन की संध्या बेला तक सिंह वृति जैसा संयम पालने वाली संयम प्रभा जी के अचानक देवलोक के समाचार पाकर एक दम जुवाँ कुछ भी कहने में असमर्थ हो गयी, कर्ण भी कुछ भी श्रवण करने नाकाम हो गए। संयम प्रभा जी का जीवन वास्तव में हमेशा जीवंत रहेगा। उनके गुणों से हमेशा हम प्रभावित रहे। दूरस्थ इलाकों में संयम में रहते हुए जो धर्म प्रभावना की है वह सदा स्मृति पटल पर अंकित रहेगी। सर्वाधिक प्रसन्नता इस बात की थी कि बीमारी की हालत में भी पहाड़ी, जंगलों में संयम में दोष नहीं लगाया। संयम जी की इच्छा थी कि अब एक साल गुरु चरणों में रहकर ज्ञानार्जन करना है लेकिन कुछ भी करने से पहले सब सिमट गया।

उनके यूँ जाने से संघ उदास है लेकिन संथारे सहित समाधि भावों में प्रस्थान किया, इस बात का गर्व है। ❑



ज्योति क्यो वुझ गई ?

— गुरुवर्या श्री शारदा जी म० सा०

भारतीय सस्कृति तप त्याग प्रधान सस्कृति रही हे। यह ऋषिमुनियों की तपोभूमि है, जिनका केन्द्र विन्दु मोक्ष प्राप्त करना ही रहा है। यहाँ समय-समय पर अनेकानेक महापुरुषों का प्रादुर्भाव होता रहा हे, जिन्होंने आत्मा साधना की आराधना कर तिण्णाण तारयाण उक्ति को चारितार्थ किया है। जन जीवन में जागरण की दिव्य ज्योति जगाने वाले अनेक उदीयमान नक्षत्र पैदा हुए हैं जिनका आधार लेकर ससार सिधु में भटकने वाले लाखों यात्री किनारा पा गए हैं। ऐसे में ही ध्रुव तारा के समान वनी जैन साध्वी सयम प्रभा।

सयम प्रभा जी सरपच चौधरी कुन्दनमल जागलान, मा रामप्यारी की इकलोती वेटी राजवाला के रूप में जानी जाने लगी। चढते यौवन में ही 6 भाईयों में से वडे भाई की अचानक मृत्यु हो जाने से दु:ख, शोक, सताप का भूकम्प दिलों दिमाग में छा गया। उसी दोरान घोर तपस्वी श्री रोशन लाल जी म० सा० के सुशिष्य उपप्रवर्तक श्री प्रेम मुनि जी म० सा० स्पष्ट वक्ता श्री धर्म मुनि जी म० सा० आदि जोंधन पधारे। गुरुदेव श्री धर्म मुनि जी म० ने राजवाला को जैन साध्वी वनने की प्रेरणा दी ओर जैन साध्वियों के वारे में दिग्दर्शन कराया तो आश्चर्य हुआ कि जेन धर्म में वालिकाए भी जैन साध्वी वनती हैं। फिर तो गुरुदेव से जेन साध्वियों के दर्शन करने की उत्कट भावना प्रगट की। उन दिनों हम पानीपत में ठहरे हुए थे। गुरुदेव श्री ने संदेश भेजा कि आप एक वार जोंधन पधार जाएँ। पानीपत से 14 कि मी का विहार कर हम जय प्रभा जी शशि प्रभा जी आदि ठाणा जोंधन गुरुदेव की सेवा में पहुँचे। वहाँ राजवाला से हमारा मिलन हुआ। वस फिर क्या था राजवाला का उठना, वैठना, सोना, खाना, पीना वैराग्यवती सतोष जेन के साथ होने लगा। नवकार मत्र, सामायिक सूत्र आदि सीखने लगी। राजवाला ने दृढ सकल्प के साथ मोक्ष मार्ग चुन लिया ओर राहगीर वनकर चल पडी हमारे साथ। मैंने वक्तृत्वकला को जानकर तीसरे दिन प्रवचन के पश्चात् कुछ वोलने के लिए राजवाला को इशारा किया तो वेधडक अपने विचार प्रस्तुत किए। वस फिर क्या था प्रतिभा को निखारने के लिए हम अवसर देते ही रहे।

एक वर्ष भी नहीं वीता था कि 12 मार्च सन् 1986 को वेराग्यवती राजवाला से साध्वी सयम प्रभा वनी। सन् 1996 तक लगातार चातुर्मास साथ में होते रहे। सम्यक् ज्ञान, सम्यक दर्शन, सम्यक् चारित्र की त्रिवेणी के रस में सरावोर होते रहे। 1997 में अर्पण प्रज्ञा की पानीपत में तथा चारित्र प्रभा ओर वैशाली प्रभा की वडोदा में दीक्षा हुई। सघाडे में वृद्धि होने से दो चातुर्मास के भाव वने। विहारों का क्रम वढा। हरियाणा, यू पी, राजस्थान, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ, महाराष्ट्र में विचरण कर धर्म का झण्डा लहराया व उनके हर चातुर्मास में धर्म का विगुल वडे जोर-शोर से वजता रहा। 2002 का चातुर्मास महाराष्ट्र चालीस गाव में था ओर मेरा चातुर्मास गन्नोर (सोनीपत) में था।

मैंने जब उनके शारीरिक अस्वस्थता के समाचार उनके भ्राता राजबीर, तेजबीर, अशोक भाई से सुने तो मन वेचैन हो गया। गुरुदेव उपप्रवर्तक श्री प्रेम मुनि जी म० सा० स्पष्ट वक्ता श्री धर्म मुनि जी म० सा० से प्रार्थना की कि आप संयम प्रभा जी को यहां वुला लें। भाईयों की व मेरी प्रार्थना को मद्दे नजर रखते हुए गुरुदेव ने उपप्रवर्तक श्री प्रेम मुनि जी म० सा० ने महाराष्ट्र से गन्नौर लाने की आज्ञा प्रदान कर दी। गुरुदेव श्री गन्नौर से केवल 5 कि.मी. की दूरी पर थे। अतः गन्नौर पधारी हुई संयम प्रभा जी को गुजर खेड़ी ले जाया गया। डा० प्रवीण जैन के परामर्श से उनके पितुश्री दिल्ली उत्तरी पीतमपुरा के प्रधान श्रीमान् रोशन लाल जी जैन किड्नी के स्पेशलिस्ट डा० रमेश जैन को साथ लेकर गुजर खेड़ी पधारे। डॉ० जी ने उनकी फाइल देखकर दिल्ली में ही उपचारार्थ भेजने की राय दी। गुरुदेव श्री ने डॉ० की राय के अनुसार दिल्ली उत्तरी पीतमपुरा भेजने का हमारा प्रोग्राम वनाया ताकि ईलाज सुचारु रूप से चल सके। मैं गुजर खेड़ी से विहार कर शीघ्रातिशीघ्र 1 अक्टूबर को उत्तरी पीतमपुरा पहुँची। उपचार चल रहा था किन्तु बुखार उतरने का नाम भी नहीं ले रहा था। आखिरकार 10 अक्टूबर को मधुवन चौक के पास सरोज हास्पीटल में एडमिट कराना पड़ा। 11 दिन के लम्बे समय में भी उनका बुखार कम नहीं हुआ। बुखार तो आंख मिचौनी की तरह चलता ही रहा। मैंने डा० रमेश को कहा कि आप हमें डिस्चार्ज कर दें ताकि हम इन्हें वैद्य को पुनः दिखा सकें। वैद्य ने तो देखा ही साथ ही संघाणिया हास्पीटल के डा० सक्सेना ने भी देखा और अपना उपचार प्रारंभ किया किन्तु मर्ज वढ़ता ही गया। 24 तारीख को पूर्व उपचारानुसार डायलेसिस के लिए सरोज हास्पीटल में मैं संयम जी को लेकर गई। चार घण्टे उनको लेटे ही रहना होता था। इस बीच मैं उन्हें भजन, कविता, धार्मिक गजलें आदि सुनाया करती थी, जिससे पीड़ा का भी आभास न हो और समय भी शीघ्रता से बीत जाए। हर समय मेरा यही रहता था कि उन्हें संसार की असारता तथा स्वाध्याय की तरफ प्रेरित करती रहूँ, जिससे आत्म समाधि का भाव वना रहे। 24 तारीख को मैं उनके पास स्वाध्याय आदि की चर्चा कर रही थी तब संयम जी कहने लगे कि मुझे संथारा करा दो, मैंने कहा - गुर्जर खेड़ी में गुरुदेव श्री धर्म मुनि जी ने आपको एक मासखमण, बेले-2 पारणा करने को कहा है। गुरुदेव उपप्रवर्तक श्री प्रेम मुनि जी म० सा० ने कहा कि संतों की औषधि तो तपस्या ही है। तब तो आपने आयंबिल कर लूंगी ऐसा ढीले मन से कहा। आज आप संथारे की वात कर रही हैं मुझे तो आपकी बात दवंग लगती है। विश्वास दिलाते हुए मुझे वे बोले मेरी बात कच्ची नहीं पक्की समझो। मैंने उसे अच्छी तरह निरीक्षण किया तो मृत्यु के चिन्ह मुझे दिखाई नहीं दिए। अत. संथारे की बात मैंने दुबारा नहीं दोहराई और न ही उन्होंने। काश उस वक्त मैं उसको विधिवत संथारे का प्रत्याख्यान देती। 25 अक्टूबर की सारी रात रह-2 कर उन्हें पेट में दर्द रहा। एक्युप्रेशर से राहत मिली। प्रातः लगभग 5 बजे फिर से भयंकर दर्द पेट में होने लगा। हम सब ने मिलकर उसे एक्युप्रेशर दिया, बड़ी साधु वंदना, भक्तामर स्तोत्रादि सुनाए। संयम जी कहने लगे कि मुझे कमरे में ले चलो। अर्पण जी ने उन्हें गोदी में उठाया। हम सबने वस्त्रादि उठाए। जैसे ही भीतर उन्हे लिटाने का प्रयास करने लगे,

मेंने उनके हाथ में अकड़न, मुँह से बोलने का प्रयास, आखे पथराई हुई देखी। अर्पण जी ने सोचा कि शायद ठड लगने की वजह से ऐसा है। ऐसा सोचकर शाल लेने बाहर चले गए उसी वक्त लगभग 6 40 बजे गुरु जनों का आगार रख मैंने उन्हें जावज्जीव के लिए सथारे का प्रत्याख्यान दे दिया। ससार की असारता तथा मोह से दूर रहने का उपदेश दिया। समस्त 84 लाख जीवा योनि से क्षमा याचना करो, ऐसा कहा। तत्पश्चात् उनके कान में उच्च स्वर से नमोक्कार मत्र सुनाने लगी।

दक्षिणी पीतमपुरा में सघ शास्ता श्री सुदर्शन मुनि जी म० सा० के सुशिष्य सघ नायक शास्त्री श्री पद्मचन्द्र जी म० सा० अपने शिष्य समुदाय के साथ विराजमान थे। वे बहुधा दर्शन देने हेतु पधारते थे। सूर्योदय के पश्चात् एक भाई के साथ मैंने उन्हें सन्देशा भेजा कि सयम प्रभा जी म० अस्वस्थ हैं अत दर्शन देने हेतु पधारें। जब वे पधारे तो मैंने उन्हें आग्रह किया कि आप सयम जी को सथारा दिला दें। शास्त्री जी म० सा० ने सघ से परामर्श लेने की बात कही। सघ में सभी तरह के व्यक्ति होते हैं। अत कुछ सती जी को हास्पीटल ले चलो की रट लगा रहे थे। डा० बुला लिए गए, एम्बुलैंस आ गई। अचानक मैंने सयम प्रभा जी के सहोदर भ्राता तेजवीर जागलान जो लगभग सेवा में उपस्थित होते ही रहते थे उन्हे देखा तुरन्त समझाया कि अब डाक्टरों को दिखाने की कोई आवश्यकता नहीं है। डाक्टर ही सब कुछ नहीं, धर्म का शरण सर्वश्रेष्ठ है। मोहाधीन जो लोग हास्पीटल की जिद्द कर रहे हैं उनकी तरफ ध्यान न देकर हमें इनको समाधि भाव देना हे। मेरी इस बात से वे पूर्ण सहमत हो गए जिससे मोहाधीन व्यक्तियों की एक भी बात नहीं चल पाई। शास्त्री जी म० सा० ने भी सघ से परामर्श कर जावज्जीव के लिए सयम जी को प्रत्याख्यान दिला दिया। नवकार मत्र की धुन प्रात 6 बजकर 50 मिनट से में उनके कान के निकट लगा रही थी कि दर्शनार्थी भी धुन में धुन मिलाने लगे। 11 बजकर 40 मिनट पर उनकी नाडी मद हो गई। आत्म प्रदेशों का 12 बजकर 10 मिनट तक अनुमान सिर में रहा तब तक उच्च स्वर से नवकार मत्र की धुन चलती रही। जब मेंने भली भांति ये जान लिया कि अब केवल पार्थिव शरीर ही अवशेष है तब हम सब साध्वी समुदाय ने उन्हें सघ को सौंप दिया। ये क्षण भगुर भौतिक शरीर किसी का भी न तो रहा है और न ही रहेगा। किन्तु सयम प्रभा जी की जग वत्सल शुभ प्रवृत्तिया एव स्मृतियॉ अमर रहकर विश्व में भोतिक प्रपचों में आकण्ठ डूबे मानव को उभारने के लिए एव जीवन के उच्च विकास तथा कल्याण मयी भविष्य के निर्माण हेतु दिशा निर्देश देती रहेगी। मानव चेतना के चरणोत्कर्ष हेतु नवीन स्फूर्ति प्रदान करती रहेगी। वह अपने जयमल गच्छ व चतुर्विध सघ की वदनीय रही हैं व रहेंगी।

तू नहीं पर तेरी उल्फत हर किसी के दिल मे है।
शमा तो बुझ चुकी मगर रोशनी महफिल मे है।।



संयम चली गई, संयम रह गया

– साध्वी श्री चेतना जी म० सा०

काटों में भी फूलों सा तूने खिलना सीखा था,
परिषहों को भी हंसते-हंसते तूने सहना सीखा था।
तेरी आत्म शक्ति का क्या परिचय दूँ मैं 'संयम',
पतझड़ में भी सावन-सा तूने मुस्काना सीखा था।

''जातस्य ही ध्रुवो मृत्युः ध्रुवं जन्म मृतस्य च' जन्म तथा मृत्यु प्रकृति के शाश्वत नियम हैं। तीर्थंकर, चक्रवर्ती आदि महापुरुष तथा सामान्य कोटि के व्यक्ति कोई भी इससे स्वयं को बचा नहीं पाया है। आकर्षक व्यक्तित्व की धनी हमारी साध्वी श्री संयम प्रभा जी को भी प्रकृति ने अपनी नियमावली का अपवाद नहीं बनने दिया। संयम का व्यक्तित्व इतना आकर्षणशील, निश्छल था कि प्रत्येक व्यक्ति उसके व्यक्तित्व की ओर खींचा चला जाता था। प्रवचन शैली ने तो जन-जन के भीतर जमी मिथ्यात्व की जड़ों को हिला डाला था।

19 तारीख को तो आयुर्वेदिक औषधि के सेवन से हुए स्वास्थ्य में सुधार का समाचार मिला था, लेकिन यह पता नहीं था कि यह स्वस्थता तो दीपक बुझने से पहले वाली तेज रोशनी की तरह थी। मुझे क्या खवर थी कि मेरा समाचार पहुँचने तक आत्म पंछी देह रूपी पिंजरे को छोड़ चुका होगा। पल-2 अर्पण-अर्पण कहने वाली जुबाँ मौन हो जाएगी संयम के जीवन में अनेक उतार चढ़ाव आये लेकिन कभी भी मनोबल को डाँवाडोल नहीं होने दिया। जिसने उपसर्गों तथा परिषहों के तीव्र प्रहार के वावजूद भी अपने साहस को कमजोर नहीं पड़ने दिया। दो बार संयम के साथ चातुर्मास में बड़ों के सान्निध्य में नजदीक रहने का अवसर मिला। हर बार यही पाया कि इसमें विशिष्ट प्रतिभा है। उस प्रतिभाशाली की तबियत जब महाराष्ट्र हिंगनघाट चातुर्मास के दौरान गड़बड़ाई तो मेरे पास सहयोग के लिए सन्देशा आया और उसी समय मैंने उसे संभालने के लिए जाने हेतु प्रस्थान करने का भाव बनाया। तब बिन्दु जी तथा दिव्य जी को साथ लेकर उग्र विहार करके मैं जल्द से जल्द पहुँचने की भावना से छत्तीसगढ़ पहुँची। वहां पर संयम जी का इतना यशोगान सुनकर प्रसन्नता का ठिकाना नहीं रहा। मैं गई तो थी उन्हें वापिस लाने के इरादे से लेकिन स्वास्थ्य को देखकर और चलने की असमर्थता देखकर मैंने नवदीक्षित दिव्य श्री जी को सेवा में छोड़ा और उन्हें स्वास्थ्य सम्बन्धी हिदायतें देकर वापिस लौट आई। क्योंकि किसी कारणवश वापिस राजस्थान आना अनिवार्य हो गया था।

40 गाँव चातुर्मास के दौरान जब-2 अस्वस्थता के समाचार सुनती थी मन में उथल-पुथल मच जाती थी। लगता था पाँख होते तो तुरन्त वायु वेग से वहाँ पहुँच कर साता पूछ लेती लेकिन मात्र बेचैनी के सिवाय कुछ पास नहीं था। संयम संघ की अमूल्य धरोहर थी। उस वीरांगना की वीरता, शौर्यता, सरलता आदि गुणों को कलम द्वारा शब्दों की परिधि

में वाधना मुश्किल ही नहीं नामुमकिन सा प्रतीत हो रहा हे। दिव्य श्री जी द्वारा अर्पण की सेवा के विषय में सुनकर मन गद्‌गद् तथा आश्चर्यचकित हे। अव अर्पण सयम का स्मृति चिन्ह हे जिसे कुछ वनकर उसकी कमी को पूरित करना हे। सदियों तक सयम की याद प्रत्येक दिल में रहेगी। कोई भी उसे भुलाने में कामयाव नहीं हो सकेगा।

हयाते हक को भला क्या अजल का अन्देशा,
हर वक्त फूल खिलाती ह आशियाने मे,
जमीं रहे न रहे, आसमॉ रहे न रहे, हम भी रहे न रहे,
अमर रहेगा 'सयम' तेरा नाम हर जमाने मे। ❑



सुना हुआ जय कुञ्ज

– साध्वी श्री जय प्रभा जी म०

जीवन एक उत्सव, उपहार, पुरस्कार एव कुदरत की सौगात हे, जीवन कली के रूप में होता हे, जव वह फूल वन जाता है तव वह सुवास देने लग जाता हे। इसी तरह व्यक्ति जन्म लेता हे तव साधारण होता है किन्तु वडा होने पर अपने व्यक्तित्व का विकास करता है तव वह असाधारण वन जाता हे, साथ ही त्रय रत्नों रूपी पुष्पों की महक से जगति-तल को महका देता हे।

यशोमय जीवन जीकर जाता हे वह मर के भी अमर हो जाता है, भक्त दिलों में जीवत हो जाता हे। ऐसे ही स्वनाम धन्या, श्रमणी-श्रेष्ठा जय सघ दीपिका, स्पष्ट वक्त्री थी प्रवचन प्रभाविका साध्वी रत्ना श्री सयम प्रभा जी म० सा० जो सभी के लाड दुलार से वडी हुई और 20 वर्ष की युवावस्था में आप धर्म की ओर मुड गई। दृढ वेराग्य छा गया ओर हमारे साथ विहार में चल दी, एक सप्ताह पश्चात् ही उसकी वुद्धि की परीक्षा हुई, गुरुवर्या श्री अस्वस्थ होने से प्रवचन में नहीं जा सके। में नवदीक्षित थी, पूरा प्रवचन देने के लिए घवरा रहे थे इतने में ही विरक्ता राजवाला ने कहा – डरने की जरूरत नहीं हे कुछ में दे दूँगी। 15 मिनट तक उपस्थित श्रोता गणों को मत्र मुग्ध सा कर दिया था। यह सस्मरण आज भी मेरे स्मृति पटल पर अंकित हे। मारवाडी कहावत हे- पुत रा पग पालणा मे काई पेट मे पहचाणि जे। सयम प्रभा जी गुरुवर्या के सान्निध्य में अहर्निश ज्ञानार्जन में लग गई। प्रथम वर्षावास में ही आप कुछ समय प्रवचन देने लग गई थी। प्रवचन शैली वडी ओजस्वी एव तेजस्वी थी, जोश के साथ हर एक शब्द का प्रयोग होता था, सोए मन भी जग जाते थे, आपके प्रवचन सीधे दिल-दिमाग पर चोट करने वाले होते थे। आप समय के पावद थे, प्रवचन का समय भी निर्धारित था, आप सत्य के पक्ष धर थे, अन्याय व अनीति से आपको घृणा थी। आप सामने ही स्पष्ट कटु सत्य कह देते, पीठ पीछे निदा-विकथा से दूर रहते थे। सयम को

नित नया अध्ययन करने का बहुत शौक था। लगभग 17 वर्ष तक आपने संयम जीवन के अमूल्य क्षणों का स्वाध्याय-तप, जिन शासन की सेवा में व्यतीत किया। आपका विचरण क्षेत्र विस्तृत था - जम्मू, हरियाणा, पंजाब, यू.पी., एम.पी., राजस्थान, गुजरात, छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र आदि स्टेट में विचरण हुआ। आपके जीवन की महत्त्वपूर्ण प्रेरणा थी - **विचरण करना - जिनवाणी का प्रचार करना।** आप कितनी ही स्वास्थ्य की प्रतिकूलता हो जाने पर घबराने वाली नहीं थी। आत्मबल बड़ा दृढ़ था, शरीर असक्त होने पर भी साहस एवं पुरुषार्थ को पीछे नहीं रखा, किडनी में विशेष तकलीफ हो जाने पर भी विहार यात्रा करती रही। दवा-पथ्य परहेज में बहुत विवेक था। अत्यावश्यक दोष लगने पर शीघ्र शुद्धि करते हुए प्रायश्चित स्वीकार कर लेती थी। विचरण कहीं पर भी, कितनी भी दूर होता किन्तु मन गुरु चरणों के दर्शन के लिए तरसता था। जहाँ 26 तारीख को प्रातः ब्रह्मवेला में ही आत्मचिंतन मनन करते हुए, शरीर की अत्यधिक दुर्बलता के साथ भीतर की जागृति के साथ, आपने 6-35 पर संथारा ग्रहण किया। शास्त्र श्रवण सुनते हुए अपने विगत पापों का पश्चाताप के साथ मानसिक प्रायश्चित किया। वह चेतना, वह ज्योति वह आत्मा 11-40 पर अमरता को प्राप्त हो गई, वह ज्योति सदा के लिए बुझ गई, वह आत्म देव सबके बीच से उठ कर चला गया। वह चिर-शांति में लीन हो गई।

उसका मरण महोत्सव बन गया, आज वह भौतिक देह से हम सबके बीच नहीं है, किन्तु उसकी सहजता, सरलता, वात्सल्यता, मित्रता के जो महत्व गुण थे, उसकी यादों के सहारे हमारे दिल पर अभी भी ताजे हैं, अमिट छाप छोड़े हुए हैं। **संयम जी कभी न मिटने वाले इतिहास का निर्माण करके गई हैं।** अंत में जिनशासन देव से प्रार्थना करती हूँ। आपकी आत्मा जहाँ पर भी हो - चिर शांति को प्राप्त करे।

फानूस बन के जिसकी, हिफाजत हवा करे,
वह शमां क्या बुझेगी, जिसे रोशन खुदा करे।



याद करेगा जमाना

– साध्वी श्री रवि प्रभा जी म०

दीपक चाहे घी का हो, या तेल का; हवा के झोंकों से या तेल समाप्त हो जाने पर उसकी ज्योति मन्द पड़ने लगती है। बाती ज्योति प्रकाश फैलाती है तो साथ में धुआँ भी छोडती है किन्तु मणि या रत्न का प्रकाश ऐसा होता है जो कभी मन्द नहीं पड़ता। हवा क्या प्रबल तूफानों से भी वह ज्योति बुझती नहीं और सदा शुभ निर्धूम निर्मल प्रकाश विकीर्ण करती रहती है। जय गच्छ की दिव्य मणि श्री संयम प्रभा जी महाराज का जीवन वास्तव में ही रत्न ज्योति था। वे निरन्तर अपनी ज्ञान दर्शन चारित्र समता साधना में लीन रहते हुए शुभ्र और

निर्मल आलोक विकीर्ण करते रहे। उनके जीवन में कहीं कोई कालिमा या मन्दता नहीं प्रतीत हुई। जव भी उनको देखा, मधुर मुस्कान विखेरते हुए। ऐसे प्रतीत होते मानो प्रात काल की प्रथम किरण का स्पर्श पाकर फूल विहँस रहा हे। उनकी मुस्कान निश्छल और स्वाभाविक होती। उनकी वाणी की मिठास भी सहज थी। उनके सद्गुणों की सोरभ आज भी ससार में महक रही हे। उनके निर्मल चारित्र की ज्योति आज भी रत्न ज्योति की भांति प्रकाश विकीर्ण कर रही है। आप की याद मेरी शक्ल को मायूस वना देती है। आप की याद मेरे नयनों को सजल वना देती हे। फिर भी उदास दिल ने कहा

दिल उदास क्या करना, मन वेचेन क्या करना,
फूल का मुकद्दर है, शाखा से जुदा होना।

इस शेर को याद कर अपने आप को तसल्ली देती हूँ। हमारे ज्ञानियों ने जीवन को दीपक की उपमा दी हे। दीपक जेसे-2 जलता है वेसे-2 उनका स्नेह जलता जाता है। ज्योति मद से मन्दतर होती जाती है ओर जलते-2 आ जाता हे ऐसा अशुभ क्षण कि दीपक वुझ जाता हे, फलस्वरूप अधेरा हो जाता है। ठीक वेसे ही जीवन दीप की लो वुझने पर हमारी भी यही वेदना भरी कहानी है, चारों ओर उदासीनता, व्याकुलता का धुआ भर गया हे, एकमात्र आँसू वहाना ही शेप रह गया है। सयम प्रभा जी ही थी दीपक की लो, जो 26 अक्टूवर को दिल्ली में वुझ गई। सयम के गुणों को लिख पाना असभव हे। सयम के साथ मुझे पजाव, जम्मू, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र घूमने का मोका मिला। सयम जी ही मुझे प्रथम बार जन्मभूमि पट्टी लेकर गई। तव वहाँ सवने उनके व्यक्तित्व की सराहना की। सयम ने अपनी सरलता, प्रवचन शैली द्वारा हर जगह, हर दिल में अपनी छाप छोडी हे। वह इतनी छोटी वय में इतना यश कमा कर गई हे जो कि एक आश्चर्यकारी वात है। वुद्धि निदान सयम को झूठ वोलना विल्कुल पसन्द नहीं था। उसके ये गुण उसे सदा अमर रखेंगे।

जव-2 मध्य भारत से सयम की अस्वस्थता के समाचार आते, सभी चिंतित हो जाते थे। समता की धनी अंतिम श्वास तक कर्मों से लडती रही। लेकिन मोत ने अपना वार चला ही दिया उस विकसित खिलते फूल पर। जिस पुष्प ने चमन में खिलते ही अपनी प्रवचन सुरभि से यत्र-तत्र सर्वत्र विखेरी तथा जयगच्छ चमन को भी खूव महकाया। परन्तु मोत की तूफानी हवा ने उस पुष्प को भले ही मुरझा दिया हे पर उसकी सयम सोरभ युगों-2 तक दुनिया को महकाती रहेगी। सयम प्रभा जी का आत्मीयतापूर्ण व्यवहार, निश्छल प्रेम हम कभी भी भूला नहीं पाएगे। अव अर्पण ही सयम वनकर उस क्षति को पूरा कर सकती हें। ❑



पुरानी यादों के झरोखों से

– साध्वी श्री इन्द्र प्रभा जी म०

जो इन्द्रियों को जीतकर धर्माचरण में लीन है,
उनके मरण का सोच क्या? वो मुक्त बंधन हीन है।

प्रकृति की पुरानी नियमावली है कि जिसका जन्म हुआ है तो मृत्यु भी निश्चित है। केवल सिद्धालय के जीव हैं जहाँ जन्म तो होता है पर मृत्यु कभी नहीं होती है। इस जन्म मरण के अंतराल को जीवन कहा जाता है। लेकिन हमें देखना है कि जीवन मिलने पर भी जीने की कला आई या नहीं। सही अर्थो में जीवन उसी ने जीया जिसका भौतिक शरीर रूपी सूर्य भले ही अस्त हो जाये लेकिन यश रूपी शरीर सूर्य सदियों तक उदित रहता है। हजारों व्यक्तियों को उस जीवन से शिक्षा मिलती रहती है। ऐसा ही अद्भुत अनुपम जीवन जीया था संयम प्रभा जी ने। जिनके जीवन में अनेक विशेषताएं थीं। सरलता, सच्चाई, उदारता आदि गुण तो विशेषता को लिए हुए थे। संयम जी के साथ रहने का कई बार मौका मिला तथा उनको निकट से देखने का अवसर मिला। वास्तव में ऐसी विरल विभूति धरा पर सदियों बाद जन्म लेती है। संयम की बुद्धि इतनी तीव्र थी कि प्रत्येक बात स्मृति कोष में रहती थी। संयम के पुण्य का तो क्या कहना? गच्छ के सभी गुरुदेवों तथा गुरुणी जी की अपार कृपा थी। बड़े-2 आचार्यों, साधु, साध्वियों के समक्ष निडरता से प्रवचन करना यह संयम का हौंसला था। उनका देहावसान मात्र श्रमणी वर्ग में ही नहीं अपितु सम्पूर्ण जय संघ में अपूरणीय क्षति कर गया है। ❑



आंखें राह देखती हैं

– साध्वी श्री संवेग प्रभा जी म० सा०

सन् 1985 के मई महीने में जब मैं गुरुवर्या श्री शारदा जी म० सा०, श्री जय प्रभा जी म० सा० आदि ठाणा 4 के पावन चरणों में पानीपत आई तो वहाँ विराजित उप प्रवर्त्तक श्री प्रेम मुनि जी म० सा०, स्पष्ट वक्ता श्री धर्म मुनि जी म० सा० के दर्शनार्थ गई, उनसे मुझे ज्ञात हुआ कि जोंधन गॉव में राजबाला नामक बहन की दीक्षा लेने की उत्कृष्ट भावना है। जब गुरुवर्या श्री शारदा जी म० सा० के साथ जोंधन में गई तो बहन राजबाला से मिली। उसने मुझे स्नेह से सराबोर कर दिया क्योंकि वह और मैं दोनों हम उम्र ही थे। बस फिर क्या था एक से दो हो गये। दोनों का ज्ञानाभ्यास साथ-2 होने लगा। मेरी हार्दिक इच्छा थी कि हम दोनों एक साथ दीक्षित हों। दीक्षा का दिन 12 मार्च, 1986 को तय हुआ किंतु संयोग ऐसा बना कि मेरे संसार पक्षीय बड़े भाई अशोक कुमार की 12 मार्च को शादी होने के कारण मुझे दीक्षा की अनुमति नहीं मिली। फिर पुण्य उदय हुआ तो आपकी दीक्षा के 18 दिन बाद मेरी

भागवती दीक्षा हुई। बारह वर्ष पर्यंत हम दोनों गुरुवर्या श्री शारदा जी म० सा० की सेवा में साथ-2 रहे। आपने अपनी प्रखर बुद्धि के कारण अध्ययन प्रवचन आदि में तीव्र गति से प्रगति की ओर जन-2 के प्रकाश का स्तम्भ बनी। आपकी वाणी में ओज ओर चितन का गाभीर्य प्रगटित हुआ जिससे सारगभित ओजस्वी प्रवचनों को सुनकर श्रद्धालुओं के दिल में श्रद्धा का सागर उमडने लगा। आपके जीवन में सरलता, विशालता, निर्लोभता आदि सद्गुणों की प्रधानता रही। सन् 2000 में मध्य प्रदेश के पिपलिया मडी में हमारा मधुर मिलन हुआ। हम सब गुरुवर्या श्री के पास बेठे चर्चा वार्ता कर रहे थे। मेंने सहज में ही पूछा – बहना, इतनी दूर विचरण करने का क्यों सोच रहे हो ? वापस हमारे साथ लोट चलो। सरलता ओर सरसता की साक्षात प्रतिमूर्ति ने मुझे तत्काल उत्तर दिया कि बहना जब तक घुटने चले तब तक तो विचरण कर लू। बुढापे में तो गुरुणी जी के पास ही आना हे। मेंने कहा – आपको डाक्टर ने ज्यादा चलने के लिए इन्कार किया हे। सयम प्रभा जी म० सा० बोली – विहार ही मेरी खुराक है। तत्पश्चात् रुग्णावस्था में उन्होंने मध्य प्रदेश, गुजरात, छत्तीसगढ, महाराष्ट्र आदि क्षेत्रों की स्पर्शना की। अत में किडनी फेल होने पर गुरुदेव व गुरुणी जी म० सा० की आज्ञा से उन्हें उत्तर भारत में आना पडा। वे दिल्ली, गन्नोर होते हुए गुरुदेव की सेवा में गुर्जर खेडी पहुँची। हमारा गन्नोर चातुर्मास था। अत गुरुवर्या श्री शारदा जी म० ठाणा 3 से सयम प्रभा जी म० सा० की सेवा में पधार रहे थे। में गुरुवर्या श्री को 8-10 कदम पहुँचाने गई तब गुरुवर्या श्री शारदा जी म० सा० ने कहा – सवेग, वापस लोट जाओ, कल प्रवचन देना है लेकिन मेरे कदमों ने पीछे मुडने से मना कर दिया और दिल नहीं माना तो में भी साथ गुर्जर खेडी चली गई। वहाँ उनकी ऐसी हालत देखकर मन को बडा दु ख हुआ लेकिन ऐसी वेदना में भी समता ओर सहनशीलता अविस्मरणीय हे। वहाँ से ईलाज के लिए दिल्ली ले जाया गया। उनके स्वास्थ्य के समाचार बराबर आते रहते थे। शनिवार को सवेरे लगभग 8 बजे के करीब दिल्ली से समाचार आये कि सयम प्रभा जी म० सा० की तबीयत ज्यादा खराब हो गई हे। यह सुनते ही मन में उथल-पुथल मच गई। मन नहीं था कि प्रवचन करने जाऊँ, परन्तु जाना पडा। यही राह देखते रहे कि कब सुखसाता के समाचार आये किन्तु जेसे ही पोने 12 बजे समाचार आये कि सयम प्रभा जी म० सा० देवलोक हो गई हें यह सुनकर तो आखों के सामने अन्धेरा छा गया। कुछ देर तक तो इस समाचार पर विश्वास ही नहीं हुआ फिर मन को तसल्ली दी कि –

'फूल एक गुलाब का, जाने क्यो मुरझा गया,
ज्ञान सयम की खुशबू से, सारे जग को महका गया।''

जिन घडियों की कभी स्वप्न में भी कल्पना नहीं की थी कभी-2 वे पीडाकारी घडियाँ भी सामने आ जाती हें। गुरु बहना भले ही ओदारिक शरीर से हमारे बीच में नहीं हे मगर उनकी स्मृतियाँ सदेव हमारी आँखों के सामने तैरती रहेंगी।

आज तेरी गुरु बहना नहीं, पर उनकी यादें रह गई हैं शेष,
सूखे सब आंसू पर कैसे, पहुँचायें आप तक सन्देश।''



तुम्हीं से तो मिली प्रेरणा

– श्री सुबोध प्रभा जी म० सा०

संसार एक झमेला है। इस संसार में संयोग-वियोग होता ही रहता है। कितने मिलते और बिछुड़ जाते हैं। जैसे यात्रा करते हुए बस, गाड़ी में अनेक यात्री होते हैं परन्तु पास में बैठने वाले से मुलाकात हो जाती है और अपना-2 स्थान आता है तो उतर कर चले जाते हैं। इस संसार में रहते हुए संयोग वियोग में गुजरते हुए मिली थी एक सखी – राजवाला। मेरा उनसे प्रथम बार साक्षात्कार जोंधन में हुआ जब मैं गुरुदेव की दर्शनार्थ गई थी। प्रथम मिलन मैत्री में बदल गया। एक दूसरे के प्रति आकर्षण प्रेम ने जन्म ले लिया था। उन्हीं की तरह मुझे भी 1985 में ही वैराग्य लगा था। 12 मार्च, सन् 1986 को म० सा० की दीक्षा में कार्य करने का सौभाग्य मिला। सन् 1990 के पानीपत के 4 माह के सहवास ने मुझे उनके और अधिक नजदीक ला दिया। मेरी दीक्षा प्रसंग पर उनका काफी सहयोग मिला। दीक्षा उपरान्त भी लुधियाना में 13 जनवरी को म० सा० ने मुझे कहा-सुबोध जी, आज रात को कोई कहानी सुनाना। मैंने कहा – म० सा०, मुझे तो बोलना ही नहीं आता और फिर आपके सामने बोलने की तो मेरी हिम्मत नहीं है। उस समय मुझे ध्यान है कि उन्होंने मेरा हौंसला बढ़ाया था तथा मैंने प्रथम बार पद्मावती सती की कहानी सुनाई थी। मेरे दिलो दिमाग में एक बात जमी हुई थी कि मैं कभी कहानी, भजन, प्रवचन नहीं सुना सकती, लेकिन अनंत उपकारी म० सा० ने मेरी झिझक मिटाई। आज मैं थोड़ा बहुत कुछ भी सुना पाती हूँ तो सब उनकी ही प्रेरणा का प्रसाद है। म० सा० के उपकार को कभी भुला नहीं सकती। हमेशा उन्होंने मेरा सहयोग दिया। म० सा० को असत्य भाषण करना तथा जीवन में कपट व्यवहार बिल्कुल पसंद नहीं था। बुद्धि तो इतनी तीव्र थी कि जो एक बार देखा या पढ़ा वही हृदयंगम हो जाता था। एक रात को उन्होंने एक ही बार गजल सुनी और सुबह उठकर पूरी गजल लिख दी। उनके जीवन में अनेक बार परिषह की ऑधियाँ चली लेकिन वे झंझावात उनका कुछ बिगाड़ नहीं सकी। म० सा० जैसी सरलता मुझे कहीं दृष्टि गोचर नहीं होती। मुझे तीन चातुर्मास में उनके सान्निध्य में रहने का लाभ मिला। हर बार उन्होंने सुन्दर शिक्षाएँ दी। अन्तिम समय में उनकी सेवा में रहने का दिल्ली में अवसर मिला। म० सा० भले ही अल्प आयु में देवलोक की ओर प्रस्थान कर गये हैं, लेकिन इन 17 वर्षों में उन्होंने बहुत कुछ किया है तथा बहुत यश कमाया है।

जिन्दगी की वो आला हस्ती थी, रखती वो सदा फकीराना मस्ती थी,
उनकी शान में है कौम का सिजदा, चमकती रोशनी की वो बस्ती थी।

म० सा० की वाणी में ओज, हृदय में सरलता एव आचरण में उत्कर्ष के साथ-2 अन्तर्जीवन की सोरभ थी। म० सा० के इस तरह जाने से मुझे लगता हे मेरा तो प्रेरणा पुन्ज खो गया है। मार्गदर्शन करने वाली Search Light बुझ गई हे। हित शिक्षा देने वाले परोपकारी म० सा० चले गये हें। में भी उनकी जैसी सहनशक्ति, धेर्य को आत्मसात करूँ तथा मेरे भी जीवन में उनके जेसे गुणों का प्रादुर्भाव हो, जिनेश्वर देव से यही प्रार्थना करती हूँ। म० सा० जाने के वाद भी मेरे पास हें, यही अनुभूति हमारा जीवन उत्कृष्टता की ओर ले जाएगी। ❑



गुरु बिन जीवन सूना

-- सयम की अर्पण

"गुरु दीपक गुरु चॉदणो, गुरु विन घोर अधार
पलक न विसरु तुम भणी, गुरु मुझ प्राण आधार"

ऊपर लिखी पंक्तियों का आशय स्पष्टीकरण देता है कि गुरु है तो जीवन में प्रकाश ही प्रकाश है ओर गुरु विना जीवन घोर अन्धकारपूर्ण है। गुरु का शिष्य के जीवन में वडा महत्वपूर्ण स्थान हे। गुरु अधेरे में रोशनी दिखाने वाली मिनार हे, चलना खिलाने वाली मॉ, जीवन को विकास के सोपान तक ले जाने वाला पिता, परमात्म पद को पाने का रास्ता दिखाने वाला रहवर, सुन्दर जीवन घट वनाने वाले कुम्भकार, जीवन जहाज को ससार रूपी समुद्र में दिशा वताने वाला सुकानो यत्र, सुसुप्त चेतना में प्राण फूककर सगीत पैदा करने वाला कुशल सगीतकार, जीवन निर्माता, भाग्य विधाता होता है। ऐसे ही गुरु पद को शोभित तथा सार्थक करने वाले थे मेरे गुरु जी श्री सयम प्रभा जी। इसलिए शिष्य कभी गुरु के जीवन का मूल्याकन करने में सफल नहीं हुआ ओर न ही शब्दों की परिधि में वॉधकर प्रस्तुत करने में समर्थ हुआ। क्योंकि शब्द परिमित हें तथा गुणों का सागर अपरिमित हे। अनन्त को असख्यात में साधने का प्रयासपूर्ण की अनन्त किरणों को मुट्ठी में वद करना हो जाएगा। फिर भी कलम गुरु के अनुपम जीवन को शब्दों में लिखकर कुछ प्रस्तुत करना चाहती है।

वेसे में कोई कवि, लेखक, दार्शनिक नहीं कि शब्दों को सुन्दर परिवेश दे सकूँ। मैं तो सिर्फ अपने गुरु जी (सयम) की अर्पण हूँ। मेरे पास शब्दों का अक्षय कोष नहीं, भावों का कोष हे। लेकिन में समझती हूँ कि जैसे नैसर्गिक सुन्दरता को बाहरी प्रसाधनों की आवश्यकता नहीं होती, उसी प्रकार अद्भुत सुन्दर, वास्तविक जीवन को अलकारिक शब्दों का परिवेश ओढाने की जरूरत नहीं होती। उस व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति में हर शब्द वोना है।

गुरु जी जिन शासन रूपी गुलशन के जयगच्छ गुलदस्ते का पुष्पित विकसित पुष्प थी जिसकी सौरभ ने सभी को आकर्षित कर लिया था। क्रूर काल ने वह फूल तोड दिया। 26

अक्टूबर, 2002 को दिल्ली पीतम पुरा में मेरे श्रद्धाधार, मेरे संयम पथ के संबल, जीवन नौका के नाविक मुझे बीच राह में छोड़कर हाथ छुड़वाकर चले गये। पर मैं कहती हूँ गुरु जी मरे नहीं क्योंकि प्रतिभाशाली व्यक्तियों के लिए मृत्यु हमेशा एक मित्र बनकर आती है जो केवल एक लम्बे प्रवास में पुरुषार्थ की विश्राम स्थली जैसी होती है।

लेकिन बिना कुछ कहे, इतनी जल्दी गुरु जी के जाने से मुझ पर गम के बादल छा गए। दिल खोया-2 हर पल कुछ ढूँढ रहा है, जिस प्रभा के आलोक में राह दिखती थी वे किरणें खो गई हैं। मुझ थकी हारी को ठण्डी छाया देने वाला तरुवर गिर गया, प्यास बुझाने वाली नदी सूख गयी, हर आंधी तूफान से सुरक्षा करने वाला हिमालय ढह गया। गुरु जी के बिना जीवन सफर थका-2 सा लगने लगा है। दिल की वीरान बस्ती अपने मालिक को ढूँढती है। आपके बिना यह जीवन मृत सा प्रतीत होने लगा है। गुरु जी के जाने के बाद मेरे दिल की स्थिति बताने में मैं असमर्थ हूँ क्योंकि दर्द, पीड़ा, जुदाई की अनुभूति तो चैतन्य रूप है, लेखनी तथा शब्द भी जड़ हैं। चैतन्य की अनुभूति को केवल अनुभव किया जा सकता है प्रस्तुत नहीं।

दिल थाम के सुनाऊँगी, ऑसू रोक के बताऊँगी,
आज ही क्यों उम्र भर ही, तेरे तराने गाऊँगी।

फिर जिसने भी गुरु खोया है वे मेरी पीड़ा को समझने में अवश्य समर्थ होंगे। गुरु जी की जुदाई का सैलाब आँखों से बहने का प्रयास करता है बड़ी मुश्किल से थामती हूँ। गुरु वियोग के बाद कहीं दिल नहीं लगता, सब सूना-2 एकाकीपन लगता है।

नजर नवाज नजारों में जी नहीं लगता,
वो क्या गये कि बहारों में जी नहीं लगता,
शबे फिराक को ए चॉद आके चमका दे,
दिल उदास है तारों में जी नहीं लगता।

मन मन्दिर के सिंहासन का खालीपन बहुत खलता है। लेकिन गुरु जी की मधुर स्मृति सदा हृदयासन पर आसीन रहेगी। मेरे जीवन का कतरा-2 गुरु जी का ऋणी रहेगा। जिनकी कृपा तथा पुरुषार्थ ने मुझ अनपढ़ पत्थर को प्रतिमा का रूप दिया, अंधकारमय जीवन को प्रकाशित किया।

अणु में विभु की तरह छोटे से ग्रामीणॉचल में विराट व्यक्तित्व जन्मा था। वड़े भाई की मौत के सदमे ने मन वैराग्य से भर दिया। तभी गुरुदेव श्री धर्म मुनि जी म० सा० ने अंधेरे जीवन को रोशनी दिखाई, विचारों के भटकाव को सम्यक् दिशा दी। तव गुरु जी ने वैराग्य की आत्मिक ज्योति को जगाकर अविराम प्रगति के पथ पर बढ़ने का मानस बनाया तथा सभी बंधनों से मुक्त होकर मोक्ष पद के नजदीक पहुँचने का संकल्प किया। अपार प्रज्ञा

के धनी गुरु जी ने अति शीघ्र हर धम के प्रत्येक विषय का अध्ययन कर लिया। गुरु जी की प्रवचन शेली वेजोड थी, उनके सार गर्भित प्रवचन में सभी धर्मों के विषयों का सुन्दर तथा गहन समावेश रहता था। गुरु जी के 1990 में दीक्षा प्रसग पर दिए गए प्रवचन ने ही मेरे मन मस्तिष्क की भीतियों पर सदा के लिए उनका नाम अंकित कर दिया था। तभी मेरे भीतर वैराग्य का वीज वपन हुआ। उस प्रथम प्रवचन ने मेरे भीतर ओज आहार का काम किया था। साथ ही पूर्व भव का स्नेह सम्वन्ध स्थापित हो गया। हमारा ये स्नेह महज, सहज ओर नैसर्गिक था जो अनायास ही हो गया था। दीक्षा से पूव मे कहती थी कि मेरी शर्त रहेगी, श्री शारदा जी म० सा० की शिष्या वनकर मे हमेशा श्री सयम प्रभा जी म० सा० के साथ रहूँगी। प्रवचन सुनने के वाद एक वार तो दिल भयभीत हो गया ओर प्रवचन में जाना छोडने लगी थी कि प्रवचन सुनकर दिल में कुछ हलचल सी होती ह लेकिन सासारिक पापा जी जो उनका प्रवचन कभी नहीं छोडते थे, वे मुझे जवरदस्ती ले जाते थे। म० सा० के विहार के वाद दिल को सुकून मिला। परन्तु जव यह सुना कि श्री शारदा जी म० सा० का चातुर्मास इस साल यहीं है तो में कुछ घवरा गयी। लेकिन उस 1990 के चातुमास ने वेराग्य को मजवूती प्रदान की। तीन साल के पुरुषाथ से भी आज्ञा नहीं मिली तो मेंने गुरु जी को जोधपुर पत्र लिखा कि मुझे आज्ञा नहीं मिल सकती तो उन्होंने 3 लाइन लिख कर भेजी कि "ससार में मृत्यु को जीतना ही कठिन हे वरना वाकी काम मुश्किल तो हे असभव नहीं, चाहिए पुरुषार्थ" वस इन शव्दों से मानों हाथ में अस्त्र आ गया था। कइ वार अन्य साध्वियों के पास पारिवारिक जनों के आग्रह से मन वनाना चाहा लेकिन गुरु जी के प्रति आकर्षण मिट न सका। आखिर 1996 में घरवालों की स्वीकृति मिली ओर 26 जनवरी को वे मुझे लुधियाना छोड आए। उस समय दाद गुरुणी जी के आप्रेशन में सेवा हेतु गुरु जी हस्पताल में ही रहे ओर मुझे मोती नगर साध्वियों के पास छोड दिया गया। लेकिन व्यवहार कुशल गुरु जी ने गुरु सेवा को प्राथमिकता दी। मुझे गुरु जी के साथ जम्मू भेजा गया तव उनके चुम्वकीय आकर्षण तथा कुछ अन्य कारणों से मेने गुरु जी की शिष्या वनने का विचार किया ओर 17 फरवरी को गुरु जी ने मेरे जीवन को महाव्रतों का श्रृगार दिया। हम देह में आत्मा की तरह थे। वीच-2 में गुरु जी अपनी पुरानी वात दोहरा देते थे। (लुधियाना आते ही गुरु जी ने मुझसे कहा था, अजू - तुम कभी वेवफाई मत करना क्योंकि आज तक किसी ने मुझसे वफा नहीं की। मेंने वचन दिया था कि मैं ओरों की जेसी नहीं हूँ, मेरे पापा ने कभी किसी को धोखा नहीं दिया तो में भी उन्हीं द्वारा सस्कारित हूँ। में आपको छोड कर कभी नहीं जाऊँगी।) इतने स्नेह के वाद भी गुरु जी ने कभी मेरी गलतियों को नजर अदाज नहीं किया। एक वार कुरुक्षेत्र चोमासे में में गुरुजी को किसी वहन को गलती पर क्षमा करने के लिए वार-2 कह रही थी कि गुरु जी ने भरी सभा में मुझे डॉट दिया। वाद में ऊपर जाकर गले से लगा लिया। उनमें गुरु पद का अह नहीं था। गुरु जी सामने वाले के मनोभावों को समझने में पूर्ण समर्थ थे। में एक वार धन्नारी से हरियाणा में गुरुदेवों को पत्र लिखना चाहती थी, पर आज्ञा लेने में डर सा

लग रहा था। कुछ दिन बाद मैंने कहा - गुरुजी, गुरुदेव आज सपने में आये। बस इतना कहना था कि अगले दिन स्वयं बोले - अर्पण, लाओ म० सा० को पत्र लिख दें। गुरु जी को गलत बात, अन्याय तो बड़ों का भी सहन नहीं था और सही बात छोटों की भी मान लेते थे। गुरु जी हमेशा यह शिक्षा देते कि कभी गुरु से झूठ मत बोलो, विश्वास मत उठाओ और बाहर में कोई गलती हो जाए तो किसी गृहस्थी के कहने से पहले स्वयं आकर आलोचना कर लो।

गुरु जी मुझे एक अच्छा प्रवचनकार बना कर हर क्षेत्र में दक्ष करना चाहते थे। छत्तीसगढ़ जैसे इलाके में बड़े-2 श्रावकों से चर्चा करने के लिए बिठा देते। विहार भी करना होता तो मुझे आगे कर देते। कहते - अर्पण, मैं तो ढीली पड़ जाती हूँ, तू मजबूत है। इसलिए कह देना रुकने का भाव नहीं है। जिस कारण कुछ लोगों का मत था कि अर्पण की ही चलती है। मैं कहती तो गुरु जी कह देते - गुरु के लिए सुन रही है पराये के लिए तो नहीं। फिर सच्चाई तो मैं जानती ही हूँ। दीक्षा से पूर्व मैं सोचती थी कि साध्वियों का कोई चौमासा लेता है या स्वयं आगे होकर कहकर करवाती हैं। लेकिन प्रत्येक क्षेत्र तथा छत्तीसगढ़ जैसे इलाके में भी बड़े-2 श्रावक हाथ जोडे चातुर्मास की विनती करते थे तो मेरी भ्रमणा निर्मूल हो गयी। वहाँ सभी कहते थे - म० सा०, गुरु शिष्या का ऐसा स्नेह आज तक नहीं देखा।

कहता था सब जग हमको, ऐसी जोडी न देखी है,
गुनाह हुआ क्या मुझसे ऐसा, जो तोड डोर प्रीत की फैंकी है,
गुरु शिष्या के ऐसे प्रेम को, खुदा करे न नजर लगे,
सदा सलामत रहे ये जोडी, सब के थे ये भाव जगे ।

गुरु जी के जीवन में कई बार प्रसिद्धि के अवसर आये, श्रावकों ने आकाश की ऊँचाईयाँ छूने के लालच दिए लेकिन महाव्रत टूट कर बिखर जाये, ऐसी कीर्ति गुरु जी को पसन्द नहीं थी। गुरु जी को मुझ पर इतना भरोसा था कि श्रावक-श्राविकायें आकर मेरी शिकायत करते तो मानते नहीं थे। एक बार का प्रसंग - भण्डारा (महाराष्ट्र) में नवरत्न मल जी ब्रम्ब मेरे से पहले ही स्थानक में जाकर कहने लगे - अन्नदाता, अर्पण जी म० सा० गोचरी ठीक से नहीं लेते। गुरु जी ने कहा - श्रावक जी, उसे गोचरी लानी मेरे से भी अच्छी आती है। इतने में मैं पहुँच गई। गुरु जी ने पूछा - अर्पण, श्रावक जी के घर गोचरी क्यों छोड़ी। मैंने कहा - गुरु जी, जो निर्दोष था वह मैं ले आई हूँ तथा आपकी कृपा से बादाम के हलवे तथा काजू की बर्फी मे सम्प्रदायवाद के राग की गंध आ रही थी। इसलिए वे दोनों चीजें छोड दी। कुछ लोगों का कहना था कि संयम को गुस्सा, आवेश बहुत आता है। लेकिन मैंने निरीक्षण किया तो स्वर निकले -

गुलों ने खारों के छेडने पर, सिवा खामोशी के मुँह न खोला,
शरीफ उलझे अगर किसी से तो शराफत कहाँ रहेगी।

कभी किसी ने अपना निरीक्षण नहीं किया कि सामने वाले को गुस्सा क्यों आता है।

फिर गुरु जी अपनी आत्म आलोचना भी कर लेते थे। गुरु जी की जिन्दगी में बहुत बार उतार-चढाव आये लेकिन कभी परास्त नहीं हुए। उनके जीवन के सबसे विशेष गुण थे जीवन दर्पण की तरह स्वच्छ, खुली किताब की तरह दुराव-छिपाव रहित, असत्य के घोर विरोधी, संयम के पाबन्द, प्रत्येक कार्य समय बद्ध हो इसके लिए विशेष सजगता थी। प्रवचन के निर्धारित समय का पूर्ण ध्यान रहता था। कई बार महत्वपूर्ण विषयों को भी समयावधि पूर्ण हो जाने पर विराम दे देते थे। किसी के प्रति घृणा, दुर्भावना नहीं रहती थी। हृदय तो इतना विशाल था कि कई बार मैं कहती– गुरु जी, मुझे तो डर सा लगता है कहीं किसी साध्वी के मांगने पर आप मुझे भी न दे दें। तब कहते थे सेवा की दृष्टि से दे दूँगी वरना नहीं। गुरु जी की कथनी करनी समान थी। मुझे भी हमेशा यही शिक्षा देते – अर्पण, कोई गृहस्थी चर्चा के बारे में कुछ पूछ ले तो कभी झूठ मत कहना। उनके भीतर प्रेम का असीम सागर हिलोरे लेता था। प्रेम की भाषा, आन्तरिक भावना को अच्छी तरह समझकर कद्र करते थे। जैसे बच्चे के स्कूल से लौटने के समय पर एक माँ कहीं भी हो घर वापिस आ जाती है वैसे ही जब मैं दूर से गोचरी लेकर आती तो गुरु जी सामने ही बैठे मिलते और जब मुझे कभी गोचरी लाने में देरी हो जाती तो आने पर उनके चेहरे पर बेचैनी झलकती प्रतीत होती।

गुरु जी ने कभी किसी कार्य के लिए दबाव नहीं दिया, समझाते थे। प्रकृति चाहती थी कि यह प्रकाश पुन्ज दूर दराज क्षेत्रों में जाकर ज्ञान का प्रकाश विकीर्ण करे। तब मुझे पाकर उन्होंने विचरण करके अपनी अमोघ वाणी द्वारा शासन तथा जयगच्छ के उपवन को सरसब्ज बनाया। शासन को दिपाने में भागीरथ पुरुषार्थ किये। नौजवानों तथा समाज में उठे प्रश्नों को सुनकर वे अनसुना नहीं करती थी बल्कि बात के अतीत में जाकर सच्चाई तथा वास्तविकता को खोजते थे। अंत समय की शारीरिक पीड़ा का मुकाबला जैसी समता से मेरे गुरु जी ने किया वो तो मैं या प्रत्यक्ष देखने वाले ही समझ सकते हैं। ऐसी बीमारी देखकर दिल रोता था मेरा, घबराती थी मैं।

ऐ फलक इतना हसाया न था तूने,
जिसके बदले इतना रुला दिया।

गुरु जी ने तो मुझसे वचन लिया था छोड मत जाना लेकिन ' मुझको फरेब देकर मेरे रहनुमा ने लूटा दामन छुडा लिया है इतने करीब लाकर। गुरु जी को मैं हमेशा कहती थी कि हमारे स्नेह को देखकर सभी हैरान हैं। एक आश्चर्य और होगा जब दोनों की चिता एक साथ सजेगी। गुरु जी के जाने के बाद ऐसा लगता है 'अर्पण' नाम बदल लूँ क्योंकि उनका ही मन पसन्द नाम था ये। जब ये नाम पुकारने वाले ही नहीं रहे तो नाम का क्या रखना। अब की अन्य म० सा० के द्वारा अर्पण नाम से पुकारने पर डूब जाता है दिल अतीत की सुखद स्मृतियों में। गुरु जी को याद करने का सिलसिला कभी बंद नहीं होगा। पर पता नहीं वे अपने वादे याद रखते है या विस्मृत हो गये हैं।

जीऊँगी जब तक तेरे फसाने याद आएंगे,
कसक बनकर प्रीत के तराने याद आएंगे,
मुझे तो जीना है अब तेरी यादों के सहारे,
क्या तुम्हें भी अपने किए वादे याद आएंगे।

पता नहीं गुरु जी की यह जुदाई कैसी थी क्योंकि पवन को तो चकवी की पीड़ा देखकर जीवन साथी का हाल पता चला था। लेकिन गुरु जी ने तो तीन बार प्रत्यक्ष अनुभव किया था कि उनके बिना मेरी स्थिति कैसी हो जाएगी। ट्रक से दुर्घटना होने से बचने पर, गुरुदेव श्री सुदर्शन लाल जी म० सा० के देवलोक पर, छिंदवाडा में D N C. के समय काफी देर बाद होश आने पर। फिर भी गुरु जी छोड़ गए हैं तो ''हम तो उसी में राजी है जिसमें तेरी रजा है।'' गुरु जी की यादें, उनका स्नेह मेरे शरीर में रक्त बनकर बहता रहेगा। यादें धूमिल तो क्या धुंधली भी नहीं पड़ सकती।

एक तेरी याद का आलम है जो भूला ही नहीं,
वरना तो वक्त के साथ हर चीज बदल जाती है।

अब विहार करती हूँ तो सड़क किनारे के पेड़-पौधे पूछते हैं, साथी कहाँ छोड़ दिया, पर मैं कहती हूँ - क्या पूछते हो गमे हाल दिल का, अपना तो सब कुछ लुट गया है। गुरु जी की शिक्षाएँ अनमोल धरोहर के रूप में हमेशा मेरे पास रहेगी जो मेरे मार्ग को प्रशस्त कर मेरे जीवन के विकास को वर्धमान करेगी।

निगाहें ढूँढती हैं जब, नहीं मिलता निशां उनका
मगर जब दिल बुलाता है, तो उन्हें नजदीक पाते हैं।

मुझे मेरे पैरों पर खड़े करने का प्रयास जो गुरु जी कर गये हैं यह उपकार हमेशा स्मृति में रहेगा। गुरु जी का जीवन शीघ्रता से शुरू होकर शीघ्रता से सिमट गया। गुरु जी का जन्म जल्दी में हुआ था। घर से भी जल्दी में गए, दीक्षा शीघ्र हो गयी, इतनी जल्दी यश कमाया, कार्य तथा विहारों की जल्दी रहती थी, देवलोक के दिन भी संस्कार शीघ्र हो गया। गुरु जी के देवलोक के बाद तो चिंतन चला अब किसके सहारे, किसके लिए जीना लेकिन फिर स्वयं को संभाला। नजारे नजर के सामने घूमते हैं कि जब मैं तपस्या करती थी तो गुरु जी सुबह-2 पूछते थे और भई मेरे शेर साता तो है। उस दिन 17 तारीख को हस्पताल में दिल्ली रात को जब गुरु जी के बुखार के बढ़ने से मैं नर्स को बुलाने गयी तो मेरे बेहोश होकर गिर जाने से गुरु जी कितने परेशान हो गये थे। गुरु जी ने अपनी बीमारी में मुझे कभी परेशान नहीं किया। 40 गॉव में रात को सॉस रुकने पर चुपचाप उठकर जाने का प्रयास करते थे। कहते थे तू सारा दिन थक जाती है जब से मेरे पास आई है सिवा परेशानी के क्या दिया ? गुरु जी हमेशा कहते थे - अर्पण, तेरे बिना तो मानों मैं अधूरी हूँ। लेकिन लगता है मैं अधूरी हो गयी हूँ। अब गुरुदेव ही मेरे इस अधूरेपन को पूर्ण करेंगे।

रुखा शीश टूटे तो, हर कोई सुन सकता ह,
कुचला जाना दिल कुसुम का, किसे सुनाई पडता हे।

वहुत सी वाते ह, जो वतलाई नही जाती,
भावना दिल की धडकन हे, जो दिखलाई नहीं जाती।



हर दिल मे तेरी छवि

— साध्वी श्री वैशाली प्रभा जी म०

गागर में सागर का समावेश करना शायद यह एक परिहास ही होगा क्योंकि -

क्या कहूँ, कसे कहूँ, कितना कहूँ
वात सूरज की, दीपक की जुवानी ह।
जो भी कहूँगी अल्प ही होगा, कमी ही होगी,
क्योकि सागर की गाथा, वूँद की जुवानी हे।

वहुरत्ना वसुन्धरा" वेसे तो इस धरा पर मोतियों का अभाव नहीं है। सागर की तलहटी में अनगिनत मोती हैं लेकिन कोई विरला मोती ही उस तलहटी से निकलकर जोहरी के हाथ में आता है तथा अलकार में अलकृत होकर कण्ठ की शोभा वनता हे। वैसा ही अनमोल हीरा जोंधन से पाकर गुरुदेव श्री धर्म मुनि जी म० सा० रूपी जोहरी ने 12 मार्च, 1986 को जिनशासन की माला में जडा था। श्री सयम प्रभा जी म० सा० ही वो हीरा था जिसके ज्ञानी आलोक ने सघ, शासन को आलोकित किया। सर्वप्रथम सन् 1995 में श्री प्रेम मुनि जी म० सा० के वडोदा चातुर्मास में उनके प्रवचन आदि के विपय में सुना था तव उसे प्रखर प्रभा स्वर व्यक्तित्व की झलक पाने को मन आतुर हो उठा। गुरुदेव ने हमें वठिण्डा दर्शनार्थ भेजा ओर देखिए शुभ सयोग जिन्हें देखने को दिल आतुर था, उन्हीं से ही वातें हुई उस माधुर्य रस से परिपूर्ण वाणी को सुनकर में वहुत प्रभावित हुई लेकिन चर्चा के दोरान खवर लगी कि म० सा० का प्रत्याख्यान हे कि वे अपने द्वारा प्रतिवोधित को ही शिष्या वनाएगे। हम दर्शन करके वापिस आ गये लेकिन उनका मधुरतापूरित जीवन हृदय में अंकित हो गया। वेराग्यकाल में म० सा० ने हमें जम्मू दिखाया तथा हमेशा हमें सुन्दर जीवन निर्माण की शिक्षा दी। म० सा० की सरलता, सत्यता, उदारता तथा कुशाग्र वुद्धि से में विशेष प्रभावित थी। म० सा० की सवसे वडी खासियत थी उन्हें झूठ वोलना तथा झूठ वोलने वाला कतई पसन्द नहीं था। सयम की ये प्रतिभा जयगच्छ का देदिप्यमान नक्षत्र थी। वे सहज, सुलभ साधना का खजाना थी। म० सा० के शरीर को अकस्मात असाध्य विमारी ने घेर लिया। हम सभी वहुत चिंतित थे। म० सा० सभी को कहते थे कि इस नोका रूपी देह का ख्याल रखो लेकिन स्वय ने कभी परवाह नहीं की। म० सा० ने उत्तर तथा मध्य भारत तक विचर-विचर कर

लोगों को भगवान के सन्देशों से अभिसिंचित किया है। 40 गॉव में म० सा० की अस्वस्थता के समाचार सुन-सुन कर सभी चिंतित होते थे। उन्हें जब दिल्ली लाया गया तो कुछ दिन ही सेवा का मौका मिला। उन दिनों मैंने उनके चेहरे पर कमाल की समता देखी। अर्पण जी म० सा० ने ऐसे में इतने हौंसले से म० सा० को संभालकर अदम्य साहस का परिचय दिया है। 26 अक्टूबर को म० सा० भले ही हम सब को छोडकर चले गए हैं फिर भी -

हर लब पे जिक्र तेरा, हर लब पे नाम तेरा,
खामोश होने वाली, चर्चा है आम तेरा।

म० सा० भले ही शारीरिक दृष्टि से हमारे पास नहीं हैं परन्तु इस संसार से प्रयाण कर जाने के बाद भी उनकी संयम साधना, सरलता, प्रवचन कला का सुवास अनंत अक्षय कोष से कभी लोप नहीं होगा। मैं शासन प्रभु से यही प्रार्थना करती हूँ कि मुझ में भी इतनी सामर्थ्य आये जिससे मैं म० सा० के गुणों को आत्मसात कर सकूँ। ❑



व्यक्तित्व जिंदा रहेगा

– साध्वी वैभव श्री जी

सृष्टि की गोद में कुछ ऐसे व्यक्ति जन्म लेते हैं जिनके अनंत में विलीन हो जाने पर भी उनकी मूर्ति जनमानस के हृदय पटल पर चिरकाल तक बनी रहती है। ऐसी ही मूर्त के विषय में कुछ लिखने का असफल प्रयास कर रही हूँ लेकिन उस विशाल जीवन को लिखने में शब्द तुच्छ दिख रहे हैं। म० सा० का ख्याल आते ही अतीत वर्तमान में बदलकर आंखों के सामने दृश्य बनकर घूमने लगा। उनके विशाल तथा असम्प्रदायिक दृष्टिकोण ने मुझे विशेष प्रभावित किया। म० सा० जयगच्छ में तारों के बीच चन्द्रमा के समान सुशोभित थी। उनके आकर्षण व्यक्तित्व तथा अद्भुत प्रवचन शैली से प्रत्येक व्यक्ति बरबस उनकी और खींचा चला आता था। जब मुझे मेरी दीक्षा से कुछ दिन पहले पता चला कि जिनकी प्रवचन शैली का इतना जिक्र संघ में होता है, वे म० सा० ब्यावर पधार चुके हैं। मैंने उस महान विभूति के दर्शन की उत्सुकता लेकर तुरन्त ब्यावर दर्शन किए। बस उनके दर्शन क्या हुए उनकी छवि दिल में समा गई। फिर मेरी दीक्षा प्रसंग पर म० सा० के जीवन को नजदीकी से देखा तो लगा वास्तव में एक विलक्षण प्रतिभा थी उनमें। ढेरों ही सुन्दर शिक्षाऍ मुझे दी जिससे मेरा संयमी जीवन एक मिशाल बने। म० सा० का इस तरह इतनी जल्दी प्रयाण कर जाना एक अनहोनी घटना है। हम सब तो देवलोक का समाचार सुनते ही स्तब्ध रह गए। पुनः - पुनः समाचार मंगवाये ताकि कोई यह कह दे कि बस तबियत ही खराब है लेकिन इस कड़वी सच्चाई का घूँट पीना ही पड़ा। किन्तु संथारापूर्वक देवलोक गमन हुआ, यह सुनकर मन कुछ आश्वस्त हुआ कि चलो संयम का सार निकाल लिया। परम श्री जी के धैर्य का बाँध टूट गया। म० सा० की आत्मा शीघ्र अपने लक्ष्य प्राप्ति में सफल हो, यही भावनार्पण है।

जिन्दगी ऐसी भी होगी, ये कभी सोचा न था,
कुछ कमी ऐसी भी होगी, ये कभी सोचा न था।
ना वहे ओर ना ही सूखे अश्क आखो से मेरी,
कुछ नमी ऐसी भी होगी, ये कभी सोचा न था।



एक मधुर यादगार

– साध्वी दिव्य श्री जी म०

प्रकृति के ऑचल में प्रतिदिन सैंकडों फूल पुष्पित, पल्लवित होते हैं। कुछ कली से फूल वनते ही चन्द रोज में मुरझा जाते हैं कुछ लम्बे समय तक विद्यमान रहते हैं। जरूरी नहीं कि कई वसन्त देखने वाला फूल ही सुरभि प्रसारित करे। कभी-कभी एक दो दिन का खिला फूल जो अपने सोन्दर्य, सौरभ से सभी को आकर्षित कर लेता है और उसकी महक को व्यक्ति उसके गिरने के वाद भी अनुभव करता है। सयम प्रभा जी म० सा० भी एक ऐसा ही पुष्प था, जिनके गुणों की सोरभ वर्षों तक सभी को महकाती रहेगी।

व्यक्ति चला जाता है स्मृतियॉ रह जाती हैं, हर फूल की मिट्टी मे महक रह जाती है।
धन्य हैं वे लोग जिनके मरने के वाद, श्रद्धा और आस्था भरी गाथा रह जाती है।।

में म० सा० के गुणों से सरावोर जीवन के विषय में सभी से सुनती थी तो उन्हें देखने की उत्कठा मन में पैदा हुई लेकिन वे तो इतनी दूर महाराष्ट्र में थे कि लम्बे समय तक दर्शन होने के कोई आसार दिख नहीं रहे थे। जव मेरी जीवन निर्मात्री श्री चेतना जी म० सा० उनकी अस्वस्थता को सुनकर उन्हें वापिस लाने जा रही थी और मेरा भी साथ जाने का सयोग बना। मुये याद हे वो क्षण जव मिलन के अन्तिम दिन कदमों में कितनी तेजी थी। जेसे ही अगवानी में सामने से आते हुए म० सा० को देखा तो मन प्रसन्नता से सरावोर हो गया। मुझे सुअवसर मिला उनके चरणों में रहने का। म० सा० ने मुझे स्नेह से भर दिया। हर वस्तु तथा आहार पानी में मुझे प्रमुखता देते थे। मैंने देखा कितना ऊँचा व्यक्तित्व था उनका, जिसकी तुलना में शब्द लिख नहीं सकती। जिधर से भी निकल गए वहीं पर जनता उनके प्रवचन से वधी उन्हीं की हो जाती थी। म० सा० को अनुशासन प्रियता पसन्द थी। म० सा० सरीखी निडरता मैंने आज तक नहीं देखी। गुजरात के दगों के वातावरण में भी निर्भीकता से वढते रहे। अन्त समय में हम महसूस करते थे कि म० सा० को वहुत वेदना हे लेकिन चेहरे से झलकती नहीं थी। वे दिल्ली जाने से विल्कुल इनकार करते थे पर आखिरकार वहीं जाना पडा ओर वहाँ जाते ही हमारी प्रेरणा पुन्ज हमें छोडकर वहुत दूर चली गयी। काश म० सा० वर्षों तक रहते ओर लोगों का पथ रोशन करती क्योंकि मैंने देखा हे कि म० सा० स्वय घर-घर जाकर वडे कठोर पुरुपार्थ से नोजवानों के व्यसन छुडवाती तथा लोगों को धर्म

से जोड़ती थीं। म० सा० के जाने से जय संघ में एकदम उदासी छा गई। म० सा० की मोहनीय मूरत हर समय आँखों के सामने तैरती रहेगी। ❑



मोहक, प्रभावक व्यक्तित्व

– संघनायक शास्त्री श्री पद्म चन्द्र जी म० सा०

बडे गौर से सुन रहा था जमाना,
तुम्हीं सो गए दास्तां कहते-कहते ।।

साध्वी रत्न संयम प्रभा की जीवनी अनन्त आकाश में प्रकाशित होकर शीघ्र ही गायब हो जाने वाले प्रातः कालीन नक्षत्र जैसी रही है। 36 साल की स्वल्प वय में जो कुछ किया, अप्रतिम किया, जो पाया, सुश्लाघ्य पाया। हरियाणा की ठेठ देसी माटी में पैदा हुई यह श्री कुन्दन लाल जी की बेटी उन-उन छोरों को छू चुकी थी, जिसकी कल्पना सामान्य जन नहीं कर सकता। एक निर्बल और रुग्ण देह लेकर भी जिस सिंहोपम आत्मशक्ति का विस्फोट उन्होंने किया था, वह अपने आप में एक उदाहरण है। जैन शासन का समुज्ज्वल नक्षत्र, जो शीघ्र चन्द्रमा की आभा के रूप में परिवर्तित होने वाला था, अचानक ऑखों से ओझल हो गया। मेरे मन को यह एक मलाल रहेगा कि अन्तिम समय में उन्हें हमारे पास लाया गया पर हम उन्हें बचा नहीं पाए। फिर भी इतना सोचकर ढांढस भी मिलता है कि अन्तिम समाधि में हमसे जो बना, हमने किया।

पूज्यपाद, संघ शास्ता, शासन प्रभावक, गुरुदेव श्री सुदर्शन लाल जी म० की उन पर विशेष कृपा रही थी। उनके स्वास्थ्य को लेकर भी गुरुदेव बहुत चिन्तित रहते थे। उनके गुर्दों की Test Reports को पुछवाते रहते थे। समय-समय पर मार्गदर्शन भी देते रहते थे। उनकी अदम्य जीवन शक्ति के गुरु महाराज भी कायल थे और हम भी। वो कहीं भी रुक नहीं सकती थीं, कहीं भी अनावश्यक झुक नहीं सकती थीं। मध्य प्रदेश, राजस्थान, महाराष्ट्र, छत्तीसगढ़ के उन इलाकों को धर्म श्रद्धा से समृद्ध करना, जहाँ स्थानीय साधु-सती श्री पहुँच नहीं पाते थे, वहॉ जोंधन की जुझारू योद्धा का पहुँचना एक आश्चर्य से कम नहीं था। उन्होंने अल्प काल में ही अपने जन्म वंश और धर्म वंश को नए रंगों से भरपूर कर दिया था। अपनी पावन जयमल जी म० की परम्परा एवं गुरुणीवर्या श्री शारदा जी म० के नाम को दिगन्तों तक पहुँचाया।

अपनी एक मात्र शिष्या अर्पण प्रज्ञा - हमारे लिए प्यारी अंजू - के जीवन में जो संयम की प्रखरता, त्याग तप की वेधकता एवं सिद्धान्तों के प्रति अडिगता भरी, वह युगों-युगों तक स्मरणीय रहेगी। भयंकर बीमारी का जिस साहस से सामना किया, वह भी एक मिसाल है। उनकी लगभग आखिर तक यही कोशिश रही कि रोग का उपचार साधु मर्यादा के अन्तर्गत

ही कराया जाए। जब समाज के सामने कोई विकल्प नहीं बचा था तथा गुरु और गुरुणी की आपात आना हुई, तब ही उन्होंने उपचार के लिए दिल्ली महानगर में लाए जाने की अनुमति दी। उनमें जिजीविषा तो थीं पर जीवन मोह नहीं था। हमने अत तक उनके चेहरे पर, आँखों में, मस्तक पर और भाषा में तेज और चमक देखी हे। हम ये कह सकते हैं कि उन्होंने जो भी जीवन जीया, वह शानदार जीवन जीया। उनके देवलोक गमन के तुरन्त बाद की एक घटना का उल्लेख करना जरूरी समझता हूँ। जिसे आज का सारा आडम्बरपूर्ण समाज समझे और उसकी कद्र करे।

26 अक्टूबर को उत्तरी पीतमपुरा की स्थानक में हमारे सामने ही उन्हें नि शेष घोषित किया गया। समग्र पीतमपुरा समाज उपस्थित था। शरीर सस्कार के लिए विचार-विमर्श समाज के गणमान्य व्यक्ति कर रहे थे। तभी उनकी सुयोग्य, धेर्य की प्रतिमूर्ति शिष्या अर्पण (अजू) ने कहा कि शरीर को देर तक नहीं रखना। जो समाजोचित कार्य करने हे, वे तुरन्त कर दिए जाए। अधिक देर तक शव रखने से सम्मूर्च्छिम जीव पैदा होते हे। अपनी गुरुणी, अपनी जीवन निर्मात्री, अपने प्राणाधार के निष्प्राण शरीर के प्रति तनिक भी ममता भाव नहीं आने दिए और न ही ये ख्याल आया कि अन्तिम सस्कार में हजारों व्यक्तियों की उपस्थिति हो। समाज की इच्छा थी कि कम से कम एक रात तो शरीर को रख लेते ह, सामाजिक दायित्वों का तकाजा भी हे तथा अन्यत्र लम्बे समय तक शरीर रखने के लिए समाज पर दबाव पडता हे परन्तु यहाँ तो सब कुछ उल्टा हो रहा था। साध्वी जी ने दृढना से इनकार कर दिया। हम देखते रहे कि सयम प्रभा जी ने कितना मजबूत हीरा तराशा है। न भाव विह्वलता, न मोहातुरता, न व्यर्थ विलाप और शोक। हम मान गए कि आज भी जेन शासन में इतनी शेरे दिल साध्वी हे। अन्तत समाज को झुकना पडा और यह झुकना सिद्धान्त की स्वीकृति थी।

अगले रोज श्रद्धाजलि सभा में भी उनकी गुरुणीवर्या ने तथा शिष्या रत्न ने जो होंसला दिखाया था, वह हमारी स्मृतियों में अंकित और टंकित रहेगा। में तो यही सोचता रह गया कि एक मोहक-प्रभावक व्यक्तित्व का विलोप करके काल को क्या मिला ? सस्कृत की एक अन्योक्ति हे –

नानन्दि करवमवर्धि नवाम्बुराशि -
रादीपि नाम्बर महारि न वान्धकार ,
धिग् दैव दुर्विलासित पदसोसुधाशु,
रभ्युद्यतश्चतमसा कवलीकृतश्च ।।

अथात् पूर्णिमा की रात, चाद की चादनी अपने वेभव की ओर अग्रसर हो रही थी। अभी कुमुदों के उपवन आनन्दित होने वाले ही थे, सागर में ज्वार उमडने वाला ही था, गगनागन सफेदी से नहाने के करीब ही था, लेकिन दुर्भाग्य का क्रूर खेल देखिए कि यकायक

तुरन्त उदित हुए चांद को राहु ने अपना ग्रास बना लिया।

असमय में उनके जाने से जो अनेकानेक हृदय आहत हुए, उनमें से हम भी हैं। फिर भी 'यशः शरीरेण मृता सा जीवति'। वे देह से ही दूर हुई हैं। उनका यश आज भी यहाँ है। उन्हें शरीर के प्रति ध्यान भी नहीं था। उन जैसी आत्माओं के लिए कालिदास की सटीक उक्ति है –

'एकान्त विध्वंसिषु मद्विधानां शरीरेष्वनास्था खलु भौतिकेषु।।'

यह शरीर तो भौतिक और एकान्ततः विनाशशील होता है। अतः इसके प्रति मेरा कोई लगाव या अपनत्व नहीं है।

उस देहातीत आत्मा को सादर स्मरण और श्रद्धार्पण।। ❑



शासन की विरल विभूति

– प्रज्ञा महर्षि, आगम रत्नाकर
भगवन श्री राम प्रसाद जी म० सा०

जैसे ही समाचार मिले साध्वी संयम प्रभा जी अपनी इहलोक यात्रा को सम्पूर्ण कर संसार पड़ाव की सीढ़ी समाप्त कर गई हैं, तो दिल को बड़ी ठेस लगी। संयम के प्रति उनके वैचारिक, दृाढ्य तथा औदार्य भाव के लिए सद्आचरणों की संस्तुति सुनते रहे थे। जाट कुलोत्पन्न तथा संस्कार सम्पन्नता के साथ संयम सम्पन्नता का सद्भाव सदैव प्रभावी रहा। जयमल गच्छ की विरल प्रसूति अपनी विभूति को समेट गई हैं। श्री धर्ममुनि जी द्वारा प्रतिवोधित संस्कारों को अन्तिम श्वास तक वर्धमान रखा। श्री शारदा जी की शरद पूर्णिमा सी सौम्य छाया में सदैव शान्त सुशान्त संयम जीवन निभाया। अर्पण की अर्पणता तथा वैनयिक प्रज्ञा ने सेवा के उच्चतम शिखरों को छूआ। संवेदना सांत्वना भगवन श्री जी की हमेशा अर्पण जी के साथ रहेगी। ❑



संघ की दिव्य ज्योति

– उपप्रवर्त्तक श्री प्रेम मुनि जी म० सा०

भारत की इस पुण्य धरा पर प्रतिदिन सैंकड़ों लोग जन्म लेते हैं तथा मृत्यु की गोद में समा जाते हैं। लेकिन कितने ही व्यक्ति ऐसे होते हैं जो मर कर भी अमर हो जाते हैं। सदियों तक जमाना जिसे याद करता है जिनकी स्मृतियाँ कभी विस्मृत नहीं होती। ऐसी ही दिव्य विभूति जन्मी थी जोंधन ग्राम के चौधरी कुन्दन लाल जागलान की धर्म संगिनी श्रीमती प्यारी देवी की कुक्षि से कुमारी राजबाला, जो आगे चलकर साध्वी संयम प्रभा जी के नाम से जग

में विख्यात हुई।

जव 1985 में हम जोंधन गए तो वहॉ श्री धर्म मुनि जी ने उसे दीक्षा लेने के लिए कहा ओर वह तेयार हो गयी थीं। मेंने देखा कितनी हिम्मत, होंसला था उसमें। सकल्प तो इतना मजवूत था कि मरना मजूर था पर झुकना नहीं। पानीपत में 12 मार्च, 1986 में दीक्षा पाठ पढकर सयम रथ पर आरूढ होकर सयम प्रभा जी ने अनेकों क्षेत्र में विचर कर अपूर्व धर्मोद्योत किया। साध्वी जी का जीवन उज्ज्वल नक्षत्र सरीखा था। साध्वी जी की प्रवचन शेली ने हर क्षेत्र में धूम मचा दी थी। उनके सयमी जीवन तथा प्रवचन का प्रभाव केवल जेन समाज पर नहीं अपितु जेनेतर लोगों को भी उन्होंने आकर्षित कर लिया था। इतनी अल्प दीक्षा पयाय में इतने क्षेत्रों में विचरना तथा इतना यश कमाना कोई साधारण वात नहीं हे। घोर तपस्वी पूज्य गुरुदेव श्री रोशन लाल जी म० सा० का जीवन साध्वी जी का मार्ग दर्शन करता रहा। दृढ मनोवल की धनी सयम प्रभा जी इतनी वडी गुर्दे की वीमारी होने पर भी न हारी, न घवराई, अपितु अपने साधना पथ पर पूर्ण आत्म वल के साथ आगे वढती रही। जव-जव हमें उनकी वीमारी के समाचार मिलते थे तो हम चिंतित हो जाते थे पर सयम प्रभा जी निर्भीकता से वढती रही। अन्त समय में जव वे गुजर खेडी पधारीं तो मैंने गोर किया कि उनका शरीर भले ही दुर्वल हो गया था पर वाणी से वही दृढता की चर्चा कर रही थीं। जेसे ही 26 अक्टूबर को दिव्य ज्योति के लोप जाने के समाचार मिले तो एक दम ऐसा लगा शासन ने वहुत कुछ खो दिया हे।

हजारो सालनरगिस, अपनी वेनूरी पर रोती है।
वडी मुश्किल से होता है, चमन मे दीदावर पैदा।



बडी मुश्किल से पाया था हीरा

– लोहपुरुप, स्पप्ट वक्ता
श्री धर्म मुनि जी म० सा०

ससार परिवर्तनशील हे, उपा तथा साझ की तरह जन्म मरण का प्रवाह वह रहा है। व्यक्ति तो प्रतिदिन वहुत सख्या में जन्म लेते हैं। लेकिन उनमें से हर किसी का जन्म लेना सार्थक नहीं होता। विरले ही होते हें जो मनुष्य भव को सार्थकता प्रदान करते हैं। जिनका जीवन अनन्त आकाश में चमकते सूर्य की तरह देदिव्यमान रहता हे। जो अपने तप सयम आदि सदगुणों की सोरभ से पूरे वातावरण को सुरभित कर देते हैं। ऐसी ही सयम, सत्य, सरलता की जीवत प्रतिमा थी साध्वी सयम प्रभा। 1985 में जव मैं गुरु भ्राता के साथ जोंधन गया तो वहॉं पर नम्वरदार कुदनलाल जागलान की वेटी वाला मेरे पास चाय का त्याग करने आई। उस 'वाला' के ललाट को देखकर आत्मा से वरवस आवाज आई कि यह लडकी अगर

दीक्षा ले लेगी तो इसका सिंहनाद सुप्त जनों को जागृत करेगा तथा शासन की महत्ती प्रभावना करेगी। आज्ञा लेने के सन्दर्भ में जब उसका बुलन्द हौंसला तथा दृढ़ संकल्प देखा तो लगा यह लड़की संयम पथ की राही बन कर सूर्य की भांति चमकेगी। दीक्षा उपरान्त संयम प्रभा जी का प्रवचन सुनकर मन गद्गद् हो गया था। हमारी हमेशा यही भावना रहती थी कि यह साध्वी आकाश की अनन्त ऊँचाईयों को छू जाए। 4 साल के दक्षिण विचरण में श्रावकों द्वारा उनकी शोभा सुनी तो मन की प्रसन्नता का पार न था कि दूरस्थ क्षेत्रों में क्षेत्रीय कठिनाईयों तथा शरीर की अस्वस्थता के दौरान भी संयम मर्यादा का पूर्ण ध्यान रखा है। अन्त समय में जब-जब शारीरिक अस्वस्थता के समाचार आते तो मन में बेचैनी छा जाती क्योंकि यही सोचता था कि साध्वी जी का सलामत रहना समाज शासन के लिए नितान्त आवश्यक है। लेकिन सोचा हुआ एक स्वप्न मात्र रह गया। मुझे खेद है कि मैंने उन्हें 40 गाँव से यहाँ बुलवाया लेकिन बचा न पाया। संयम प्रभा जी भले ही चली गई हैं लेकिन उनका बेमिसाल, प्रभावशाली व्यक्तित्व सदा कायम रहेगा। संयम प्रभा जी विशुद्ध निर्मल, निशल्य होकर देवलोक पधारी हैं क्योंकि गुर्जर खेड़ी में आकर उन्होंने अपनी पूर्ण रूपेण आलोचना कर ली थी। साध्वी जी ने अन्तिम क्षण तक निर्मल संयम की प्रतिपालना की क्योंकि हमारे द्वारा हरियाणा पधारने के समाचारों को पाकर इतनी रुग्ण अवस्था में भी उन्होंने किसी भी प्रकार का दोष लगाने से स्पष्ट इनकार कर दिया था।' अन्त में हमारी यही मनोभावना है कि संयम प्रभा जी अविलम्ब निरतिशय निकाय को उपलब्ध होकर सिद्धावस्था को प्राप्त हों -

हर लब पे जिक्र तेरा, हर लब पे नाम तेरा,
खामोश होने वाली, चर्चा है आम तेरा,
पुरनूर तेरा चेहरा, हरदम नजर के आगे,
कानों में गूंजता है सबके, हरदम कलाम तेरा।



प्रतिभा सम्पन्न जीवन

– महा स्थविर श्री प्रकाश चन्द्र जी म० सा०

कल पूज्य गुरुदेव संघ नायक जी द्वारा समाचार मिला कि सर्वतोमुखी ख्याति प्राप्त धर्म धुरंधरा श्री संयम प्रभा जी म० सा० अपनी जीवन लीला समेट गई हैं। इस घटना के विषय में सुनते ही मन को गहरा आघात लगा। संयम प्रभा जी तप व संयम प्रिय सुसाध्वी थी। हमारा उनसे मिलना प्रथम बार जंडियाला में तथा पुनः नवॉं शहर में हुआ था। दो बार के मिलने में दिल पर छाप छोड़ी थी, उनकी प्रवचन शैली का तो क्या कहना, उसके तो सभी कायल थे। साध्वी जी ने लघुवय में ही साधना की जिन ऊँचाईयों को स्पर्श किया, वह अनुपम हैं। अन्तिम समय में अस्वस्थता की हालत में घोर कष्ट में जो उन्होंने शान्ति, क्षमा व सहिष्णुता का परिचय दिया है, वह आने वाले समय के लिए एक यादगार आदर्श रहेगा।

शासन तथा सघ को उनकी कमी हमेशा खलती रहेगी। साध्वी जी के चुम्बकीय व्यक्तित्व से प्रभावित होकर अन्जु (अर्पण प्रज्ञा) ने जो उनका शिष्यत्व स्वीकारा था उस पर तो यह घोर वज्रपात है। वे ऐसे समय में समाहित रहें, यही कामना है। साध्वी जी शीघ्रातिशीघ्र शाश्वत सुखों को प्राप्त हो, ऐसी शुभेच्छा है। ❑



साम्प्रदायिक सकीर्णता से स्वतन्त्र

– तरुणाचार्य श्री विजय राज जी म० सा० के
आज्ञानुवर्ती सरलमना श्री प्रेम मुनि जी म० सा०

'उद्यान' शब्द के सुनते ही एक सुन्दर वगीचे का दृश्य ऑखों में तैरने लगता है, जिसमें हरे-भरे छायादार विशाल वृक्ष एव रग-विरगे पुष्प दिखाई देते हैं। वैसे ही "सयम प्रभा" यह नाम सुनते ही ऑखों के सामने एक जीवन्त चित्र अवतरित होने लगा। "सयम" की महादेवी का जिसने अपने जीवितव्य को प्राप्त ही नहीं चरितार्थ कर दिखाया। सस्कारों की समृद्धि किसी जाति कुल वय या पर्याय की वपौति नहीं हुआ करती है। हर आत्मा सस्कारों का उत्तम पाथेय ले साधना के सुपथ पर सत्तारूढ हो सकती है। विदुषी साध्वी रत्ना जी से सूरत प्रवास में माडल टाऊन में मिलने का सुअवसर प्राप्त हुआ। सती जी साम्प्रदायिक सकीर्ण घेरे से ऊपर उठकर जिन शासन के सजग प्रहरी का आदर्श चरितार्थ कर रही थी। उनके आचरण में विनय, व्यवहार कुशलता, मिलनसारिता से लगता था कि शील तथा सयम की साक्षात महादेवी अवतरित हुई हो। महासती जी की प्रवचन कला अद्भुत एव प्रभावोत्पादक थी तथा आत्मवल मजवूत था। सूरत में हम महसूस कर रहे थे कि विहार जेसा साहस साध्वी जी अपने आत्मवल से कर रही है। इसलिए हमने आग्रह भी किया कि आप यहाँ विराजें, हम तथा सघ पूर्ण रूपेण यथायोग्य सेवा में तत्पर रहेंगे। अच्छा होता कि परायेपन की सकीर्ण दुनिया में वे हमें भी परख लेती। लगभग 36 वर्ष की लघुवय में लोकोत्तर पथ पर प्रयाण करने से जिन शासन की महती अपूरणीय क्षति स्वरूप है। हमें तो इस आकस्मिक घटना से गहरा आघात लगा ही हे, लेकिन साध्वी अर्पण जी जिनके साथ अल्प समय में ही गुरुणी सग का वियोग हुआ है। अर्पण जी इस मार्मिक वियोग से हतप्रभ-हताश-उदास होगी, उपकारी आत्माओं के प्रति भले ही ममता न हो किन्तु उपकारों के भार से निर्भार होने का इरादा भी मन को कचोटता व रिक्तता की अनुभूति कराये विना नहीं रहता। उपकारी के प्रति कृतनता के भावों की परिणति आपसे सहज है। साध्वी जी के स्मृति चिन्ह अर्पण प्रज्ञा जी के अन्दर आत्मवल, धैर्य, हौंसला आदि गुणों की अभिवृद्धि में सहयोगी वने तभी शासन के वीच इस अपूर्णीय क्षति को पूर्ण करने का प्रयास सफल होगा। साध्वी सयम प्रभा जी की आत्मा शीघ्र ही शाश्वत स्थान को प्राप्त करे इसी सद्भावना, मगल मनीषा के साथ । ❑



सरलता की प्रतिमूर्ति

– श्री उपेन्द्र मुनि जी 'शास्त्री'

कठोर संयम साधना, शुद्ध सात्विक साधु मर्यादा, विशिष्ट ज्ञान-ध्यान की आराधना की करने वाली साध्वी संयम प्रभा जी की टूटती आयुष्य की डोर को कोई थाम नहीं पाया। संसार में मृत्यु शाश्वत नियम है जिसे कोई भी खण्डित करने में समर्थ नहीं हो सका। अर्थ के द्वारा संसार की प्रायः समस्त चीजें खरीदी जा सकती हैं लेकिन समस्त रत्न देकर भी आयु का एक क्षण भी प्राप्त नहीं किया जा सकता इसलिए योग वशिष्ठ ग्रन्थ में भी कहा गया है –

आयुषः क्षण एकोऽपि, सर्व रत्नैने लम्यते,
नीयते तद्वृथायेन, प्रमादः सुमहानहो।

ऋषि-महर्षियों का कथन है कि जव संसार की सारी दौलत भी एक क्षण आयु का वढ़ाने में समर्थ नहीं हो तो इस बेशकीमती आयु को व्यर्थ में गँवाना बड़ा प्रमाद नादानी है। ऐसा सोचकर अप्रमत होकर जीवन को सुरम्य वनाने का प्रयास करना चाहिए। ऐसा ही प्रयास किया था साध्वी जी ने और जो अपने प्रयास में सफल भी हुई। पूर्व भव के संस्कारों से संस्कारित वाला को भी धर्म मुनि जी म० सा० ने प्रतिबोध देकर संसार की असारता से अवगत करवाया। तव वैराग्यवती वाला "यथानाम तथा गुणे" वाली संयम प्रभा बनी जिसका जीवन अनेक गुणों से लबालब था ही पर ओजस्वी वाणी की कला से तो जीवन को चार चाँद लगा दिये। साध्वी ने अनेक क्षेत्रों में भ्रमण करके लोगों को जीवन की दिशा दी है तथा देव, गुरु, धर्म का नाम रोशन किया है। कई बार साध्वी से मिलने का मौका मिला तथा अन्तिम वार दिसम्वर, 1998 में पानीपत मिलना हुआ था। मैं हमेशा उनके स्वास्थ्य के समाचार मंगवाता रहता था तथा अपनी ओर से सदा स्वास्थ्य के प्रति सचेतता रखने की सलाह देता रहा। सोच ही रहा था कि चातुर्मास उपरान्त संयम प्रभा जी की साता पूछने जाना है लेकिन हमारी भावना पूर्ण होने से पहले ही मौत उन्हें सवसे छीन कर ले गई। साध्वी जी जन-2 की प्रेरणा स्त्रोत थी। हर व्यक्ति से उनकी प्रशंसा सुनकर दिल हमेशा आनन्द की अनुभूति कर रहा था। विशाल हृदयी संयम प्रभा जी भले ही आज हमारे बीच नहीं हैं लेकिन उनके गुण उसे हमेशा जीवित रखेंगे। अपने गुणों के कारण वह मर कर भी अमर हो गई हैं। ये संघ, शासन, जमाना सदा साध्वी जी को स्मृति में रखेगा। अर्पण जी संयम की निशानी हमारे वीच है जो अपनी गुरुणी के नाम को देदिप्यमान करेगी। ❑



निर्मल साधना की साधिका

– मनोहर व्याख्यानी श्री नरेश मुनि जी म० सा०

इस विराट विश्व के विशाल प्रांगण में कई जीवन विचक्षण कार्य करके चिरस्थायी

इतिहास का सृजन कर जाते हैं। साध्वी सयम प्रभा जी भी एक ऐसे ही अमिट इतिहास की निर्मात्री थी जिसने अल्पकाल में ही अपनी सयम साधना, प्रवचन शेली द्वारा हर दिल में अपना स्थान वनाया है। 1996 में लुधियाना Civil Line में साध्वी जी से साक्षात्कार हुआ था। गुरुदेव श्री सुदर्शन लाल जी म० सा० भी उनके गुणों से प्रभावित हुए विना नहीं रहे थे। सयम प्रभा जी ने लघु वय में ही काफी क्षेत्रों में विचर कर शासन की महती प्रशसनीय प्रभावना की है लेकिन खेद हे कि वे अल्प कालीन परिचय में ही प्रयाण के महापथ पर प्रस्थित हो गई हे। गुरु वियोग की पीडा की हमें भी अनुभूति हे इसलिए अर्पण जी की स्थिति को हर पल समझने में समर्थ हें, क्योंकि एक फूल अगर फल वनकर झड जाता तो उतना गम नहीं होता जितना अधखिला फूल मुरझाने पर होता है। अनायास, अयाचित, असामयिक दुर्घटना के समय मानसिक चितन करें कि गुरुणी का साया छुटा हे, महावीर का शाश्वत साया पास है। सयम प्रभा जी का इतनी शीघ्र सवको छोडकर शासन को वहुत वडी हानि देने वाली घटना हे। गुरुणी वर्या के चरण चिन्हों पर चलकर अर्पण जी सयम पथ पर समारूढ रहे यही मगल मनीषा है। ❑



अमूल्य धरोहर थी

– साध्वी श्री मीना जी म० सा०

हृदय विदीर्ण हो गया जव प्रखर वक्त्री श्री सयम प्रभा जी म० सा० के देवलोक का समाचार मिला। हम तो उनके स्वास्थ्य के समाचार पाने को आतुर थे लेकिन कुदरत ने तो कुछ ओर ही खवर सुना दी। साध्वी जी ने अपनी प्रवचन शैली से सुदूर प्रान्तों तक सुप्त लोगों को जगाया तथा अपनी सयम क्रिया का अच्छा प्रभाव छोडा है। उनके देवलोक से सघ में वहुत वडी कमी हो गई है। हमारा उनसे एक ही वार प्रत्यक्ष मिलन हुआ है। उनका स्नेह भरा चेहरा आँखों के सामने घूमता है। ❑



वहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न

– महासाध्वी श्री शाति देवी जी म० सा०

26 अक्टूवर की सध्या वेला में दुखद सूचना मिली कि वहुमुखी प्रतिभाओं से सपन्न साध्वी सयम प्रभा जी देवलोक हो गई हैं। सुनकर दिल में सहसा चोट लगी। कान तो तरस रहे थे उनके स्वस्थ होने का समाचार सुनने को, परन्तु जिसे सुनना चाहते थे उसके विपरीत सुनने को मिला। इस अकल्पित घटना ने सभी को खिन्नता दी हे। साध्वी जी का जीवन सयम के तेज से दीप्त था। शुद्ध सयम के आराधन के सग प्रभावक प्रतिभाओं के सयोग ने सोने में सुहागे की उक्ति को चरितार्थ किया था। उनके ओजस्वी प्रवचनों की यत्र-तत्र सवत्र

प्रशंसाएँ श्रवण गोचर होती रही हैं। ऐसी-ऐसी निर्मल चारित्रात्माएँ अन्य जनों के लिए प्रेरणास्पद होती हैं। उनका व्यक्तित्व प्रभावक था तो कृतित्व भव्योद्धारक था। वे गुणों की प्रजक तथा धारक थी। इसीलिए तो उनका अल्पायुष्य जन-जन के लिए दर्दनाक बना है। यह वह चोट है जिसके घाव भरने बडे मुश्किल हैं। जब-जब उस आत्मा का चित्र स्मृति पटल पर आयेगा तब-तब दर्द करेगा। उस आत्मा को शीघ्र ही भव भ्रमण से विश्रान्ति का रास्ता प्राप्त हो। ❑



संयम की धनी मानी

– महासाध्वी श्री भगवन्ती जी म० सा०

अचानक ही अवगत हुए थे कि संयमवती साध्वी श्री संयम प्रभा जी म० सा० की शारीरिक स्थिति चिंताजनक है। हम तो उनके अच्छे स्वास्थ्य की मंगल कामना कर ही रहे थे कि पता चला कि आयुष्य कर्म की डोर टूट गई है। यह सुनकर सभी के एक बार तो दिल हिल गये। हम तो प्रार्थना करते थे कि संयम प्रभा जी चिरकाल तक अपनी पीयूष वाणी से जगज्जीवों का कल्याण करती रहे। उनके जीवन की विशेषताओं को अक्षरशः कह पाना या लिख पाना तो संभव नहीं है लेकिन गुणानुवाद से स्वयं को पवित्र तो कर ही सकते हैं। साध्वी जी का असमय में जाना शासन तथा समस्त साध्वी समाज की भारी क्षति है। वह आत्मा शीघ्रातिशीघ्र शान्ति व समाधि से सभी कर्म क्षय कर अजर अमर सुविनाशी हों। ❑



शासन का शृँगार

– साध्वी रमेश कुमारी जी म० सा०

भाई शेखर जी से पता चला प्रवचन प्रभाविका श्री संयम प्रभा जी देवलोक की तरफ प्रस्थान कर गई हैं। इस खबर को सुनते ही बहुत धक्का लगा। प्रकृति की इस क्रूर नियमावली के समक्ष सबको घुटने टेकने पड़ते हैं। संयम प्रभा जी के प्रभावशाली प्रवचन ने शासन की विशेष प्रभावना की है। शासन की यह क्षति पूर्ति होना कठिन है। उस संयमी आत्मा को स्वस्थान पर शांति मिले। ❑



विमल विभूति

– साध्वी श्री कमल जी म० सा०

अचानक दुःखद समाचार "साध्वी श्री संयम प्रभा जी का देवलोक हो गया है"।

सुनकर सभी स्तम्भित से रह गये। सहसा विश्वास ही नहीं हो पा रहा था कि ऐसा अघटित भी घटित हो गया। ऐसी-ऐसी विभूतियाँ यूँ विलीन हो जाए तो भला, सिर्फ विषाद के, शेष भी क्या रह जाता हे ? जिन शासन की उज्ज्वल ज्योति साध्वी श्री का जीवन अपने आप में एक मिशाल था। साधना की उच्च भूमिका पर पहुँचने की लगन स्पष्ट दिखाई देती थी। हर दिल पर उनकी अमिट छाप अंकित है। सयममय प्रवचन जनमानस में स्मृति पटल पर तेर रहे हें। कितना ही सुन्दर होता कि वह पुनीत ज्योति अपने दीघकालीन सयम से अनेक अखण्ड दीपों को ज्योतित करती, पर खुदा को ये मजूर न था।

'खुदा का नूर वो आया यहाँ था नूर देने को,
खुदा मे जा मिला स्वयमेव पुरनूर होने को।'



सयम की मिशाल

– साध्वी श्री किरण जी म० सा०

श्री सयम प्रभा जी म० सा० के असामयिक देवलोक का दर्द भरा समाचार पाकर सभी पर मानों वज्रपात सा हुआ। कितनी जल्दी सव वन कर सिमट भी गया। छोटी उम्र में इतनी जल्दी इतना यश पाया ओर जल्दी ही जीवन लीला भी समाप्त हो गयी। मेरी आखों के सामने पानीपत दीक्षा के दृश्य नजारे वनकर घूम रहे हें। जव सयम प्रभा जी की प्रथम शिष्या अजु (अर्पण) की दीक्षा पर जो उन्होंने हमारा इतना प्रेम भरा सम्मान किया था। सयम प्रभा जी के देवलोक से शासन का एक हीरा खो गया है। ❑



एक उज्ज्वल ज्योति

– साध्वी सुयश प्रभा जी म० सा०

इस श्रमण सस्कृति के उन्नायक अनेक महापुरुष हुए हें, जिन्होंने इस पतित पावन सस्कृति को अपने आदर्श जीवन से सरक्षित, सवर्धित एव पोषित किया। इन्हीं पुण्यशाली आत्माओं में प्रवचन प्रभाविका मधुर वक्ता महासाध्वी श्री सयम प्रभा जी म० सा० का नाम वडे गोरव से लिया जा सकता हे। जीवन की प्रयोगशाला में ढला हुआ सत्य ही उनकी वाणी पर आता था।

हरियाणा, पजाव, हि प्र , उ प्र , राजस्थान इत्यादि जिस ओर भी आपके चरण पडे वह भूमि पवित्र हो गई। उनकी अमृतमयी वाणी का पान जिसने भी किया वही आत्म-धन से सुसमृद्ध हो गया, सयम प्रभा जी के सयमीय जीवन से वह हमेशा प्रभावित रहे हें। उनमें मिलनसारिता तथा सच्चाई, सरलता आदि अद्भुत गुण थे। मोत ने उन्हें हमसे छीन कर सघ पर वहुत वडा प्रहार किया हे। उनका यूँ जुदा होना दुखद एव पीडाकारी हे। ❑

आदर्शमय जीवन

– साध्वी मनोरमा जी 'मुक्त'

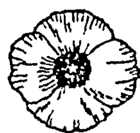
कल अखबार में महासती श्री संयम प्रभा जी के देवलोक गमन का समाचार पढ़कर मन खेद खिन्न हो उठा। असमय में उनका हमारे बीच से जाना मन को तकलीफ दे रहा है। मृत्यु के शाश्वत नियम में संसार का कोई भी प्राणी दखल अंदाजी नहीं कर सकता, सब हार जाते हैं। साध्वी जी ने अल्प समय में अपने प्रवचन, संयम कठोरता द्वारा हर दिल में अमिट छाप छोड़ी है। हम उनकी शीघ्र कर्म मुक्ति एवं शाश्वत शान्ति की मंगल कामना करते हैं। ❑



शासन का उज्ज्वल नक्षत्र

– उ० प्र० साध्वी सुचेष्ठा जी म०

कभी दिलों दिमाग ने कल्पना भी नहीं की थी कि यथा नाम तथा गुण को चरितार्थ करने वाली साध्वी संयम प्रभा जी के देवलोक का हृदय विदारक दुखद समाचार सुनने को मिलेगा। दिल गहन पीड़ा में डूब गया। सहसा शब्द मुंह से निकले - क्रूर काल ने ये कैसा वज्रपात कर दिया। लेकिन नियति के आगे सभी विवश तथा लाचार हो जाते हैं। साध्वी जी का जीवन एक आदर्श था, उनकी विद्वता अविस्मरणीय थी। इतने अल्प समय में अपने संयममय जीवन में प्रवचनों द्वारा जो अमृत उन्होंने बाँटा वह अमूल्य है। ❑



26 अक्टूबर का प्रभात हुआ

म० सा० की तबियत अचानक अत्यत खराब है। दिल में अजीब सी बेचैनी घबराहट हो गई। क्योंकि 40 गॉव में म० सा० स्पष्ट इनकार कर रहे थे कि किसी कीमत पर भी दिल्ली नहीं जाना। शायद म० सा० तथा अर्पण जी म० सा० दोनों की दिल्ली के लिए इनकारी कुछ खो जाने के भय के कारण थी। अर्पण जी म० सा० बोले – दिल्ली ले जाकर मुझे अपना सब कुछ खोना नहीं है। लेकिन गुरु आज्ञा के पालन हेतु दिल्ली चले गये। वैसे तो दिल्ली जाने पर दिल किसी शका से धडकता था लेकिन आज तो मानों धडकनें रुक ही गयी हैं। समस्त हिगनघाट शोक सागर में डूब गया। आज लग रहा है-काश, हम जिद्द नहीं करते तो हमारी नैय्या को मझधार से निकालने वाले माँझी इस तरह बीच मझधार में छोड नहीं जाता। म० सा० ने निर्मल सयम साधना की ऐसी आराधना की थी जिस चमकती प्रभा के आलोक से हर कोई आलोकित था। मर्यादा भग करके उन्हें प्रसिद्धि या वाहवाई नहीं चाहिए थी। हमने एव मध्य प्रदेश तथा महाराष्ट्र के लोगों ने माईक का आग्रह किया। 15-20 हजार लोग प्रवचन में आ जाएगे परन्तु म० सा० ने साफ इनकारी कर दी। उन्हें आगमन से ज्यादा आवागमन कतई पसन्द नहीं था। प्रवचन तो ऐसा कि हर कोई डूब जाता था उस निर्झर में। ग्रन्थ शास्त्र मथ-2 कर ऐसा नवनीत म० सा० ने निकाला था कि एक बार चखने वाला बार-बार लेने को लालायित रहता था। 15 अगस्त पर प्रवचन सुनकर श्री सुभाष जी ओस्तवाल तथा मत्री नथमल जी सिघवी ने कहा था – ऐसा लगता है सीमा पर खडा कोई सैनिक भारत मॉ की आजादी के लिए तथा देश की विगडती हालत को सुधार करने के लिए देश को ललकार रहा हो, उनकी वाणी नोजवानों में जोश भर देती थी। घर, समाज, राष्ट्र प्रत्येक महापुरुष पर बोलने का वाणी पर सुन्दर अधिकार था। म० सा० के सुन्दर आचार-विचार, दृढ सयम, अनुशासन, मर्यादित जीवन का अवलोकन कर हमारे पूर्व विधायक श्री राजेन्द्र जी डागा ने अपने वक्तव्य में कहा था कि यदि साध्वियों का आचार्य पद होता तो श्री सयम प्रभा जी म० सा० उस पद के लिए पूर्ण योग्यता रखते हैं। म० सा० को सयम के प्रति विशेष जागरूक देखा, उसी तरह उनकी शिष्या अर्पण जी हैं जो कोई दोष न लगे इसलिए स्वय ब्लड प्रैशर की जाच करती। जाच के लिए खून निकालती तथा इन्जैक्शन भी खुद ही लगा लेती थी पर पुरुष डा० का हाथ नहीं लगवाया। अर्पण जी म० सा० का छोटी सी उम्र में इतनी हिम्मत होंसला देख महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश के लोग आश्चर्यचकित थे। औरगाबाद में जब म० सा० को लिफ्ट से तीसरी मंजिल पर ले जाया जाने लगा तो अर्पण जी म० सा० बोले – में गोदी में उठाकर ले जाऊॅगी, लेकिन डाक्टरों ने मना कर दिया। सभी समाज के लोगों ने आग्रह किया कि आप भी लिफ्ट से चलो लेकिन तीसरी मंजिल से कितने ही चक्कर परठने आदि के लिए नीचे के लगाती पर लिफ्ट में एक बार भी नहीं गई। बार-बार डाक्टरों को यही निर्देश दिए कि कोई दोष मत लगाना। गुरुणी शिष्या में इतना स्नेह प्रेम प्रथम बार

देखने को मिला। म० सा० का अचानक इतनी छोटी वय में देहावसान हो जाने से संघ शासन में बहुत बड़ी कमी हो गई है। अब तो सभी यही भावना भाते हैं कि म० सा० के सुन्दर गुणों से पूरित दृढ़ संयमी जीवन को अर्पण जी म० सा० आत्मसात करके संघ, शासन तथा गुरु नाम को उच्च शिखरों पर पहुँचा दे। समस्त संघ एवं गोलच्छा परिवार की भावभीनी श्रद्धांजलि –

ये कैसी बिजली कडकी, ये कैसी ऑधी आई,
हरे भरे गुलशन में, पल भर में वीरानी छाई,
बेरहम मौत ने दी, भक्तजनों को ये कैसी सजा,
अश्कों की झडी लगी ऐसी, कि अब तक थम न पाई।

– दिलीप गोलछा, हिंगनघाट (महाराष्ट्र)



कहाँ खो गई बुआ

गर्मियों की छुट्टियों में गाँव भर की बुआ अपने-2 भाई भतीजों के पास आती थी। हम केवल उन्हें देखते थे, क्योंकि हमारी बुआ होते हुए भी कभी छुट्टियों में नहीं आयी। उसका कारण था कि हमारी बुआ जैन साध्वी बन गई थी। जिन्हें अब घर से कुछ लेना देना नहीं था। लेकिन बुआ जी, आप तो कभी नहीं आती थी पर हम तो आपसे मिलने जाते थे। कहने को तो था कि हमारी एक लाड़ली बुआ है पर आपने तो हमेशा के लिए हमारा 'बुआ' शब्द छीन लिया है। 6 भाईयों की लाड़ली बहन यदि दीक्षा के समय हम होते तो अपनी बुआ को कभी जाने नहीं देते। बुआ जी हमारी सेवा में क्या इतनी कमी रह गयी थी कि सिर्फ बुआ को याद कर-2 के रोने के लिए छोड़ गई हो। वैसे भी आपके भाई तो किसी भी शुभ प्रसंग के आने पर रोते ही थे। बुआ जी आपकी दीक्षा के बाद आपके भाईयों ने कलाई पर भी राखी नहीं बंधाई तो इस वियोग को कैसे सहन करेंगे। लोग कहते हैं जैन साधु दयावान होते हैं। पर हम पूछते हैं कि आप की दया कहॉ चली गई जो इतनों को रोते देख भी दिल नहीं पिंघला। बुआ जी, चाचा पप्पु अपना गुर्दा देने के लिए दिल्ली चले गए थे लेकिन आपने सारा कष्ट स्वयं सहकर किसी को परेशानी नहीं दी। बुआ जी, आप तो कहते थे अर्पण बिना एक मिनट भी मेरा काम नहीं चलता। अब उन्हें भी अकेला कैसे छोड़ गये। वे दिल्ली नहीं आना चाहती 'थीं लेकिन वडे म० सा० श्री शारदा जी के कहने से जवरदस्ती आये। जिस कारण से मना करते थे वही हो गया। काश, हम दिल्ली न लाते तो हमारी इकलौती प्यारी बुआ कभी हमें छोड़कर नहीं जाती। वे दीक्षा से पूर्व भी दिल्ली के नाम से डरते थे। उन्होंने अपने नियमों, मधुर वाणी, ज्ञान द्वारा जो नाम कुल का रोशन किया है उसके लिए हमें हमेशा गर्व रहेगा। दो दिन पहले ही हम उन के दर्शन करके आये थे। तबियत ढीली थी। कहने

लगे-रेणु, इन अग्रेजी दवाईयों के कारण दिमाग भारी रहता है, दिमाग ठीक से काम नहीं करता। शुरू से ही अग्रेजी दवाईयों से दूर रहते थे। जव भी दर्शन करने जाते थे हमने देखा है वहुत पीडा होती थी। वुआ जी आपके लिए दादी ने कितनी मन्नतें मागी, परन्तु एक काम न आई, तुम क्यों छोड गई हो ? जव घर से जाने पर भी हमें धीरज नहीं आया तो दुनिया से जाने पर कैसे स्वय को समझायें, कैसे थमेंगे आँखों के आँसू ? हमारी वुआ वास्तव में एक योद्धा थी। अन्त समय तक कर्म शत्रुओं द्वारा घायल किए जाने पर भी कर्मो से लडती रहीं ओर हार न मान कर वीर गति को प्राप्त हुई। वुआ जी कहती थी यदि धर्म ध्यान नहीं करोगे तो वोलूँगी नहीं, पर अव हमने तो माला सामायिक चालू कर दी थी फिर भी हमेशा के लिए मोन क्यों हो गई हो। पापा, चाचा, ताऊ सभी किसी भी कीमत पर आप को वचाना चाहते थे। घर में भी आप कभी हारे नहीं, अन्त समय में भी आप जीत गए, हम हार गये। वुआ जी के वियोग का गम हमेशा हमें रुलाता रहेगा। हम अपनी वुआ जी को कभी भी भूल नहीं सकेंगे। हे भगवान ! हमारी वुआ जी को अव कभी इतना दर्द, पीडा मत देना। उन्हें हमेशा हर जन्म में सुखी रखना।

हजारो सितारो मे चाद एक है,
हजारो वृक्षो मे चदन एक है।
पत्थर की लाखो खानो मे हीरा मिलता है कोई,
भीड भरी इस दुनिया मे मेरी वुआ ही एक है।

— कुमारी रेनु जागलान, जोधन (हरियाणा)



महान पुण्यवाणी जगी थी वेतुल की जो दो वर्ष एक परम विदुषी असाधारण प्रवचन कला में निपुण साध्वी श्री सयम प्रभा जी म० सा० का चातुर्मास मिला था। लेकिन पुण्य का दीप जल्दी ही वुझ गया। हमारे हृदय में विराजित गुरुवर्या हमें इतनी शीघ्र ही छोडकर देवलोक की ओर प्रस्थान कर गइ। जिनके पुरुषार्थ का ही परिणाम था कि 50-55 घरों में 12 मासखमण, 130 के लगभग अठाईया तथा पुरुषों के सवत्सरी पर्व पर 115 पोषध करवा दिए। हम म० सा० का ज्ञान अनुशासन, सादगी पूर्ण जीवन देखकर हत प्रभ रह गये। वेतुल जहाँ कभी 2-4 श्रावक तथा 10 15 श्राविका प्रवचन में आते थे तथा कभी कार के ड्राईवर को विठाकर प्रवचन शुरू करवाया जाता था, जिस कारण 18-19 साल में साधु-साध्वी ने चातुर्मास नहीं किया। लेकिन म० सा० के प्रवचन का ऐसा प्रभाव था कि स्थानक, दिगम्वर, सनातन, मन्दिर हाल सभी प्रवचन के लिए छोटे पडने लगे। जहा कोई साधु ठहरना पसन्द नहीं करता था, वहीं श्री सयम प्रभा जी तथा अर्पण प्रज्ञा जी म० सा० के कठोर पुरुषार्थ ने चमन वनाए। इस वाग में सभी साधु-साध्वी चोमासे करने के लिए सन्देशा भेज रहे हैं। म० सा० जैसी सचेतता सजगता अन्य कहीं नहीं देखी। प्रसग - एक वार म० सा० किसी

कार्य के लिए ऊपर कमरे में श्रावकों से बात कर रहे थे। नीचे अर्पण म० सा०, दिव्य श्री जी म० प्रवचन देने पधारे और नवकार मन्त्र के फौरन बाद अर्पण जी म० सा० ने प्रवचन शुरू कर दिया। उसी समय म० सा० ऊपर से बोले, अर्पण - भजन से पहले प्रवचन कैसे शुरू कर दिया। 15 अगस्त, कृष्ण जन्माष्टमी, ईसा मसीह आदि पर दिए गए आपके प्रवचन कमाल के थे। म० सा० के देवलोक की खबर सुनकर पूरा बैतुल उदासी में छा गया। हर कोई यही कहने लगा - "यह क्या हो गया, हमारे साथ।" पूज्या म० सा० को कोटिशः नमन ।।

— विरदी चंद जी गोठी, बैतुल (म. प्र.)



जैसे ही समाचार मिला कि तेल खत्म होने से दिए की ज्योति बुझ गई, मानो चारों तरफ घोर अंधकार छा गया हो। क्यों कैसे ये अंधेरी रात आई? धर्म से ओत-प्रोत जीवन की क्या व्याख्या करूँ। जैसे गूंगा मिठाई खाकर बताने में समर्थ नहीं कि कितना स्वाद आया, उसी प्रकार म० सा० का जीवन भी कुछ इसी तरह का है। जो भी उस व्यक्तित्व के सम्पर्क में आया वही जान सकता है कि वे क्या थे? जिनका एकमात्र ध्येय था संयम की मर्यादा में रहना। म० सा० का जाना एक बहुत बड़ी क्षति शासन को हुई है क्योंकि भारत में श्रमण तथा श्रमणी वर्ग तो बहुत विशाल है लेकिन उन जैसी मार्गदर्शिका मिलनी अत्यंत दुर्लभ है।

जैसा पाया नाम था, वैसे किए अनुरूप ही काम,
चॉद सितारे चमके जब तक, चमकेगा तब तक नाम।

— गौतम वैद, धन्नारी (राज.)



श्री संयम प्रभा जी म० सा० के ईश्वरलीन होने के समाचार से हम अत्यन्त दुःखी, परेशान हैं। प्रभु ने उन्हें समाज को ज्ञान देने, उत्तम आध्यात्मिक जीवन जीने की, प्रेरणा देने, सत्य, संयम और अहिंसा के मार्ग पर चलने तथा प्राणी मात्र की सेवा करने की प्रेरणा देने हेतु संसार में भेजा था। उन्होंने समाज को अपने प्रवचनों से एक नई दिशा दी। उन्होंने अपनी जो छाप छोड़ी है वह हमेशा अमिट रहेगी। आज उनका पंचतत्व का शरीर पृथ्वी पर नहीं है। किन्तु उनका संयम हमेशा जीवित रहेगा तथा अमर रहेगा। हम उस ब्रह्मलीन आत्मा को प्रणाम करते हुए अपने श्रद्धा सुमन उनके चरणों में अर्पण करते हैं।

हमें है विश्वास कि आप केवल विदेह, अशरीर हुए,
हिमगिरी से निःसृजधारा थे, अब वाष्पीकृत नीर हुए।

— श्रीमती सुशीला डागा, बैतुल (म. प्र.)



इस युग की महान साध्वी श्री सयम प्रभा जी का सदा के लिए हर दिल में वास हो गया हे। म० सा० ने अपने नाम को सार्थकता प्रदान करके जो कठोर सयम की प्रतिपालना की तथा जिन धर्म की प्रभावना की है वह अपने आप में एक मिशाल है। हमने उनके प्रथम वार रोहतक 1997 के चातुर्मास में दर्शन किए। म० सा० के अन्दर एक ऐसी तेजस्विता थी जो एक वार उनके चरणों में आ जाता, वस उन्हीं का होकर रह जाता था। उन्होंने हरियाणा ही नहीं वरन् मध्य भारत तक सयम की सोरभ से अपनी अमिट छाप छोडी हे। म० सा० के जीवन की सवसे वडी उपलब्धि थी कि आवागमन में विश्वास नहीं था। जीवन ज्ञान ओर क्रिया का अनुपम सगम था। म० सा० के द्वारा जलाई ज्योति उनकी शिष्या के रूप में प्रज्ज्वलित रहेगी। म० सा० हमें रोते विलखते यूँ मझधार में छोड गए हैं। उनके गुणों की गोरव गाथाएँ सदियों तक धरती पर गाई जाती रहेंगी।

पश्चिम मे सूरज उग न सके, पूर्व मे सूर्य ढल न सके,
तुम जी न सके मर न सके विधि का विधान वदल न सके।

— विजेन्द्र जेन, मजुरा (हरियाणा)



क्या लिखे क्या न लिखे, आरजू मदहोश है,
गिरते हे ऑसू पन्नो पर, कलम भी खामोश ह।

जेसे गोतम स्वामी का सद्सोभाग्य था कि भ० महावीर जैसे गुरु मिले वैसे ही हम वैतुलवासियों का परम सोभाग्य रहा कि हमें सयम प्रभा जी म० सा० जैसी मार्गदर्शिका मिली। जिन्होंने अपने कठोर पुरुषार्थ रूपी सीर (हल) द्वारा हमारी पहाडी इलाके की ऊसर भूमि को उपजाऊ वनाकर चमन वना दिया। हमें साधु-साध्वियों का सयोग वहुधा मिलता ही रहा तथा भविष्य में भी मिलेगा लेकिन ऐसी सयमी, सरलता की प्रतिमूर्ति जिसकी वाणी से मधुरता का रस टपकता था, जो प्रेम, स्नेह की महासमुद्र थी ऐसी साध्वी मिलनी दुर्लभ है। म० सा० के चौमासे में वेतुल नगरी एक तीर्थ का रूप वन गयी थी। उच्च कोटि की उस साधिका के भावप्रवण प्रवचनों ने सबको खींच लिया चुम्वकीय शक्ति की तरह। प्रवचन की विशेषता थी 5 महीने में कोई विषय, घटना, प्रसग की पुनरावृत्ति नहीं हुई। उस समता की साकार प्रतिमूर्ति के जाने से समाज नेतृत्व-हीन सा लगने लगा है। उनके देवलोक गमन के समाचार सुनते ही सभी दुकानें वद करके समस्त जेन-अजेन समाज ने स्थानक में जाप किया तथा श्रद्धाजलि सभा रखी गयी। उस दिव्य आत्मा ने स्वय सयम लेकर अपनी शिष्या को भी सयम कठोरता का परिवेश दिया हुआ था। अर्पण जी म० सा० के तो क्या कहें कुछ शव्द नहीं है जो इतनी अल्प आयु में उन्हें वडे वनकर समाला है। म० सा० भोतिक शरीर से ओझल हैं। मगर यश रूपी शरीर, सयम के प्रति क्रियाशील निष्ठा, प्रेरणास्पद जीवन हमेशा हमारे पास रहेगा।

— जैन श्रावक सघ, बैतुल (म प्र)

किसी महान व्यक्तित्व को एक तुच्छ लेखनी द्वारा जड़ कागज पर उतारना कोई सफलता नहीं होती, मात्र प्रयास होता है। क्योंकि आदर्श जीवन को शब्द बद्ध करना सहज सरल नहीं है। ज्ञानालोक से जगमगाता जीवन था उनका, जहाँ भी मिथ्यात्व रूपी तमस की गहनता होती, वहीं दिनकर बनकर अपनी वाणी द्वारा आलोक भर देती थी। प्रवचन की भाषा इतनी सरल थी कि गहन विषय भी सामान्य श्रोता समझ लेता था। म० सा० को नौजवान पीढ़ी के कदम मजबूत करने की तरफ विशेष ध्यान था क्योंकि धर्म के रथ को मजबूत कदम ही वहन करने में सक्षम हो सकते हैं। कुरुक्षेत्र चातुर्मास की अनगिनत उपलब्धियाँ हैं, किस-2 का बयान करूँ। उन्होंने आगमों तथा अन्य धर्म ग्रन्थों के गहन अध्ययन से अपने व्यक्तित्व तथा कृतित्व का निर्माण किया था। स्वयं पुरुषार्थ करके जगाना यह उनकी विशेषता थी। बंटे जैसे नौजवान को भी प्रतिदिन सामायिक में बैठा दिया जिसे बड़े-2 संत भी स्थानक में न ला सकें। म० सा० वीतराग वाणी के माध्यम से सबको सम्यक् दर्शन का रास्ता दिखा कर लोगों के जीवन में बोधि बीज को वपन करना चाहती थी। आज म० सा० के जाने से संघ - आँगन सूना-2 सा लगता है। लेकिन हमें पूर्ण विश्वास है कि उनके सन्देश-उपदेश हमें हमेशा रास्ता दिखाते रहेंगे।

— अध्यक्ष नेम चन्द जैन, कुरुक्षेत्र



गुरुजींच्या स्वर्गवासी होण्याची बातमी ज्या क्षणी मला मिलाली त्याच क्षणी मी मनाने खचून गेली। डोलयातून अश्रुंच्या धारा सर सर बाहायला लागल्या किती उच्च प्रतीच्या साधविका होत्या त्या अशा साधविका पून्हा जन्मास येणे फार दुर्मिल आहे। "झाल्यात बहु होतील बहु परी या सम नन्हे" त्यांचे जीवन शिक्षण प्राप्त करण्या साठी कटीबद्ध होते। आज आमच्यातून एक चांगली समाज सुधारिका दुर परमेश्वराच्या धरी निघून गेली आहे। त्यांची प्रवचन शैली अत्यन्त प्रभावशाली होती। जो कुणी एकदा त्यांचे प्रवचन ऐकायचा त्यांचाच होवुन जायचा। सोपी व सरल भाषा, सहजपणा, सत्यत्तर हे त्यांचे प्रमुख कौशल्य होते। त्यांची वाणी मधुर व रसाल होती, त्यानी स्वतःच्या देहाची कधोहि पर्वा केली नाही, सर्व सुख सोई पासून त्यांचे जीवन फार दुर होते मला त्यांची सेवा करण्याची संधी मिकालेली आहे, त्या साठी मी त्यांची फार आभारी आहे। एवढया कमी वयात आकस्मिक निधुन जाणे। हा आमच्या साठी अत्यन्त दुःखमय प्रसंग आहे त्यानी दाखविलेल्या मार्गावर आम्ही पुढे पदक्रमण करून त्यांचा पुरूषार्थ सफल करू। जरी त्या आमच्यातुन शरीराने निधून गेल्या असल्या तरी त्यांच्या कौशल्य व गुणांनी सदैव अमर राहतील वर्षातुवर्ष संपूर्ण जगाला त्यांची आठवण राहील या पृथ्वी तलावर चन्द्र सूर्य तारे जो पर्यन्त राहतील तो पर्यन्त आम्हा सर्वाना त्यांची आठवण राहील।

"जो आवडतो सर्वाना तोचि आवडे देवाला।"

— सौ० निर्मला खिंवसरा (महाराष्ट्र)

जेसे परमात्मा का नाम लेने मात्र में भीतर में ऊर्जा का सृजन होता हे उसी प्रकार सयम प्रभा जी म० सा० का नाम लेने मात्र से व्यक्ति को शक्ति मिलती है तथा उनका नाम सर्व विघ्न विनाशक है। उनका नाम सुमिरण करने से लोगों के विगडे काम सँवर जाते ह। मैं मोटर साईकिल एजेन्सी के लिए हो रही प्रतियोगिता के प्रतियोगियों के साथ बैठा था। मैंने वहाँ देखा कि किसी के पास पेसे की ताकत है, कोई मन्त्री की Slip लिखवा कर लाया है, किसी का वडे व्यक्ति से परिचय सम्बन्ध है। में सोचने लगा कि अपना न० आना मुश्किल है। मेंने उसी समय म० सा० के नाम का जाप किया तथा नाम भर दिया। एकदम मानो चमत्कार हो गया। वडे-2 पेसे वाले, परिचय वाले रह गये और एजेन्सी मुये मिल गई। एक बार रेलवे स्टेशन पर टिकट लेने गया तो टिकट घर वद हो चुका था। टिकट मास्टर ने टिकट देने से मना कर दिया। उस समय मैंने म० सा० के नाम का सिमरण किया, वह कुछ क्षण वाद स्वय चलकर आया ओर कहने लगा कि चलो तुम्हारी टिकट वना दूँ। जिन्होंने उनके जीवन को समझा हे उसने वहुत कुछ पाया हे। म० सा० के जाने से हम सव का दिल उनकी याद में रो-2 कर उन्हें पुकार रहा है।

— राजेश आहूजा, वैतुल गज



यूँ तो चमन मे लाखो फूल खिलते हैं, मुरझा जाते है,
कौन किसका खिलना मुरझाना याद रखता है।
लेकिन जो खुद को मिटाकर चमन को जिदगी देता हे,
उसे जमाना याद करता ह, वहारे याद करती ह।।

आवागमन के ससार में श्री सयम प्रभा जी म० सा० अपनी एक मधुर छवि छोड गये ह। उनके जीवन में हीरे सी चमक, माधुर्य, दृढता थी। 4 माह जो जिनवाणी का मेघ वरसा कि हर आत्मा उस में भीग कर पुनीत वन गयी। सयम के प्रति कठोरता ने सभी को अपना वना लिया। उनके जीवन ने हमें जानकारी दी कि सत क्या होता है। हमारे यहाँ वडे-2 सत व आचार्य आये लेकिन म० सा० का प्रभाव विशेष अलग ही था। म० सा० का सहयोग लम्बे समय तक मिलता तो न जाने कितने ही व्यक्तियों की गलत दिशा में गयी गाडी को सम्यक् दिशा मिल जाती। म० सा० शरीर से वहुत दूर जाकर भी हमारे नजदीक ही हैं।

— दिलीप वाफना, 40 गॉव (महाराष्ट्र)



फूल खिलने पर एक पादप ही नहीं वरन् सम्पूर्ण सरोवर ही सुवासित हो उठता हे। भास्कर भी जैसे अपनी पूर्ण दिशा ही नहीं वल्कि दशों दिशाओं को ही प्रकाशमान करता हे उसी प्रकार साधु का आलोक से भरा जीवन भी एक ग्राम, प्रान्त में नहीं वल्कि समस्त भारत

को आलोकित करता है। जिनका जीवन एक जलता दीप था उस ज्योति के बुझने से प्रत्येक व्यक्ति तथा बैतुल की माटी का कण-2 व्यथित है। प्रवचन शैली से प्रभावित बैतुल श्री संघ ने म० सा० को "व्याख्यान वाचस्पति" की उपाधि दी। म० सा० के जाने से जीवन उजड़ा-उजड़ा सा लगता है। म० सा० की साधना भी चमत्कारिक थी। एक बार एक अजैन जो म० सा० से प्रभावित था, उसकी गाय को साँप ने काट लिया, उसने कुछ भी दवाई आदि नहीं की। म० सा० का नाम पढ़ता रहा गाय ठीक हो गई। एक बार भजन की किताब 'विजय गान' खो गई, जब नहीं मिली तो म० सा० ने जब शाम को अपनी रोजाना की तरह ध्यान साधना की तो फौरन बता दिया कि किताब बालाघाट चली गई है और बात सही निकली। वे भगवान महावीर का धर्म लोगों को समझाना चाहती थीं, न आडम्बर, न दिखावा केवल धर्म। संघ को सदियों तक उनकी आवश्यकता थी, पर हमारा दुर्भाग्य रहा, म० सा० इतनी जल्दी हम सब को छोड़ गये। वह पुण्यशील आत्मा भले ही शरीर से चली गई है पर संयम के प्रति कठोर व्यक्तित्व का ऐसा परिवेश अर्पण जी म० सा० को हमारे पास छोड़ गए हैं जिनके द्वारा हम जैसी बहुत सी आत्माओं का भविष्य में मार्ग प्रशस्त होता रहेगा। म० सा० के आदर्श हमेशा जीवित रहेंगे, आपके एहसान हम पर कभी भूला न पाएंगे, गीत गा लेने से ये कर्जा चुका न पाएंगे, बिछुड़ने से आपके दिल भर-2 कर आएगा, लाख रोकेंगे मगर आँसू रुक न पाएंगे।

— सौ० अलका, नितिन तातेड, बैतुल (म. प्र.)



गुलिस्तां में तरह-2 के फूल खिलते हैं लेकिन हर फूल आने-जाने वाले राहगीरों को आकर्षित नहीं करता। किसी ही पुष्प की विशेषता होती है कि हर व्यक्ति को वह अपनी सुन्दरता तथा खुशबू से बाँध लेता है। ऐसा ही शासन के गुलदस्ते के पुष्प का नाम था संयम प्रभा जी म० सा०। लेकिन थोड़े ही पिपासु उससे अपनी जिज्ञासा रूपी प्यास को बुझा पाये थे कि मौत की हवा ने फूल को डाली से गिरा दिया। म० सा० बेशक चले गये हैं, उन्होंने यहाँ पर जो खुशबू छोड़ी है उसको कोई भूला न पाएगा। उनकी यादें सदा ताजी रहेंगी। हम सब यही कहते थे कि म० सा० अपने स्वास्थ्य का ख्याल रखो, शासन को अभी आपकी बहुत आवश्यकता है। विहारों में कितनी भी तक्लीफ आई पर कभी गोचरी में दोष नहीं लगाया। अब तो हम सब की आंखें म० सा० की अनुगामिनी शिष्या श्री अर्पण प्रज्ञा जी म० पर लगी हैं जो जल्द से जल्द मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र आकर म० सा० के अधूरे कार्यों को पूर्णता प्रदान करेंगी।

— भागचन्द्र ओस्तवाल, हिंगनघाट (महाराष्ट्र)



कैसा दुखदाई समाचार बेतुल से मिला कि श्री सयम प्रभा जी म० सा० हमारे बीच नहीं रहे। समस्त समाज इस घटना को सुनते ही शोकाकुल हो गयी। हमें तो अगले साल म० सा० का चोमासा करवाना था। लेकिन कुदरत की नियमावली के आगे हम अधूरे रह गये। म० सा० का गुणों से लबालब जीवन आज भी ऑखों के सामने घूमता है, सदैव घूमता रहेगा। 2 साल में ही हिला दिया मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, छत्तीसगढ को आपने अपने सयम तथा प्रवचन द्वारा। जिनकी कथनी करनी एक थी, जिस कारण लोग अधिक प्रभावित होते थे। हर किसी की जुबॉ पर उस दोरान बस एक ही नाम था सयम प्रभा। जिनमें सम्प्रदायवाद का पूर्ण अभाव देखा। म० सा० की सयम के प्रति बहुत कठोरता तथा दृढता देखी। कैसे भी परिषह आये लेकिन सयम की मर्यादा नहीं तोडी। शासन देव से यही प्रार्थना है कि शीघ्र ही म० सा० वापिस धरा पर अवतरित हो जाए ताकि बुझे दिलों में जान आ जाये।

-- सजय बरडिया परतवाडा, (महाराष्ट्र)



खबर मिली सयम साधिका श्री सयम प्रभा जी म० सा० का देवलोक हो गया है। कानों ने इस दुखदाई घटना को स्वीकार करने से इनकार कर दिया लेकिन इस कडवी सच्चाई को स्वीकारना पडा। सघ शासन को काल ने इतना बडा नुकसान क्यों पहुँचाया ? म० सा० का जीवन हमने बहुत नजदीक से देखा। जिन का विचार था – साधक की कथनी करनी एक जैसी नहीं हे तो साधु का ये परिवेश फिर व्यर्थ है। शासन को दिपाने में अस्वस्थता होते हुए भी कितनी हिम्मत-होंसला था। छोटी सी आयु में इतना यश कमाना सभी के लिए एक आश्चर्यकारी घटना थी। म० सा० हमारे पास अपनी ही अनुरूप शिष्या अर्पण प्रज्ञा जी को छोड गई हें। कितनी समता थी पीडा के क्षणों में भी। में जब ओरगाबाद गया, मेंने कहा-म० सा०, गुर्दा में ही दूँगा किसी का लगने न दूँगा। म० सा० हस दिए, भविष्य के गर्भ में विनोद जी क्या लिखा है कुछ कह नहीं सकते ? म० सा० को शत्-शत् नमन ।।

– विनोद सचेती बारासिवनी (म प्र)



भारत की समस्त सस्कृतियों में महिलाओं का अग्रगण्य स्थान रहा है। नारियों ने भी बडे-बडे वीरता के काम किए हें। वह कहीं भी पुरुषों से कमजोर तथा पीछे नहीं हे। इस भारत में स्त्री को देवी कहा जाता है। कहावत है यत्र नार्यस्तु पुज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता अर्थात् जहाँ स्त्री की पूजा होती है वहाँ देवता भी निवास करते हैं। ऐसी ही शूरवीर देवी थी जैन साध्वी सयम प्रभा जी जिसकी पूरे भारत में पूजा होती हे। जिनका जीवन अति उत्तम था, साक्षात् देवी का रूप थीं। जीवन में कितना त्याग, वैराग्य, दया थी। म प्र , महाराष्ट्र के बडे-2 जगलों, पहाडों को कितनी निडरता से भूखे-प्यासे रहकर पार किए। वह हम जेसे भटके लोगों को परमात्मा के पास पहुँचने की राह बताती थी। 40 गॉव में हमने देखा शरीर

में कितनी वेदना फिर भी मस्ती में फर्क नहीं था, असली फकीर थीं वह। मेरे पिता जी जो म० सा० से अत्यन्त प्रभावित थे, उन्होंने जब यह कहा कि मैं आपके लिए 50-60 लाख रुपये लगाकर स्थानक बना देता हूँ पर आप यहीं रहो, तो म० सा० ने जवाव दिया था कि मैं एक जगह नहीं बैठूँगी, चलती-फिरती जाऊँगी। वास्तव में इतनी वीमारी में भी कहीं ठहरी नहीं। अचानक उनका इतनी जल्दी चले जाना देश व समाज के लिए दुखदाई घटना है। छोटी सी उम्र में इतना ज्ञान कमाल का था। नीतिकार कहते हैं कि व्यक्ति नश्वर, व्यक्तित्व सदा अमर रहता है, इसलिए म० सा० चोला छोड़ गये हैं, पर आत्मा से हमेशा हमारे बीच रहेंगे। परमपिता परमेश्वर उनकी आत्मा को शांति प्रदान करें।

— ज्ञान स्वरूप मुंदड़ा, भोपाल (म. प्र.)



परम पूज्य म० सा० के असमय अचानक देहावसान से हम सभी शोकग्रस्त हो गए हैं। सुनते ही इतनी पीड़ा हुई और उद्गार निकले कि एक बार तो वापिस बैतुल आते, जाने की इतनी जल्दी न करते। हर ऑखों से अश्रु धारा बह चली। म० सा० द्वारा दिए गए सन्देश-उपदेश उन्हें सदा जीवित रखेंगे। म० सा० का जीवन सरलता, निष्कपटता आदि अनेक गुणों से मण्डित था।

— सौ. स्नेहलता नवीन तातेड़ (म. प्र.)



मेरा सान्निध्य पूज्य श्री संयम प्रभा जी म० के साथ अल्प समय का रहा है परन्तु उन कुछ ही दिनों में मैंने उनके व्यक्तितव में गजब की शक्ति, सामर्थ्य, समता तथा नियमों के प्रति सजगता आदि गुणों का विलक्षण संगम देखा है। गुर्दे की इतनी गंभीर बीमारी के बावजूद भी उन्होंने कमाल के दृढ़ मनोवल का परिचय दिया है। ये म० सा० की संयम साधना और तपस्या का ही परिणाम था कि गुर्दे की भयंकर बीमारी भी उनको परास्त नहीं कर पाई। औरंगाबाद में जन-चर्चा में जब उनके प्रवचन की तारीफ सुनी तो मैं भी उनके स्वस्थ होने की इंतजार देखने लगा। भीतर में उन्हें सुनने की एक प्यास जागृत हो गई थी। लेकिन मेरी वो प्यास, प्यास ही रह गई। म० सा० की शिष्या में भी हमने गजब का आत्मविश्वास, सेवा एवं अपने संयम के प्रति कठोरता देखी है। जो हर समय एकदम चौकन्ने रहते थे कि कहीं गुरु जी के रोग के निदान में कोई दोष न लग जाए। इतनी वेदना में भी संयम प्रभा जी म० सा० के चेहरे पर फकीरों की मस्ती झलकती रही। म० सा० देह से जाने के बाद भी यश रूपी शरीर से सदा विद्यमान रहेंगी।

असह्य वेदना आई तो भी समता रस में मग्न थी,
शूरवीर प्रवीण बनकर कर्म दलन में संलग्न थी।

— डॉ० विरेन्द्र भण्डारी, औरंगाबाद

दीप बुझा प्रकाश अर्पित कर, फूल मुरझाया सुवास समर्पित कर,
टूटे तार पर सूर बहाकर, गुरुणी सा चले पर नूर फेला कर।

इतनी जल्दी म० सा० के देवलोक की घटना हमारी कल्पना से बाहर थी। यह सूचना पाकर मन एकदम मलीन हो गया। चारों ओर मानों सन्नाटा सा छा गया। कथनी-करनी में एकरूपता थी। वाणी में मधुरता की झलक तथा जानकारी का अक्षय कोष भीतर में विद्यमान था। म० सा० का सयमी, मर्यादित जीवन हमें प्रभावित कर गया। म० सा० ने अपने सारभूत प्रवचनों से जिनशासन की प्रभावना की है। अध्यक्ष जी का तथा काफी सख्या में पुरुषवर्ग का सामायिक में बेठना एक आश्चर्य से कम न था। उनके जीवन में एक विशेषता देखी जो प्रवचन में कहानी किस्से न सुनाकर व्यक्ति को उसकी वास्तविकता से अवगत करवाते थे। म० सा० की जुबाँ अर्पण-2 कर कहती थकती नहीं थी ओर अर्पण जी म० सा० भी म० सा० को बालक की तरह गोदी में उठा लेते थे। अस्वस्थता के दोरान मेंने देखा कि म० सा० तथा अर्पण जी म० सा० हर समय यह ध्यान रखते थे कि सयम में कहीं दोष न लग जाये। म० सा० का महिमा मण्डित यश पुन्ज व्यक्तित्व हमेशा सबके हृदय में समाया रहेगा।

— सौ चन्द्रकला, प्रकाश काकरिया, 40 गाँव



जीवन में जब प्रभु वाणी आचरण रूप में घटित होती हे, तो वह जीवन दूसरों के लिए आदर्श बन जाता है। सत्य के चिंतन, खोज व प्रचार के लिए अपने अन्तर को, अपने व्यक्तित्व को त्याग की इस महायात्रा में सयोजित करने के सार्थक प्रयास किए थे आदरणीय सयम प्रभा जी म० सा० ने -

वाणी थी कितनी मनोहर, शब्द शब्द था ग्रन्थ समान।
दृढ साधना पथ गामी तुम, सयम प्रभा हो तुम्हे प्रणाम।।

आदरणीय म० सा० के प्रवचन की अपनी एक विशिष्टता थी, जो श्रोताओं के अन्तर्मन पर चोट करने में समर्थ होती थी। साराश में कहें तो उनकी वाणी में ऐसी अभिव्यक्ति थी जो मन के भीतरी कोनों को स्पन्दित कर जीवन में बदलाव को सम्भव बनाती थी। आप श्री के जीवन में प्रसिद्धि नहीं, सिद्धि का भाव समाया हुआ था। आपकी साधना का लक्ष्य प्रभाव नहीं, स्वभाव था। सम्मान और अपमान, अनुरोध ओर विरोध, सभी स्थितियों में साम्यभाव एव आपकी सरलता ने आपके व्यक्तित्व को पूर्णता प्रदान की थी। आप श्री के रूप में आध्यात्म की एक ज्योति प्रज्ज्वलित हुई, तप सयम की इस महायात्रा में आपने स्वाध्याय, चिंतन, कर्म, सिद्धान्त, आध्यात्म आदि अनेक विषयों के माध्यम से वीतराग वाणी को जन-2 तक पहुँचाने के सार्थक प्रयास किए हैं। आपका विशेष पुरुषार्थ नौजवान पीढी को धम से जोडने का था। जेसे सूर्य का परिचय उसका प्रकाश, तेजस्विता व ऊष्मा है, आप श्री का परिचय आपकी ओजस्वी वाणी, सौम्यता व क्रियानिष्ठता थी। आपकी वाणी में अगर फाग के

रंग थे तो क्रांति की आग भी थी। अपनी ओजस्वी वाणी से आप श्री ने जो जागरण का शंख नाद किया है वह हम सभी जैन व जैनेतर को एक नई दिशा देगा। हम आपके पुनः ऋणी हैं। वैसे तो मेरे पास वो शब्द नहीं जिसमें आदरणीय म० सा० के सम्पूर्ण व्यक्तित्व को लिख सकूं, फिर भी ये एक छोटा सा प्रयास है। हे समता विभूति, हे वाणी सुधा, हम सब आपको श्रद्धा से नमन करते हैं।

— अतुल पगारिया, बैतुल (म. प्र.)



परम विदुषी साध्वी श्री संयम प्रभा जी के देवलोक गमन को सुनकर दिल को गहरा धक्का लगा। प्रथम बार सूरत में ही उनके दर्शन करने का सुअवसर मिला। म० सा० जब वहॉ पधारे स्वास्थ्य काफी खराब था, ऊपर से वहाँ की आबोहवा भी उन्हें माफिक नहीं आई इसलिए विहार करना पड़ा। म० सा० की नियमों की प्रति कठोरता देखकर हम सभी तो आश्चर्यचकित हो गए थे। चलने का सामर्थ्य नहीं होने पर भी Wheel Chair के इस्तेमाल के लिए मना कर दिया। मैं प्रथम बार ही साधु-सन्तों के इतने नजदीक आया। वास्तव में यदि वे लम्बे समय तक रहते तो मेरे जैसे न जाने कितने ही युवक धर्म के नजदीक आते।

— सुशील जैन, सूरत



खिलना-मुरझाना, उदय-अस्त, वियोग-संयोग प्रकृति की इस अटल प्रथा को बदलना असम्भव है और बरसों से चली आ रही इस रीति ने ग्रास बना लिया हमारी मार्गदर्शिका म० सा० इस संयम प्रभा जी को। जैसे देवलोक की सूचना मिली मानो दुख का पहाड़ टूट पडा। इस बार तो शरीर प्राण विहीन सा लगने लगा। म० सा० यथा नाम तथा गुण की धारित्री थी। जो संकीर्णताओं के घेरों से कोसों दूर थी। इतनी कम वय में इतना अध्ययन, ज्ञान ऊपर से प्रवचन कला सबके लिए एक आश्चर्यकारी व्यक्तित्व था। जिन्होंने थोड़े समय में अपने कठोर संयम की अमिट छोड़ी है। उनकी अनुभूतियाँ न कभी दिल से जुदा हो सकती हैं न धुंधली पड़ सकती हैं। लगता नहीं है शासन इस कमी को कैसे पूरा कर पाएगा। म० सा० विरासत में छोड़ गए हैं कर्मठ पुरुषार्थी शिष्या श्री अर्पण प्रज्ञा जी को जिनमें म० सा० का रूप दृष्टिगोचर होता रहेगा। वे इस रिक्तता को भरे, यही आशा तथा भावना है। सदा म० सा० की जय-जयकार हो यही प्रार्थना करते हैं।

— प्रकाश जी लोढा, बालाघाट (म. प्र.)



एक विचक्षण प्रतिभा की धनी, संयम की साक्षात् प्रतिमा का नाम था श्री संयम प्रभा जी म०। जिनका जन्म समर भूमि जोंधन में ज्ञान प्रकट के अवरोधक तत्वों से लडने के लिए हुआ और वास्तव में जीवन भर कर्मों से वीरतापूर्वक लडती रही थी। 26 अक्टूबर को दिल्ली में शहीद हो गये। किसी को क्या पता था छोटे से इस ग्राम की बालिका छोटी सी उम्र में इतना यश पा जाएगी तथा आकाश की ऊँचाईयाँ छू जाएगी। कमाल का प्रवचन था। पानीपत चातुर्मास दौरान में हमेशा प्रवचन से पूर्व पहुँचता था कहीं एक भी अक्षर न छूट जाये। किसी साध्वी का ऐसा प्रवचन मैंने कभी नहीं सुना था। प्रवचन के माध्यम से निकलने वाले उद्‌बोधन जब कर्ण विवरों से भीतर जाते थे तो वे शब्द विशेष प्रभाव डालते थे। ऐसा प्रभाव पडा था मेरी बेटी साध्वी अर्पण प्रज्ञा जी पर जो महासती श्री संयम प्रभा जी की शिष्या है। साध्वी जी के जीवन को संयम में ढला देख मन को अति प्रसन्नता थी। मैं जब परिवार सहित चातुर्मास दौरान हिंगनघाट दर्शनार्थ गया तो वहाँ चौमासे की रौनक, धर्म-ध्यान, जप-तप के ठाठ देखकर दंग रह गया। जब वहाँ के संघ ने संयम जी म० सा० के कठोर संयम अनुशासन की प्रशंसा की तो मुझे बहुत प्रसन्नता हुई। 40 गाँव के अध्यक्ष शांति लाल जी चोरडिया ने स्वयं मुझसे कहा था यहाँ पर बडे-2 आचार्य आए पर संयम प्रभा जी जैसा प्रवचन, कठोर संयम साधना कभी नहीं देखी। महासती जी में गजब की समता देखी जब उन्हें दिल्ली लाया गया तब असीम पीडा के दौर में भी पूर्ण शान्तचित्तता का दिग्दर्शन किया था। कहीं कोई तडप बेचैनी नहीं थी। हिंगनघाट बैतुल जब मैं गया था महासती जी ने मुझसे कहा, श्रावक जी - आपने बेटी बडे अरमानों से दी थी पर मैं अर्पण को कुछ बना नहीं पाई, जब से आई है बस सेवा में ही लगी है। आप तो अर्पण को बहुत ऊँचा देखना चाहते हो, आपकी इच्छाएँ मैं पूरी न कर पाई। मैंने कहा, महासती जी - सेवा छोडकर बेटी कुछ बन भी गई तो सार नहीं, सेवा आवश्यक तथा प्रथम है। पर तब तो वे कुछ नहीं बना पाने के कारण भी परेशान थीं तो अब हमेशा के लिए कैसे छोड गई। मैंने 26 को बेटी दी और 26 को ही उसकी खुशियों से भरे जीवन को ग्रहण लग गया। जैसे समयावधि आने पर सूर्य को अस्ताचल की ओर जाने से, फूल को डाली से विलग होने से कोई रोकने में समर्थ नहीं, उसी प्रकार हम तथा मेरी बेटी साध्वी अर्पण की सेवा भी महासती जी को जाने से रोक नहीं पाये। काल ने गुरु वियोग का करारा प्रहार करके जो जख्म अल्पायु में ही मेरी बेटी म० को दिया है मुझे पूर्ण विश्वास है कि गुरुदेवों की कृपा दृष्टि रूपी मरहम उस घाव को भर देगी जिससे वे संयम साधना के उत्कर्ष शिखरों को छू सकेंगी। महासती जी को हमारे परिवार की तरफ से शत्-शत् नमन भरी श्रद्धांजलि।

जिन्दगी के जहर को अमृत बनाकर पी गई,
शूल मे भी फूल सम मुस्करा के जी गई,
मौत बेचारी उन्हे क्या छू सकेगी,
वे तो हर दिल मे प्यार बनकर जी गई।

— महावीर प्रसाद जैन (गोल्ली वाले), पानीपत

जब तक जीवन में सांस चले, तब तक जीवन महकाए जा,
जब तक सांसों में धड़कन है, तब तक ये कदम बढाये जा।

प्रवचन प्रभाविका श्री संयम जी म० के जीवन में ये पंक्तियां पूर्णतया चरितार्थ होती हैं। इतनी अस्वस्थता के बावजूद भी आप जिस तरह संयम का ही लक्ष्य बनाकर आगे बढ़ती रही, वास्तव में यह आश्चर्यजनक बात थी, इस अल्पायु में इतने क्षेत्रों में धर्म प्रभावना करके धर्म को जीवित रखा है। जहाँ विचरे वहीं अपने संयम एवं व्याख्यान वाणी की खुशबू छोड़ी। किसी को कल्पना भी नहीं थी कि इस छोटी सी 37 वर्ष की वय में म० सा० हम सबको छोड़कर चली जायेंगी। वास्तव में उनका जाना संघ, शासन के लिए बहुत क्षति है। जो शायद ही कभी पूरी हो सकेगी। अपने नाम के अनुरूप ही म० सा० जीवन भर संयम की ही खुशबू बिखेरती रही। वे भले ही दूर चले गये हैं लेकिन हमेशा निकट महसूस होंगी। दिवंगत आत्मा क्रमशः शाश्वत सुखों को प्राप्त करे, यही मंगल कामना है।

– अनुराधा जैन, बड़ौत (यू. पी.)



ऊपर से संयम के प्रति कठोर तथा भीतर से स्नेह रस झरना बहाने वाली गुरुणी मैय्या श्री संयम प्रभा जी म० सा०, जिन्हें श्री धर्म मुनि जी ने धर्म की राह दिखाई। आचार्य शुभ चन्द्र जी ने जीवन की हर राह शुभ कर दी। शारदा जी ने सरस्वती का वास करवाकर जयगच्छ की चहुँ दिशा में जय-जयकार करवा दी। म० सा० प्रत्येक धर्म के हर पहलू को उजागर करने में पारंगत थे। अब उनके यूँ निराधार छोड़ जाने से आँखों का झरना थम नहीं रहा है। हम सभी नौजवान प्रथम बार इतने धर्म प्रेमी बने सभी को जोड़ने की सुन्दर कला थी उनके पास। म० सा० का नाम गगन के सूर्य चन्द्रमा की तरह हमेशा चमकता रहेगा।

– दिनेश पगारिया, मध्य प्रदेश



एक फूल खिलकर सभी दिशाओं को सुवासित कर देता है लेकिन तभी तक जब तक डाली पर है। डाली से विलग होते ही मुरझा जाता है, फिर उसका कोई अस्तित्व नहीं रहता। लेकिन म० सा० का जीवन अगरबत्ती की तरह था जो पूर्व तथा पश्चात् दोनों अवस्थाओं में महत्व रखता है। म० सा० के अनेक गुणों से मण्डित जीवन को देखकर हम सब का सिर श्रद्धा से नतमस्तक हो गया था। कितनी सरलता, अनुशासन, करुणा थी उनमें। उनकी जादुई ओजस्वी वाणी सभी के लिए प्रेरणादायी थी। म० सा० के पुरुषार्थ से ही धन्नारी के बाल व युवकों में धर्म से सुन्दर संस्कारों का सिंचन हुआ। प्रथम बार हम नौजवानों ने जाना धर्म क्या होता है ? जैन जैनेतर सभी म० सा० के जीवन से प्रभावित होकर उनकी ओर आकर्षित हो गए थे। युवकों को व्यसन मुक्त करवाने का पुरुषार्थ अविस्मरणीय है। म० सा० का पुण्य

प्रभाव इतना जवरदस्त था कि गॉव में ऊपरी आसुरी शक्तियॉ एकदम चुपचाप रही। म० सा० में समय की पावन्दी का विशेष गुण देखा। उनका जीवन हमेशा आदर्श के रूप में विद्यमान रहेगा। किसी को कोई भी नियम करवाने से पहले सामने वाले का मन तैयार करते थे फिर प्रत्याख्यान दिलाते थे। धन्नारी में म० सा० के ठाठ देखकर सव की जुवॉ यही कहती थी ऐसा चोमासा अतीत में हुआ नहीं तथा भविष्य में कभी होगा नहीं। म० सा० भोतिक शरीर से भले ही नजरों को अदृश्य हैं लेकिन गुणों से हमेशा उनके नजारे नजरों में रहेंगे।

– महेन्द्र सेठिया, धन्नारी (राज)



सयमी तथा सुन्दर व्यक्तित्व की पर्याय थी श्री सयम जी म० सा० जिन्हें पेदा करने का फरवर जमीने जोंधन को था। जिनका जीवन अनेक विशिष्टताओं से युक्त था। जो प्रखर वक्त्री तथा उच्च कोटि की विदुषी साध्वी थी। जिसने अपने सयम दीप से मिथ्यात्व रूपी अन्धकार में भटकती अनेक आत्माओं को सम्यक्त्व का प्रकाश दिखाकर उनका मिथ्या तमस दूर भगाया। 1990 के चातुमास में पूरे नगर में एक धार्मिक तूफान सा आ गया था। जेनेतर कुल में जन्मने के पश्चात् भी उनको जिन धर्म से अत्यन्त प्रेम था। वे हमेशा सत्य तथा न्याय की पक्षधर रहीं। छोटे से गॉव में जन्म लेकर भी जिन धम की प्रभावना राष्ट्र व्यापी रही। हम जव वेतुल चातुर्मास में दर्शनार्थ गए तो वहॉं के ठाठ देखकर हम अचम्भित हो गये कि चातुर्मास के अन्त में जहॉं प्रवचन में भी गिने चुने लोग अकसर सव जगह दिखाई देते हैं। लेकिन वहॉं म० सा० ने प्रभाव से 3 मासखमण तथा 8-9 अठाईयॉं चल रही थी। म० सा० यश चन्द्रमा की कला की तरह वर्धमान होता रहा। म० सा० के जाने से सघ में एक ऐसी रिक्तता अनुभव होती हे जिसे भरने में न जाने कितना समय लग जाए। अन्त समय में इतनी पीडा से गुजरते समय में उन्होंने अपनी सयम मर्यादा का पूर्ण ख्याल रखा, निर्दोषता का पूरा ध्यान रखते रहे। हम उनके सद् आचरणों का अनुकरण करें तभी सच्ची श्रद्धाजलि होगी।

– अध्यक्ष रोशनलाल जैन, पानीपत



परम विदुषी श्री सयम प्रभा जी म० सा० का असामयिक नियन का समाचार सुनकर हम सव का दिल रो उठा। में उस समय वम्वई था, मेरे लिए वापिस लोटना मुश्किल हो गया, देह शक्तिहीन हो गई। मोत ने क्यों छीन लिया उन्हें क्योंकि ऐसी विभूतियॉ कई-2 युगों के वाद धरा पर अवतरित होती हैं। म० सा० की प्रवचन-कुशलता ने सभी को वाध लिया था। दुश्मन भी उनके प्रवचन की तारीफ करता नहीं अघाता था। जगत में वहुत से रहवर अपने-2 तरीकों से राह दिखाते हें पर राहगीरों को सम्यक राह दिखाने वाली ज्योति तो एक म० सा० ही थे। अल्प समय में ही जलगॉव जेसे महानगर को प्रभावित करना असाधारण घटना ह। उनका प्रत्येक पहलु अनुकरणीय था। अस्वस्थता के दोरान कई वार 40 गॉव जाना

हुआ। वहाँ हमने देखा संयम के प्रति कितनी सजगता है। मैं उनकी शख्सियत से वहुत प्रभावित था। उनके देवलोक से एक चमकता नक्षत्र संघ ने खो दिया है।

— किशोर भण्डारी, जलगॉव (महाराष्ट्र)



जैसे ही सूचना मिली की म० सा० नहीं रहे दिल रो उठा, हाय रे विधाता तूने यह क्या कर डाला ? म० सा० का जीवन एकदम निर्लेप था। ऐसी सरलता, संयम की दृढ़ता कभी नहीं देखी थी। वाणी तो ऐसी थी कि जहाँ विचरे कट्टर से कट्टर श्रावक भी चरणों में नतमस्तक हो गया। म० सा० एक हवा के झोंके की तरह आये और संयम की खुशबू बिखेर कर चले गये। क्षेत्र की कठिनाईयां आने पर भी जो हिले नहीं, जो जीवन की दिशा बदलते थे। नौजवान पीढ़ी की गलत दिशा में गई गाड़ी को पुरुषार्थ करके सही राह दिखाई। जिन का यही कहना था, अपने धर्म को समझो, जानो। हर नौजवान के प्रश्न का समाधान इतने सुन्दर ढंग से करती थी कि हर किसी की सोई आत्मा जाग जाती थी जिनमें सम्प्रदायवाद का अंश भी नहीं था। अपनी शिष्या अर्पण प्रज्ञा जी म० सा० से इतना गहरा स्नेह था। कैसे छोड़ गये उन्हें सब यही कहते हैं। ऐसा गुरु शिष्या का प्रेम आज तक देखा नहीं गया। हम तो कहते थे म० सा० 5-10 साल इधर ही विचरना पर आप तो हमें विल्कुल ही छोड़कर कहीं ओर ही पधार गई हो।

''क्यों आई अक्टूबर की 26, बगिया का माली छोड़ गया,
क्या जल्दी थी जाने गुरुणी सा, नाता जो हमसे तोड दिया।

— सौ० आशा, दिलिप चोपडा, गोंदिया (महाराष्ट्र)



हमारा परम सौभाग्य था कि हम जैसे धर्म से अनभिज्ञों को श्री संयम प्रभा जी म० सा० का संयोग मिला और उनके पुरुषार्थ तथा प्रवचन प्रभाव से आकर्षित होकर हम जिन धर्म अनुरागी बने। म० सा० ने भयंकर गर्मी का परिषह सहकर भी हाऊसिंग बोर्ड के लोगों के भीतर धर्म जागृति उत्पन्न की है। सरलता की धनी, छल कपट, झूठ से कोसों दूर जिनका जीवन था। हमको म० सा० ने सम्यक राह दिखाकर जो उपकार किया है उस ऋण से हम कभी उऋण नहीं हो सकेंगे। मैंने बैतुल चौमासे में देखा कि किस कद्र लोग उन्हें भगवान की तरह पूज रहे हैं। वास्तव में वह विभूति भगवान तुल्य पूजा के काबिल थी। म० सा० क्या गये हैं हमारा तो मार्गदर्शक ही चला गया है। हमने उनका वहुत प्रेम, स्नेह पाया है। उनके देवलोक के समाचार सुनते ही ऑखों से सावन माह में बरखा की तरह अश्क बहने लगे।

— सावित्री, महेन्द्र शर्मा, हिसार



कुछ आत्माए इस धरा इस तरह आती हैं जिनका स्थूल शरीर छूटने पर भी वे चिरकाल तक स्थायी रहते हैं। समय की ऑधी भी उस व्यक्तित्व को धुँधला नहीं कर सकती, ऐसी ही थी हमारी श्रद्धा की केन्द्र श्री सयम प्रभा जी म० सा०। जिन्होंने हमें चातुमास में खूब सींचा हे। म० सा० ने सयम नाम धरा कर सदा स्वय को सयम में ही अनुरक्त रखा। हजारों जिज्ञासुओं ने आपकी वाणी द्वारा तथा समाधान द्वारा मिथ्या भ्रमणाओं को समूल नष्ट कर दिया। वे विषमताओं की ऑधियों को चीरती हुई अपने कदमों को आगे वढाती रही। म० सा० के सौम्य व्यक्तित्व के साथ-2 उनके आचार-विचार एव सद् व्यवहार से सभी प्रभावित थे। जेन शासन में यह ज्योति पुज भले ही समयावधि के लिए उदित हुयी लेकिन अपनी सयम साधना तथा प्रवचन शेली द्वारा सैंकडों लोगों के जीवन को आलोकित कर गयीं। अपने अनूठे व्यक्तित्व से वे सदा के लिए अमर हो गई। कमाल की प्रत्येक विषय की जानकारी थी। वुद्धि तो इतनी विलक्षण थी कि धारा प्रवाह विना देखे वोलने में कहीं भी अटकाव नहीं था। म० सा० के जाने से हर मन व्यथित है सभी के नेत्र सजल हैं। सहसा आए इस तूफान से सारा समाज हिल गया है। म० सा० हमेशा अमर रहेंगे।

— अध्यक्ष पानमल कासवा, हिंगणघाट (महाराष्ट्र)



मेरी अनत आस्था की आलवन थी सयम प्रभा जी म० सा०। उनमें एक असली साधुता का दिग्दर्शन हुआ। सरलता, सच्चाई आदि गुणों से पूरित जीवन था। नामेषणा से कोसों दूर थी। म० सा० ने यहाँ पधार कर अल्पकाल में चिरकाल के लिए अपनी अमिट छाप छोडी। कट्टर से कट्टर श्रावक भी नतमस्तक था उस विभूति के चरणों में। प्रवचन कला ने तो एक तूफान सा ला दिया सागर में। म० सा० को हमारा शत्-शत् वदन।

— सौ ममता झामड, खामगाव (महाराष्ट्र)



प्रवचन प्रभाविका श्री सयम प्रभा जी म० सा० के देवलोक से हमें गहरा आघात लगा है। शेष काल में पाली पधारने पर जो लहर देखी वह भी विस्मयकारी घटना थी। अल्प वय में शासन की इतनी प्रभावना करना हर किसी के वस में नहीं। शासनेश प्रभु से यही प्रार्थना है दिवगत आत्मा को समाधि रहे।

— लाल चद जी पोरवाल, पाली (राज)



26 तारीख की सुवह जव हुई, पर पता नहीं था जीवन की अन्धेरी रात आ गई। सूचना मिली म० सा० की तवियत सीरियस है। मन शका से भयभीत हो गया और आखिर

वही हुआ। सब कुछ खो गया, लुट गया। राह दिखाने वाली ज्योति बुझ गई। महा काल भी क्यों कठोर बना जो हम पर दया नहीं आई कि गुरुणी सा० कितनों को सहारा देने वाली है, उनके विना हम अनाथ हो जायेंगे। म० सा० का जीवन एक दर्पण था। सरलता कूट-2 कर भरी थी जिनको केवल संयम ही प्यारा था। आडम्बर, सम्प्रदायवाद से तो कोसों दूर थे, इतने अल्प समय में जहां अपनी पैठ जमाने में 5-10 साल लग जाते हैं वहां गुरुवर्या ने 2 साल में ही महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़ राज्यों में अपनी छाप छोड़ दी। कमाल की प्रवचन शैली थी। अब चिन्ता होती है कौन हमारा मार्गदर्शन करेगा, कौन बतायेगा, किस राह पर चलना है ? आगे कब शासन को, हमें ऐसी चुम्बकीय मणि मिलेगी।

— किशन कुमार भण्डारी, दर्ग छत्तीसगढ़



संसार में नित्यप्रति कई प्राणी जन्म लेते हैं और काल के गाल में समा जाते हैं। लेकिन उनका जन्मना, मरना समाज के लिए कोई विशेष महत्व नहीं रखता। इस भीड़ में कुछ ऐसे भी व्यक्ति जन्मते हैं कि जिनका जन्मना देश, समाज, संघ के लिए गौरवशाली होता है। श्री संयम प्रभा जी म० सा० भी ऐसी ही विभूति थी। जिन्होंने अपनी प्रतिभा से आलोकित करके सैंकड़ों क्षेत्रों में धर्म पताका फहराई है। जिनका जीवन इन्द्रधनुष की तरह बहुरंगी प्रतिभा से सुशोभित था। म० सा० के अचानक देहावसान की खबर सुनकर सभी भक्तों को गहरा सदमा लगा है। उनकी पावन प्रतिमा हमेशा दिलों दिमाग में घूमती रहेगी। म० सा० अद्वितीय अनुपम साध्वी थीं। दीन दुखी लोग उनको एक फरिश्ता समझते थे। वर्तमान में द्रुत गति से फैल रही सम्प्रदायवाद की बीमारी से वे कोसों दूर थीं। हर सुबह नई जानकारी, नया तत्वज्ञान जिनवाणी के माध्यम से श्रवण करने को मिला था। म० सा० भले ही हमसे जुदा हो गये हैं, लेकिन हमेशा अपने गुणों से हमारे बीच रहेंगे।

कुछ गुल तो दिखाकर बहार हो जाते,
कुछ फक्त कॉटों की तरह नजर आते।
कुछ गुल हैं फूले नहीं जामे में समाते,
गुच्छे बहुत ऐसे भी हैं जो मुरझा नहीं पाते।

— सौ. जय श्री रांका, महाराष्ट्र



गुरुणी वर्या श्री संयम प्रभा जी म० सा० के विराट व्यक्तित्व का विशलेषण करना, ये उनका परिहास होगा। उनका जीवन तो एक अनुभूति था। प्रथम बार भिलाई पधारे तो वहाँ एक ही दिन में पर्युषण जैसा का वातावरण बना देना ये उनके कठोर संयम तथा प्रवचन का ही कमाल था। म० सा० ने महाराष्ट्र चौमासा किया। मैंने भिलाई के लिए बहुत आग्रह किया

लेकिन गर्मी ज्यादा है कहकर टाल दिया पर मैं कहती हूँ -

'महाराष्ट्र मे क्या लड्डू पडे थे,
पलके विछाये क्या हम न खडे थे।'

मुझे वडी प्रसन्नता हे कि छत्तीसगढ के अल्पकालीन प्रवास में वडे-2 श्रावकों का अह तोड दिया। प्रत्येक व्यक्ति उन चरणों में नतमस्तक था। म० सा० के सयम की सुरभि युगों-युगों तक महक देती रहेगी। म० सा० जव छत्तीसगढ की तरफ पधारे। एक वार तो डर लगता था लेकिन यहाँ आकर धर्म की ध्वजा फहराई, हर व्यक्ति उस व्यक्तित्व से प्रभावित हो गया। जयगच्छ का नाम वुलन्दियों को छू गया। म० सा० की जीवन ज्योति सदा प्रकाशित होती रहेगी। उस दिवगत आत्मा को शत्-शत् वदन।

– सो ववली वाई सोनी, भिलाई (छत्तीसगढ)



ख्वावो मे नहीं जाना था, वुझ जायेगी सयम ज्योति।
तुम को खोकर ए गुरुणी सा०, जन 2 की अखिया हैं रोती।।

चमन में भिन्न तरह के पुष्प खिलते हैं। किसी की सोरभ विशेष होती हे। ऐसा ही एक कुसुम था, मेरी श्रद्धा का केन्द्र गुरुवर्या श्री सयम प्रभा जी म० सा० जो प्रकृति के प्रकोप के चलते आज हमसे वहुत दूर चली गई हैं। प्रयम वार छिदवाडा में दर्शन किए पर उनका सयमी जीवन देखकर छिदवाडा का जन-जन उन्हीं का हो गया। उनकी जोश भरी अविरल वाणी तया ओजस्वी व्यक्तित्व से प्रभावित होकर हर कोई जेनत्व में लीन हो गया। हमने कितनी विनती की कि हमें चोमासा दे दो। "पर भविष्य में सोचेंगे" कहकर हमें हमेशा के लिए वंचित कर दिया। वडे-2 साधु मुनियों ने जो नहीं किया, वह म० सा० ने कर दिखाया। प्रत्येक साधु-साध्वी भी यही कहते थे कि यह कोन सयम प्रभा है जिसकी पूरे मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र में धूम मची हुई हे ? 'गुरुवर्या श्री का साया हर जन्म में मिले, यही कामना है।'

– सदीप वाघरेचा, छिदवाडा (म प्र)



जिस प्रकार रजनी में आकाश मडल में अनगिनत तारे टिमटिमाते रहते हैं। रात्रि भर अपनी चमक दिखाते हैं ओर दिवाकर के उदित होते ही विलीन हो जाते हैं उसी प्रकार इस धरती पर अनेकों प्राणी आते हैं। लेकिन जन्म लेने की सार्यकता उसी की है जो इस जीवन में कुछ कर गुजर जाते हे। साध्वी श्री सयम प्रभा जी का जीवन भी सद्गुणों का द्योतक है। जिसके गुणों की सौरभ की सुवास ने समस्त समाज, सघ, शासन को सुवासित कर दिया। जिन्होंने जीवन की अंतिम श्वास तक सयम क्रियाओं में (वीमारी के दोरान भी) शिथिलता नहीं आने दी। वे उच्च चारित्र तया सरलता सम्पन्न साध्वी रत्ना थी। सयमी क्रियाओं में सजग

होने के साथ-2 शास्त्र स्वाध्याय की भी रुचि रखती थीं। गुरुदेवों के दिल में उन्होंने अपना प्रतिष्ठित स्थान बनाया था। लघुवय में उनका इस तरह चले जाना सबके लिए दुखद है।

— मंत्री राजेन्द्र जैन, अग्रवाल मण्डी, पानीपत



मुझे जव यह समाचार मिला कि प्रातः स्मरणीय साध्वी रत्ना श्री संयम प्रभा जी म० देवलोक हो गये हैं मैं तथा आष्टा के लोग हतप्रभ रह गये। यह क्या हो गया इतनी जल्दी मौत ले गई। उनके जीवन तथा प्रवचनों ने हमें एक नई रोशनी, शिक्षा प्रदान की है। मुझे उनके सान्निध्य तथा एक्युप्रेशर विशेषज्ञ होने के नाते उनके शरीर सुख साता उपजाने के निमित्त उपचार का पुण्य अवसर भी मिला। इस शरीर के प्रति उनका मोह इतना क्षीण हो चुका था कि वे अपनी संयम मर्यादा के प्रतिकूल कोई उपचार या अतिचार लगाने को सहमत नहीं होती थी, फिर भी उनके लिए उपचार निर्देशन का अवसर मुझे मिला। हर किसी की जुबॉ पर यही है म० सा० को अभी 10-20 साल और रहकर यहाँ विचरना था, लेकिन कर्मो के आगे हम हार जाते थे। उस पुण्यवान आत्मा के चरणों में शत्-शत् नमन।

''संयम की प्रभा का चमत्कार हो गया, श्रम श्रमण की दिशा में साकार हो गया।
'जय' की प्रतिज्ञाएं रोशन हो रही हैं, रसना के रस का समर्पण 'अर्पण' कर रही है।।''

— ललित बनवट, आष्टा (मध्य प्रदेश)



इस विशाल विश्व में अनेक जीवन ज्योतियाँ उत्पन्न होकर आध्यात्मिक शंखनाद करने वाली होती हैं। जिनके व्यक्तित्व तथा व्यक्तिगत जीवन का उल्लेख करना हाथों से सागर की गहराई नापने जैसा परिहास हो जाएगा। श्री संयम प्रभा जी म० सा० का जीवन भी ऐसे ही गुणों की गहराई लिए हुए था। म० सा० ने न केवल जयगच्छ की गरिमा को बंढ़ाया वरन् शासन के नाम को उज्ज्वल किया है। वे साधु मर्यादा को पालने में पर्वत की तरह अडिग थी। काफी समय से समत्व भावों से अन्तर की समाधि से रोग परिषह से सामना कर रही थीं। शरीर के प्रत्येक रोम में वेदना होने के बावजूद भी जिनवाणी की अनुगूँज घर-2 तक पहुँचाने का प्रयास कर रही थीं। म० सा० के देवलोक का समाचार सुनकर सभी अवाक रह गये। उनकी आत्मा को चिरस्थायी शांति शीघ्र मिले, यही कामना है -

— अलकेश मुणोत, ब्यावर (राज.)



जयगच्छ की ही नहीं वरन् पूरे समाज की अमूल्य निधि के आज देवलोक होने में संघ में अपूरणीय क्षति हो गयी है। पर काल के आगे किसी का वश नहीं चलता। ऐसी ज्ञानवान, कुशल प्रवचनकार साध्वी मिलना दुर्लभ है। जोधपुर का चातुर्मास कोई भूला नहीं है। उनका

जीवन त्याग, वैराग्य एव सरलता का अनुपम उदाहरण था। जयगच्छ को उनपर बहुत सी आशाएँ लगी थी लेकिन वे तो जल्दी ही छोडकर चली गयीं।

ज्ञान भरा प्रवचन खरा, जब देती थी आप,
जिज्ञासु मन प्रसन्न बने, त्यागे सारे पाप।

– सोहन लाल कटारिया जोधपुर



हृदय आसन पर आसीन श्री सयम प्रभा जी म० सा० आज हमें निराधार छोड कर चले गये हैं। उनका जीवन अपने आप में अनेक विशेष गुणों से पूरित था। गाँव में जेन साधु-साध्वियों का आगमन तो होता रहता था लेकिन उनके जेसी प्रतिभा, विशेषता किसी में नहीं देखी। म० सा० ने पूरे गॉव के जैन-अजेन सभी को अपनी दिव्य वाणी द्वारा जागृत कर दिया। म० सा० में एक विशेषता देखने को मिली थी कि वे छोटे-बडे सभी को समान दृष्टि से देखने तथा सभी को सम्मान देते थे। मुझे उनको ज्योतिष के विषय में जानकारी देने का सुअवसर मिला। में परम सोभाग्यशाली रहा जो म० सा० का सान्निध्य मिला। उस देवी तुल्य गुणवती के जाने से हम सभी शोकाकुल हैं। जिसके आने की कमी इन्तजार करते थे वह इन्तजार अब हमेशा इन्तजार ही रहेगा, उसकी कभी समाप्ति नहीं होगी। परमपिता परमेश्वर उस आत्मा को शांति देवे।

– मानाराम सारस्वत, धन्नारी (राज)



जन की आस्था के केन्द्र श्री सयम प्रभा जी म० सा० के देवलोक गमन के समाचार सुनकर समस्त पीपाड सघ को गहरा आघात लगा। जिस क्षण की हमने कभी कल्पना भी नहीं की थी वह क्षण इतनी शीघ्र आ जाएगा कभी सोचा भी नहीं था। पीपाड का प्रत्येक व्यक्ति म० सा० के जीवन से प्रभावित हुआ था। उन्होंने पीपाड में अल्प समय देकर भी अमिट छाप छोडी थी। साध्वी जी ने भयकर वेदना के क्षणों में भी जिस हिम्मत तथा आत्मबल का परिचय दिया हे वह अनुकरणीय तथा अनुमोदनीय है।

– तेजराज जैन, पीपाड (राजस्थान)



मी अजैन असलो तेरी, सर्व जेन मडली परिचित आहेत त्या पैकीज श्री सयम प्रभा जी याचे प्रवचन एकेण्याचा व जवलीक साधण्याचा जो अल्प सा लाभ मिळाला तो थोडक्यात लिहण्याचा प्रयत्न के ले ला आहे। म० सा० त्या हिंगनघाट चातुर्मास निमित्त आगमन झाला, त्याच दिवशी त्याचे दर्शन झाले। म० सा० ची मराठी शिकण्याची फार इच्छा आहे, मी थोडा विचार करीतच बसले, म० सा० तडफदार भाषण करणाच्या शिस्तीने व सयमा ने वागणन्या

सर्व लोक रोज वंदन करून गुरु मान लेल्या संत मी कसे व काय शिकवावे ? चिंतन केले आणि भेट घेतली रोज शिकविणे सुरू झाले। चातुर्मास संपल्यावार म० सा० ची प्रकृति अस्वस्थ होती विहार करायचा होता, नागपुर चा तज्ञ डा० चे उपचार ध्यावे असे वारंबार सांगितले पण गुरुवर्याच्या आज्ञे शिवाय काही वेगल उपचार करायचे नाही व विहार थांबवायचा ताहि असे ठामपणे सांगितले किती संयम शिस्त नि भोग भोगण्याची तयारी। जैन स्थानकांत प्रवचना साठी ठेलेवर येणे प्रवचन स्पष्ट आवाजांत पोटनिडकीने तकमलीने सांगणे प्रत्याकाने धर्मा चे महापुदषाचे महत्व समजुन ध्यावे, अशी धड़पड़ त्याची होती। विविध दृष्टांत देवून तड़फदार व तेजस्वी भाषणातुन म० सा० जी मनुष्य जन्म कशा साठी ? त्यांचा सदुपयोग करण्या साठी आणि मुक्तीचा मार्ग मिलविण्या साठी प्रत्येकाने प्रयत्न करावा है परवुन दिले खूब गुर्दो ण्हायची अजैन देखील भरपूर प्रमाणांत लाभ घेत असलेल पाहून त्यांना समाधान वटायचे। मी अजैन अज्ञानी मला जैन धर्म बद्दल प्रेम असलेतरी समजत काही नन्हते। पण त्यांचे सहवासांत तप जप माहिती झाला ते च पुण्य पदरी पडले, संयम शिस्त धीर उपवास इ. शिकायला मिकाले चांगले तेवढ़े व प्रहतील पचेल एवढ़े सुसंस्कार घेणे माझे आद्य कर्त्तव्य होते। त्याना सत्यपणा प्रामाणिक पणा फार आवड़े सरल मन मिकावू स्वभाव संयमशील वागणे इ. चांगले गुण इतके होते की मजजवक शब्द अपूरे आहेत। दिल्ली ला दिवंगत झाल्याची वार्ता पसरली असतं वाईट वाटले निसर्गाचा नित्यक्रम जरि मसल तरी सर्वांना दुःख होणे सहाजिकच आहे। आम्ही त्यानां हार्दिक श्रद्धांजली अर्पण करतो मृत आत्म्यास चिर शांति मिके अशी सर्व शक्तिमान अशा परमेश्वरा जवक प्रार्थना करतो।

म० सा० हमें ना बिसारियो चाहे लाखों लोग मिल जाए,
हम सम तुमको बहोत है, तुम सम हमको नाहीं।

— दीनानाथ नांदूरकर, महाराष्ट्र

आज अचानक समाचार मिले कि कुशल वक्त्री, व्यवहारज्ञ साध्वी श्री संयम प्रभा जी म० सा० हम सबको छोड़कर देवलोक में पधार गई हैं। सभी का मन शोकाकुल है, मन को समझाने पर भी आकुलता मिट नहीं रही है। म० सा० 1987 में चातुर्मास में गुरुवर्या श्री सुगन कँवर जी म० सा० के सान्निध्य में विराजमान थे। उस समय उनके प्रभावशाली प्रवचन से कोई भी प्रभावित हुए विना नहीं रहा था। म० सा० का चले जाना प्रत्येक व्यक्ति के दिल को दर्द देने वाला है।

— नोरतनमल, बाबेल (ब्यावर)



शासन की महान विभूति श्री संयम प्रभा जी म० सा० हमारी आंखों से ओझल होकर हम से वहुत दूर चले गये हैं। म० सा० भले ही ऊँचे देवलोकों में पधार गए हैं। फिर भी हमारा मन से सम्पर्क हमेशा जुडा रहेगा। वह महान ज्योतिर्मय आत्मा जव प्रवचन देती थी

तो सब वाह-2 कह उठते थे। उनके देवलोक का समाचार सुन करके दिल इस सच्चाई को स्वीकार करने को तैयार नहीं था। क्योंकि उन्हें अभी सेंकडों लोगों का पथ प्रदर्शक बनना था। उस महान आत्मा को हमारे कोटिश वदन ।।

– चम्पा लाल विमला बाई मेहता (जोधपुर)



परम विदुषी, ''म्पन्नता की मूरत महासती श्री सयम प्रभा जी म० सा० के यू अकस्मात ब्रह्मलीन होने पर समाज को गहरा आघात पहुँचा हे। आपने अपने छोटे से जीवन को धर्म की अग्नि में तपाकर सार्थक बना लिया। 26 अक्टूबर, 2002 का दिन समाज के लिए कितना पीडादायक था, जब दिल्ली में एक सूर्य अस्त हो रहा था। आप श्री की प्रवचन शेली इतनी प्रभावशाली थी कि 7 दिसम्बर, 2002 को श्री राकेश मुनि जी ने अपनी प्रवचन सभा में मुक्त कठ से आपकी प्रवचन शेली की भूरी-2 प्रशसा की। वास्तव में आपने अपनी सयम क्रिया तथा प्रवचन द्वारा अल्प समय में प्रत्येक दिल में छाप छोडी हे।

याद आता है तेरा हसना मुस्कराना मधुरता से धर्म सिखाना,
कभी न भूल पाएगे हम, जोशीले स्वरो मे प्रवचन सुनाना।

– सा कुसुम जेन, दिल्ली



दिल्ली से अचानक समाचार आया कि श्री शारदा जी म० सा० की श्रेष्ठ ज्येष्ठ पट्टधर सुशिष्या प्रवचन कला में प्रवीण श्री सयम प्रभा जी म० सा० का देवलोक हो गया है। समस्त महामन्दिर सघ के लोग शोकमग्न हो गए। सघ ने एक महान ओजस्वी तेजस्वी साध्वी को खो दिया। ऑखों में घूमने लगे 1993 के चातुर्मास के दिव्य नजारे। सरलता तथा करुणा की धनी उस मूर्ति को सघ का बहुत-बहुत वदन ।।

देह रहे पर देह से रहते देहातीत,
उन सानी सयम' चरणो मे वदन हो अगणित ।

– महावीर चद जागडा, महामन्दिर (जोधपुर)



श्री सयम प्रभा जी म० सा० की अलविदाई की खबर मिलते ही समस्त सघ शोकसागर में डूब गया। म० सा० का सयमी जीवन शुद्ध तथा सात्विक था। इस दर्दनाक समाचार को पाकर आचार्य आदि सभी गुरुदेव को गहरा आघात पहुँचा। जयगच्छ का एक रत्न खो गया। वे श्रमणी परम्परा की उज्ज्वल धारा में जयगच्छ की एक महान विभूति थी।

म० सा० को कोटिश नमन ।।

– मत्री मोहनलाल जीरावला, लक्ष्मी नगर (जोधपुर)

काव्यांजलि

संयम का रूप

(तर्ज-दिल के अरमां)

—श्री शारदा जी म. सा.

संयम तेरी साधना कमाल थी, धर्म की आराधना बेमिशाल थी। टेक।

ज्ञान जीवन का सदा श्रृंगार था, ज्ञान ही आत्मा का आधार था.........॥1॥

नाविक बन जीवन की नौका खेई थी, पार होने में कुशल मल्लाह थी.........॥2॥

अनघड पत्थर को दिया वो रूप था, शिल्पी बन तराश दिया निज रूप को.........॥3॥

प्रवचन शैली गजब थी सब मानते, प्रयोग माइक का करो ये मांगते.........॥4॥

इस जमाने की हवा न छू सके, महाव्रतों के आगे क्या कोई टिक सके.........॥5॥

साधुता के वाने का निखार था, जो कहा वो शास्त्रानुसार था........॥6॥

रोग में समत्व को अपना लिया, दीप संयम का ही है जलने दिया.........॥7॥

'शारदा' तुमने देखा वो रूप था, जो कि संयम के लिए अनुरूप था.........॥8॥

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

नाम की सार्थकता

—श्री चेतना जी म. सा.

सं-यम साधना की दृढ़ता थी अचल
य-ति धर्म के पालन में प्रमाद न किया था इक पल
म-नोयोग से थी संयम सुदृढ़ और सबल
की-र्ति पाई जीवन में पवित्र जैसे गंगाजल
प्र-वचन सुनकर तुम्हारे श्रोता हो जाते कायल
भा-वनाएं अंतर की सभी के लिए रहती सदा निर्मल
स-मत्व की साधना से जीवन बनाया था उज्ज्वल
दा-यित्व निभाने में रहती थी सदैव अटल
आ-चरण की महक थी जैसे सुगंधित कमल
लो-क में यश पाया था तुमने दिव्य मंगल
कि-या कीर्तन जिनवाणी का खूब प्रबल
त-राजू पकड़ न्याय का दूर किया अन्याय अनल
हो-वे जय-जयकार तुम्हारी कहता जयमल संघ सकल ।

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

जय सघ की बिलख

(तर्ज सौ बार जन्म लेगे)

—श्री जय प्रभा जी म सा

सयम प्रभा जी के जाने से, जय सघ बिलखता है
अधियारी छाई है, कुछ समझ न आता है
इस क्रूर काल ने तो निर्दयता दिखलाई
नही जोर चला किसका तुमने भी हार खाई
समाचार हमें मिलते, बढ रही अस्वस्थता है ॥1॥
तेरे जाने से हम सब बेसहारा बन क्यो गए
इस कमी को पूरी करने, दिवा स्वप्न हमारे हुए
तू देह छोड चली जग से, क्या यही नश्वरता है ॥2॥
समाधिमरण तेरा सयम की मजिल था
दृढ किया आचरण से ही, जीवन तेरा निर्मल था
श्रद्धाजलि देती हुई, 'जय प्रभा' का मन रोता है ॥3॥

* * * * *

दिव्य ज्योति

(तर्ज मेरा जीवन कोरा)

—साध्वी शशि प्रभा जी

महाश्रमणी सयम प्रभा जी, हर पल याद आए

मन ये मेरा दुखी हो रहा, आसू आ रहे ॥टेक॥
तू कहा पर खो गई, ये ढूढती आँखें
आकाश को भी माप लेती, नहीं हैं पॉखें
एक बार तुझे देख लू, बस यकीन हो जाए ॥1॥
जय सघ की दिव्य ज्योति, उजाला किया तुमने
जिनवाणी तेरी कहा सुनेंगे, हो गए सपने
तेरी वाणी थी अनुपम, स्मृतियाँ आज आए ॥2॥
26 ता दुर्दिन आया, छीन ले गया काल
धेर्य अब हमें कोन बधाए बुरा हुआ हे हाल
'शशि प्रभा' श्रद्धाजलि देती आत्म शांति पाए ॥3॥

* * * * *

संघ की ज्योति

(तर्ज-ये माना मेरी जॉ..........)

—साध्वी रवि प्रभा जी

ओ संयम प्रभा जी कहां तुम गए हो, तुम्हे याद करके नयन थक गए हैं (टेक)

युवावस्था में ही मन था जागा, गुरु पास आकर के साधु बाणा मांगा हो-हो साधु.......
ज्ञान ध्यान सीखा मन को लगाया, आत्म शुद्धि का पथ अपनाया.......... ।।1।।

जप-तप करके जीवन सजाया, धर्म का है मेला खूब था लगाया हां-हां खूब........
उपकार किया जिनवाणी सुनाकर, भटकते जीवों को पार है लगाया......... ।।2।।

जयमल संघ की थी तुम ज्योति, साध्वियों में अनुपम मोती हां-हां अनुपम.........
भावों की सरगम यही गीत गाती, कि संथारे का समय आ गया है........ ।।3।।

उग्र विहारों में दोष न लगाया, जीवन रूपी पुष्प था खिलाया हां-हां पुष्प..........
जीवन लासानी जीया 'शारदा तूने, संकल्पों को तूने जगाया................ ।।4।।

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

मुक्तक

—साध्वी इन्दुप्रभा जी म. सा.

माँ रामप्यारी की लाडली "बाला" पिता कुन्दन की हियहार ।
जागलान कुल में जन्म लेकर चमकाया परिवार ।
जोंधण ग्राम में जन्म हुआ जब छायी नई बहार ।
इकलौती छः भाईयों की बहन पाया खूब दुलार ।।1।।

धर्म को उतार हृदय में जाना यह संसार असार ।
प्रेम करना प्राणी मात्र से माना यही जीवन का सार ।
"राज" मुक्ति का पाने पानीपत में बन गई फिर अणगार ।
"गुरुणी शारदा" चरणों में किया "संयम" को स्वीकार ।।2।।

"गुरुवर शुभ पारस" बने तुम्हारे संयमी नौका के पतवार ।
प्रवचन छटा निराली तेरी यश छाया था अपरम्पार ।
"सुगन" की सुगंध फैलाकर तुमने स्वप्न किया साकार ।
अंत समय में दिल्ली शहर में किया आलोयणा संथार ।।3।।

जीत रोग परिषह पर पायी मानी नहीं कभी भी हार ।
सघर्षो को सहते-सहते वनी तुम जन-जन की तारणहार ।
समत्व की साधना से किया तुमने आत्म श्रृगार ।
व्यवहार कुशलता से पाया था चतुर्विध सघ का खूब प्यार ॥4॥

जिन शासन को पूर्ण समर्पित हो गुरु आज्ञा हृदय में धार ।
सभी वीच में रहकर के भी करती रहती आत्म-विहार ।
अर्पण प्रज्ञा के जीवन की वनी थी तुम खेवनहार ।
"इन्दु" की भावना हे यह शीघ्र पाओ "सयम" मुक्ति द्वार ॥5॥

* * * * *

याद आती है

(तर्ज वहुत प्यार करते है)

—साध्वी सवेग प्रभा जी

वहुत याद आती हो गुरु वहना तुम, भूल न सकूगी जव तक हैं हम (टेक)

चोधरी कुल में जन्म था पाया, पिता कुन्दन का मन हर्षाया,
रामप्यारी के घर गूजी सरगम ॥1॥

युवावस्था में वैराग्य था आया, 6 भाईयों का भी प्यार छिटकाया,
1986 को लिया था सयम ॥2॥

दीक्षा लेकर ज्ञान ध्यान सीखा, शारदा गुरुणी से लेकर शिक्षा,
धर्म मुनि से पाया धर्म का मर्म ॥3॥

जयमल सघ का नाम चमकाया, गुरु रोशन का नाम दिपाया,
जयमल गच्छ को हुआ वहुत गम ॥4॥

महाराष्ट्र तक भी धर्म फेलाया, सत्य अहिसा का सदेश सुनाया,
करना सिखाया धर्म हरदम ॥5॥

17 साल तक सयम था पाला, अस्वस्थ थी फिर भी हाथ में माला,
सोचती थीं मन में कटेंगे करम ॥6॥

26 अक्टूवर को स्वर्ग सिधाई, सभी के दिलों में उदासी थी छाई,
वार शनिवार था तिथि पचम ॥7॥

शारदा शिष्य सवेग ये कहती, धर्म से आत्मा वहुत महकती,
जग जाए आत्मा करें जो धर्म ॥8॥

उज्ज्वल ज्योति

—साध्वी निपुण प्रभा जी

ओ संयम की उज्ज्वल ज्योति
ज्ञान गुणों की अनुपम मोती
प्रवचन की हीरक कणियां
सदा समकित के बीज बोती
अचानक बीच राह में बिछड़ गए
फिर भी दिल से नहीं जा पाओगे
आंखों में अश्रु है गम के
उम्र भर याद मुझे आओगे
संयम दर्शन की चाह रही अधूरी
संयम चक्र के कारण रह गई दूरी
जीवन में बनो निपुण यह सिखाया तुमने
मम पथ प्रदर्शन कर करो आस पूरी
करो आस पूरी ।



मैने तो की वफा तुमने वेवफाई

(तर्ज मेरा जीवन कोरा)

—अर्पण प्रज्ञा

छोडकर गुरुवर्या मुझ को किधर चल दिए ।
विन तुम्हारे SSS आज अर्पण किस तरह जिए (टेक)

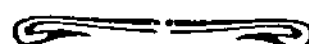
तुमने वचन लिया था मुझ से वनना न वेवफा,
वेवफाई तुमने ही की हे, मेंने तो की वफा,
ना हुई SSS सेवा तुम्हारी जो छोड चल दिए ॥1॥

एक पल की भी जुदाइ, गवारा थी ना कभी,
तुममें भी देखी वेचेनी, जव दिखी थी में नहीं,
लाई चादर SSS इतने अव तो नहीं सब्र किए ॥2॥

रोशन करेगी पथ ये मेरा शिक्षाए तेरी,
अरमा करू पूरे तुम्हारे, वस चाह यही मेरी,
करना पूरे SSS तुम भी अपने वादे जो थे किए ॥3॥

मेरे नसीव केसे वनाए, ऐ खुदा मेरे,
देख पीडा क्यों न वहे अश्रु नयन तेरे,
वेदर्द SSS केसी हे कुदरत, सारे सपने छिन गए ॥4॥

धरती गगन दोनों हें रोते, भवर का ये हाल हे,
सो गया माझी हमारा, विन ज्योति दीपक वेहाल है ।
जख्मों को SSS सहलाओ आके, घाव हो गए ॥5॥



हर पल मुझको साथ रखा था, साथी को अकेला क्यो छोड गए ।
करू मे जाकर किससे शिकवा, जब कर्म ही मुझसे रूठ गए ॥

तीर्थ तुम्हीं तो मेरे थे

(तर्ज : बच्चे मन के सच्चे......)

—अर्पण प्रज्ञा

आना तुमको आना, कहीं छोड़ मुझे ना जाना,
मेरे अंतर मन में आकर अपना गेह बनाना (टेक)

झूठे सारे वादे हुए, कुछ भी तो तुम कह न गये,
कहते थे तुम बिन तेरे, जीवन सपने अधूरे मेरे,
कैसा तुमने धोखा दिया, विन बतलाये विहार किया,
फिर न करना वादा किसी से, मुश्किल हो जो निभाना.......... ॥1॥

तेरे सहारे जग छोड़ा, सब से नाता था तोड़ा
बीच भंवर में छोड़ दिया, धागा प्रीत का तोड़ दिया,
साथी मिला बेदर्द मुझे, आंसू देख न दर्द जिसे,
मेरे जीवन अर्पण बदले, मिला ये क्या नजराना.......... ॥2॥

इन्तजार सबरी ने किया, राम ने आकर पूरा किया,
मैं कैसी अभागिन हूं, पुण्य हीन बिन किस्मत हूं
राम मेरे नहीं आएंगे, न मुझको धीर वंधाएगें
सारी उम्र पुकारे मनवा, बन न जाये फसाना.......... ॥3॥

मेरी थी तुम मेरू शिखर, जहां चिंता थी न कोई फिक्र,
तीर्थ तुम्हीं तो मेरी थी, कटती जहां जग फेरी थी,
सिद्धांतों खातिर अडिग रहे न भाव में बहना वचन कहे,
जब तक तारे चांद गगन में, गाए गीत जमाना.......... ॥4॥

अब छोड़ा कम रोष नहीं, खाली भरा मेरा कोष नहीं
वादा करो अब तुम मुझसे, मिलूंगी अगले भव तुझसे,
मुक्ति में जब जाऊंगी, संग में तुझे ले जाऊंगी,
प्राण जाए पर वचन न जाए, कर ऐसा दिखलाना.......... ॥5॥



तुम्हीं तो थी मेरी मन्जिल

(तर्ज तुम्ही मेरे मदिर)

—अर्पण प्रज्ञा

विछुड क्यों गइ हो, दूर क्यों हुइ हो, तेरी जुदाइ कोइ कैसे सहेगा,
तेरे विन महफिल उदासी भरी है, जीवन भी सूना-सूना रहेगा ।।टेक।।

वहारें हैं सूनी खामोशी हे छाई, आज अमावस की रुत काहे आई,
किसको खवर थी सुवह सब कुछ लुटेगा, रोशन जन्म था जिससे वो दीप बुझेगा ।।1।।

सयम की तुमने जो राहें दिखाई, कठिनाइयों में भी दिलासा दिलाई,
नक्शे कदम पे तेरे चलना है मुझको, ज्ञान दिया जो तुमने उपवन खिलेगा ।।2।।

तुम्ही कल्प तरुवर मंजिल तुम्हीं थी, साया तुम्हारा था आसरा भी तुम्हीं थी
करी अनसुनी सवकी दामन छुडाया, दिल में जो मूर्त तेरी उजेरा रहेगा ।।3।।

सुन ले पुकार प्रभु दर्द भरी ये, लोटा दे उनको चाहे मेरी जान लेके,
उन्हीं से किनारे पर कश्ती लगेगी, नहीं तो ये जीवन भवर में रहेगा ।।4।।

छूट गई थी देह से भी ममता, रोग ने सताया फिर भी देखी थी समता
दुर्वल तन में कडा आत्म वल छिपा था, सुनेगा जो गाया तेरी रोता रहेगा ।।5।।

लिया जव से सयम तूफानों ने घेरा, डिगी नहीं कष्टों से कहा कर्म है मेरा
सहे दर्द तुमने इतने जो पीडा भरे थे, धन्य हे शेरे दिल जमाना कहेगा ।।6।।



ख्याल को किसी आहट की आस रहती हे,
निगाह को तेरी ही प्यास रहती है ।
विन तेरे किसी चीज की कमी तो नही,
पर विन तुम्हारे सदा तवियत उदास रहती हे ।।

शेरों सी थी निर्भीकता

(तर्ज : झिलमिल सितारों......)

—अर्पण प्रज्ञा

जीवन तुम्हारा गुरुवर्या ऐसा, जैसे हो कोई पुष्प महकता
जीवन ज्योति ऐसी तेरी, धूआं न रहता ।।टेक।।

राज नाम पाया ऐसा, राज ही किया था,
शेरों सा तुमने निर्भीक, जीवन जीया था,
बढ़ते रहे चाहे तूफान रहता, जैसे हो................. ।।1।।

नाम धराया संयम, सार्थक बनाया,
गुरुणी शारदा जी ने, ये जीवन सजाया,
जय गच्छ का था ये सूर्य चमकता, जैसे हो........... ।।2।।

ज्ञान क्रिया का संगम, आडंवरों से दूर थे,
व्याख्यान शैली अद्भुत, संघ के नूर थे,
ज्योति बुझी क्यों ये हर कोई कहता, जैसे हो.......... ।।3।।

माया से दूर रहे, सरलता भरी थी,
सम्प्रदायवाद से तो नफरत करी थी,
दर्पण बनो यही सन्देश रहता, जैसे हो................. ।।4।।

प्रभा थी बिखेरी ऐसी, अज्ञानतम हटाया,
चमकती किरण ने तेरी, सुप्त जन जगाया,
विचरे जहां पर पुकारे वो धरती, जैसे हो............. ।।5।।



तू चुप है लेकिन सदियों तक गूंजेगी सदाए साज तेरी ।
दुनिया की अंधेरी रातों में ढांढस देगी आवाज तेरी ।।

आत्म साधना

(तर्ज पवन उडाकर)

—साध्वी चारित्र प्रभा जी

आत्म साधना कर गई रे श्री सयम प्रभा जी (टेक)

जोंधण ग्राम में जन्म लिया था, चौधरी कुल को दिपा गई रे ॥1॥
मा प्यारी की थी वो दुलारी, प्यार 6 भाईयों का पा गई रे ॥2॥
धर्म गुरु ने वैराग्य है दीना, ससार असार समझ गई रे ॥3॥
20 वष में भावना थी जागी, गुरुणी शारदा सग में आ गई रे ॥4॥
थोकडे आगम वहुत हें सीखे, गुरुणी से शिक्षा पा गई रे ॥5॥
10 मास वैराग्य से वीते, पानीपत में दीक्षा पा गई रे ॥6॥
जप-तप करके कर्म खपाए, मुक्ति का पथ अपना गई रे ॥7॥
गाव-२ और घर-2 जाकर, धम का विगुल वजा गई रे ॥8॥
जनता तेरे गुण हे गाती "चारित्र" के मन को भा गई रे ॥9॥

मेरी जीवन निर्मात्री

(तर्ज : नफरत की दुनिया को......)

—अर्पण प्रज्ञा

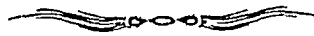
कैसा भाग्य पुष्प खिला था, संयम गुरुणी जी मिले,
जीवन बदल ही दिया,
उगा था दिनकर भाग्य का, संयम गुरुणी जी मिले,
जीवन बदल ही दिया ।।टेक।।

भटकी थी दुनिया में, सहारा नहीं पाया,
मिले गुरुवर्या तुम थे, पाई तेरी छाया
जन्नत थी तेरे चरणों में गुरुवर्या,
बाहों में जहां तुम सा न कोई यहां........ ।।1।।

थी वाणी सुनी तेरी, हिये में उतरी थी,
दुनिया लगी खारी, दिल में तेरी धुन थी,
मार्ग दिया संयम सुखकर बताया था जग है
असार, मुक्ति का राज दिया............ ।।2।।

पतझड़ था ये जीवन, तुम बहार ले आये,
पत्थर थी राहों का, थे पहचान तुम पाये,
है धन्य तुम्हें शतबार, करूं मैं वन्दन बारम्बार,
शरण में अपने लिया.................. ।।3।।

सरलता तेरा गहना, थी तुम ज्ञान की सागर,
दिल था खुला तेरा, नहीं थी तुम कोई गागर,
थी करुणा अति भारी, दुनिया गावे गुण सारी,
जीवन अर्पण किया..................... ।।4।।



हर रंग में जलवा है तेरी कुदरत का ।
जिस फूल को सूंघती हूं, खुशबू तेरी ही तेरी है ।।

श्रद्धा पुष्प

(कविता)

—साध्वी वैशाली प्रभा जी

देश हरियाणे की सुन्दर नगरी, जोंधण जिसका नाम दिया,
वीरों की यहा हुई परीक्षा, ऐसे ग्राम में जन्म लिया ।

मा प्यारी का प्यार पाके, चोधरी कुल को कुन्दन किया,
6 भाईयों की बनी लाडली, भाभियों का भी दुलार मिला ।

20 वष की युवा वय में, ससार असार को जान लिया,
प्रभु आज्ञा का अनुसरण कर, मोह माया को छोड दिया ।

गुरु धर्म से लेकर शिक्षा, गुरुणी शारदा को स्वीकार किया,
12 मार्च 1986 में, सयम का बाणा धार लिया ।

आगम ज्ञान के श्रम जल से, स्व जीवन को सींच लिया,
प्रवचनों से जन-जन के मन को, सुसरसित किया ।

महाराष्ट्र एम पी, यू पी राजस्थान, में था विचरण किया,
बीमारी आइ थी ऐसी, उसको भी समता से सहन किया ।

क्रोध कषाय को तजकर, क्षमा धर्म को स्वीकार किया,
कमलवत् निर्लेपता से था, तूने जीवन को जीया ।

दीक्षा लेकर जय गच्छ मे, सघ को दीपाय दिया,
विचरी जहा कहीं भी, जयमल रोशन नाम लिया ।

जाने की थी इतनी जल्दी, न हमको सेवा का अवसर दिया,
26 अक्टूबर की आई वेला, क्रूर काल ने छीन लिया ।

गई हो इतनी दूर हमसे तरसे है दर्शन को जिया,
शुभ भाव से "वेशाली" ने श्रद्धा पुष्प अर्पित किया ।

* * * * *

एक उज्ज्वल सितारा "संयम"

—साध्वी श्री वृद्धि प्रभा जी

एक नन्हा संयम सितारा
ले प्रभा को संसार गगन में उदित हुआ
ज्यों-ज्यों यौवन की दहलीज पर बढ़ने लगा
संघर्षो के बादल सिर पर मंडराने लगे, लेकिन
वो सितारा न डरा, न घबराया, न रुका, न थका,
उन घनघोर अंधियारे में भी आगे से आगे बढ़ता रहा,
लेकर गुरुवाणी का संबल
स्व प्रज्ञा के सौन्दर्य से वो निखरा
उसका यशपराग चारों ओर बिखरा विकास के सोपान चढ़ते-चढ़ते
वो बना जयमल गच्छ का उज्ज्वल सितारा
जिसने जीवन दृढ़ संयम से तारा
काल की घनघोर घटा से हो गया वह आज
अस्त वह था सितारा "संयम"



सयम पुष्प पहेली

—साध्वी सवेग प्रभा जी म

ज-माली ने दशन का दिवाला निकाला ।
य-शोधरा महात्मा बुद्ध की पत्नी थी ।
म-दन रेखा ने पति का परलोक सुधारा ।
ल-वण समुद्र 3 लाख योजन का है ।
स-गम देव ने भगवान महावीर को 6 माह तक कष्ट दिया ।
घ-म्मा पहली नरक का गोत्र है ।
का-र्मण शरीर सबसे सूक्ष्म शरीर है ।
ना-टक करते-2 इलायची कुमार को केवलज्ञान हुआ ।
म-स्तक शरीर का प्रमुख अग है ।
च-मरेन्द्र की चमर चचा राजधानी ह ।
म-नुष्य ओर तिर्यंच वैक्रिय शरीर में चार मुहूर्त तक रह सकते हैं ।
का-ली आदि दसों रानिया मोक्ष में गई ।
या-दव कुल में अरिष्ट नेमि भगवान का जन्म हुआ ।
स-थारा सयमी जीवन का सार है ।
य-क्षा आर्य स्थूलीभद्र की बहन थी ।
म-रू देवी माता पुत्र दर्शन से परमात्मा बनी ।
रू-द्र 9 नारदों में से एक नारद है ।
पी-ले रग का पत्ता शीघ्र वृक्ष से गिरता है ।
पुष्-पवती दमयन्ती की माता का नाम था ।
प-दमनाभ राजा ने द्रोपदी का हरण करवाया था ।
खि-लोने बच्चों के मनोरजन का एक साधन हे ।
ला-भ बुधवार का प्रथम चोघडिया होता है ।
या-चना 22 परिषहों में से एक परिषह है ।

❋ ❋ ❋ ❋ ❋

धार्मिक ध्वज

(कविता)

—कविरत्न श्री चन्दन मुनि (पंजाबी)

बनकर वक्ता स्पष्ट साहसी, धार्मिक ध्वज लहराया जी,
'संयम प्रभा सती' ने जग में, रोशन नाम बनाया जी ।

नामी नम्बरदार हो गये, पिता चौधरी कुन्दन लाल,
माता रामप्यारी देवी, ऊंचे धार्मिक लिये ख्याल ।

धर्म मुनीश्वर जी की वाणी, सुनकर प्यारी-प्यारी जी,
धूमधाम से पानीपत में, आकर दीक्षा धारी जी ।

विदुषी 'सती शारदा जी', ने गुरुणी का पद पाया जी,
ज्ञान-ध्यान सिखलाकर जिनने, विज्ञा बहुत बनाया जी ।

देखो पूज्य शुभचन्द्र मुनीश्वर, जो हैं जैनाचार्य महान,
जयमल गच्छ तथा जग में, माने जाते परम प्रधान ।

जिसके जप की जिसके तप की, करते सभी बड़ाई जी,
'अर्पण प्रज्ञा' नामक शिष्या, विनयी विदुर्षी पाई जी ।

कथा कला की धूम मची थी, अमृत जैसी वाणी थी,
श्रमणी क्या थी ? कहते ये सब, परम-परम कल्याणी जी ।

जम्मू, यू.पी., हरियाणा के, राजस्थान गये गुजरात,
महाराष्ट्र, पंजाब पधारे, मध्य प्रदेश विश्व विख्यात ।

साढ़े छह से साढ़े ग्यारह, का संथारा आया जी,
दिल्ली से था स्वर्गलोक को, अपना कदम बढ़ाया जी ।

दो हजार दो सन् अक्टूबर, छब्बी थी तब आई जी,
नयन बरसते हृदय तरसते, सबके दिये दिखाई जी ।

जगत जनों को, भक्तजनों को, जिसने याद दिलाना जी,
"चन्दन मुनि" पंजावी की यह, कविता नहीं भुलाना जी ।



सयम की प्रभा

(हरियाणवी कविता)

—श्रमण श्रेष्ठ श्री सुन्दर मुनि जी म० सा०

सयम की प्रभा तै, जगमग चमकै जिसका चेहरा,
घर-घर कुणबे गली-गली में, सयम जिकरा तेरा । (टेक)

वचपन खेल कूद मे वीत्या-आई उम्र जवानी
कई तरहा के रग देखे तने-वदली फेर कहानी,
जोधण ग्राम पिता कुन्दन थे-परखे लाभ ओर हानि,
रामप्यारी माता की वेटी-धुर ते देखी स्याणी,
दुनिया देखी फेर छोड के-वाध्या धर्म का सेहरा ।

धर्म मुनि ते प्रति वोध पाके-ख्याल पलटगे मन के,
शारदा जी की शिष्या वणके-वदले रग जीवन के,
जयमल गच्छ शुभचन्द्राचार्य-उत्तम दुख भजन के,
12 मार्च सन् 86 के दिन-ली दीक्षा गुरु चुन के,
नया रूप चढ्या सयम का-होया नया सवेरा ।

सरल घणी ओर मिलनसार थी-मन मे घणी सच्चाई,
ज्ञान-ध्यान अभ्यास कला ते-प्रवचन शैली पाई,
दूर-दूर तक घूम आपने-निर्मल कीर्ति पाई,
जम्मू, गुजरात, मराहटे तक तने-धर्म ध्वजा फहराई,
6 भाईयों की एक वाहण का-फैल्या खूब उजेरा ।

कर्म पुरवले उदय हुए-तव तन मे वेदण जागी,
सोरण जेसे तन में एकदम-सहम वीमारी आगी,
26 अक्टूबर सन् दो में-घोर निराशा छागी,
कर सथारा विदा हुई-सयम पाला वेदागी,
अर्पण प्रना तेरी अकेली रेहगी-छाया घोर अधेरा ।

थी सुलक्खणी शान सती की-याद हमेशा आवे,
घणे दिना मे घणे जणा मे-ऐसी साध्वी पावे,
साची कहण ते स्याणा माणस-नहीं कदे शरमावे
गई सुरग मे वेशक फिर भी-दुनिया तने सराहवे,
जगज्जीव के लिए धरण पे-जल्द लगाइए फेरा ।

"संयम" साधना दी धनी मानी

—श्री मेजर मुनि जी म० सा०

शेर-सदाओं से फकीरों की सदा मोती बरसते हैं,
जाने वाले नहीं आते, उनके गुण याद आते हैं,
सैर की फूल चुने, खूब फिरे दिलशाद रहे,
ऐ बागवा मैं जाता हूं, गुलशन यह सदा आबाद रहे।

पिंड जोंधण विच हरियाणे, कन्या राजबाला जन्म पाया ए,
पिता कुन्दन नम्बरदार, मां रामप्यारी दी कुक्षी दा भाग जगाया ए,
छे भाइयां दी वहिण कल्ली, प्यार खूब ही जिन्हा दा पाया ए,
10 मई, 1965 नू जन्म लैके, चार चांद मां पियां नू लाया ए ।

बचपन लाड़ प्यार विच बीतिया, पैर धरिया जवानी दी दहलीज उत्ते,
दिल विच वैराग दी लहर आई, रखिया मोह न किसे भी चीज उत्ते,
बन्दगी करन लई मन रीज उठिया, पण्डित रीज दा जिवें खीर उत्ते,
दाग कर्मा दे धोन लई शेर बनी, रवे ना चिट्टी कमीज उत्ते ।

चाह होवे तां राह मिलदी, धर्म मुनि दा जोंधण आन होया,
कथा सुनन लई आई संग सखियां, स्पष्ट वक्ता दा व्याख्यान होया,
भावना गुरु चरण विच रखी, गुरुणी नाल फेर मिलान होया,
वाणी सुन वैराग चढ़ा, आत्म कल्याण लई मन सावधान होया ।

12 मार्च नू होई दीक्षा, भागशाली धरती पानीपत बता देवां,
संयम शिखरां ते चढ़न लई, गुरुणी शारदा नूं दामन फड़ा देवां,
गुरु वहिना, रवि, संवेग, सुबोध, भारती, सुदेश नाल प्रेम बढ़ा देवां,
ज्ञान लैके प्रचार कीत्ता, प्रवचन शैली कमाल दी सुना देवां ।

अर्पण चेली इक रत्न मिली, लम्बे विहार लई पग बढ़ा दित्ते,
पंजाब, यू.पी., दिल्ली नूं पार करके, राजस्थान विच भाषण सुना दित्ते,
मध्य भारत, गुजरात कथा करके, महाराष्ट्र वल्ल चाले पा दित्ते,
संयम साधना दी धनी मानी, जादू सी वाणी तों लोग प्रभा दित्ते ।

अंत विच भिआनक रोग लग्या, गुर्दे कम्म करन तो लाचार होए,
हकीम, डाक्टर जोर ला थक्के, श्वांस जिन्दगी दे वस खुआब होए,

धूनी समता दी रमाई दिल विच, जदों किधरे न कोई लाभ होए,
दिन-वदिन सिहत गई गिरदी, जिवें जीन दी हालत विना आव होए ।

वुझदी देख जीवन ज्योति नू दर्शना दी गुरुणी दे मन विचार होई,
गन्नौर मण्डी आके गुरुणी ते चेली विच मिट्ठी गुफतार होई,
प्रेम मुनि, धर्म मुनि दे पा दर्शन, आत्मा गद्-गद् अपार होई
26 अक्टूवर' 2 नू विच दिल्ली, आत्मा दी स्वर्गा वल्ल उडार होई ।

गुरुणी वहुत गमगीन होई, जद विछोडा होया चेली प्यारी दा,
गुर वहिणा भी उदास होइया, वियोग होया जद वहिण प्यारी दा,
अर्पण चेली दा की हाल दस्सा, विछोडा झल्लिया न जावे गुरुणी प्यारी दा,
अफसोस "मेजर" नू भी होया, जद देवलोक सुनिया साध्वी प्यारी दा ।।

* * * * *

साझ से पहले ही
तव जीवन सुमन मुरझा गया
सयम सूर्य का आलोक
मृत्यु ग्रहण में समा गया
हम तिहारी वाट जोहते रह गये
शोकाश्रु अँखियो से छलक गया
माना कि सयम कालजयी है
असमय हो तुम्हें क्यों छल गया
सयम दूर रहकर भी
सवके आस-पास है
मृत्यु में कितना भी तिमिर हो
सयम की अमर उजास है
कोई अश्रु केसे साथ वहा सकता
जिसका स्मृति पुतली में निवास है ।

(राजस्थान से प्राप्त)

* * * * *

स्मृतियों की निधि
(कविता)

कर्म राज की लेखनी ने, कैसा अशुभ है लेख लिखा ।
अर्पण जी के सुखी जीवन में, कैसा घोर-अंधेर लिखा ।।

मझधार छोड़ शिष्या को जाने का, क्यों समय ये आया था ।
देख तड़फते दिल की पीड़ा, क्यो दया न विधाता लाया था ।।

अटूट बंधन की तोड़ दोस्ती, पल भर में क्यों छोड़ गई ।
साथ रखने का किया था वादा, सब कसमें क्यों तोड़ गई ।।

सोचा ना इक बार भी तुमने, कैसे सब्र करेगी वो ।
तुम बिन अधूरी होकर कैसे, आगे कदम धरेगी वो ।।

शिष्या की आंखें अब तो, तकती तेरी राह रहेगी ।
बिन तरुवर के न जाने, कैसे अब वो छाया रहेगी ।।

26 तारीख का दिन, कैसा आया गजब निराला था ।
चांदनी और कुमुदिनी का, वियोग इसने डाला था ।।

गुरुवर मुनि सुदर्शन की, पाई शीतल छाया थी ।
स्वस्थ रहो, खुशहाल रहो, मुनि संघ ने भावना भाई थी ।।

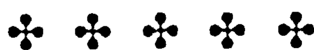
तैयार नहीं मन मानने को, तुम कभी लौट न आओगे ।
पर धोखा तो दिया आपने, यह कभी भूला न पाएंगे ।।

सब करते शासन देव से, प्रार्थना अब तो यही ।
देख कहें सब अर्पण जी को, देखो शिष्या संयम की ।।

आपके चरण चिन्हों पर, अब वो कदम बढ़ाएगी ।
नाम गुरु और कुल संघ का, संयम से चमकाएगी ।।

पर रखना तुम भी ध्यान सदा, कष्ट कभी जो आएगा ।
हो जाएगी शक्ति दुनी, पर्वत भी झुक जाएगा ।।

—कुमारी अलका जैन (पानीपत)



चमके नाम

(तर्ज   जन्म जन्म का   )

युगों-युगों तक चमके गुरुणी नाम तुम्हारा-२,
नील गगन में चदा जेसे कर देता उजियारा ।

जोंधन गाव में जन्मी, राम प्यारी की जाई,
पिता कुन्दन लाल की हो गइ मन की चाही,
6 भाईयों की वहन लाडली, झूम उठा घर सारा । युगों

दुनिया में जो आये, उस को इक दिन जाना,
सगा सम्वन्धी न कोई साथी, ये धर्म मुनि से जाना,
धन-दोलत को मार के ठोकर, जेन धम स्वीकारा । युगों

अनुशासन ओर सयम को दृढता से अपनाया,
गुरुणी शारदा के चरणों में जीवन को चमकाया,
प्रवचन की शेली थी ऐसी जेसे गगा धारा । युगों

हरियाणा, पजाव, दिल्ली, यू पी और गुजरात में,
उत्तराचल, म प्र में भी विचरी शिष्या साथ में,
गुरुणी शिष्या दोनों को खूव लगाया जयकारा । युगों

वेदनीय कर्म से तन में व्याधि असाध्य आई,
जो सेवा की अपण जी ने वो जाती नहीं सुनाई,
गुरुणी शारदा से दिल्ली में आपने लिया सथारा । युगों

—विपिन अकित अकुश (पानीपत)

कविता

सयम, सौरभ, साधना, जिनको करते थे प्रणाम,
त्याग तपस्या के उस तीर्थ का सयम प्रभा था नाम ।
वेदों के गूढ सार को, सरलमना तुम समझाती थी ।
निदक पूजक का भेद मिटा, सव पर करुणा वरसाती थी ।
सम्यक् ज्ञान की मूरत तुम, साधुता को अपनाया था ।
जन-2 के मन को गुरुणी सा, ये जीवन तुम्हारा भाया था।

—अदिति पगारिया मध्य प्रदेश

संयम अमर

यह जीवन कैसी त्रासदी
संयम की खिली कलिका
सुगन शाख पर मुरझा गई
सांझ होने से पहले ही
रोगों ने घेर लिया
पर साधिका हंसती रही, क्योंकि
रोग शोग में ही हंसता है
संयम का सुकुमार जीवन
मौत की राहों में खो गई पगडंडी
पर घने जंगल में आज भी
एक आवाज गूंजती है संयम........
अमर है अमर है अमर है देह नश्वर है........
पर साधना अनन्त-अनादि, अजर अमर है ।

—डॉ० नरेन्द्र सिंह, ब्यावर (राज०)

गगन की गरिमा

तुझ से था अपनापन गहरा ज्यों सागर तल में मोती ठहरा ।
तुम सीप बूंद मैं तेरी बनकर-वीणा मेरा तुम बने संगीत स्वर ।
जाट वंश की परिज्ञात प्रतिमा-अंशवंश की वृद्धिगत गरिमा ।
अपनेपन की पाई थी पराकाष्ठा-मेरी जुड़ी तुम से थी निष्ठा ।
अर्पण को किया था अर्पण-प्रज्ञा बनाई तुमने जैसे दर्पण ।
मेरी श्रद्धा मेरी आस्था अनुपम-जीवन जीया अद्भुत उत्तम ।
बजती थी सुमधुर सरगम-अचानक देकर गहरा गम ।
चली स्वर्ग की तुम राहों पर-आंसू अटके आ अपने बाहों पर ।
व्याधि ने तेरी समाधि परखी-अन्ततः यम ने अविचल निरखी ।
कहां तुम संयम कहां तेरा संयम-स्मृति कोश में रखते तुमको हम ।
रहो कहीं पर ध्यान धरा पर-अर्पण प्रज्ञा के रहना सिर पर ।
हे अनंत अपार गगन की गरिमा-अखण्ड रहे तेरी महिमा ।
हृदय के आदर की भाषा-समझ लियो भावों की परिभाषा ।
अभिन्न अविछिन्न अटल श्रद्धा को-वन्दन हैं गुरुणी वर्या को ।

—सरिता जैन, सोनीपत

"सयम" स्वय मोक्ष सक्षम हे

सग्ल हे कहना, कठिन हो सहना, जेसा कहना-वेसा ही करना,
ये कर दिखाने वाली थी एक वहना, स्वय का सयम यही था गहना ।।

लक्ष्य था ऊचा तुम्हारा, नित अरिहत के गीत आपने गाये,
घिरकर कठिनाइयों में भी, सयमी वन आप जगमगाये ।।

तेज सूरज से लेकर, शुभ्रता ज्योत्सना से लेकर,
गति पवन से लेकर, मति गुरु से लेकर,
सयम मे सोच समझकर, चरण ये वढाये ।।

आन न रुकना जानते थे, आप न झुकना जानते थे,
छल, कपट, झूठ, फरेव, आपने कभी ना अपनाये ।।

आप थीं सरल, सत्य की मूरत, थी करुणा भगवान सी सूरत,
था मनोवल ऊचा विश्वास धर्म में पूर्ण, कि आपदायें स्वय सिर झुकायें
रुकने से पूर्व ही देव मार्ग वताये ।।

निर्मल, अभय निरामय, हो जेसे विशाल हिमालय,
जीवन की हर कठिन घडी में, आप नित फूल वन मुस्करायें,
आप के जाने के वाद तो, आप ओर याद आये ।।

उगते सूरज को नित करते नमन, ओर मागते दुआ नित प्रभु से हम,
काट कर्म आप शीघ्र मोक्ष पायें, हमें भी वो राह दिखायें ।।

—नितिन लुणावत हिंगनघाट (महा०)



अद्भुत व्यक्तित्व की धनी

भक्ति भाव से भरी स्फूर्ति थी, जो तप की साक्षात मूर्ति थी ।
संयम प्रज्ञा और श्री तीनों, मिलकर वह व्यक्तित्व बना था ।
माता देवी राम प्यारी थी, और पिता श्री कुंदन लाल ।
जन्म राजबाला को देकर, माता-पिता भी हुए निहाल ।
अद्भुत बाला थी, कुछ अद्भुत ही करना था काम ।
ले सन्यास राजबाला ने श्री संयम प्रभा का पाया नाम ।
जैन धर्म के प्रखर तेज श्री धर्ममुनि जी का सत्संग ।
पाकर जो वैराग्य जगा तो उठी धर्म की नई तरंग ।
सन् 1986 की तारीख रही वह 12 मार्च ।
दीक्षा गुरु श्री सुमति प्रकाश ने नव जीवन को दिया प्रकाश ।
गुरुवर्या श्री शारदा ने ज्ञान-ध्यान में किया था दक्ष ।
श्री संयम प्रभा प्रभा थी, जिसकी सम्प्रदाय थी जयमल गच्छ ।
विचरण करने लगी देश में दीप ज्ञान का लेकर फिर ।
ज्योतित होने लगे हजारों लोगों के मन के मन्दिर ।
ठीक मध्य में बसा देश के हृदय देश का है बैतूल ।
चातुर्मास के लिए यहां जब आई, क्षेत्र लगा अनुकूल ।
वाणी नित्य यहां गूंजी, श्री संयम प्रभा की जब अनमोल ।
मन में अब तक गूंज रहे हैं उनके मृदु ओजस्वी बोल ।
दो हजार दो सन् अक्टूबर छब्बीस की थी वह तारीख ।
श्री संयम प्रभा ने देह त्याग कर देवलोक की पकड़ी लीक ।
जैसा कहा उन्होंने जीवन जीने का प्रण लेते हैं ।
विनत भाव से उन्हें हृदय की हम श्रद्धांजलि देते हैं ।

—महावीर गोठी अध्यक्ष, बैतूल



26 तारीख की गर्मी--खुशी भरी दास्ता

—साध्वी अर्पण प्रज्ञा

(26 जनवरी ने मेरे भाग्य का सूर्य उगाकर जीवन के नये संविधान की रचना की ओर 26 अक्टूबर ने उस सूर्य को अस्त करके मानो मेरी जिदगी पूरी कर दी। इस 26 तारीख को कभी मेरी जिदगी में खुशियों भरा आलम था, कभी इस दिन गम का साया मिला। वही 26 की छोटी सी कहानी पेश हे, जिस 26 से 26 तक में जीवन बनकर खत्म भी हो गया ।)

दोहा कहती हू कहानी 26 की पढना ध्यान लगाकर ।
मिले हे गम ओर खुशिया रखू किसे सजाकर ।।

जनवरी 26 ही थी जब नव जीवन यात्रा शुरू हुई,
सयम पथ पर कदम बढाने घर से मेरी आज्ञा हुई ।

पानीपत की पुण्य धरा पर साध्वी वेश का ताज मिला,
26 ही थी जब दीक्षा का मेरा प्रथम विहार हुआ ।

26 को ही मिली सूचना अर्पण दुनिया तेरी उजड गई,
तेरे गुरु सुदर्शन को तुझसे मौत आ ले छीन गई,
वज्रपात हुआ था ऐसा मेरे मन की कलियाँ बिखर गई,
मिलता था सुकून जहाँ पर वो शीतल छाया छोड गई ।

पुण्य उदय पडदाद गुरुणी सुगन कुवर जी ने लाड दिया,
इस 26 तारीख को ही वो साया भी मुझको छोड गया ।

पत्थर को मूर्त था बनाया, शिल्पकार गुरुणी सयम प्रभा ।
जीवन के सुने पतझड को मेरे रहबर ने ही गुल चमन किया ।
पर कर्मों ने मेरे मुझसे केसा ये खिलवाड किया ।
जान बसी थी जिन चरणों में उन्हें गुर्दे का था रोग दिया ।
काम नही करना हे हमको गुर्दे ने था जवाब दिया ।
कर्मों आओ नही हारूँगी ऐसा था ऐलान किया ।
हुई वेदना भारी तन में पर मन से उसको सहन किया ।
गुरुवर धर्म मुनि जी गुरुणी शारदा जी ने समाचार किया ।
गुरु चरणो मे आओ सयम ऐसा था आदेश दिया ।
पर कहते थे दिल्ली नहीं जाना, इसने मुझको रोग दिया ।

जो भी आता इस दिल्ली में इसने उसको रख लिया ।
पर वार-वार था गुरु सन्देशा, आज्ञा को शिरोधार्य किया ।
महाराष्ट्र से दिल्ली आये पर दिल में था एक भय हुआ ।
तारीख थी उस दिन भी 26 जव दिल्ली में प्रवेश किया ।
एक माह ही वीता यहां पर जो कहते थे साच हुआ ।
गुर्दे तो कुछ ठीक हुए थे पर तन में तेज वुखार हुआ ।
आखिर 26 तारीख आयी गुलशन मेरा विरान हुआ ।
मुझसे छीन कर इस दिल्ली ने कन्धों पे अपने सवार किया ।
गुरुवर्या को इस दिल्ली ने चिर निद्रा में सुला दिया ।
गुरुदेव को इस दिल्ली ने अपने भीतर समा लिया ।
मेरा हंसता चमन उजाड़ दिया ।



आहों से आवाज़ भरी, सांसों से तुम्हें बुलाया ।
अन्तर से गहरे उतरे तुम, जितने तुम्हें भुलाया ।
दिल के पास रखा तुमने ही, तुमने ही मुझे रुलाया ।
जीवन में सूनापन पनपा, मन अब खोया-2 है ।
खारे जल की बूंदों से, मधुमय मुखड़ा धोया है ।
पीड़ा जागी रोई तो, गीतों से उसे सुलाया ।
प्राणों की आधार आत्मा की सहचर हो ।
जीवन के भटके राही के तुम ही रहवर हो ।
दिल की हर धड़कन में, तेरा ही नाम समाया ।

गुरु जी की सक्षिप्त जीवन झाकी

—साध्वी अर्पण प्रज्ञा

मै कथा वताती कुन्दन सुता वेमिसाल की,
ये चरित्र है पुण्य कथा श्री सयम प्रभा जी की ।

प्रभा थी फेली सयम की, आज वो ज्योति बुझ गई,
हरदम दृष्टि में रखते थे, ओझल दृष्टि वो हो गई ।।1।।

हरियाणा के जोंधण ग्राम में, कुन्दन लाल नम्वरदार हुए,
राजवाला के जन्म से मॉ प्यारी के थे पूरे अरमान हुए ।।2।।

10 मई, 65 को तुमने, चौधरी कुल में था जन्म लिया,
नाजों से पाली थी मा ने, वडे भाई ने भी लाड दिया ।।3।।

6 भाईयों की लाडली वहना, खुशियों में वचपन वीता था,
शेरों सा दिल था जिसमें, नहीं जिससे कोई जीता था ।।4।।

वचपन वीता जवानी आई, वडा भाई मोत ने छीन लिया,
लाडली में भेया की थी, फिर क्यों मुझको छोड दिया ।।5।।

गुरुवर धर्म मुनि जी आए, जनता सारी उमड पडी,
व्यथित वाला भी गुरु वाणी को, सुन रही थी खडी-खडी ।।6।।

मुझको चाय का त्याग करा दो, ऐसे गुरु को शब्द कहे,
मस्तक देखा गुरुवर ने उनका, वचन उन्हें कुछ ऐसे कहे ।।7।।

ये सारी स्वार्थ की दुनिया, झूठे सव जग नाते है,
प्रियजन भी जाते छोड फिर, लोट कभी न आते हैं ।।8।।

सयम ही हे सार जगत मे, तू जो इसे अपनाएगी,
मुक्ति नगर में जाकर इक दिन, दु खों से छुट जाएगी ।।9।।

मात-पिता और गुरु नाम की कीर्ति तू फेलाएगी,
अपने तप ओर सयम प्रवचन से, यश वहुत ही पाएगी ।।10।।

सार नही ससार मे, इन वचनो से था वैराग्य हुआ,
सयम राह पर वढना मुझको, मन में था ये धार लिया ।।11।।

ऐतिहासिक नगरी पानीपत में, शुभ घड़ियां फिर आई थी,
कर्म युद्ध में जाने हेतु, केशरिया वर्दी सजाई थी ।।12।।

यौवन में तज भौतिक सुख को, संयम का था वेश लिया,
12 मार्च, 86 को अपने मन को था फिर साध लिया ।।13।।

जीवन अपना ऐसा वनाया, जैसे होती निर्धूम ज्योति,
डिगी नहीं तूफानों में भी, चाहे कितनी मुश्किल होती ।।14।।

दीक्षा लेते ही उपसर्गों ने, चहुं ओर से घेर लिया,
वज्र बनाकर दिल को अपना, परिस्थिति का सामना किया ।।15।।

दीक्षा लेकर गुरुणी संग में, मुणक नगर में प्रवेश किया,
विराज रहे थे रणसिंह गुरुवर, चारित्र जिनका महान हुआ ।।16।।

वरदान मिला वहां ऐसा सुन्दर, वो ऋण कभी न उतरेगा,
पट्टे पर वैठोगी जव भी, कभी प्रवचन प्रवाह न टूटेगा ।।17।।

प्रवचन करोगी ऐसा 'संयम', दुनिया में धूम मच जाएगी,
एक-२ वचन कहोगी ऐसा, सुप्त आत्मा जग जायेगी ।।18।।

जव-जव किए प्रवचन तुमने, गुरु वचन थे सत्य हुए,
ऐसा जोश, शैली न देखी, सवने थे ये वाक्य कहे ।।19।।

ओजस्वी वाणी ऐसी तेरी, कमाल की शैली पाई थी,
प्रवचन सुन जन-जन के मन में, नई जागृति आई थी ।।20।।

जिन शासन दिपाने में, नहीं कभी देह का भान रहा,
प्रभु वाणी फैला दूं घर-2, ऐसा था उद्देश्य रहा ।।21।।

कहती थी जब दुनिया उनको, आया नया जमाना है,
छोड़ो विचार पुराने अब तो, नया रिवाज अपनाना है ।।22।।

विपाक कर्मों का नहीं बदलता, चाहे कैसा समय रहे,
सिद्धांत अटल, नियम अमर है, क्यूँ बदलू ये वचन कहे ।।23।।

तेरी संयम दृढ़ता आगे, ये दुनिया सारी हार गई,
आया चरणों में जो तेरे, गजव सच्चाई, सरलता पाई ।।24।।

आचार्य शुभ गुरु ने तुम पर, आशा वडी लगाई थी,
नाम करोगी रोशन गच्छ का, नजर तुम्हीं पर टिकाई थी ॥25॥

गुरुवर धर्म मुनि जी के, सपनों को था साकार किया,
गुरुणी शारदा जी के, असुलों को नया आकार दिया ॥26॥

गुरुणी सुगना जी की पोत्री, सुदर्शन गुरु की आशा थी,
रोशन गुरु सा जीवन वनाना, मन में ये अभिलाषा थी ॥27॥

अनुशासन वहुत प्रिय था तुमको, समय के पावन्द रहे,
मर्यादा में रहना अर्पण, मेरे लिए ये सन्देश कहे ॥28॥

सम्प्रदाय वाद के चक्कर में, नहीं खुद को उलझाया था,
नाम चलाओ वीर प्रभु का, प्रवचनों में समयाया था ॥29॥

व्यसन छुडाए लोगों के ढेरो, जेन की शान वताई थी,
भटकी हुई युवा पीढी को, राह सही दिखाई थी ॥30॥

धर्म नाम के आडम्वर छोडो, हमेशा ये समझाते रहे,
वच्चे सी सरलता देखी तुम में, वैरी झूठ के सदा रहे ॥31॥

आदर्श तुम्हारे अमर रहेंगे, कभी कोई भुला न पाएगा,
राहें तुमने जो थी दिखाई, हर कोई उस राह पर जायेगा ॥32॥

महाराष्ट्र मेवाड, मालवा, मारवाड था हिला दिया,
एम पी , छत्तीसगढ भी तेरे चरणों में था झुका दिया ॥33॥

वदकिस्मती थी सवकी ऐसी, शेर ये जल्दी सोना था,
लाखों की नेय्या पार लगाने, वाला माझी खोना था ॥34॥

महाराष्ट्र में शहर 40 गाव, जो खान देश कहलाता था,
किया चोमासा अन्तिम वहा, पर दिल्ली काल वुलाता था ॥35॥

सहसा अटेक हुआ कर्मों का, श्वास में दिक्कत आई थी,
धीरे-२ वढी वेदना, पर समता न टूटने पाई थी ॥36॥

सत्य हुई वो घोषणा सवत्सरी को अन्तिम व्याख्यान हुआ,
रूकी थी सासे इकदम फिर, ओरगावाद प्रस्थान किया ॥37॥

ज्योति को रखना है रोशन, नहीं इसको बुझने देना है,
गुर्दे दोनों Change कराने, नहीं ऐसे जाने देना है ।।38।।

सेठ श्री प्रकाश गुरु का बहन सरिता ने समाचार दिया,
डोर आयु की टूटने वाली, न दोष लगाओ ये ख्याल दिया ।।39।।

अल्प समय की आयु बची है, सार न संयम का तुम जाने दो,
समता से व्याधि को सहकर, संथारा अंतिम तुम अब कर लो ।।40।।

आप्रेशन की हुई तैयारी, श्रावक सेवा में खड़े हुए,
पर दिल्ली आओ गुरुणीमौर, श्री धर्म मुनि जी ने शब्द कहे ।।41।।

गुरु आज्ञा को पालन हेतु, महाराष्ट्र से दिल्ली आये,
हालत देखी ऐसी जिसने, आंखों में थे आंसू लाए ।।42।।

पहुंचे खेड़ी गुज्जर में, गुरु धर्म मुनि जी विराज रहे,
संथारे का मन बनाओ, भारी मन से ये वाक्य कहे ।।43।।

हुई तैयार संथारे को पर समय का न आभास दिया,
देख तन की भयंकर पीड़ा, फिर दिल्ली को भेज दिया ।।44।।

आप्रेशन को टालने खातिर, मुराद नगर की औषध खाई,
चंद दिनों के सेवन से ही, देह में कुछ जान थी आई ।।45।।

गुर्दे संभले पर ज्वर ने, था फिर रोग का स्थान लिया,
डायलिसिस में फटी नलियां, अशुभ का संकेत दिया ।।46।।

लघु भाई पप्पू ने अपना गुर्दा देने की मन में ठानी थी,
भाई तेज ने जान भी देकर जान ये चाही बचानी थी ।।47।।

पर कर्मों के बही खाते में, कुछ और ही लिखी कहानी थी,
अक्टूबर की 26 को दिल्ली में, हो जानी खत्म कहानी थी ।।48।।

परछाई सम रखा जिसको, उसको क्यों ये दर्द दिया,
शिष्या अर्पण को तुमने, मझधार में क्यों छोड़ दिया ।।49।।

25 की निशा में भयंकर, था दर्द पेट में हो गया,
अगले दिन ही थका राही, था नींद-चैन की सो गया ।।50।।

गुरु जी द्वारा प्रवचनों में गाई जाने वाली
प्रसिद्ध गजलें, कविता एवं शायरी।

—साध्वी अर्पण प्रज्ञा

ग़ज़ल

हम भले ना सही, पर बुरे भी नहीं, हम बुरे यूं लगे कि बुरा वक्त है ।।1।।

खाई हमने जमाने की बस गालियां, लोग हॅसते रहे दे दे तालियां,
फिर भी हम मुस्कुराके ये कहते रहे, हंसो खूब हंसो, हंसने का वक्त है ।।2।।

कि आसमां के सितारे भी ये कहते रहे, ये घटायें भी देख देखती रहें,
वो सवेरे का सूरज भी क्या आएगा, जिन्दगी में जो काली ही रात है ।।3।।

गीतों की मालाएँ पिरोता ही रहते, हर वक्त में गुनगुनाता ही रहते,
जिंदगी गीत के है सहारे मेरी, गीत ही जिन्दगी की हकीकत है ।।4।।

ग़ज़ल

ये जो दुनिया है दोस्त मतलबी है बड़ी, क्यों सुने गम किसी का हमें क्या पड़ी ।।1।।

इस बदी की अदालत मे सुनता है कौन, नेकियां सर झुकायें यहॉ क्यों खड़ी ।।2।।

जब भी चाहा जिसे चाहा उस पर गिरी, दर्द की बिजलियां हैं बहुत सर चढ़ी ।।3।।

तेज रफ्तार से कत्ल करता है ये, डाल दो वक्त के हाथों में हथकड़ी ।।4।।

आदमी की तो पहचान हमसे सुनो, ये हैं तस्वीर पीतल की सोना जड़ी ।।5।।

जीने वाला ना जी पाया ना मर सका, जिंदगी मौत आपस में जब भी लड़ी ।।6।।

क्यों किरण मौत मुझको डराने लगी, जीने में हो गई जाने क्या गड़बड़ी ।।7।।

गजल

खुशी आने से पहले जाने को तैयार रहती हे,
गमी आकर सदा इन्सान की गमखार रहती है।

खुशी दहलीज को छूकर वापिस लोट जाती है,
गमी आठों पहर बनकर पहरेदार रहती हे।

खुशी को ढूंढने आदमी जब उस पार जाता है,
तो किस्मत कहती हे जाओ खुशी उस पार रहती हे।

खुशी है जीत पर वह जीते जी जीती नहीं जाती,
गमी हे हार पर हरदम गले हार रहती हे।

खुशी बदतर है नत्था सिह भूला देती है ईश्वर को,
गमी है बेहतर हे जिसमें याद वह सरकार रहती है।

गजल

जिन्दगी का भरोसा नहीं मोमिन, जितना मुमकिन हो जिक्रे खुदा कीजिए,
साथ अपने न दुनिया से जायेगा कुछ, इसकी उल्फत को दिल से दुआ कीजिए।

मरने वालों को क्या तुमने देखा नहीं, क्या किसी का जनाजा उठाया नहीं,
क्या तुम्हे भी इसी तरह जाना नहीं, महरबा गौर इस पर जरा कीजिए।

कब्र कहती है गाफिल मुझे भूल मत, एक दिन आह आएगा सब छोडकर,
दम गनीमत है कर ले जो नेकी बने, जब कजा आए फिर क्या अदा कीजिए।

आहवा एशो इसरत के सामा कहाँ, दम जो टूटा तो सब छोडकर चल दिए,
जा निसारों अजीजो का जमघट कहाॅ, बेवफाई का किससे गिला कीजिए।

ताज दारों के नामों निशा तक मिटे, ओलिया के निशाने कदम भी रहे,
आज भी उनके मरकद है रसके, जिनाह किस तरफ हम चले फैसला कीजिए।

गाजिए खुशनवा अक्ल दे गर खुदा, दिल लगाने की दुनिया या नहीं है जगा,
इसको कितनो से मफूज रखे खुदा, मौत ईमान पर हो दुआ कीजिए।

जाके दुनिया से फिर कोई आता नहीं, कब्र में साथ कोई भी जाता नहीं,
ऐसी दुनिया की खातिर मिटो किसलिए, क्यू ना तो मिले हुक्म खुदा कीजिए।

कविता

प्यार इसान को इसान वना देता है,
उम्र की राह को भी आसान वना देता है।
अगर हो दिल में मोहव्वत तो न रख किसी की वुराई पर नजर,
प्यार तो पत्थर को भी भगवान वना देता हे । ॥4॥

सहारा जो गैरों का तकते रहेंगे,
वनके तस्वीर जग में लटकते रहेंगे।
हे मोत से भी वदतर जिन्दगी उनकी,
वे यूँ ही खार वनके नजरों में खटकते रहेंगे। ॥5॥

किसी नाशाद को तू शाद कर देना,
इवादत यही हे किसी वरवाद को तू आवाद कर देना।
माना कि उस मालिक से तेरी मोहव्वत हे आला दर्जा,
मगर इन गरीवों के लिए भी जरा फरियाद कर देना। ॥6॥

दुनिया ने एक अजीव सा तमाशा वना रखा है,
हर इक को अपना गुलाम वना रखा है।
डूवे हें सभी ऐशो इसरत में यहाँ,
फिर कहते हैं कि इस दुनिया में क्या रखा हे। ॥7॥

धोखे की हवा में साँस लेता हूँ में,
गुनाहों की नदी में नाव खेता हूँ में,
दुश्मन भी नहीं देता हे इतने धोखे,
जितने अपने आपको देता हूँ में। ॥8॥

खुदगर्जी के सव यार नजर आते हे,
आदमी ही यहाँ दो-चार नजर आते हें।
ये खनकते हें सिक्के इनमें खरा कोई नहीं,
कहते हें पर मेरे लिए मरा कोई नहीं,
वेसे मरने को सव तैयार नजर आते हें। ॥9॥

जे तू वन्दगी ते खुश होंदा ए तो जी हजूरी होई ना,
मेरे जेहे गुनाहगार दे लई होर भी जरूरी होई ना।
जे वन्दगी दे वदले वख्स्दा, ए जनहत,
ए वख्शीश केडी ए ते साडी मेहनत होई ना। ॥10॥

जुबा यादें हक में जो हिलती रहेगी,
तो हर बला तेरे सर से टलती रहेगी।
ए दोस्त जवानी न बनेगी दिवानी,
अगर वडों के सामने गर्दन झुकती रहेगी। ॥11॥

गौर से देखना हर नौ जजबात को,
कोसते मत रहना दुनियां के हालात को।
रोशनी मिलेगी हर कदम पर अय दोस्त ?
जरा बदलना पड़ेगा अपने ख्यालात को। ॥12॥

तेरा दर हो सर झुकाने के काबिल,
लगी आग दिल की बुझाने के काबिल।
अगर न करते नजरें इनायत,
ना रहते मुंह दिखाने के काबिल। ॥13॥

खुदा-नाखुदा मिलकर डुबो दे मुमकिन है।
मेरी वजहे तबाही सिर्फ तूफाँ हो नहीं सकता। ॥14॥

वहाँ रहना किस काम का जहाँ दिल न मिले।
वो जिन्दगी किस काम की जिसे मंजिल न मिले। ॥15॥

लाडों से पाला हुआ जो पूत होगा।
वह ओलिया होगा या धूत होगा। ॥16॥

ये जिन्दगी मिली तो बन के कजा मिली।
नहीं इतने गुनाह किए, जितनी सजा मिली। ॥17॥

तेरे दिवाने को दिवाना कोई क्या बनाएगा,
मिटा दी जिसने अपनी हस्ती उसे जमाना क्या मिटाएगा,
पिया हो जिसने जाम इबादत का यहां,
उसके लिए कोई मैखाना क्या बनाएगा। ॥18॥



जय जीवन झलक

(आचार्य श्री जयमल म० सा० का जीवन वृत्त)

भारत की पावन पवित्र वसुन्धरा ने अनादिकाल से समय-समय पर अनेक महापुरुषों को अवतरित करने का गोरव प्राप्त किया हे।

जव-जव भी इस तपो भूमि पर अत्याचार, अन्याय, अनीति का वोलवाला वढने से जन-जीवन विनाश के कगार पर पहुचने लगता हे, तव-तव कोई न कोई महापुरुष इस धरती पर जन्म लेकर उन अत्याचारों का शमन करता है।

विक्रम की अठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में शासकवर्ग सुर की ताल में लयलीन, सुरा के नशे में आकण्ठ डूवा हुआ ओर सुन्दरी के सोन्दर्य में तल्लीन वना हुआ था। जिनोपासक यति वर्ग भी अपने कर्त्तव्य-पथ से च्युत होकर आकाक्षा पूर्ति हेतु वाह्याडम्वर ओर जनरजन को अपना ध्येय वना जनता को धर्म के नाम पर गुमराह करने लगा था।

ऐसी विपमता की आग में एक भवावतारी आचार्य श्री जयमलजी म० सा० ने जिन रूपी उद्यान की रक्षा के लिये राजस्थान के जोधपुर राज्यान्तर्गत मेडता के लाम्विया ग्राम में कामदार मोहनदासजी मेहता की सहधर्मिणी महिमादेवी की रत्न कुक्षी से विक्रम सवत् 1765 भाद्रपद शुक्ला त्रयोदशी को जन्म लिया।

श्री जयमल जी म० सा० ने गर्भ में रहते हुए ही ' पुत रे पग पालणे वाली कहावत चरितार्थ कर दी कि होने वाली सतान कितनी पराक्रमी होगी। महिमा देवी के गर्भावस्था में एक दिन उनके पति श्री मोहन दास को राजा की आज्ञा से युद्ध भूमि में जाना पडा। जव मोहन दास जी घर शस्त्र लेने पहुचे तो पत्नी गर्भ की पीडा से पीडित थी। पत्नी को ऐसी स्थिति में देखकर तलवार उतारने के लिए ऊपर उठे हाथ नीचे हो गए। यह दृश्य जव महिमा देवी ने देखा तो तलवार उतारने का कारण पूछा। मोहन दास जी कहने लगे कि तुम्हें ऐसी हालत में छोडकर जाने का मेरा कर्त्तव्य नहीं है। पति की ऐसी वात सुनकर जोशपूर्वक महिमा देवी ने उठकर पति के हाथ में तलवार पकडा दी। अपने पति को कहा कि देश की सुरक्षा का कर्त्तव्य पहले है। मेरी चिता मत करो।

रण जीत कर जय-जय कार करते हुए गाव में प्रवेश किया तो वालक का नाम जय कुमार रखा गया।

वाईस वर्ष की वय में रिया निवासी कामदार शिवकरणजी मुथा की सुपुत्री लक्ष्मीदेवी से आपका विवाह हुआ। मुकलावा (गौना) न होने के कारण से लक्ष्मी देवी अपने पिता के घर पर ही थी। विवाह के छ माह वाद जयमलजी अपने मित्रों के साथ व्यवसाय के कार्य से

कार्तिक शुक्ला चौमासी के दिन मेड़ता गये थे। जयकुमार को मेड़ता जाते समय रास्ते में कुछ देर के लिए आई झपकी में श्वेत आकृति सपने में दिखाई थी। जागृत होने पर जय के बताने पर दोस्तों ने कहा कि आज सफेद वस्तु में लाभ होने वाला है। लेकिन जय के दिलो-दिमाग में वह सफेद आकृति छाई रही। मेड़ता के बाजार बंद देखकर एवं यह जानकर कि सभी लोग आचार्य श्री भूधर जी म० सा० के प्रवचन सुनने के लिए गए हुए हैं, वे भी अपने मित्रों के साथ प्रवचन मंडप में पहुंच गये।

पूज्य भूधर जी महाराज सेठ सुदर्शन का जीवनवृत्त सुना रहे थे कि कैसे कपिला और महारानी अभया अपने माया-जाल से सेठ सुदर्शन को भोग वासना में फंसाने का अथक प्रयास करती है और किस प्रकार सेठ सुदर्शन अपने व्रत में सुदृढ़ रहता है ? राजा दधिवाहन द्वारा परिस्थितिवश सेठ को शूली की सजा देने और धर्म के प्रभाव से, शील ब्रह्मचर्य व्रत के प्रभाव से शूली का सिंहासन बन जाने की घटनाओं का वर्णन सुनाकर आचार्यश्री ने ब्रह्मचर्य के महत्व पर प्रभावी उद्‌बोधन दिया। सुनकर युवा जयमलजी का हृदय-परिवर्तन हो गया। उनके चिंतन में आया कि स्व-स्त्री की मर्यादा और पर-स्त्री के त्याग से यदि शूली का सिंहासन हो जाता है तो आजीवन पूर्ण ब्रह्मचर्य व्रत पालन से तो आठ-आठ कर्म-शूलियों को सिद्धशिला सिंहासन में बदला जा सकता है। सेठ सुदर्शन का प्रसंग ब्रह्मचर्य की मर्यादा मात्र से शूली का सिंहासन बन गया, यह सुनकर जय ने सभा बीच खड़े होकर भूधर जी म० सा० को विनती की कि मुझे आजीवन ब्रह्मचारी रहने की प्रतिज्ञा करवा दो। वहां उपस्थित श्रावकों ने जब जय को देखा तो गुरुदेव की तरफ अंगुली से इशारा किया तथा कहा इतना बड़ा व्रत न दिलाएं। मेहता जी का राजदरबार से सम्बन्ध है, परेशानी खड़ी हो सकती है। गुरुदेव ने प्रत्याख्यान करवाने से मना कर दिया। तब उन्होंने भरी सभा में खड़े होकर आजीवन ब्रह्मचारी रहने की भीषण प्रतिज्ञा ले ली तथा उस व्रत की सुदृढ़ पालना के लिए संयमी जीवन व्यतीत करने का दृढ़ निश्चय कर लिया।

जयमलजी के संयम ग्रहण करने के निश्चय को सुनकर मोहनदासजी, माता महिमादेवी, भाई रिडमल, पत्नी लक्ष्मीदेवी, सास-श्वसुर आदि सभी परिजन मेड़ता पहुंचे। उन्हें अनेक प्रकार से रोकने के प्रयत्न किये गये, पर जयमलजी ने अपने विलक्षण बुद्धि बल से सभी विरोधों को सहमति के रूप में बदल दिया। संसार में मोहनीय कर्म पर विजय सबसे कठिन है। मोह में व्यक्ति आंखें होते हुए भी सूरदास बन जाता है। जैसे ही महिमा देवी को जय के दोस्तों ने जाकर कहा कि तुम्हारे बेटे को सन्तों ने बहका लिया है। मां जो ओसवाल, धर्मानुरागी थी, फिर भी बेटे के मोह में भान भूल गई और जाकर भूधर जी म० सा० से बोली **"थारो जाइयो जी सत्यानाश"** थे म्हारा छोरा बहका लियो थारा सत्यानाश होवै। संत तो समता के धनी होते हैं। भूधर जी म० सा० भी नाराज नहीं हुए बल्कि महिमा को निस्सार में से सार निकाल कर फरमाने लगे। बाईसा-सत्यानाश क्यों बोलती है, अठ्यानाश बोल अठ्यानाश। कर्म तो आठ होते हैं, फिर एक बाकी क्यों रखती है। अष्ट कर्म के नाश होने

से में सिद्ध वन जाऊँगा। वाद में महिमा देवी को अपने शब्दों पर पश्चाताप हुआ। माँ ने फिर जाकर अपने वेटे को समझाते हुए कहा कि तेरी सात पीढियों में किसी ने दीक्षा नहीं ली। अव तू दीक्षा लेने चला हे। जयमल कुमार ने अपनी तार्किक वुद्धि से माँ को सुन्दर तर्क दिया जिसे सुनकर माँ मोन हो गई। जय कुमार ने कहा – माँ किसी खानदान में सात पीढियों तक अन्धे ही अन्धे पेदा होते रहे ओर आठवीं पीढी में कोई आख वाला पेदा हो जाए तो क्या वह भी अपनी आख फोड ले ? वेटे के इस तर्क का माँ के पास कोई जवाव नहीं था तथा आज्ञा दे दी। तव जय कुमार की जीवन संगिनी लक्ष्मी देवी वोली – आपने मुझे छोडकर ही जाना था तो हाथ क्यों पकडा था ? जय कुमार ने पत्नी को समझाते हुए कहा – यदि तू असली जीवन संगिनी हे तो जिस पथ पर में जा रहा हू, तू भी मेरे साथ चल। पत्नी को भी समझाकर जय ने दीक्षा की आज्ञा ले ली। जय कुमार की दीक्षा के लगभग एक साल वाद ही लक्ष्मी देवी ने दीक्षा लेकर जीवन सगिनी शब्द को सार्थकता प्रदान की। अव तो सयमी जीवन में वाधक मात्र प्रतिक्रमण सूत्र का न आना था, यह जानकर सकल्प ग्रहण कर लिया कि जव तक प्रतिक्रमण कठस्थ नहीं कर लू, वेठूगा नहीं। उनका सकल्प तीन घटे के अल्पकाल में पूरा हो गया। सामान्य जन को छ-छ महीने लग जाते हें, जिसे सीखने में, उस आवश्यक सूत्र (प्रतिक्रमण सूत्र) को उन्होंने मात्र तीन घटे (एक प्रहर) में कठस्थ कर लिया। तत्पश्चात् विक्रम सवत् 1787 मार्गशीर्ष वदी द्वितीया को मेडता शहर में आचार्य श्री भूधर जी म० सा० के सान्निध्य में जेन भगवती दीक्षा ग्रहण कर श्रमण-चर्या का पालन करने लगे। जयमल जी म० सा० पूणिमा को वेरागी वने थे, एकम् को आज्ञा मिली तथा दुज को अणगार वन गए थे।

दीक्षा ग्रहण करने का उनका मुख्य लक्ष्य था कर्म-जजीरों को तोडकर मुक्तालय को प्राप्त करना, क्षणिक सुखों से मुक्त वन शाश्वत सुखों को प्राप्त करना, जन्म-जरा-मरण के दुखों से परे होकर मोक्ष प्राप्त करना। इसी लक्ष्य की पूर्ति के लिए उन्होंने सम्यक् ज्ञान-दशन-चारित्र-तप के मार्ग में अप्रमत्त रहने का दृढ सकल्प ग्रहण कर लिया। श्रमण जीवन की दहलीज पर कदम रखते ही उन्होंने एकान्तर तप की उग्र साधना का नियम ले लिया जिसका पालन 16 वर्ष तक करते रहे। साथ ही पारणे में पाच वडी तिथियों के दिन पाच विगय का त्याग रखते। इसके अतिरिक्त आपने 16 वर्ष तक वेले-वेले तपस्या की, 2 वर्ष तक तेले-तेले पारणा किया, 3 वर्ष पयन्त 5-5 के पारणे का तप किया, 20 मासखमण तप किए, 10 द्वि-मासखमण की तपस्या की, 90 दिवस का अभिग्रह-युक्त तप किया, 40 अट्ठसईया (8 का तप) की, एक चोमासी व एक छ मासी तप किया। इस तरह आप निरतर दीर्घकालीन तपश्चरण से भी अपनी आत्मा को तपा कर कुन्दन वनाने में निमग्न रहते।

आचार्य श्री जयमलजी म० सा० ने यतियों से चर्चा करके उन्हें परास्त किया ओर पीपाड, जोधुपर, वीकानेर, नागोर, जैसलमेर, साचोर, वाडमेर, जालोर आदि क्षेत्रों को हमेशा के लिये शुद्ध सयममार्गियों के लिये खोल दिया।

पीपाड़ शहर में सर्वप्रथम यतिवर्ग को उन्होंने परास्त किया। एक बार नवदीक्षित जयमलजी म० सा० पानी का पात्र हाथ में लिए प्रासुक पानी की गवेषणा के लिए जा रहे थे कि रास्ते में कानों में शब्द पड़े कि भगवान महावीर कहते हैं कि पंचम काल में असली साधुपणा नहीं है। जयमल जी म० सा० ने देखा कि लाल उपाश्रय में बैठे यति जी सभा को प्रवचन में ऐसा सुना रहे हैं। उसी समय जयमलजी म० सा० ने अन्दर जाकर कहा कि यति जी, आप गलत प्ररूपणा कर रहे हो। भगवान ने फरमाया है कि पंचम काल के अंत तक असली साधु विचरेंगे तथा एकभवावतारी जीव रहेंगे। यह सुनकर यति ने जयमल जी म० सा० को कहा - यदि आप अपनी बात को सिद्ध कर दोगे तो यह लाल उपाश्रय व सारे श्रावक आपके, नहीं तो तुम हमारे शिष्य बनना। उसी समय निडरता से जयमलजी म० सा० ने यति के हाथ से ही भगवती सूत्र लेकर साबित कर दिया। आज भी यतियों को परास्त करके शास्त्रार्थ में जीता गया लाल उपाश्रय पीपाड़ मे मौजूद है। इसके पश्चात् तो वे जहां भी जाते सत्यधर्म का डंका बजाते, यतिवर्ग से शास्त्रार्थ कर उन्हें पराजित करते। मरूधर प्रदेश में सबसे बड़ा डेरा यतिवर्ग का नागौर में था। चौरासी (84) गच्छों के चौरासी उपाश्रय थे, जिनमें यतियों की बड़ी भारी संख्या थी। आपने उनको भी शास्त्रार्थ में परास्त किया।

उनके बीकानेर की ओर विहार व क्षेत्र-स्पर्शना के पीछे जो प्रसंग था, उसे भी आप सभी सुन लीजिए। पूज्यश्री भूधर जी म० सा० के देवलोकगमन के पश्चात् श्री जयमलजी म० सा० जोधपुर पधारे। आपश्री के पधारने का संदेश पाकर जोधपुर में रह रहे नागौर-दीवान फतेहसिंहजी सिंघी की बहन रामकुंवर बाई अपनी दासियों के साथ उनके दर्शनार्थ गई। उनका पीहर जोधपुर तथा ससुराल बीकानेर था। मुनिश्री जयमलजी म० सा० उनके गुरु थे। रामकुंवर बाई प्रवचन सुनने हेतु धर्म सभा में बैठ गयी।

प्रवचन समाप्ति पर रामकुंवर बाई ने अपने गुरुदेवश्री के चरणों में निवेदन किया - "गुरुदेव ! आप कभी बीकानेर की सुध भी लें। वहां कोई सच्चे संत आते नहीं हैं। मुझ पर कृपा करावें। आप पधारेंगे तो वहां पर धर्म-ध्यान की महती प्रभावना होगी।"

मुनिश्री ने बीकानेर के प्रस्ताव को लगभग टालते हुए कहा - "बाई ! बहुत दूर है बीकानेर, अभी तो यहां आस-पास के ही अनेक क्षेत्रों में विचरण करना है फिर बीकानेर का विहार-पथ अत्यन्त दुष्कर, कठिनाइयों से भरा हुआ है।"

रामकुंवर बाई भी शिष्या थी युगप्रधान श्री जयमलजी म० सा० जैसे पक्के संत की तो कच्चावट कैसे रखती ? वह स्वयं एक उच्चकोटि की श्राविका थी, श्रमणों के आचार, विचार, विहार आदि को समझती थी। राजनीति में शिष्टाचार के अंग से उसका प्रत्यक्षीकरण था। उसने कहा, "मुनिवर ! आप तो मोक्ष मार्ग के राही हैं। मुक्ति-पथ जितना दुष्कर है, उतना कठिन तो बीकानेर का मार्ग नहीं है। आपके लिए उधर का विहार दुष्कर नहीं होगा।"

इस पर मुनिश्री बोले - "मैं तो कर लूंगा विहार, पर साथ में संत भी तो हैं।

उनका ध्यान भी तो मुये रखना है।"

विनय सहित सुश्राविका रामकुवर ने कहा - "आप जेसे सत भला विना जाचे परखे किसी ऐसे-वैसे को शिष्य केसे वना सकते हैं? आपके सभी सत आप ही की भांति चारित्र में दृढ निष्टावान हे-यह मेरा विश्वास हे। अत मेरी विनती है कि आप वीकानेर पधारें। आपके वहा पदार्पण से वहा के भविजनों को निर्मल जिनवाणी का लाभ तो प्राप्त होगा ही, वीकानेर विचरण के लिए हमेशा से वन्द साधु-सतों का मार्ग भी खुल जाएगा।"

यतियों के तीन सो पचास से अधिक उपाश्रय हैं वहा। वे सभी आडम्बर ओर प्रदशन में विश्वास रखने वाले ढोंगी, पाखडी हे। सत्य तथ्य का निरूपण करने वाला कोई नहीं।

मुनि जयमलजी को याद आया - "गुरुदेव! आचार्य श्री भूधरजी म० सा० कहा करते थे - जो क्षेत्र सच्चे साधुमार्गी धर्म से दूर हैं, वंचित हैं, अछूते हें, उन्हें खोलने का पूर्ण प्रयत्न करना।"

पू० जयमलजी म० सा० के मन-मानस में वीकानेर क्षेत्र स्पर्शने की वात जम गई। वे साधु-भाषा में कह उठे - "विहार होगा तव तुम्हारी विनती का ध्यान रहेगा ओर फिर-

"जो-जो पुद्गल स्पर्शना निश्चय पर्शे सोय।"

वे जोधपुर से विहार कर गागाणी पधारे जहा खेमचन्दजी और पृथ्वीराजजी दोनों वन्धुओं ने उपदेशामृत पान कर सयम लिया। वहा से मुनिश्री वडलू (भोपालगढ) पधारे। वहा कुछ दिन विराजना हुआ। व्याख्यान हुआ। व्याख्यान-वाणी में अद्भुत जादू था ही। दो भाई उदय और केशव वन्धु युगल आपकी वाणी से प्रभावित होकर वहा दीक्षित हुए। राह में भी अनेकों दीक्षाएं हुई। नागौर नरेश महाराज वखतसिहजी को शिकार तथा परस्त्री का परित्याग करवाया। नागौर में कुछ दीक्षाओं का समारोह सम्पन्न कर मुनिश्री कुशलोजी को नवदीक्षित व वयोवृद्ध सतों की देख-रेख सारणा-वारणा हेतु कहकर वहीं रुकने को कहा। स्वय 21 सतों के साथ वहा से विहार कर दिया।

राह विकट थी। एक जगह धाडायतियों ने सत-समूह को रोका। सतों के पास धन-सम्पत्ति या वहुमूल्य सामान तो कुछ था नहीं। निराश धाडायतियों ने सतों के पास जो ऊनी शॉल थे, वे ही छीन लिए। आगे सर्दी आने वाली थी। ज्यों-ज्यों वीकानेर की तरफ वढ रहे थे, त्यों-त्यों सर्दी भी वढ रही थी। इस पर भी श्रीजयमलजी म० सा० ने विना किसी खेद के यही कहा - "चलो यह भी भार हल्का हुआ ओर साथ मे सहज सर्दी (शीत) परिषह को सहन करने का अयसर प्राप्त हुआ।"

विकट राह में गोचरी-पानी की कठिनाईया वढती गईं। जैन घर भी थे कई गावों में, पर "साधु" वेप से अपरिचित, अत देखकर दरवाजे वन्द कर दिए जाते। श्री जयमलजी

म० सा० व उनके साथ के सभी संत दृढ़ आस्थावान और परिषह-जयी बनने को तत्पर थे। अतः निराहार व निर्जल रह जाना उनकी साधना का एक अंग वन गया।

नागौर के यति-वर्ग ने बीकानेर सन्देश प्रेषित कर दिया कि हमें यहां जयमल साधु ने परास्त कर दिया है। हमारी तो जागीर ही लुट गई है। यहां से मोडे ने बीकानेर का रुख किया है। अतः वहां सावधान रहना।

सन्देश मिलते ही बीकानेर के यतिवर्ग ने बुलाई अपने यति-साथियों की मीटिंग। जयमल साधु नामक हौवे से निपटने की योजनाएं बनने लगी। किसी ने प्रस्ताव रखा - "मोड्डा हम सबके लिए खतरे की घंटी है।"

अंत में निर्णय लिया गया कि उसे बीकानेर में प्रवेश न करने दिया जाए। बीकानेर से नागौर पथ पर भेदिए भेजे जाने लगे। योजना थी कि प्रवेश-द्वार पर उन्हें लट्ठ के बल धमका कर बाहर ही रोक देना, बाहर से ही भगा देना जिससे वे अन्यत्र चले जाएं।

नींव जहां कच्ची हो, मकान के गिरने का भय तो रहता ही है। यतियों की भी यही स्थिति थी। डर रहे थे कि बीकानेर में उस मोडे ने प्रवेश ले लिया तो हमारी जमी-जमायी जाजम उखड़ जाएगी।

प्रवेश होने के दिन पांच सौ यति लट्ठ आदि शस्त्रों से सज्जित होकर बीकानेर के उस मुख्य प्रवेश-द्वार पर पहुंच गए जो नागौर की तरफ से बीकानेर तक पहुंचाने वाले पथ पर बनाया गया था। उधर सूर्योदय के दो-तीन घंटों बाद जयमलजी म० सा० व उनके 21 संतों का समूह भी पहुंच गया। प्रवेश से पूर्व ही उन्हें यतियों ने रोक दिया। लट्ठ बजाते हुए उन्होंने संत मंडली को धमकी दी कि कोई भी अन्दर नहीं जाएगा। किसी ने भी अन्दर जाने की हिम्मत की तो उसे समाप्त कर दिया जाएगा।

जयमल जी म० सा० और संत मंडल मृत्यु से जरा भी भयभीत नहीं थे पर इस तरह से रोके जाने पर भी प्रवेश कर किसी दुर्घटना को निमन्त्रण देना, किसी संत को खो देना, किसी संत को अपंग या क्षत-विक्षत बना देना मुनि श्रेष्ठ को पसन्द नहीं था।

सभी संत आचार्य श्री के साथ प्रवेश-द्वार से मुड़कर कुछ दूरी पर स्थित तालाव के एक ओर बनी छतरियों की ओर चले गए। "सागर की छतरियां" -कहलाती हैं ये छतरियां और आज भी उनके चिन्ह विद्यमान हैं। उन छतरियों के निकट ही एक कुम्हारों की वस्ती थी। कुछ श्वेतवस्त्रधारी लोगों को देख उत्सुकतापूर्वक वे उधर चले आए थे।

देखा उन्होंने हाथों में डण्डेधारी यतियों को इन संतों को धमकाते हुए। सुनी यतियों की धमकियों को। मुनिश्री जयमल जी को व अन्य संतों को शांत भाव से पुनः बाहर निकलते, तालाव की तरफ बढ़ते भी देखा उन्होंने। कुछ कुम्हार आए, संतों के पास वोले - "तालाब के पास छतरियां हैं, आप सभी वहीं ठहर जाइए।"

जेन सत को किसी स्थान में ठहरने के लिए श्रावकों या गृहस्थ की आज्ञा चाहिए, वह मुनिश्री को मिल गई। सभी सत छतरियों में ठहर गए। प्रासुक ओर एषणीय भोजन प्राप्त नहीं हो सका। कुम्हार जो मिट्टी के वर्तन वनाते थे, उनको पकाते थे। राख के हाथ धुला वह प्रासुक पानी कहीं-कहीं मिलता। उस पानी में राख होती अत वह प्रासुक हो जाता। ऐसे में कुछ सत चउविहार उपवास करते ओर कुछ तिविहार उपवास कर वह प्रासुक राख धुला जल क्रम में लेते। सध्या-समय वस्ती के कुम्हार क्रम से, खाने-पीने से निवृत्त हो जाते ओर चले आते पूज्यवर के पास। पूज्यवर उन लोगों को जन-कल्याण की सरल-सरल वातें सरल शेली में फरमाते। धर्म क्या है ? धर्म का मूल क्या हे ? धर्म का मर्म क्या हे ? आठ दिन वीत गए। नवम् सूर्योदय के साथ आचार्य श्री जयमल जी म० सा० ने सोचा - "शायद इतने समय की ओर इतने ही क्षेत्र की क्षेत्रस्पर्शन का सयोग हे।" वे साथ के मुनिजनों से वोले - "आप सभी ने मेरे साथ आठ-आठ का तप किया है। आज विहार का विचार है अत तेयारी कर लें। पुन नागोर की ओर प्रस्थान करेंगे।"

पर वधुओं ! क्षेत्रस्पर्शना का पूरा सयोग अभी शेप था। इधर मुनिजन विहार के लिए कमर कस रहे थे, उधर रामकुवरवाई वग्घी में वैठकर जो भ्रमणार्थ निकली तो वग्घीवान ने आज रास्ता उस तालाव की ओर का ही लिया। हवा का एक झोंका आया, वग्घी का परदा उस हवा से इधर-उधर हुआ। एक दासी को वाहर के दृश्य की एक झाकी नजर आई, जो वाई सा के पीहर जोधपुर साथ में गई थी तथा आचार्य श्री जी के दर्शन किए थे। इसलिए वह पहचान गई थी। दासी ने हर्षित होकर कहा "वाईसा आपाणा जोधपुर वाला म० सा० सामा विराज्या है।" वाईसा उदास होती हुई वोली - अरी दासी - तू भी मेरा मजाक करने लगी। मेरे ऐसे भाग्य कहा जो गुरुदेव यहा पधारे ? दासी हाथ जोडकर वोली - वाईसा, मैं मजाक नहीं कर रही हू ? आप पालकी का परदा उठाकर तो देखो सामने छतरियों में अपने गुरुदेव विराजे हें। छतरियों का नाम सुनकर राम कुवर वाई ने दासी को डाटते हुए कहा-"खवरदार ! गुरुदेव के वारे में यदि मजाक किया तो।"

दासी सभल कर वोली - विश्वास नहीं है तो लीजिए आप स्वय अपनी नजरों से देख लीजिए।"

दासी ने इतना कहा और वग्घी के परदे को जरा-सा खिसका दिया। सामने थीं "सागर छतरिया" ओर उन छतरियों में स्वय गुरुदेव विराजमान थे, साथ में थे अनेक सत। वाईसा ने गुरुदेव को पहचान लिया। अनायास गुरुदर्शन पाकर उनका रोम-रोम हर्षित हो उठा। अवर्णनीय थी वाईसा के उस समय की स्थिति। रोमाच से रोम खडे थे और अत्यधिक हर्ष से नयनाश्रु वह रहे थे। वाईसा ने रथ (वग्घी) रुकवाया। नीचे उतरकर छतरियों में गईं। पूज्यश्री व सतों के हयभाव से दर्शन किए। सभी को सविधि वन्दना की। वे सोच रही थीं - गुरुदेव अभी-अभी यहा पधारे हें। लम्वा विहार कर आए हें अत कुछ समय यहा विश्राम

के वाद नगर-प्रवेश की भावना से रुके हैं। पूज्य प्रवर से कहा – "गुरुदेव ! आपकी यह दासी, यह शिष्या, यह भक्त-श्राविका आपको लिवाने आई है।"

बंधुओ ! आज के समय का कोई संत होता तो कह उठता – "देखी थारी भगति ! श्राविका केवे खुद ने ! म्हारी शिष्या वतावे खुद ने ! अरे ! आठ-आठ दिन होय गया अठे आया ने, भूखं मर गया सब आठ-आठ दिनां सूं ने अबे आयने केवे के म्हें लेवणने आई। रेवण दे ओ ढोंग। म्हें तो सगला अवे पाछो विहार करां हैं।"

पर पूज्यश्री तो नाम से ही "जयमल" थे। "मल" को अर्थात् क्रोधादि चतुष्क को, आश्रवों को, कर्मदलिक को जीतने वाले। बहुत ही धीर-गंभीर-शांत स्वर में कहा – "वाई ! तुम्हारी भक्ति में कोई कमी नहीं है, पर क्षेत्र स्पर्शना का शायद इतना ही संयोग था। हम संत पुनः विहार की तैयारी में हैं।"

रामकुंवरबाई ने कहा – "गुरुदेव ! यहां तक पधार कर बाहर से ही वापस जा रहे हैं तो यह पधारना क्या काम का ? क्या हाथ लगाकर ही वापस जाना था ? क्या यही दिखाना चाहते हैं कि मैं बीकानेर जाकर आ गया ?"

बहुत ही शांत स्वर में जयमलजी म० सा० बोले – "बाईसा, पूरे आठ दिन हो गए हमें यहां आए हुए।"

बग्घी राजदरबार की देखकर उत्सुक कुम्हार-बस्ती के लोग एकत्रित होने लगे थे। महिला भी राजपरिवार की दिखाई देती थीं। साथ में सखियां- दासियां थी। एकत्रित लोग देखते रहे-सुनते भी रहे। कुछेक लोगों ने तो सोचा कि यतियों का खुद का कुछ भी जोर नहीं चला तो राज-वर्गीय इस महिला को भेजकर इन निर्दोष मुनियों पर कोई दोषारोपण करना चाहते हैं। ऐसे लोग बिना कुछ जाने-बिना कुछ देखे-सुने जोर से चिल्लाकर कह उठे – "महाराज म्हाणां है, म्हां यांने हरगिज अठा सूं नहीं जावण दां। ऐ लुगायां कुण व्है याणे निकालण व्हाली। मिनखां रो जोर चाल्यो कोनी, अबे लुगायां ने भेजी है।"

सुनकर मुड़ी रामकुंवर बाई। देखा उन लोगों को। उतावली-सी चलकर आई उनके बीच। बोली – "क्या बात है ? क्या कह रहे हैं आप लोग ? कौन निकालना चाहता है इनको ?"

किसी ने पहचान लिया उन्हें कि ये तो बीकानेर दीवान-सा और वक्सीजी के मांजीसा है। आगे बढ़कर कुम्हारों ने पांच सौ यतियों वाली सारी घटना से लेकर अब तक का सारा विवरण सुना दिया।

रामकुंवर बाई ने तब अनेक प्रश्न कर यह भी ज्ञात कर लिया कि इन सभी के आए तब से तिविहार या चउविहार तप ही चल रहा है।

अनायास गुरुदर्शन पाकर जो रामकुंवर बाई अति हर्ष से नयनाश्रु बरसा रही थीं,

पर अव गुरुओं क्र तपस्या सुनकर दु ख के वोझ तले दवी जा रही थीं। "कितने कष्ट, कितने परिषह सह गए गुरुदेव!" सोच-सोचकर वे अव अत्यन्त दु खी हो विलख उठीं। रोम-रोम उनका दु ख ओर आवेश से प्रकम्पित हो उठा। "यह सव मेरे कारण हुआ। मैंने गुरुदेव के पधारने का ख्याल ही नहीं किया। खोज-खवर भी नहीं ली। मुझे तो विनती करने के वाद हरपल-हरक्षण सचेत वने रहना चाहिए था। कितनी तक्लीफें सहीं मेरे कारण मेरे गुरुदेव ने। धिक्कार है मुझे।" गुरुदेव के निकट जाकर अपने को समालते हुए वे वोलीं - "गुरुदेव! जो हुआ, सो हो गया। मुझसे वहुत वडा अपराध हुआ है यह। अव मेरी एक छोटी-सी विनती हे। वस, इस सेविका पर इतनी कृपा कीजिए कि जव तक मेरे दोनों लाल श्रीचरणों के दर्श-स्पर्श न कर लें तव तक विहार मत कीजिएगा - इतना कहकर वह वग्घी में वेठ गयी ओर उसे पुन लोटने का सकेत कर दिया। वग्घी लोट गयी हवेली की ओर।

रामकुवर वाई अपनी हवेली में आई। सकल्प लिया उन्होंने कि जव तक गुरुदेव को अपने हाथों से आहारादि नहीं वहराऊगी, मुह में अन्न-जल नहीं डालूगी।

वाईसा के दो जवान पुत्र थे। जयसिह ओर विजयसिह। जयसिह था राज्य का दीवान ओर विजयसिह था सेना का नायक। दोनों दरवार में गए हुए थे। दरवार समाप्ति पर घर आए। प्रतिदिन का भोजन माता के समक्ष वैठकर करते थे। पर आज वहा केवल थाल परोसा हुआ था। मातुश्री नहीं थी वहा। पृछा दासी से तो ज्ञात हुआ कि अपने महल में हैं।

दोनों पुत्र गए महल में। मातुश्री पलग पर मुह ओढे सोई थीं। लग रहा था जैसे वे रो रही हें। दोनों ने एक-दूसरे को देखा। आज यह क्या वात? क्या कष्ट है मातुश्री को? पुकारा उन्होंने - "माताजी! उठिए तो, देखिए कौन आया है?"

मातुश्री नहीं उठे। रुदन की आवाज कुछ तीव्र हो गई। इस पर जय-विजय ने कहा - "मातुश्री! वात क्या है? क्या आपकी पुत्रवधुओं ने आपके प्रति कोई अविनय किया है? भला कोई आपको क्या कह सकता है? जो भी वात हो, आप हमें कहें, हम उन्हें अवश्य दड देंगे।"

पुत्र का यही कर्त्तव्य है। माता-पिता को सुखी रखना, उनकी सार - समाल करना, उनके रहन-सहन व खान-पान-दवाई आदि का पूर्ण प्रवध करना। जिसमें मनुष्यता है, मनुष्यता का रचमात्र भी अश है उसे चाहिए कि वह माता-पिता के ऋण को कभी विस्मृत नहीं करे। एक कवि ने कहा है -

"भूल जे सव कुछ मगर मा-याप ने मत भूल जे।"

वहुत कहने पर भी राजकुवर वाई नहीं उठे। केवल इतना ही कहा "तुम दोनों जाकर भोजन कर लो। मेरे गले आज अन्न का दाना भी उतरना मुश्किल है।"

तुरत दोनों पुत्र वोल उठे - "आप यह क्या कह रही हैं मातुश्री? हमारा तो सदैव

का नियम है – मातुश्री के साथ बैठकर भोजन करने का। आज यह अनोखी बात कैसे ? आप नहीं चलेंगी तो हमारा भी भोजन नहीं होगा।"

सुनकर रामकुंवर बाई बोली – "अरे सपूतो ! जिसके गुरुदेव आठ-आठ दिन से निराहार बीकानेर के बाहर छतरियों में भूख-प्यास और कड़ाके की शीत सहन कर रहे हों, उसके गले से नीचे अनाज का दाना या पानी की बूंद कैसे उतर सकती है ?"

जय-विजय एक साथ बोल उठे – "पर वे बाहर ही क्यों हैं ? छतरियों में क्या काम है उनका ? नगर में क्यों नहीं पधारे ? आठ-आठ दिन से भूखे क्यों ? क्या बात हुई ? पूरी बात तो बताइए।"

बाईसा ने पांच सौ यतियों वाली वह पूरी बात अपने लाडलों को सुना दी।

पुत्रों ने माता को आश्वासन दिया-गुरुदेव बीकानेर में प्रवेश किए बिना यहां से विहार नहीं कर सकते। माता जी आप निश्चिंत रहें, हम गुरुदेव के नगर प्रवेश की व्यवस्था करते हैं।

दोनों युवक राजचिन्ह, चाबियां तथा अन्य राजा द्वारा दिए गये सामान को साथ लेकर राजा दरबार में पहुंचे। बीकानेर नरेश गजसिंह जी उस समय भोजनार्थ बैठे ही थे कि उसी समय वातावरण में न्याय के घंटे की टन-टन की आवाज गूंज उठी। प्राचीनकाल में न्याय के लिए घंटे लगे होते थे। न्याय प्रिय राजा आवाज सुनकर सब काम छोड़कर पहले फरियादी की फरियाद सुनते थे। महाराज ने भी परोसा हुआ थाल छोड़कर दरबार में जाकर फरियादी को बुलाया। जयसिंह और विजय सिंह को देखकर महाराज बोले, "अरे तुम हो। तुमने घंटा किस कारण से बजाया, तुम दोनों को तो भीतर महल में आने की राजाज्ञा है।"

इतना सुनकर दोनों भाईयों ने राजचिन्ह, चाबियां तथा अन्य सारा सामान महाराज के चरणों में रखते हुए कहा-हमारी माता के साथ अन्याय हुआ है। जिस नगर में हमारे गुरु प्रवेश नहीं कर सकते, उन्हें आठ-आठ दिन तक भूखा रहना पड़े और मेरी माता जी भी भोजन न करे, उस नगर में रहना किस काम का ? महाराज-संभालों अपनी चाबियां, हम ये नगर छोड़कर जा रहे हैं।

बीकानेर नरेश मन ही मन चिंतन करने लगा कि ऐसे वफादार और ईमानदार लड़के मिलने कठिन है। म० गजसिंहजी बोले – "पहेलियां मत बुझाओ। सत्य कहा है तो उसका खुलासा करो। क्या बात है ? पूरी बात बताओ।"

जयसिंह ने कहा-"महाराज ! आजकल नगर के पांच सौ यतियों ने नगर पर अधिकार जमा रखा है। उन्हीं की आज्ञा से कोई व्यक्ति नगर में प्रवेश पा सकता है। वे चाहें तो किसी को भी नगर में प्रवेश करने से रोक सकते हैं।"

बीकानेर नरेश ने पूछा – "किसको रोका है उन्होंने ? और तुम्हारे साथ क्या

अन्याय हुआ हे ?"

इन्होंने हमारे धम गुरुदेव को रोक दिया गया हे। आठ दिन से वे नगर-प्रवेश का अवसर देख रहे हे पर यतियों ने उन्हें धमका कर उनका नगर-प्रवेश बन्द कर रखा हे। गुरुदेव धमकियों से नहीं डरते पर वे पूण अहिसा ओर शांति के पक्षपाती हे अत अव पुन विहार की तेयारी में हें।"

नरेश ने कहा - "अरे नहीं! ऐसा केसे हो सकता हे? मेरा आदेश हे, उन्हें नगारे-निशान, वेंड-वाजे, नोपत-निशान के साथ ठाट-वाट से नगर प्रवेश कराओ।"

जयसिह ने कहा - "महाराज! हमारे गुरुदेव इस तरह से आडम्बर नहीं करते। षट्काया के प्रतिपाल, करुणासागर हे वे। उनका प्रवेश सामान्य रूप से ही समव हे।"

नरेश कुछ याद करते हुए से वोले - "तुम्हारे गुरुदेव? कौन? पूज्य श्री जयमलजी महाराज? कव पधारे थे? किसने हिम्मत की उन्हें रोकने की? क्या प्रयोजन था उन्हें रोकने का? में उनकी खेर-खवर वाद में लूगा। अभी तो चल रहा हू तुम्हारे साथ। नरेश ने कहा भोजन का थाल परोसा हुआ हे पर अभी नहीं करूगा भोजन। अपने साथ उन महाराजश्री को लेकर आऊगा। महल में पुरानी ड्योढी खाली पडी हे, उनसे विनती करूगा कि वहा ठहरें। उनके आने के पश्चात् ही भोजन को छूऊगा।"

वधुओ! पूर्व परिचय था नरेश गजसिहजी का, आचाय श्री जयमलजी से। दर्शन भी किए थे, नाम भी सुना था। गुरुदेव की अगवानी में स्वय वीकानेर नरेश, अमीर-उमराव, दास-दासी ओर नगर में निकलते समय हजारों प्रतिष्ठित नागरिक जन भी चल दिए।

"सागर की छतरियों" में धर्म-मेला लग गया। सत जगल में भी विराजें तो "जगल में मगल" हो जाता हे। धूमधाम से स्वय आचार्य श्री जयमलजी म० सा० व उनके सतों ने वीकानेर नगर में प्रवेश किया। राजमहलों की पुरानी ड्योढी में पूज्यश्री एक मास तक विराजे। राज चोगान में प्रवचन होते थे। सत्य धर्म का विगुल वजाया। उनकी विशुद्ध आगम वाणी का सिह-नाद यतियों को परास्त करता गया ओर यति वीकानेर छोड कर यत्र-तत्र-अन्यत्र भागते रहे।

यहा भी अनेक भविजनों ने आचार्य श्री के श्रीमुख से दीक्षा-मत्र ग्रहण कर श्रमण-धर्म को प्राप्त किया। जयसिह व विजयसिह के एक-एक पुत्र ने सयम का मार्ग अगीकार कर पच-महाव्रत धारण किए। शुद्ध जेन धर्म का स्वरूप समझ अनेकों ने पूज्यश्री से शुद्ध समकित की धारणा ग्रहण की तथा श्रावक-व्रत ग्रहण किए। धन्य हें वे पूज्य आचार्य सम्राट जिन्होंने प्रवल परिषह सहन करके भी वीकानेर का क्षेत्र शुद्ध श्रमणाचारियों के लिए खुला दिया।

आचार्य श्री जयमलजी म० सा० नेसर्गिक प्रतिमा के धनी तो थे ही, साथ ही साथ

में पुरुषार्थी, उत्साही, लगनशील और दृढ़ चारित्रनिष्ठ भी थे। उन्होंने जिस वर्ष दीक्षा ग्रहण की उसी वर्ष चातुर्मास में पांच आगमों को मात्र एक प्रहर (तीन घंटे) में कंठस्थ कर लिया। प्रथम वर्षावास में 11 आगमों को कंठस्थ किया। कुछ ही वर्षों में आपने 32 आगमों के साथ अनेक अन्य ग्रंथों को कंठस्थ कर लिया, साथ में परमत के ग्रंथ-वेद- वेदांग-श्रुति-स्मृति-न्याय-दर्शन आदि का अध्ययन भी आपने पण्डित मुनि श्री नारायणदास जी म० सा० से विनयपूर्वक किया।

क्षमाश्रमण पूज्य श्री भूधरजी महाराज के देहावसान के समय जयमल जी म० सा० ने सोचा कि मुझे जगाने वाले तथा अप्रमत रहने की शिक्षा देने वाले आज सो गए हैं। अब मुझे स्वयं जागना है, इसलिए आज के बाद कभी लेटकर सोना नहीं है। जीवन के अन्तिम क्षण तक यह नियम 50 वर्ष पर्यन्त निभाया। अप्रमत्तता के प्रभाव से ही आपने 700 भव्य आत्माओं को दीक्षा मंत्र प्रदान किया।

एक भव अवतारी आचार्य सम्राट श्री जयमल म० सा० संयम-सुमेरु तो थे ही, साथ में आशुकवि, बहु श्रुतधर, धर्म प्रभावक एवं समर्थ-समाज-सुधारक भी थे। आपने अनेकानेक राजा-महाराजाओं, नवाबों, ठाकुरों, जागीरदारों को शिकार, पर-स्त्रीगमन, मद्य-मांस सेवन आदि सप्त व्यसनों का त्याग करवाया। जगह-जगह होने वाली पशुबलि, नरबलि, दास-प्रथा, सतिप्रथा आदि मिथ्याडम्बरों को भी बंद करवाया।

आचार्य श्री जयमलजी महाराज के उपदेश अत्यन्त मार्मिक एवं भावपूर्ण होते थे। जोधपुर महाराज अभयसिंहजी, बीकानेर नरेश महाराजा गजसिंहजी, सिरोही नरेश महाराजा मानसिंहजी, इन्दौर होल्कर मां आहिल्यादेवी, नागौर महाराज बखतसिंहजी, जैसलमेर व जयपुर नरेश तथा दिल्लीपति मुगल सम्राट मुहम्मद शाह का शाहजादा आदि तो आपके उपदेशामृत पानकर आपके प्रति पूर्णतः समर्पित एवं श्रद्धासिक्त हो गये। पूज्य जयमलजी म० सा० ने जालोर में 17 आगमों का सार "बड़ी साधु वंदना" नामक प्रसिद्ध कृति की रचना की।

वि. सा. 1807 बैशाख शुक्ला तृतीया को जोधपुर में आपको आचार्य पद से अलंकृत किया गया। आपका विचरण क्षेत्र मुख्यतः राजस्थान, गुजरात, मेवाड़, मालवा, दिल्ली रहा।

जीवन के अंतिम 13 वर्ष आपश्री ने शारीरिक कारणों से नागौर में स्थिरवास किया था। वि. सं. 1851 में आपने विचार किया कि संघ का आचार्य पद जीवन के इन अंतिम वर्षों में आत्मविशुद्धि की पूर्ण साधना में कुछ व्यवधान स्वरूप ही होगा। मुझे चाहिए कि मैं इस पद और पद सम्बंधी कार्यो से अपने को अलग कर लूं।

जैन इतिहास में आचार्य के रहते युवाचार्य बनाने की परम्परा तो सर्वत्र है, कई वर्षो से है, पर कोई आचार्य अपने जीवन-काल में अपना आचार्य पद "वोसिरा" कर योग्य मुनि को स्वयं आचार्य-चादर घोषित आचार्य को श्रद्धा सहित ओढ़ावें-यह सर्वप्रथम आचार्य सम्राट

श्री जयमलजी म० सा० जेसे युगपुरुष के लिए ही सभव हे। आपश्री ने युवाचार्य श्री रायचन्द्रजी म० सा० को आचार्य घोषित कर अपना आचार्य पद वोसरा दिया था। चतुर्विध सघ ने नागोर शहर में वि स 1851 में जेठ शुक्ला 2 के शुभ दिन युवाचार्य श्री रायचन्द्रजी म० सा० को आचार्य पद की चादर ओढा कर उन्हें सघाचार्य के पद पर प्रतिष्ठित किया।

इस तरह आचार्य श्री जी ने अपने जीवन के अंतिम समय को, उस समय के एक-एक पल, एक-एक क्षण को आत्मविशुद्धि की साधना में व्यतीत किया।

आपने अपने उपयोग से आयु की समाप्ति को निकट समझकर वि स 1853 में चैत्र शुक्ला पूर्णिमा को नागोर की पावन भूमि पर सलेखणापूर्वक जीवन पर्यन्त के लिए सथारा (अनशन) स्वीकार किया जो 31 दिनों तक रहा ओर वैशाख सुदी 14 (नरसिह चतुर्दशी) को समाधिमरण के साथ पूर्ण हुआ।

आचार्य सम्राट पूज्य श्री जयमलजी म० सा० ने इस प्रकार अपने मरण को भी महोत्सव बना दिया। जब आपने सथारे का चिन्तन किया तो सलेखणा करना फाल्गुण मास में प्रारभ कर दिया। श्रद्धालु भक्तों को जब इस बात की सूचना मिली तो सभी चकित रह गए। सथारे की सुनकर सुदूरवर्ती क्षेत्रों में धर्म प्रसार कर रहे सत-सतियों ने सथारे की सुनकर अनेकों सघाडों ने नागोर की ओर विहार प्रारभ कर दिया।

आचार्य श्री रायचन्द्र जी म० सा० उस समय बीकानेर क्षेत्र में जिनशासन की प्रभावना कर रहे थे। फाल्गुण के शुक्ल पक्ष में आचार्य श्री रायचन्द्रजी म० सा० को नागोर पधारने का सन्देश भेजा गया।

चैत्र मास के शुक्ल पक्ष में उस युगपुरुष ने नियत मरण को स्वय वरण करने के लिए सथारा धारण करने की अभिलाषा प्रकट की। त्रयोदशी (महावीर जयती) के दिन आपश्री ने चतुर्विध सघ के सम्मुख सथारा ग्रहण किया।

सथारा-ग्रहण करने का संदेश वायु-वेग की तरह सम्पूर्ण भारत में फैल गया। दर्शनार्थ अनेक राज्यों के राजा, महाराजा नागोर आने लगे। अनेक रियासतों के जागीरदार व ठाकुर दर्शन-वन्दन के लिए पहुच गए। अनेकानेक राज्यों के दीवान आचार्य सम्राट की चरण-वदना करने के लिए उपस्थित हो गए।

सदेश पाकर गुजरात में विचरण कर रहे आचार्य सम्राट श्री जयमलजी म० सा० के शिष्य श्री गजोजी स्वामी आदि ठाणा 12 और महाप्रभावक जेन सत श्री घासीरामजी म० सा० आदि ठाणा 6 तथा अन्य सत उग्र विहार कर नागोर आचार्य सम्राट की सेवा में पहुचे। 49 सत सथारे की सेवा में जुट गए।

सथारे के 16 वें दिवस पूज्य रायचन्द्रजी म० सा० ''सथार पईण्णाय ' सुना रहे थे। पूरा दिन व्यतीत हो गया। रात्रि आ गई। अर्ध-रात्रि का समय था। श्री घासीरामजी

म० सा० स्वाध्याय सुना रहे थे। आचार्य श्री रायचन्द्रजी म० सा० मुनिश्री गजोजी स्वामी, मुनिश्री आसकरणजी म० सा० आदि 16 संत दिन-रात सेवा करने वाले भी निकट में विराजित स्वाध्याय-निरत थे, तभी यकायक एक दिव्य-तेज से वह उपाश्रय आलोकित हो उठा। संतगण चकित हुए, पर शीघ्र सजग बन गए। उन्होंने देखा कि दो दिव्य आकृतियां वहां प्रकट हुई। दोनों ने आचार्य सम्राट श्री जयमल जी म० सा० के चारों ओर तीन परिक्रमाएं दी और विधियुत वन्दना की।

इसी समय आचार्य श्री रायचन्द्रजी म० सा० ने पूछ लिया - "कौन हैं आप ?"

प्रत्युत्तर सुनने को मिला - "उदय और केशव !"

समझ गए पूज्य रायचन्द्रजी म० सा० कि आचार्य भगवंत के दिवंगत शिष्य हैं। उनके स्मृति पटल पर सिरियारी का बीहड़, सुनसान घाट उभर आया। दो ऊंची-ऊंची पहाड़ियों के बीच पगडंडी-का रास्ता। कभी वह रास्ता पहाड़ी के ऊपर-ऊपर चलता तो कभी पहाड़ी से सट कर। नीचे झांककर देखने पर गहरी खाई, हजारों फीट गहरी दिखाई देती थी और ऊपर देखने पर हजारों फुट ऊंचे, गर्वोन्नत बने पर्वत-शिखर दिखते थे। यह पहाड़ी रास्ता दो कोस लम्बा था। इसकी पहाड़ियों के एक ओर था मेवाड़, जहां आचार्य सम्राट को पहुंचना था और इस तरफ था मरुधरा का सिरियारी नगर। मेवाड़ की ओर तलहटी में पीपली ग्राम होने से वहां के लोग इसे पीपली घाट कहते थे और मरुधरावासी इसे सिरियारी घाट कहते थे।

वह समय था संवत् 1812 का। उस समय सिरियारी-घाटी से मेवाड़ जाना खतरनाक था। सुनसान पहाड़ियां, ऊबड़-खाबड़ पथरीली पतली-सी पगडंडी वाला रास्ता। अनेक घुमाव थे उस रास्ते में। झाड़ियों की अधिकता से भयानकता थी तो पहाड़, झरने, गुफाएं, पेड़ हरियाली आदि मनोरम दृश्यों के कारण सुन्दरता भी थी। इस घाटी में तब हिंसक जंगली पशु शेर, चीते आदि भी थे। अतः कभी कोई गूंज होती तो यात्री चौंक उठते थे।

पूज्य श्री संत मंडल के साथ उस घाटी की पगडंडी पर निर्भय, स्थिर कदमों से चले जा रहे थे। अचानक आचार्य भगवंत ने उदयमुनि व केशवमुनि को सम्बोधित करते हुए कहा - आप दोनों चलने में तेज हैं, अतः आप आगे चले जाओ।"

आदेश था पूज्य प्रवर का। दोनों आगे बढ़ गए। ज्यों-ज्यों आगे बढ़े, अचानक परिणामों की धारा भी ऊर्ध्व की ओर बढ़ने लगी। ऊंची पहाड़ी और नीची घाटी। चले जा रहे थे मुनिद्वय। तभी सामने कुछ ही दूर एक बड़ी शिला दिखाई दी। शिला के एक ओर पहाड़ियां इस तरह फैली हुई थी कि मानों शिला का संरक्षण कर रही हों तो दूसरी तरफ शिला के ऊपर और आस-पास में घने, विशाल, छायादार वृक्षों की पांति, मानों शिला पर छाया रखने का निश्चय कर लिया हो। उदयमुनि को लगा कि शिला क्या है, कोई मंडप है, प्राकृतिक

मडप ? उदय मुनि उस मण्डप से पास खडे हो गए।

केशवमुनि ने वात काट कर कहा - "पूज्यश्री ने हमें आगे वढने को कहा है।"

उदयमुनि वोले - हा ! आगे ही तो वढना है। इस ऊचाई पर पहुचने के वाद नीचे उतरने का मन नहीं करता। यहा इस शिला को देखते-देखते मेरे परिणाम कुछ अलग से वनते मालूम हो रहे हैं। थोडी देर पहले मेने उस पीपल के पेड से एक पीत-पत्र को पेड से अलग होकर नीचे गिरते देखा ओर जीवन की क्षणभगुरता का ध्यान आ गया। मेरा मन इसे देख कुछ कहने लगा हे, मन में कुछ ऐसा हो रहा हे।"

केशवमुनि - पूरे दार्शनिक वन गये हो। केसा हो रहा हे मन में ?

उदयमुनि - वस ! यह शिखर, यह शिला ओर में ! खो जाना चाहता हू यहीं ! लगता हे मुझे यहीं आत्म-समाधि ले लेनी चाहिए।

केशवमुनि - यदि ऐसा हे तो मैं भी तुम्हारे साथ रहना चाहता हॅ। हम दोनों ने एक ही माता के उदर से जन्म लिया, दोनों साथ खेले, दोनों ने साथ शिक्षा पाई, साथ-साथ वडे हुए, साथ ही सयम ग्रहण किया, सयम-जीवन में भी साथ-साथ रहे, अव आत्मोसर्ग के समय में अलग क्यों ? साथ ही समाधि लेंगे ओर यहीं लेंगे।

उदयमुनि वोले - "फिर देर किस वात की ?"

आचार्य भगवत के साथ सभी सत वहा पहुचे तो वे दोनों चिन्तनलीन ही थे। पूज्यश्री ने दोनों को पुकारा ओर पूछा - "यहा क्यों रुक गए ?"

दोनों मुनियों ने जो कुछ वीता, घटित हुआ, चिन्तन वना, आपस में दोनों ने जो वातें की, वे सभी आचार्य भगवत व सभी सतों को सुना दी। साथ ही सथारा ग्रहण करने का आत्म-भाव भी प्रकट कर दिया।

सभी चकित हुए। देखा उधर शिला की ओर। वातावरण देखकर लगा कि स्थान है ही ऐसा, आत्म-समाधि के भाव उत्पन्न हो जाए। शत्रुजय ओर सम्मेदशिखर पर भी तो ऐसा ही वातावरण होता होगा, जहा तीर्थंकर भगवतों, अनेक भव्यात्माओं को आत्मसमाधि के उत्कृष्ट भाव आते हैं।

पूज्यश्री ने उनके मन को टटोला, दृढता की जाच की और जव देखा कि भावना का रग किरमची हे तो सथारा करवा दिया।

स्वय पूज्यश्री विविध स्वाध्याय सुनाने लगे। सिरियारी, पीपली एव अन्य निकटवर्ती ग्रामों के श्रावक दर्शनार्थ आने लगे। जगल में मगल होने लगा। मरण महोत्सव का रूप ले रहा था।

केशवमुनि को सथारा नो दिन का आया ओर उदयमुनि को ग्यारह दिन का। अतिम अवस्था तक उनकी समाधि अवस्था में आत्म तेज वढता रहा, अनुपम शांति व

प्रसन्नता के भाव बने रहे।

लम्बे समय तक पूज्यश्री रायचन्द्रजी म० सा० इन्हीं यादों में खोये रहे तभी याद आया - वे ही मुनि देवलोक से आचार्य भगवंत के दर्शन करने आए हैं और अभी तक यहीं हैं। पुनः पूछ बैठे - "किस कल्प से आना हुआ ?"

एक देव ने कहा - "प्रथम कल्प से !"

पूज्य रायचन्द्रजी म० सा० ने तब पूछा - "प्रयोजन आने का ?"

दोनों साथ से बोल पड़े - "उपकारी गुरुदेव की वन्दनार्थ आए हैं।"

सहसा मुनिश्री आसकरण म० सा० ने पूछा कि - "गुरुदेव यहां का आयुष्य पूर्ण कर किस कल्प में उत्पन्न होंगे ?"

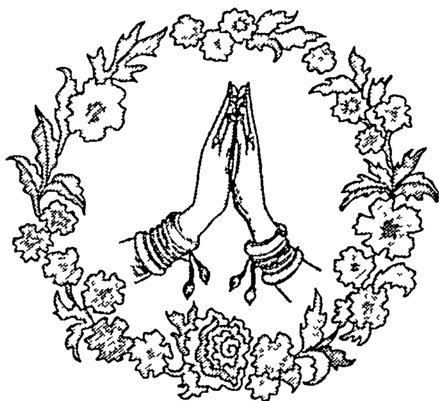
प्रश्न अनापेक्षित था। देव शांत रहे। कुछ देर वहां स्तब्धता का वातावरण बना रहा। दोनों देव ध्यानस्थ बन गए। ध्यान से बाहर आकर बोले - "हमारा इतना ज्ञान नहीं था। महाविदेह क्षेत्र में विराजमान सीमंधरस्वामी से समाधान लेकर आये हैं। देव बोले-गुरुदेव यहां का आयुष्य पूर्ण कर प्रथम कल्प में उत्पन्न होगें। वहां की अवधि पूर्ण कर महाविदेह क्षेत्र की पुष्कलावती विजय में उत्पन्न होंगे और उत्कृष्ट संयमाराधन कर निर्वाण को प्राप्त करेंगे। आचार्य भगवन् एकभवावतारी हैं। इतना कहकर देव-द्वय पुनः वंदन-नमन कर अन्तर्ध्यान हो गए। कुछ क्षणों के लिए एकदम घोर अंधकार हो गया। फिर धीरे-धीरे आंखें अंधकार में कुछ देखने योग्य बनीं। सभी संत एकभवावतारी आचार्य सम्राट के प्रति और अधिक श्रद्धावनत बन गए।

घटनाचक्र का उल्लेख चालू संथारे में पूज्य आसकरणजी म० सा० के द्वारा रचित ढाल में किया गया है। 49 संत व 250 सतियां संथारे की सेवा में मौजूद थे उनमें से सोलह संतों ने आचार्य सम्राट श्री जयमलजी म० सा० के संथारे की तन-मन से स्वाध्याय सेवा की, साज दिया। दिन-रात एक करके इस तरह संथारे की अविरल सेवा करने वाले इन सोलह ही संतों को कालान्तर में एक-एक मास का संथारा आया।

जैन-जगत के इस युग-पुरुष को इकतीस दिनों का दीर्घ संथारे का लाभ प्राप्त हुआ। जैन इतिहास के विगत पांच सौ वर्षों में ऐसा एक भी उदाहरण नहीं मिला कि जहां किसी सम्प्रदाय के आचार्य पद पर प्रतिष्ठित महान आत्मा को इतना दीर्घ-काल का संथारा आया हो। उन्हीं महापुरुषों के तीन पाट तक एक-एक मास का संथारा व सभी 10 पट्टधर आचार्यों को संथारा आया।

पूज्य जयमल जी म० सा० जैन इतिहास की एक महान विभूति हुए हैं जिनके जीवन का प्रत्येक पहलू एक शिक्षा है। ऐसे महान भीष्म प्रतिज्ञाधारी चर्चित चक्रवर्ती आचार्य सम्राट श्री जयमल जी म० सा० को कोटिशः वंदन।





शत शत नमन्